Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृतमार्गोपदेशिका

मूल लेखक :
अध्यापक बेचरदास जीवराज दोशी

हिन्दी में अनुवादिका
पं० साध्वी श्री सुव्रताजी
शिष्या
पं० साध्वी श्रीमृगावतीजी
शिष्या
स्व० साध्वी श्रीशीलवतीजी
श्री विजयवल्लभसूरि जी की
आज्ञानुवर्तिनी

प्रकाशक :
मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली वाराणसी पटना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक :
श्री सुन्दरलाल जैन,
मोतीलाल बनारसीदास
चौक, वाराणसी
बेंग्लो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-७
अशोक राजपथ, पटना

हिन्दी प्रथम संस्करण

ईस्वी सन्—१९६८
विक्रम वर्ष—२०२५
वीर संवत्—२४९५
मूल्य—१०.००

मुद्रक :
केशव मुद्रणालय
पाण्डेयपुर पिसनहरिया, वाराणसी कैण्ट।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जन्म वर्ष—विक्रम संवत् १९५० पौष शु. दि. ११।

जन्मस्थल—राणपरडा (चीतल–काठियावाड)।

निर्वाण वर्ष—विक्रम सवत् २०२४ महा व. दि. ४ शनिवार।

निर्वाणस्थल—बम्बई–श्री महावीर स्वामी देरासर, पायधुनी।

सर्व आयु—७४ वर्ष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यथा नाम तथा गुणों से विभूषित मेरी मातामही

गुरुणीजी श्री स्व० श्री शीलवती जी

महाराज के चरणकमलों में

अनुगामिनी

प्रशिष्या

सुव्रता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तावना

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के अध्ययन में प्राकृत का अध्ययन संस्कृत जैसा ही अपरिहार्य है। प्राकृत के अध्ययन के बिना आधुनिक आर्य भाषाओं की चर्चा पूर्ण नहीं हो पाती; इसलिए संस्कृत के साथ ही साथ मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं जैसे पालि, विभिन्न प्रकार की प्राकृत तथा अपभ्रंश का अवश्य अध्ययन किया जाना चाहिए। पालि की चर्चा भारतवर्ष में कई शतकों से लुप्त हो गई थी, लेकिन आजकल भारत में पालि के अध्ययन की व्यवस्था प्रारम्भ हो गई है। कलकत्ता विश्वविद्यालय इस विषय में पथ-प्रदर्शक बना था। अब पालि की चर्चा भारत के अन्य विश्वविद्यालयों में पूर्णतया चालू हो गई है। पालि के मुख्य ग्रंथों के नागरी-लिपि में संस्करण निकल गये हैं और हिन्दी में पालि के लिए विशेष उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; जैसे आनन्द कौसल्यायन जी की पुस्तकें और श्री लक्ष्मीनारायण तिवारी की पुस्तकें।

परन्तु हिन्दी संसार में प्राकृतों की चर्चा प्रायः उतनी नहीं फैल पाई है। इसका एक मुख्य कारण यह था कि पालि जैसी ही प्राकृत की आलोचना भी हिन्दी भाषियों में प्रायः बन्द हो गई थी। संस्कृत नाटकों के अध्ययन के समय प्राकृत के अध्ययन की कुछ आवश्यकता अवश्य पड़ती थी परन्तु हमारे संस्कृत के विद्वान् केवल संस्कृत छाया के सहारे किसी प्रकार काम चला लेते थे। प्राकृत का गम्भीर अध्ययन कहीं भी नहीं दिखाई पड़ता था। इसका एक अन्य कारण यह भी है कि पंजाब और राजस्थान को छोड़कर अन्य हिन्दी भाषी प्रदेशों में ऐसे जैन लोग संख्या में बहुत कम हैं जिनकी धार्मिक भाषा प्राकृत मानी जाती है; परन्तु राजस्थान तथा गुजरात में जैन लोग संख्या में गरिष्ठ न हों, परन्तु भूयिष्ठ हैं और इनमें जैन यति और मुनि तथा अन्य विद्वान् बहुत संख्या में मिलते हैं, जो अपने धार्मिक विचार और शास्त्राध्ययन में निरन्तर व्यापृत रहते हैं और इन विषयों में जैसे प्राकृत धार्मिक तथा साहित्यिक ग्रंथों के संशोधन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

और प्रकाशन में संलग्न रहते हैं और प्राकृत भाषा के व्याकरण की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ प्रकाशित कराते हैं। इन विषयों में गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र के जैन पण्डितों की देन अपरिसीम है।

प्राकृत भाषा, विशेषकर अर्द्धमागधी, संस्कृत और पालिके साथ ही साथ एक मुख्य प्राचीन भाषा के रूप में छात्रों के अध्ययन के लिए नियत की गई थी, इसलिए प्राकृत के प्राध्यापकों ने अंग्रेजी में दो-चार अच्छी पुस्तकें प्रकाशित की थी। इसके अतिरिक्त गुजराती में जो मौलिक विचार के साथ ग्रंथ निकलते जाते हैं वे गुजरात के बाहर लोगों को दृष्टिगोचर नहीं होते।

हमारे श्रद्धास्पद मित्र पण्डित बेचरदास जीवराज दोशी गुजरात के प्रमुख भाषातात्त्विकों में गिने जाते हैं। आप गुजराती, संस्कृत, प्राकृत, मराठी, हिन्दी प्रभृति भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित हैं। गुजराती में आपने बहुत वर्ष पहले "गुजराती भाषा नी उत्क्रान्ति" नामक एक भाषाशास्त्रानुगत विचारपूर्ण ग्रन्थ लिखा था। मुझे इनके साथ परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और जब उनसे मेरा पहला साक्षात्कार हुआ तभी से मैं उनका गुणग्राही रहा हूँ और उनके साथ पत्र-व्यवहार करता आया हूँ। "पुत्रे तोये यशसि च नराणाम् पुण्य-लक्षणम्" यह शास्त्रवचन इनके लिए सार्थक बना है। आप के सुपुत्र चिरंजीव प्रबोध ने अपने पिता के द्वारा अनुसृत वाक्तत्त्व विद्या को अपनाया है और इस विद्या में अनन्य साधारण योग्यता दिखाई है। जब श्री प्रबोधजी पूना के डेकन कॉलेज के भाषातत्त्व विभाग में अध्ययन, गवेषणा और अध्यापन करते थे उसी समय से उनसे मेरा गहरा परिचय रहा है। बाद में वे अमरीका जाकर आधुनिक अमरीकी शैली में पूर्ण रूप से निष्णात बन कर लौट आये और आजकल दिल्ली विश्वविद्यालय में भाषातत्त्व के मुख्याध्यापक नियुक्त किये गये हैं। इस प्रकार पिता की परम्परा पुत्र ने सुरक्षित रक्खी है।

प्रस्तुत पुस्तक श्रीमान् दोशीजी की गुजराती पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। इसके द्वारा हिन्दी संसार तथा छात्र-समाज का एक अभाव दूर हुआ। इसमें प्राकृत भाषा का साधारण विचार भली भाँति किया गया है और विभिन्न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृतों का वैशिष्ट्य दिखाया गया है। जैसे, उन्होंने लिखा है—"प्रस्तुत पुस्तक में प्राकृत, पालि, शौरसेनी, मागधी, पैशाची तथा चूलिकापैशाची और अपभ्रंश भाषा के व्याकरण का समावेश किया गया है, अतः प्राकृत भाषा से उक्त सभी भाषाएँ समझनी चाहिए।" ऐसे इस पुस्तक को पिशेल के बृहत् प्राकृत व्याकरण* (जो जर्मन भाषा में लिखित इस विषय का सबसे प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है) का एक गुटका संस्करण कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी।

मेरे विचार में इस पुस्तक का प्रकाशन हिन्दी का महत्त्व बढ़ायेगा और हिन्दीभाषी इससे प्रचुर लाभ उठा सकेंगे और ग्रन्थकर्ता के आभारी रहेंगे। इस काम के लिए वाक्तत्त्वविद्या के एक अनुरागी की हैसियत से मैं भी पंडित बेचरदासजी का आभारी हूँ। आशा है कि आप भविष्य में ऐसे और भी उपयोगी ग्रन्थ या निबंध प्रकाशित कराकर देश में शिक्षा और ज्ञान फैलाने के काम में लगे रहेंगे और इसलिए हम सब उनके स्वस्थ दीर्घायुष्य की कामना करते हैं।

राष्ट्रीय ग्रन्थालय

कलकत्ता

वैशाखी पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा)

१२ मई १९६८

सुनीति कुमार चाटुर्ज्या

---

* पिशेल के जर्मन ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद डा० सुभद्र झा ने किया है और इसका हिन्दी अनुवाद डॉ० हेमचन्द्र जोशी ने।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूल लेखक के दो शब्द

बनारस श्री यशोविजय जैन संस्कृत पाठशाला में जब मैं पढ़ रहा था तब की यह बात है अर्थात् आज से करीब ६० बरस पहले की बात है अतः थोड़े विस्तार से कहने की जरूरत महसूस होती है।

स्व० श्री विजयधर्मसूरिजी ने बड़े कड़े परिश्रम से उक्त संस्था काशी में स्थापित की थी। उसमें डॉ० पंडित सुखलालजी, पाइअसद्दमहण्णवो नामक प्राकृत शब्दकोश के रचयिता मेरे सहाध्यायी मित्र स्व० पं० हरगोविंददासजी सेठ और मैं उसी पाठशाला में पढते थे।

शुरू में मैंने आचार्य हेमचंद्ररचित सिद्धहेमशब्दानुशासन लघुवृत्ति को पढ़ा, बाद में उसी व्याकरण की बृहद्वृत्ति को। उस व्याकरण में सात अध्याय तो केवल संस्कृत भाषा के व्याकरणसंबंधी है, आठवाँ अध्याय मात्र प्राकृत भाषा के व्याकरण का है। सात अध्याय पढ़ चुकने के बाद मेरा विचार आठवाँ अध्याय को पढ़ने का हुआ। आठवाँ अध्याय को वहाँ कोई पढ़ाने वाला न था अतः उसके लिए मैं ही अपना अध्यापक बना। जब आठवाँ अध्याय को पढ़ रहा था तब ऐसा अनुभव हुआ कि कोई विशिष्ट कठिन परिश्रम किये बिना ही आठवाँ अध्याय मेरे हस्तगत और कंठाग्र हो गया, फिर तो काशी में ही कई छात्रों को तथा मुनियों को भी उसे भली भांति पढ़ा भी दिया और प्राकृत भाषा मेरे लिए मातृभाषा के समान हो गई।

उन दिनों में संस्कृत को सरलता से पढ़ने के लिए स्व० रामकृष्णगोपाल भाण्डारकर महाशय ने संस्कृत मार्गोपदेशिका अंग्रेजी में बनाई थी। उसका गुजराती अनुवाद गुजरात की पाठशालाओं में चलता था। संस्कृत का प्राथमिक अध्ययन मैंने भी इसी पुस्तक द्वारा किया था। इससे मुझे ऐसा विचार आया कि संस्कृत मार्गोपदेशिका की तरह इसी शैली में प्राकृत मार्गोपदेशिका क्यों न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बनाई जाय ? इस काम को मैंने हाथ पर लिया और तीन-चार महिने में गुजराती प्राकृत मार्गोपदेशिका की एक पांडुलिपि तैयार कर दी।

फिर पाठशाला के व्यवस्थापकों ने उस पांडुलिपि को प्रकाश में लाने का निर्णय किया तब मैंने उसको संशोधित करके समुचित रूप से ठीक-ठीक तैयार कर दी, बनारस से प्रकाशित प्राकृत मार्गोपदेशिका के संस्करण में ही मैंने अन्त में सूचित किया है कि विक्रम संवत् १९६७, ज्येष्ठ मास, पूर्णिमा, शुक्रवार के दिन यह पुस्तक संपन्न हो गया। इस प्रकाशन की प्रस्तावना में भी वीर संवत् २४३७ मैंने लिखा है अतः आज से करीब ५६-५७ वर्ष पहले यह प्रथम प्रकाशन हुआ।

प्राकृत भाषा को गुजराती भाषा द्वारा सीखने का सबसे यह प्रथम साधन तैयार कर सका इस हेतु मुझे प्रसन्नता हुई थी। यह प्रथम प्रकाशन मेरी विद्यार्थी अवस्था की कृति है और सबसे प्रथम मौलिक कृति है। इसमें कहीं भी संस्कृत भाषा का आश्रय नहीं लिया गया था। इसी प्रकाशन की दूसरी आवृत्ति यशोविजय जैन ग्रंथमाला के व्यवस्थापकों ने की है ऐसा मुझे स्मरण है। प्रथम और दूसरे प्रकाशन में कोई भेद नहीं है। गुजरात देश की जैन पाठशालाओं में इसका उपयोग होता है तथा कई साधु-साध्वी भी इसे पढ़ते रहे।

बाद में जब मैंने न्यायतीर्थ और व्याकरणतीर्थ परीक्षा पास की तथा पालि भाषा में भी पंडित की परीक्षा लंका (कोलंबो) जाकर लंका के विद्योदय कालेज से पास की और संशोधन-संपादन इत्यादि व्यावसायिक प्रवृत्ति में लगा तब गुजराती प्राकृत मार्गोपदेशिका का नया संस्करण करने का प्रयत्न किया। उसमें संस्कृत भाषा का तुलनात्मक दृष्टि से पूरा उपयोग किया और नये संस्करणों में उत्तरोत्तर विशेष-विशेष परिवर्तन करता गया। गुजराती प्राकृत मार्गोपदेशिका के कुल पांच संस्करण आज तक प्रकाशित हुए हैं। ये सब संस्करण अहमदाबाद के गुर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय के मालिकों और मेरे मित्र स्व० श्री शंभूलाल भाई तथा उनके बंधु स्व० श्री गोविंदलाल भाई ने किये हैं, उसमें संस्कृत भाषा के उपयोग के उपरांत पालि भाषा के तथा शौरसेनी, मागधी वगैरह प्राचीन प्राकृत भाषा के नियमों का भी तुलनात्मक दृष्टि से यथास्थान निर्देश किया है तथा आचार्य हेमचंद्र के व्याकरण के सूत्रांक भी नियमों को समझने के लिए टिप्पण में दे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिये हैं तथा पालि भाषा के नियमों को दिखाने के लिए सर्वत्र स्व० आचार्य श्री विधुशेखर भट्टाचार्यजी रचित पालिप्रकाश का ठीक ठीक उपयोग किया है।

प्रस्तुत हिन्दी संस्करण में भी प्राकृत, पालि, शौरसेनी, मागधी, पैशाची तथा अपभ्रंश के पूरे नियम बताकर संस्कृत के साथ तुलनात्मक दृष्टि से विशेष परामर्श किया है और वेदों की भाषा, प्राकृतभाषा तथा संस्कृतभाषा—इन तिनों भाषाओं का शब्द समूह कितना अधिक समान है इस बात को यथास्थान दिखाने का भरसक प्रयास किया है तथा पृ० ११० से १३७ तक का जो खास संदर्भ दिया है वह भी उक्त तीनों भाषाओं की पारस्परिक समानता का ही पूरा सूचक है।

गुजराती प्राकृतमार्गोपदेशिका का यह हिन्दी संस्करण कैसे हुआ? यह इतिहास भी रोचक होने से संक्षेप में निर्देश कर देता हूँ:—

करीब छः वर्ष पहले पं० साध्वी श्री मृगावतीजी (जो अभी बंबई में विशिष्ट व्याख्यात्री के रूप में सुविश्रुत है) मेरे पास ही पढ़ने के लिए दिल्ली से अमदाबाद में आई। वह और उनकी शिष्या श्री सुव्रताजी मेरे पास करीब दो-अढाई वर्ष पढ़ती रहीं। जैनागम, तर्क के उपरांत प्राकृत व्याकरण भी पढ़ने का प्रसंग आया था। अमदाबाद में उनकी (श्री मृगावतीजी की) जन्म-माता तथा गुरुणी श्री शीलवतीजी तथा सहधर्मिणी साध्वी सुज्येष्ठाजी भी साथ में आई थीं। ये दोनों सरल प्रकृति तथा धर्म विचार की बड़ी जिज्ञासु रही। अवसर पाकर मैंने श्री मृगावतीजी से निवेदन किया कि गुजराती प्राकृत मार्गोपदेशिका का हिन्दी अनुवाद श्री सुव्रताजी कर देवें यही मेरी नम्र प्रार्थना है, सौभाग्यवश मेरी प्रार्थना उन्होंने स्वीकृत कर ली और यह हिन्दी अनुवाद तैयार भी हो गया।

अनुवाद तो हो गया पर प्रकाशक भी मिले तभी अनुवाद का साफल्य हो, दिल्लीवाले मोतीलाल बनारसीदास एक सुविख्यात पुस्तक प्रकाशक है और खास करके प्राच्यविद्या के ग्रन्थों के प्रकाशक हैं। वे श्री मृगावतीजी के गुणानुरागी श्रावक हैं। मेरा प्रथम परिचय उनसे वहीं पर श्री मृगावतीजी के निमित्त से हुआ और मेरा भी उनसे संपर्क हो गया, उक्त फर्म के प्रतिनिधि भाई श्री सुन्दर-लालजी को मैंने सूचित किया कि इस हिन्दी प्राकृतमार्गोपदेशिका को आप क्यों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न प्रकाशित करें ? मेरी बात को उन्होंने मानली और इस हिन्दी प्राकृतमार्गोपदेशिका का प्रस्तुत संस्करण प्राकृतभाषा के अभ्यासी सज्जनों के करकमलों में रखने का मेरा मनोरथ पूर्ण हुआ।

मेरा निवास अहमदाबाद में, पुस्तक के मुद्रण-प्रवृत्ति का केन्द्र काशी। शुरू शुरू में तो दूसरे फारम से दो-चार फारम अहमदाबाद मगाये गये पर प्रूफ को जाने-आने में अधिक समय लगता रहा और कार्य में भी विलंब होने लगा। फिर तो काशी के पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध-संस्थान (जैनाश्रम) के कार्यकर्ता (शोध-सहायक) भाई कपिलदेव गिरिजी को इसके संशोधन का भार सौंपा गया सो उन्होंने बड़े परिश्रम से निबाहा। एतदर्थ वे भाई धन्यवाद के विशेष अधिकारी हैं। अनुवादिका श्रीसुव्रताजी भी धन्यवाद के योग्य हैं। और श्रीमृगावतीजी तथा भाई श्री सुन्दरलालजी का सहयोग न होता तो यह कार्य बन ही नहीं सकता अतः उन दोनों का भी नामस्मरण विशेष आभार के साथ कर रहा हूँ।

इस छोटी-सी पुस्तक की प्रस्तावना हमारे स्नेही मित्र गुणानुरागी डा० श्री सुनीतिकुमार चटर्जी (नेशनल प्रोफेसर—कलकत्ता) ने हिन्दी में ही लिख देने की महती कृपा की है। उनका आदरपूर्वक नामस्मरण करता हुआ इसके लिए उन्हें विशेष धन्यवाद देता हूँ।

मेरे बड़े पुत्र डा० भाई प्रबोध पंडित का भी इस प्रस्तावना लिखवाने में बड़ा सहयोग रहा है अतः भाई प्रबोध का भी नामस्मरण करना आवश्यक समझता हूँ।

पालिप्रकाश का इसमें विशेष उपयोग किया गया है अतः उसके प्रणेता और मेरे मित्र स्व० श्री विधुशेखर भट्टाचार्यजी का अनुगृहीत हूँ।

पुस्तक के अन्त में शब्दकोश तथा विशेष शब्दों की सूची भाई कपिलदेव गिरिजी ने तैयार कर दी है और इस सारे काम को उन्होंने बड़े प्रयत्न से पार पहुँचाया है अतः इनका नाम फिर-फिर स्मरण में आ रहा है।

शुरू में शुद्धिपत्रक, अनुक्रमणिका तथा निर्दिष्ट संकेतों की सूची दे दी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेरी आंख अच्छी नहीं, काशी और अहमदाबाद में काफी दूरी, अतः इसमें बहुतसी गलतियाँ रह गयी होगी, अभ्यासीगण इनको सुधार करके पढ़ेंगे और कष्ट के लिए मुझे क्षमा प्रदान करेंगे।

मेरे मित्र और पाटण (उत्तर गुजरात) आर्टकालेज के अर्द्धमागधी के प्रधान अध्यापक भाई कानजीभाई मंछाराम पटेल एम० ए० ने ही शुद्धिपत्रक वगैरह तैयार कर दिया है अतः उनका भी नामस्मरण सस्नेह कर देता हूँ।

हिन्दी भाषा द्वारा प्राकृतभाषा को पढ़ने का यह एक विशिष्ट साधन तैयार करके प्राकृतभाषा के अध्यापक तथा छात्रों के सामने सविनय रख रहा हूँ। यदि सुधी पाठक इसका उपयोग करके मुझे उत्साहित करेंगे और देश में प्राकृतभाषा के अभ्यास को इससे थोड़ी-बहुत सहायता मिलेगी तो मेरा और अनुवादिका का परिश्रम सफल समझा जायेगा।

अन्त में, इस संस्करण के संबन्ध में जो कुछ सूचना या सुझाव देने हों तो मुझे नीचे के पते पर भेजने की कृपा करें यही मेरी प्रार्थना अध्यापक तथा विद्यार्थिबन्धुओं से है।

शिवमस्तु सर्वजगतः

बेचरदास दोशी

रिसर्च प्रोफेसर ला० द० भारतीय
संस्कृति विद्यामंदिर—
—स्कूल ओफ इंडोलोजी
अमदाबाद ९

१२।ब, भारतीनिवास
सोसायटी
अमदाबाद ६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय-सूची

	पृष्ठ
अक्षर-परिवर्तन	१–१३७
वर्णविज्ञान	१
शब्दविभाग	७
स्वरों का सामान्य परिवर्तन	१०
,, ,, विशेष ,,	१७
असंयुक्त व्यञ्जन का सामान्य परिवर्तन	३२
,, ,, विशेष ,,	४४
संयुक्त व्यञ्जन का सामान्य परिवर्तन	५६
,, ,, विशेष ,,	७५
शब्दों में विशेष परिवर्तन	८२
शब्दों में सर्वथा परिवर्तन	८३
आगम	८६
लिंगविचार	८९
सन्धि	९२
समास	१००
वैदिक तथा लौकिक संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत भाषा की तुलना	१११–१३६
एक दूसरी स्पष्टता	१३६
पाठमाला विभाग	१३८–३९४
पहला पाठ—वर्तमान काल	१३८
दूसरा पाठ— ,,	१४४
तीसरा पाठ— ,,	१४९
चौथा पाठ—अस् धातु	१५३
पाँचवाँ पाठ तथा सार और प्रश्न	१५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपसर्ग—	१६२
छठा पाठ—अकारान्त शब्द के रूप (पुंलिङ्ग)	१६८
सातवाँ पाठ—अकारान्त शब्द के रूप (नपुंसकलिङ्ग)	१७८
आठवाँ पाठ—शब्द	१८६
नवाँ पाठ—अकारान्त सर्वादि शब्द (पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग)	१६३
दसवाँ पाठ—तुम्ह, अम्ह, इम और एअ के रूप	२०५
ग्यारहवाँ पाठ—भूतकालिक प्रत्यय	२१६
बारहवाँ पाठ—इकारान्त और उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द	२३१
तेरहवाँ पाठ—भविष्यत्कालिक प्रत्यय	२४८
चौदहवाँ पाठ—भविष्यत्काल	२६२
पन्द्रहवाँ पाठ—ऋकारान्त शब्द	२७३
सोलहवाँ पाठ—विध्यर्थ और आज्ञार्थक प्रत्यय	२८६
सत्रहवाँ पाठ—विध्यर्थ	२९६
अठारहवाँ पाठ—आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द (स्त्रीलिङ्ग)	३०१
उन्नीसवाँ पाठ—प्रेरक प्रत्यय के भेद	३१९
बीसवाँ पाठ—भावे तथा कर्मणि प्रयोग के प्रत्यय	३३०
इक्कीसवाँ पाठ—व्यञ्जनान्त शब्द	३४३
बाईसवाँ पाठ—कुछ नामधातुएँ	३५९
तेईसवाँ पाठ—विध्यर्थ कृदन्त के उदाहरण	३६९
चौबीसवाँ पाठ—वर्तमान कृदन्त	३७२
पच्चीसवाँ पाठ—संख्यावाचक शब्द	३७६
छब्बीसवाँ पाठ—भूत कृदन्त	३८७
प्राकृत शब्दों की सूची	१–७५
विशेष शब्दों की सूची	७६–८०
(१) शुद्धि-पत्रक	८१
(२) शब्दकोश का शुद्धि-पत्रक	९१
(३) विशेष शब्दों की सूची का शुद्धि-पत्रक	९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकेतों का स्पष्टीकरण

संकेत :—

धा०=धातु

अप०=अपभ्रंश

क्रि० क्रिया०=क्रियापद्

सं०=संस्कृत

शौ०=शौरसेनी

वै०=वैदिक

सं० भू० कृ०, सं० कृ०=सम्बन्धक भूत कृदन्त

मा०=मागधी

पै०=पैशाची

ना० धा०=नामधातु

गुज०=गुजराती

टि०=टिप्पण

चू०=चूलिका

प्रा०=प्राकृत

हे० प्रा० व्या०=हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण

पा० प्र०=पालिप्रकाश

नि०=नियम

पृ०=पृष्ठ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

। पितरौ वन्दे ।

प्राकृतमार्गोपदेशिका

(अक्षरपरिवर्तन-व्याकरणविभाग)

वर्णविज्ञान

[1]प्राकृत-भाषा में प्रयुक्त होनेवाले स्वरों और व्यञ्जनों का परिचय इस प्रकार है :—

स्वर		उच्चारण-स्थान
ह्रस्व	दीर्घ	
अ	आ	कण्ठ—गला
इ	ई	तालु—तालु
उ	ऊ	ओष्ठ—होठ
ए[2]	ए	कण्ठ तथा तालु
ओ	ओ	कण्ठ तथा ओष्ठ-होठ

१. प्रस्तुत पुस्तक में प्राकृत, पालि, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, तथा चूलिका-पैशाची और अपभ्रंश भाषा के व्याकरण का समावेश किया गया है अतः प्राकृत भाषा से उक्त सभी भाषाएँ समझनी चाहिए।

२. एक्क, तेल्ल आदि शब्दों का 'ए' और सोत्त, तोत्त आदि शब्दों का 'ओ' ह्रस्व है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. प्राकृत-भाषा में स्वरों का प्लुत-उच्चारण नहीं होता है।

२. ऋ[1] तथा लृ स्वर का प्रयोग नहीं होता है।

३. ऐ[2] तथा औ स्वर का प्रयोग नहीं होता है।

व्यञ्जन		उच्चारण-स्थान
क् ख् ग् घ् ङ्	(क वर्ग)	कण्ठ
च् छ् ज् झ् ञ्	(च वर्ग)	तालु
ट् ठ् ड् ढ् ण्	(ट वर्ग)	मूर्धा
त् थ् द् ध् न्	(त वर्ग)	दन्त—दाँत
प् फ् ब् भ् म्	(प वर्ग)	ओष्ट—होठ
अन्तस्थ—अर्धस्वर	य्	तालु
	र्	मूर्धा
	ल्	दन्त
	व्	दन्त ओष्ठ
	स्	दन्त
	ह्	कण्ठ
य् ल् व् ङ् ञ् ण् न् म्		नासिका

४. प्राकृत-भाषा में कोई भी व्यञ्जन स्वर के बिना क् च् ट् त् प् रूप से अकेला प्रयुक्त नहीं होता। जो व्यञ्जन समान-वर्ग अथवा

---

१. अपभ्रंश-प्राकृत में 'ऋ' स्वर का उपयोग होता है। जैसे; तृण, सुकृत आदि।

२. केवल 'अयि' अव्यय के स्थान पर ही 'ऐ' का प्रयोग होता है। याने 'ए' सम्भावना अथवा कोमल सम्बोधन का सूचक है (हे० प्रा० व्या० ८।१।१६९।)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समान आकार के होते हैं, वे बिना स्वर के भी संयुक्त रूप से प्रयुक्त होते हैं। समान वर्ग, जैसे :—चक्क, वच्छ, वट्ट, तत्त, पुप्फ, अङ्क, कञ्जा[1] मञ्ज, कण्ठ, तन्तु, चम्पग आदि। समान आकार, जैसे :—अय्य[2], कल्लाण, सव्व, सिस्स इत्यादि।

५. किसी भी प्रयोग में अकेला स्वर सहित ङ अथवा दोहरा (संयुक्त) 'ङ्ङ' प्रयुक्त नहीं होता।

६. सामान्यतः क्य, त्र, प्ल, क्त्र, स्त्र ऐसे विजातीय संयुक्त व्यञ्जन प्राकृत भाषा में प्रयुक्त नहीं होते। लेकिन अपवादरूप से कुछ विजातीय-संयुक्त व्यञ्जन प्राकृत-अपभ्रंश, पालि और मागधी भाषा में प्रयुक्त होते हैं। इसके विषय में उदाहरण-सहित निर्देश व्यञ्जनविकार के प्रकरण में दिये गये हैं।

७. प्राकृत भाषा में श तथा ष और विसर्ग का प्रयोग बिलकुल नहीं है।

८. 'ळ' व्यञ्जन का प्रयोग पालि तथा पैशाची भाषा में प्रचलित है।

९. संस्कृत के किस संयुक्त अक्षर के स्थान पर प्राकृत में साधारणतः कौन-सा अक्षर प्रयुक्त होता है। उदाहरणों सहित उनका प्रयोग इस प्रकार है—

(१) त्क, क्त, क्य, क्र, र्क, ल्क, क्ल और क्व के स्थान पर शब्द के

---

१. शब्द के अन्दर 'ञ्ञ' का प्रयोग पालि, मागधी और पैशाची भाषा में प्रचलित है।

२. अय्य (आर्य) शब्द केवल शौरसेनी और मागधी में ही प्रयुक्त होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्दर डबल 'क्क' का और शब्द[1] के आदि में 'क' का प्रयोग होता है। जैसे :—उत्कण्ठा—उक्कण्ठा, मुक्त—मुक्क, वाक्य—वक्क, चक्र—चक्क, तर्क—तक्क, उल्का—उक्का, विक्लव—विक्कव, पक्व—पक्क, क्वचित्—कच्चि, क्वणति—कणति।

(२) त्ख, ख्य, क्ष, त्क्ष, क्ष्य, ष्क, स्क, स्ख, :ख के बदले क्ख तथा ख होता है। जैसे:—उत्खण्डित—उक्खण्डिअ, व्याख्यान—वक्खाण, क्षय—खय, क्षण—खण, अक्षि—अक्खि, उत्क्षिप्त—उक्खित्त, लक्ष्य—लक्ख, शुष्क—सुक्ख, आस्कन्दति—अक्खंदइ, स्कन्द—खंद, स्खलित—खलिअ, स्खलन—खलण, स्खलति—खलइ, दुःख—दुक्ख।

(३) ड्ग, ग्ण, द्ग, ग्न, ग्म, ग्य, ग्र, र्ग, ल्ग के बदले ग्ग तथा ग का प्रयोग होता है। जैसे :—खड्ग—खग्ग, रुग्ण—रुग्ग, अथवा लुग्ग, मुद्ग—मुग्ग, नग्न—नग्ग, युग्म—जुग्ग, योग्य—जुग्ग, अग्र—अग्ग, ग्रास—गास, ग्रसते—गसते, वर्ग—वग्ग, वल्गा—वग्गा।

(४) द्घ, घ्न, घ्र, र्घ, के स्थान में ग्घ तथा घ होता है। जैसे :—उद्घाटित—उग्घाडिअ, विघ्न—विग्घ, शीघ्रम्—सिग्घं, घ्राण—घाण, अर्घ—अग्घ।

(५) च्य, र्च, श्च, त्य के स्थान पर च्च तथा च होता है। जैसे :—अच्युत—अच्चुअ, च्युत—चुअ, अर्चा—अच्चा, निश्चल—निच्चल, सत्य—सच्च, त्याग—चाय, त्यजति—चयइ।

(६) र्छ, छ्र, क्ष, त्क्ष, क्ष्म, त्स, थ्य, त्स्य, प्स, श्च के स्थान में च्छ तथा छ होता है। जैसे:—मूर्छा—मुच्छा, कृच्छ्र—किच्छ, क्षेत्र—छेत्त,

---

१. यहाँ (इस विभाग में) दिये गये सभी उदाहरणों में डबल क्क, क्ख, ग्ग, ग्घ, आदि अक्षरों के प्रयोग के विषय में जो कहा गया है, उनका उपयोग शब्द के अन्दर करना चाहिए और जो इकहरा क, ख, ग, आदि कहा है उसका उपयोग शब्द के आदि में करना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अक्षि—अच्छि, उत्क्षिप्त—उच्छित्त, लक्ष्मी—लच्छी, क्षमा—छमा, वत्स—वच्छ, मिथ्या—मिच्छा, मत्स्य—मच्छ, लिप्सा—लिच्छा, आश्चर्य—अच्छेर।

(७) ब्ज, ज्ञ, ज्र, र्ज, ज्व, द्य, र्य, य्य के स्थान में ज्ज तथा ज होता है। जैसे :—कुब्ज—खुज्ज, सर्वज्ञ—सव्वज्ज, वज्र-वज्ज, वर्ज्य-वज्ज, गर्जति—गज्जइ, प्रज्वलित—पज्जलित, ज्वलित—जलिअ, विद्या—विज्जा, कार्य—कज्ज, शय्या—सेज्जा।

(८) ध्य, ध्व, ह्य, के स्थान में ज्झ तथा झ होता है। जैसे :—मध्य—मज्झ, साध्य—सज्झ, ध्यान—झाण, ध्यायति—झायइ, साध्वस-सज्झस, बाह्य—बज्झ, सह्य—सज्झ।

(९) र्त के स्थान में ट्ट होता है। जैसे :—नर्तकी—नट्टई।

(१०) ष्ट, ष्ठ, स्थ, स्त, के स्थान में ट्ठ तथा ठ होता है। जैसे :—दृष्टि—दिट्ठि, गोष्ठी—गोट्ठी, अस्थि—अट्ठि, स्थित—ठिअ, स्तम्भ—ठंभ,।

(११) र्त तथा र्द के स्थान में ड्ड होता है। जैसे :—गर्त—गड्ड, गर्दभ—गड्डह।

(१२) र्ध, द्ध, ग्ध, ब्ध तथा ढ्य के स्थान में ड्ढ होता है। जैसे :—अर्ध—अड्ढ, वृद्ध—बुड्ढ, दग्ध—दड्ढ, स्तब्ध—ठड्ढ, आढ्य—अड्ढ।

(१३) ज्ञ, म्न, न्न, ण्य, न्य, र्ण, ण्व, न्व के स्थान में ण्ण तथा ण अथवा न्न तथा न होता है। यथा:—सर्वज्ञ—सव्वण्णु-सव्वन्नु, यज्ञ—जण्ण—जन्न, ज्ञान—णाण—नाण, विज्ञान—विण्णाण—विन्नाण, प्रद्युम्न—पज्जुण्ण—पज्जुन्न, प्रसन्न—पसण्ण—पसन्न, पुण्य—पुण्ण—पुन्न, न्याय—णाय—नाय, अन्योऽन्य—अण्णोण्ण—अन्नोन्न, मन्यते—मण्णए—मन्नए, वर्ण—वण्ण-वन्न, कण्व—कण्ण—कन्न, अन्वेषण—अण्णेसण—अन्नेसण, अन्वेषयति—अण्णेसेइ—अन्नेसेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१४) क्ष्ण, क्ष्म, श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्न, के स्थान में ण्ह अथवा न्ह होता है। यथा :—तीक्ष्ण–तिण्ह–तिन्ह, सूक्ष्म–सण्ह, प्रश्न–पण्ह–पन्ह, विष्णु–विण्हु–विन्हु, स्नान–ण्हाण–न्हाण, प्रस्नुत–पण्हुअ–पन्हुअ। प्रस्नव–पण्हव–पन्हव, पूर्वाह्ण–पुव्वण्ह–पुव्वन्ह, वह्नि–वण्हि–वन्हि।

(१५) क्त, प्त, त्न, त्म, त्र, त्व, र्त के स्थान में त्त तथा त होता है। जैसे :—भुक्त–भुत्त, सुप्त–सुत्त, पत्नी-पत्ती, आत्मा–अत्ता, त्राण–ताण, शत्रु–सत्तु, त्वं–तं, सत्त्व–सत्त, मुहूर्त–मुहुत्त।

(१६) क्थ, त्र, थ्य, र्थ, स्त, स्थ के स्थान में त्थ तथा थ होता है। जैसे :— सिक्थक–सित्थअ, तत्र–तत्थ, तथ्य–तत्थ, पथ्य–पत्थ, स्तम्भ–थंभ, स्तुति–थुइ, स्थिति–थिति।

(१७) ब्द, द्र, र्द, द्व, के स्थान में द्द तथा द होता है। जैसे :— अब्द–अद्द, भद्र–भद्द, आर्द्र–अद्द, द्वि–दि, द्वैत–दइअ, अद्वैत–अद्दइअ, द्वौ–दो।

(१८) ग्ध, ब्ध, र्ध, ध्व, के स्थान में द्ध तथा ध होता है। जैसे :— स्निग्ध–निद्ध, लब्ध–लद्ध, अर्ध–अद्ध, ध्वनति–धणइ।

(१९) न्त के स्थान में न्द होता है (शौरसेनी भाषा में)। निश्चिन्त–निच्चिन्द, अन्तःपुर–अन्देउर। महत्–महन्त–महन्द, पचत्–पचन्त–पचन्द, प्रभावयत्–पभावन्त–पहावन्द, किन्तु–किन्दु।

(२०) त्प, त्म, प्य, प्र, र्प, ल्प, प्ल, क्म, ड्म के स्थान में प्प तथा प होता है। जैसे :—उत्पल–उप्पल, आत्मा–अप्पा, प्यायते–पायए, विज्ञप्य–विण्णप्प, प्रिय–पिय, अप्रिय–अप्पिय, अर्पयति–अप्पेइ, अल्प–अप्प, प्लव–पव, विप्लव–विप्पव, प्लवते–पवए, रुक्म–रुप्प, रुक्मिणी–रुप्पणी, कुड्मल–कुंपल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२१) त्फ, ष्प, ष्फ, स्प, स्फ के स्थान में प्फ तथा फ होता है। जैसे :— उत्फुल्ल—उप्फुल्ल, पुष्प—पुप्फ, निष्फल—निप्फल, स्पर्श—फंस, स्पृशति—फरिसइ, स्फुट—फुड, स्फुरति—फुरइ, स्फुरण—फुरण।

(२२) द्ब, द्व, र्ब, ब्र, र्व, व्र के स्थान में ब्ब तथा ब अथवा व्व तथा व होता है। जैसे :—उद्बन्ध्य—उब्बंधिय, द्वे—वे अथवा बे, द्वीनि—विन्नि, वेन्नि अथवा बिन्नि बेन्नि, बर्बर—बब्बर, ब्राह्मण—बम्हण, अब्रह्मण्य—अब्बम्हण्ण, सर्व—सब्व सव्व, व्रजति—वयइ, व्रज—वज।

(२३) ग्भ, द्भ, भ्य, र्भ, भ्र, ह्व के स्थान में ब्भ तथ भ होता है। जैसे :—प्राग्भार—पब्भार, सद्भाव—सब्भाव, सभ्य—सब्भ, गर्भ—गब्भ, भ्रम—भम, विभ्रम—विब्भम, विह्वल—विब्भल।

(२४) ग्म, ङ्म, ण्म, न्म, म्य, र्म, म्र, ल्म के स्थान में म्म तथा म होता है। जैसे :—युग्म—जुम्म, दिङ्मुख—दिम्मुह, वाङ्मय—वम्मय, षण्मुख—छम्मुह, जन्म—जम्म, मन्मन—मम्मण, गम्य—गम्म, सौम्य—सोम्म, धर्म—धम्म, कम्र—कम्म, म्रेडित—मेडिअ, जाल्म—जम्म, गुल्म—गुम्म।

(२५) द्म, ष्म, स्म, और ह्म के स्थान में म्ह होता है। जैसे :—पद्म—पम्ह, ग्रीष्म—गिम्ह, विस्मय—विम्हय, ब्राह्मण—बम्हण।

शब्द विभाग

सभी प्राकृत भाषाओं में दो प्रकार के शब्द होते हैं—संस्कृतसम और देश्य। जो शब्द संस्कृत भाषा से बिल्कुल अथवा थोड़ी समानता से मिलते-जुलते हैं। वे संस्कृतसम कहलाते हैं और जो शब्द बहुत प्राचीन होने के कारण व्युत्पत्ति की दृष्टि से संस्कृत भाषा के साथ अथवा प्राकृत भाषा के साथ मेल नहीं खाते (अथवा मिलते-जुलते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नहीं हैं) वे देश्य शब्द माने जाते हैं। ये देश्य शब्द बहुत प्राचीन हैं। वेद आदि प्राचीन शास्त्रों में, संस्कृतभाषा के साहित्य में तथा कोषों में देश्य शब्दों का प्रयोग बहुलता से हुआ है। देश्य शब्दों में बहुत से अनार्य तथा बहुत से द्राविड़ भाषा के शब्द भी मिले हुए हैं। श्री हेमचन्द्राचार्य ने ऐसे देश्य शब्दों का संग्रह कर 'देशी-शब्द-संग्रह' (देसी-सद्द-संगह) नाम से एक स्वतंत्र कोश की रचना की है। उन्होंने स्वयं इस कोश की टीका भी लिखी है।

संस्कृतसम प्राकृत शब्दों के दो प्रकार हैं। कुछ तो संस्कृत से बिल्कुल मिलते हैं, लेकिन कुछ थोड़ी समानता लिये हुए हैं।

संस्कृत से मिलते-जुलते नामरूप शब्द

प्राकृत	संस्कृत
संसार	संसार
दाह	दाह
दावानल	दावानल
नीर	नीर
संमोह	संमोह
धूलि	धूलि
समीर	समीर इत्यादि

संस्कृत से मिलते-जुलते क्रियापद

प्राकृत	संस्कृत
भेदति	भेदति
हनति	हनति
घाति	घाति
मरते	मरते इत्यादि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ समानता लिये हुए नामरूप शब्द

प्राकृत	संस्कृत
कणग	कनक
सुवण्ण-सुवन्न	सुवर्ण
विलया	वनिता
घर	गृह
इत्थी	स्त्री
रुक्ख	वृक्ष
वाणारसी	वाराणसी

कुछ मिलते-जुलते क्रियापद

कुणति	कृणोति (तृतीय पुरुष एकवचन)
नच्चति	नृत्यति
पुच्छति	पृच्छति
जीहति	जिह्रेति
चवति	वच्ति (प्रयोग में वक्ति)
जुज्झति-जुज्झते	युध्यते
वन्दित्ता	वन्दित्वा (सम्बन्धक भूतकृदन्त)
कत्तवे कातवे करित्तए	कर्तवे (हेत्वर्थक कृदन्त)

देश्य	संस्कृत	गुजराती	हिन्दी
खडक्की		खडकी	खिड़की
खड्डा	गर्त	खाडो	खड्डु अथवा गडढा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओज्झरी	होजरी	उदर (पेट)
अआलि अकाले (?)	एली-हेली-वरसादनी एली, बरसाती	
गडयडी	गडगडाट	गड़गड़ाहट कीड़ा
गागरी गर्गरी	गागर	गगरी, गागर
छासी	छाश	छाछ (मट्ठा)
जोवारी	जुवार	जुआर, ज्वार (अनाज)

देश्य शब्दों में तामिल—तेलुगु और अरबी—फारसी आदि अनेक भाषाओं के शब्द भी होते हैं।

शब्द रचना

प्राकृत शब्दों को समझने के लिए प्राचीन काल से ही संस्कृत शब्दों के माध्यम से प्राकृत बनाने की जो परम्परा चली आयी है, प्रस्तुत पुस्तक में उसी परम्परा का आश्रय लिया गया है।

स्वरों का सामान्य परिवर्तन

जिन नियमों के साथ नागरी अंक लगे हुए हैं उन्हें सामान्य नियम समझना चाहिये और जिन नियमों के साथ अंग्रेजी अंक लगाये हुए हैं उन्हें विशेष-नियम समझना चाहिए। इसी प्रकार खास-खास भाषाओं के नाम लेकर परिवर्तन के जो नियम बनाये गये हैं वे सूचित नियम उन खास भाषाओं के साथ सम्बन्धित हैं और जो नियम किसी विशेष भाषा का नाम लिये बिना अथवा प्राकृत भाषा का नाम लेकर बताये गये हैं वे साधारणतः यहाँ बतायी गयी सभी भाषाओं के साथ सम्बन्ध रखते हैं। परन्तु इन नियमों के प्रयोग करने से पहले अपवादात्मक नियमों की ओर पूरा ध्यान देना अनिवार्य है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्रस्व से दीर्घ[1]

संस्कृत	प्राकृत
कश्यप	कासव
पश्य	पास
आवश्यक	आवासय
मिश्र	मीस
विश्राम	वीसाम
संस्पर्श	संफास
अश्व	आस
विश्वास	वीसास
दुश्शासन	दूसासण
पुष्य	पूस
मनुष्य	मणूस
वर्ष	वास
वर्षा	वासा
कर्षक	कासअ
विष्वक्	वीसुं
विष्वाण	वीसाण
निषिक्त	नीसित्त
कस्य	कास
सस्य	सास

१. हेमचन्द्र–प्राकृत-व्याकरण ८।१।४३।

परिवर्तन के विधान को समझने के लिए सभी सूत्रों के अंक दिये गये हैं। अतः सूत्रों के जो-जो उदाहरण यहाँ नहीं दिये गये हैं, वे सभी उदाहरण उन-उन सूत्रों को देखकर समझ लें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संस्कृत	प्राकृत
विस्रम्भ	वीसंभ
उस्र	ऊस
निस्व	नीस
विकस्वर	विकासर
निस्सह	नीसह

(पालि भाषा में भी ऐसा परिवर्तन होता है। जैसे; परामर्श—परामास—देखो पालि-प्रकाश, पृ० ११ टिप्पण)

दीर्घ से ह्रस्व[1]

(२)

संस्कृत	प्राकृत
आम्र	अम्ब
ताम्र	तम्ब
तीर्थ	तित्थ
मुनीन्द्र	मुणिन्द
चूर्ण	चुन्न-चुण्ण
नरेन्द्र	नरिंद
म्लेच्छ	मिलिच्छ / मिलिक्ख
नीलोत्पल	नीलुप्पल

(पालि भाषा में भी दीर्घ का ह्रस्व—ए का 'इ', ओ का 'उ' तथा औ का 'उ' होता है। देखो, पा० प्र०—पृ० ८, नियम ११, पृष्ठ ५५ और पृ० ५)

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।८४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) आ को अ[1]

प्रकार	पयर	पयार
प्रचार	पयर	पयार
प्रहार	पहर	पहार
प्रवाह	पवह	पवाह
प्रस्ताव	पत्थव	पत्थाव

यहाँ यह नियम स्मरण में रखना चाहिए कि ये सभी नाम भाववाचक और नरजाति के ही हैं।

(४) इ को ए[2]

पिष्ट	पेट्ठ	पिट्ठ
सिन्दूर	सेन्दूर	सिंदूर
पिण्ड	पेंड	पिंड
विष्णु	वेण्हु	विण्हु
बिल्व	बेल्ल	बिल्ल

इन सभी उदाहरणों में 'इकार' संयुक्त अक्षर के पूर्व में आया हुआ है।

(पालि भाषा में भी ऐसा ही विधान है। देखो, पा० प्र० पृ० ३–इ = ए)

(५) उ को ऊ[3]

उत्सरति	ऊसरइ
उत्सव	ऊसव

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।६८। ; २. हे० प्रा० व्या० ८।१।८५। ;
३. हे० प्रा० व्या० ८।१।११४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उच्छ्वसति	ऊससइ
उच्छ्वास	ऊसास

इन उदाहरणों में 'उ' के पश्चात् त्स अथवा च्छ् आया हुआ है।

(६) उ को ओ[1]

कुट्टिम	कोट्टिम
तुण्ड	तोंड
पुद्गल	पोग्गल
मुस्ता	मोत्था
पुस्तक	पोत्थअ

इन उदाहरणों में 'उ' संयुक्त अक्षर के पूर्व में आया हुआ है।

(पालि भाषा में इसी प्रकार 'उ' को ओकार होता है। देखो, पा० प्र० पृ० ५४—उ=ओ)

(७) ऋ को अ[2]

घृत	घय
तृण	तण
कृत	कय

(पालि भाषा में भी 'ऋ' को 'अ' होता है। देखो, पा० प्र० पृ० १—ऋ=अ)

(८) ऋ को उ[3]

पितृगृहं	पिउघरं
मातृगृहम्	माउघरं
मातृष्वसा	माउसिया

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।११६।

२. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२६। ; ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(९) ऋ को रि[1]

ऋद्धि	रिद्धि
ऋक्ष	रिच्छ
सदृश	सरिस
सदृक्ष	सरिक्ख
सदृक्	सरि
ऋण	रिण–अण
ऋषभ	रिसह-उसह

(पालि भाषा में भी 'ऋ' को 'रि' होता है । देखो, पा० प्र० पृष्ठ ३—ऋ=रि टिप्पण)

सदृश आदि शब्दों में दकार लोप करने के बाद जो 'ऋ' शेष रहती है उसको 'रि' होता है ।

पैशाची भाषा में सरिस (सदृश) के बदले सतिस रूप बनता है । इसी प्रकार जारिस (यादृश) के बदले यातिस, अन्नारिस (अन्यादृश) के बदले अन्नातिस आदि रूप बनते हैं (हे० प्रा० व्या० ८।४।३१७।) ।

(१०) ऌ को इलि[2]

क्लृन्न	किलिन्न
क्लृप्त	किलित्त

(११) ऐ को ए[3]

शैल	सेल
कैलास	केलास
वैधव्य	वेहव्व

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४०, १४१, १४२. ।

२. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४५। ; ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पालि भाषा में भी 'ऐ' को 'ए' होता है। देखो, पा० प्र०–पृ० ३—ऐ=ए)

(१२) **औ को ओ**[1]

कौशाम्बी	कोसंबी
यौवन	जोव्वण
कौस्तुभ	कोत्थुह

(पालि भाषा में भी 'औ' को 'ओ' होता है। देखो, पा०–प्र० पृ० ५–औ=ओ)

अपभ्रंश[2] प्राकृत भाषा में स्वरों का परिवर्तन व्यवस्थित रूप से नहीं होता। याने कहीं तो 'आ' को 'अ' होता है, कहीं 'ई' को 'ए' होता है, कहीं 'उ' को 'अ' तथा 'आ' होता है। 'ऋ' को 'अ', 'इ' तथा 'उ' होता है कहीं 'ऋ' भी रहती है। 'लृ' को 'इ' तथा 'इलि' 'ए' को 'इ' तथा 'ई' और 'औ' को 'ओ' तथा 'अउ' होता है।

'आ' को 'अ'–काच–कच्चु, काच्चु अथवा काच्च।
'ई' को 'ए'–वीणा–वेण, वीण, वीणा।
'उ' को 'अ' तथा 'आ'–बाहु, बाह, बाहा, बाहु।
ऋ को 'अ', 'इ', 'उ'–पृष्ठी–पट्ठि, पिट्ठि, पुट्ठि,
तृण–तणु, तिणु, तृणु,
सुकृत–सुकिदु, सुकिउ, सुकृदु।
लृ को 'इ', 'इलि'–क्लृन्न, किन्नउ, किलिन्नउ।
ए को 'इ', 'ई',–लेखा, रेखा } लिह, लीह, लेह।
औ को 'ओ' तथा 'अउ'–गौरी, गोरि, गउरि।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५६। ; २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२६, ३३०.।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपभ्रंश प्राकृत में किसी भी विभक्ति के आने के पश्चात् नामरूप शब्द का अन्त्य स्वर ह्रस्व हो तो दीर्घ हो जाता है और दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है। जैसे :—

धवल–ढोल्ला	(अ को आ)	प्रथमा विभक्ति
श्यामल–सामला	(,, ,,)	,,
दीर्घ–दीहा	(अ को आ)	द्वितीया विभक्ति
रेखा–रेह	(आ को अ)	प्रथमा विभक्ति
भणिता–भणिअ	(आ को अ)	,,

देखिये—हे० प्रा० व्या० ८।४।३३०।

—: * :—

स्वरों का विशेष–आपवादिक-परिवर्तन

१. 'अ' का परिवर्तन

'अ' को 'आ'[1]

अभियाति	आहियाइ	अहियाइ
दक्षिण	दाहिण	दक्खिण
प्ररोह	पारोह	परोह
प्रवचन	पावयण	पवयण
पुनः	पुना	पुण
समृद्धि	सामिद्धि	समिद्धि आदि

(पालि भाषा में भी 'अ' को 'आ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५२–अ=आ)

'अ' को 'इ'[2]

उत्तम	उत्तिम
कतम	कइम

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।४४, ४५ तथा ६५। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।४६, ४७, ४८, ४६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मरिच	मिरिअ
मध्यम	मज्झिम
दत्त	दिण्ण
अङ्गार	इंगार, अंगार
पक्व	पिक्क, पक्क
ललाट	णिडाल, णडाल

(पालि भाषा में भी 'अ' को 'इ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृष्ठ ५२–अ=इ।)

'अ' को 'ई'[1]

हर–हीर, हर सं० हीर

'अ' को 'उ'[2]

ध्वनि	झुणि
कृतज्ञ	कयण्णु

(पालि भाषा में भी 'अ' को 'उ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५२–अ = उ)

'अ' को 'ए'[3]

अत्र	एत्थ	
शय्या	सेज्जा	पालि–सेय्या
वल्ली	वेल्ली सं० वेल्लि।	
कन्दुक	गेंदुअ सं०[4] गेन्दुक, गिन्दुक।	

(पालि भाषा में भी 'अ' को 'ए' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५२–अ = ए)

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।५१। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।५२, ५३, ५४, ५५, ५६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।५७, ५८, ५९, ६०। ४. सं० संस्कृत भाषा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अ' को 'ओ'[1]

नमस्कार	नमोक्कार
परस्पर	परोप्पर
पद्म	पोम्म
अर्पयति	ओप्पेइ, अप्पेइ
स्वपिति	सोवइ, सुवइ
अर्पित	ओप्पिअ, अप्पिअ

'अ' को 'अइ'[2]

विषमय	विसमइअ
सुखमय	सुहमइअ

'अ' को 'आइ'[3]

पुनः पुणाइ, पुणा, पुण
न पुनः न उणाइ, न उणा, न उण

'अ' का लोप[4]

अरण्य	रण्ण	अरण्ण
अलाबू	लाऊ	अलाऊ

—: * :—

२. आ का परिवर्तन

'आ' को 'अ'[5]

श्यामाक	सामअ सं० श्यामक।
महाराष्ट्र	मरहट्ठ

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।६१, ६२, ६३, ६४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।५०। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।६५। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।६६। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।६७।६६,७०,७१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालक	कलअ, कालअ
कुमार	कुमर, कुमार सं० कुमर
हालिक	हलिअ, हालिअ
प्राकृत	पयय, पायय
चामर	चमर, चामर सं० चमर
वा	व, वा
यथा	जह, जहा
तथा	तह, तहा
अथवा	अहव, अहवा

(पालि भाषा में भी 'आ' को 'अ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५२–आ=अ)

'आ' को 'इ'[1]

आचार्य	आइरिअ, आयरिअ
निशाकर	निसिअर, निसाअर

'आ' को 'ई'[2]

खल्वाट	खल्लीड
स्त्यान	ठीण, थीण

'आ' को 'उ'[3]

आर्द्र	उल्ल
स्तावक	थुवअ
सास्ना	सुण्हा

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।७२,७३। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।७४।
३. हे० प्रा० व्या० ८।१।७५।८२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'आ' को 'ऊ'[1]

आर्या	अज्जू
आसार	ऊसार, आसार

'आ' को 'ए'[2]

ग्राह्य	गेज्झ
पारापत	पारेवअ, पारावअ
द्वार	देर, दार
असहाय्य	असहेज्ज, असहज्ज
पुराकर्म	पुरेकम्म, पुराकम्म
मात्र	मेत्त

(पालि भाषा में भी 'आ' को 'ए' होता है। देखिये—**पा० प्र० पृ०** ५३—आ=ए)

'आ' को 'ओ'[3]

आर्द्र	ओल्ल, अल्ल

---

३. इ का परिवर्तन

'इ' को 'अ'[4]

इति	इअ
तित्तिरि	तित्तिर सं० तित्तिर
पथिन्	पह

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।७६, ७७। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।७८, ७९, ८०, ८१। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।८२, ८३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।९१, ८८, ८९, ९०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरिद्रा	हलद्दा
इङ्गुद	अंगुअ, इङ्गुअ
शिथिल	सढिल, सिढिल

(पालि भाषा में भी 'इ' को 'अ' होता है। देखिये—पालि प्र० पृ० ५३–इ=अ)

'इ' को 'ई'[1]

जिह्वा	जीहा (अवेस्ता भाषा में हिज्वा)
सिंह	सीह
निस्सरति	नीसरइ, निस्सरइ

'इ' को 'उ'[2]

द्वि	दु
इक्षु	उच्छु, इक्खु
नि	नु, णु
युधिष्ठिर	जहुट्ठिल, जहिट्ठिल
द्वितीय	दुइअ, बिइअ
द्विगुण	दुउण, बिउण

(पालि भाषा में भी 'इ' को 'उ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३–इ = उ तथा पृष्ठ ३२ टिप्पण)

'इ' को 'ए'[3]

मिरा	मेरा
किंशुक	केसुअ, किंसुअ

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।९२।९३। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।९४, ९५, ९६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।८७, ८६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पालि भाषा में भी 'इ' को 'ए' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३–इ = ए)

'इ' को 'ओ'[1]

द्विवचन	दोवयण
द्विधा	दोहा, दुहा
निर्झर	*ओज्झर, निज्झर

(पालि भाषा में भी 'इ' को 'ओ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३–इ = ओ)

---

४. ई का परिवर्तन

'ई' को 'अ'[2]

हरीतकी	हरडई (पालि हरीटकी)

(पालि भाषा में 'ई' को 'अ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३–ई = अ)

'ई' को 'आ'[3]

कश्मीर	कम्हार

'ई' को 'इ'[4]

द्वितीय	दुइय
गभीर	गहिर
व्रीडित	विलिअ
पानीय	पाणिअ, पाणीअ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।६७, ६४, ६८। * यहाँ 'न' सहित इ को 'ओ' समझना चाहिये। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।६६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१००। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवति	जिवइ, जीवइ
उपनीत	उवणिअ, उवणीअ

'ई' को 'उ'[1]

जीर्ण	जुण्ण, जिण्ण

'ई' को 'ऊ'[2]

तीर्थ	तूह, तित्थ
हीन	हूण, हीण सं० हूण
विहीन	विहूण, विहीण

'ई' को 'ए'[3]

बिभीतक	बहेडअ
पीयूष	पेऊस सं० पेयूष
नीड	नेड, नीड

---

५. उ का परिवर्तन

'उ' को 'अ'[4]

गुडूची	गलोई
युधिष्ठिर	जहुट्ठिल
मुकुट	मउड सं० मकुर
उपरि	अवरिं, उवरिं
गुरुक	गरुअ, गुरुअ

(पालि भाषा में 'उ' को 'अ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३—उ = अ—मुकुल—मकुल)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०२। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०३, १०४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०५, १०६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०७, १०८, १०९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'उ' को 'इ'[1]

पुरुष	पुरिस यास्फ–पुरिशय
भ्रुकुटि	भिउडि

(पालि भाषा में 'उ' को 'इ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५४–उ = इ)

'उ' को 'ई'[2]

क्षुत	छीअ

'उ' को 'ऊ'[3]

मुसल	मूसल
सुभग	सूहव, सुहअ

'उ' को 'ओ'[4]

कुतूहल	कोउहल, कुऊहल

(पालि भाषा में भी 'उ' को 'ओ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५४–उ = ओ)

---

६. ऊ का परिवर्तन

'ऊ' को 'अ'[5]

दुकूल	दुअल्ल, दुऊल

(पालि भाषा में भी 'ऊ' को 'अ' होता है। देखिये—पा० प्र० ० ५५–ऊ = अ)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।११०, १११। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।११२। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।११३, ११५। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।११७। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।११८, ११९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'ऊ' को 'ई'[1]

उद्व्यूढ	उव्वीढ, उव्वूढ

'ऊ' को 'उ'[2]

भ्रू	भु
हनूमत्	हणुमन्त
+ कण्डूया	कंडुया
कुतूहल	कोउहल, कोऊहल
मधूक	महुअ, महूअ सं० मधुक

'ऊ' को 'ए'[3]

नूपुर	नेउर, नूउर

'ऊ' को 'ओ'[4]

कूर्पर	कोप्पर (पालि कप्पर)
गुडूची	गलोई (पालि गोलोची)
तूण	तोण, तूण
स्थूणा	थोणा, थूणा

(पालि भाषा में भी 'ऊ' को 'ओ' होता है। देखिये—प्रा० प्र० पृ० ५५–ऊ=ओ)

———

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२०। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२१,१२२। + यहाँ 'कण्डूय' धातु भी समझना चाहिए। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२४,१२५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. ऋ का परिवर्तन

'ऋ' को 'आ'[1]

कृश	कास, किस
मृदुत्व	माउक्क, मउत्तण

'ऋ' को 'इ'[2]

उत्कृष्ट	उक्किट्ठ
ऋषि	इसि
ऋद्धि	इद्धि
श्रृगाल	सिआल
हृदय	हिअय
धृष्ट	धिट्ठ, धट्ठ
पृष्ठि	पिट्ठि, पट्ठि
बृहस्पति	बिहप्फइ, बहप्फइ
मातृष्वसृ	माइसिआ, माउसिआ
मृगांक	मियंक, मयंक

(पालि भाषा में भी 'ऋ' को 'इ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ०–२, ऋ=इ)

पैशाची[3] भाषा में हृदय के बदले हितप रूप बनता है। हृदय–हितप। हृदयक, हितपक।

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२७। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२८, १२९, १३०। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।३१०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'ऋ' को 'उ'[1]

भ्रातृ	भाउ
वृद्ध	वुड्ढ
वृद्धि	वुड्ढि
पितृ	पिउ
पृथिवी	पुहई
मृषा	मुसा, मोसा
वृषभ	उसह, वसह
बृहस्पति	बुहप्फइ, बहप्फइ

(पालि भाषा में भी 'ऋ' को 'उ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ०–२, ऋ=उ)

'ऋ' को 'ऊ'[2]

मृषा	मूसा, मुसा

'ऋ' को 'ए'[3]

वृन्त	वेंट, विंट

(पालि भाषा में भी 'ऋ' को 'ए' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ०–३, ऋ = ए)

'ऋ' को 'ओ'[4]

मृषा	मोसा, मुसा
वृन्त	वोंट, विंट

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३१, १३२, १३३, १३५, १३६, १३७, १३८। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३९। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३६, १३९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'ऋ' को 'अरि'[1]

दृप्त	दरिअ

'दृ' को 'ढि'[2]

आदृत	*आढिअ

---

८. ए का परिवर्तन

'ए' को 'इ'[3]

वेदना	विअणा
देवर	दिअर

'ए' को 'ऊ'[4]

स्तेन	थूण, थेण

(पालि भाषा में किसी-किसी शब्द में 'ए' को 'ओ' होता है। द्वेष-दोस, देखिये—पा० प्र० पृ० ५५—ए = ओ)

---

९. ऐ का परिवर्तन

'ऐ' को 'अअ'[5]

उच्चैस्	उच्चअ
नीचैस्	नीचअ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४३। *आदृत शब्द के रूप का विकास आरिअ—आडिअ—आढिअ इस तरह से होना चाहिए ? (?) ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४७। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'ऐ' को 'इ'[1]

शनैश्चर	सणिच्छर
सैन्धव	सिंधव
सैन्य	सिन्न, सेन्न

(पालि भाषा में 'ऐ' को 'इ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ४–ऐ–ई)

'ऐ' को 'ई'[2]

धैर्य	धीर
चैत्यवन्दन	चीवंदण, चेइयवंदण

(पालि भाषा में भी 'ऐ' को 'ई' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ४–ऐ=ई)

'ऐ' को 'अइ'[3]

चैत्र	चइत्त, चेत्त
वैशम्पायन	वइसंपायण, वेसंपायण
कैलास	कइलास, केलास
वैर	वइर, वेर
दैव	दइव्व, देव्व

---

१० औ का परिवर्तन

'औ' को 'अ'[4]

अन्योन्य	अन्नन्न, अन्नुन्न

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४६,१५०। २. हे० प्रा० व्या ८।१।१५५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५१, १५२, १५३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आतोद्य	आवज्ज, आउज्ज
मनोहर	मणहर, मणोहर

'ओ' को 'ऊ'[१]

सोच्छ्वास	सूसास

'ओ' को 'अउ, आअ'[२]

गोक	गउअ
गो	गउ
गो	गाअ, गाई (मादा जाति)

---

११. औ का परिवर्तन

'औ' को 'अउ'[३]

पौर	पउर
मौन	मउण
गौरव	गउरव
गौड	गउड
कौरव	कउरव

'औ' को 'आ'[४]

गौरव	गारव, गउरव

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५७। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५८। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६२। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६३।

(पालि भाषा में 'औ' को 'आ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५-औ = आ; कहीं-कहीं 'औ' को 'अ' भी हो जाता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५—टिप्पण)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'औ' को 'उ'[1]

शौद्धोदनि	सुद्धोअणि
सौवर्णिक	सुवण्णिअ
दौवारिक	दुवारिअ
सौन्दर्य	सुन्देर
कौक्षेयक	कुच्छेअय, कोच्छेअय

(पालि भाषा में 'औ' को 'उ' होता है। देखो—पा० प्र० पृ० ५–औ = उ)

'औ' को 'आव'[2]

नौ	नावा
गौ	गावी

—:※:—

व्यञ्जन का परिवर्तन

अन्त्य व्यञ्जन और दो स्वरों के बीच में रहनेवाले (असंयुक्त) व्यञ्जन का सामान्य परिवर्तन।

१. लोप

(क) शब्द के अन्तिम व्यञ्जन का लोप हो जाता है।[3]

तमस्	तम सं० तम
तावत्	ताव
अन्तर्गत	अन्तग्गय
पुनर्	पुण
अन्तर्-उपरि	अन्तोवरि

(पालि भाषा में भी शब्द के अन्तिम व्यञ्जन का लोप हो जाता है : विद्युत्—विज्जु। देखिये—पा० प्र० पृ० ६, नियम ७)

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६०, १६१। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ख) दो स्वरों के मध्य में आए हुए क, ग, च, ज, त, द, प, ब, य और व का लोप होता है[१]।

सं०	प्रा०	सं०	प्रा०
लोक	लोअ	मदन	मयण
नगर	नयर	रिपु	रिउ
शची	सई	विबुध	विउह
गज	गअ	वियोग	विओग
रसातल	रसायल	वडवानल	वलयाणल

लोप करते समय जहाँ अर्थ-भ्रान्ति की सम्भावना हो वहाँ लोप नहीं करना चाहिए। जैसे :—सुकुसुम, प्रयाग, सुगत, सचाप, विजण, सुतार, विदुर, सपाप, समवाय, देव, दानव आदि।

पालि, शौरसेनी मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाची और अपभ्रंश भाषाओं में यह नियम सार्वत्रिक नहीं—सापवाद है। इसे यथास्थान सूचित करेंगे।

(ख) के अपवाद

उपर्युक्त लोप का नियम, तथा इस प्रकरण में आनेवाले नियम और जहाँ कोई विशेष विधान सूचित न किया गया हो ऐसे दूसरे भी सामान्य और विशेष नियम पैशाची भाषा में नहीं लगते[२]।

पैशाची	प्राकृत
मकरकेतु	मयरकेउ
सगरपुत्तवचन	सयरपुत्तवयण
विजयसेन	विजयसेण
लपित	लविअ

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१७७। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाप	पाव
आयुध	आउह आदि

शौरसेनी में दो स्वरों के मध्य में स्थित 'त' को 'द' होता है[१]।

संस्कृत	शौरसेनी	प्राकृत
कथित	कधिद	कहिअ
ततः	तदो	तओ
प्रतिज्ञा	पदिण्णा	पइण्णा
मन्त्रित	मंतिद	मंतिअ

आपवादिक नियमों को छोड़ शौरसेनी में जिन परिवर्तनों के नियम बताए गए हैं वे सब मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाची और अपभ्रंश भाषा में भी समझने चाहिए[२]।

(पालि भाषा में भी 'त' को 'द' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५६—त = द)

मागधी भाषा में 'ज' को 'य' होता है।[3]

संस्कृत	मागधी	प्राकृत
जनपद	यणवद	जणवअ
जानाति	याणदि	जाणइ
गर्जित	गय्यिद	गज्जिअ

(पालि भाषा में भी 'ज' को 'य' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५७—ज = य)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६०। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०२, ३२३, ४४६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पैशाची भाषा में और चूलिका-पैशाची भाषा में 'त' कायम रहता है तथा 'द' को भी 'त' हो जाता है[1]।

सं०	पै०–चू० पै०	प्रा०
भगवती	भगवती	भगवई
मदन	मतन	मयण
कन्दर्प	कंतप्प	कंदप्प
दामोदर	तामोतर	दामोअर

(पालि भाषा में 'द' को 'त' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ६०—द=त)

चूलिका-पैशाची भाषा में 'ग' को 'क', 'ज' को 'च', और 'ब' को 'प' होता है[2]।

सं०	पै०	चू० पै०	प्रा०
गिरितट,	गिरितट	किरितट	गिरितड
नगर	नगर	नकर	नगर, नयर
नाग	नाग	नाक	नाग, नाय
जीमूत	जीमूत	चीमूत	जीमूअ
जर्जर	जज्जर	चच्चर	जज्जर
राजा	राजा	राचा	राया
बालक	बालक	पालक	बालअ
बर्बर	बब्बर	पप्पर	बब्बर
बान्धव	बंधव	पंथव	बंधव

कुछ वैयाकरण मानते हैं कि चूलिका-पैशाची भाषा में आदि में

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०७, ३२५। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आए हुए वर्गीय तृतीय व्यंजन का प्रथम व्यंजन और चतुर्थ व्यंजन का द्वितीय व्यंजन नहीं होता तथा युज् धातु के 'ज्' को भी 'च्' नहीं होता।[१]

सं०	पै०	चू० पै०	हेमचन्द्र चू० पै०	प्रा०
गति	गति	गति	कति	गइ
गिरि	गिरि	गिरि	किरि	गिरि
जीमूत	जीमूत	जीमूत	चीमूत	जीमूअ
ढक्का	ढक्का	ढक्का	ठक्का	ढक्का
बालक	बालक	बालक	पालक	बालअ
नियोजित	नियोजित	नियोजित	नियोचित	नियोजिअ

(पालि भाषा में 'ग' को 'क' तथा 'ज' को 'च' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५५,५७—ग=क तथा ज = च)

अपभ्रंश भाषा में किसी-किसी प्रयोग में 'क' को 'ग' होता है।[२]

संस्कृत	अपभ्रंश	प्राकृत
विक्षोभकर	विच्छोहगर	विच्छोहयर

२. अन्तिम व्यञ्जन को अ

कुछ शब्दों में अन्त्य-व्यञ्जन को 'अ' होता है।[३]

सं०	प्रा०
शरत्	सरअ
भिषक्	भिसअ (पालि भिसक्क)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२७। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९६।
३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. मध्यम व्यञ्जन को य

जिसके पूर्व में और अन्त में 'अ' तथा 'आ' हो ऐसे 'क', 'ग', 'च', 'ज' आदि के[१] लोप हो जाने पर शेष बचे 'अ' को 'य' और 'आ' को 'या[२]' होता है। जैसे :—

सं०	प्रा०	सं०	प्रा०
तीर्थंकर	तित्थयर	पाताल	पायाल
नगर	नयर	गदा	गया
कचग्रह	कयग्गाह	नयन	नयण
प्रजा	पया	लावण्य	लायण्ण

(पालि भाषा में 'क' और 'ज' को भी 'य' होता है। देखिए— पा० प्र० पृ० ५६, ५७—क = य, तथा ज = य)

४. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'ख', 'घ', 'थ', 'घ' तथा 'भ' को 'ह' होता है।[३] जैसे :—

मुख—मुह, मेघ—मेह, कथा—कहा, साधु—साहु, सभा—सहा।

अपवाद

शौरसेनी भाषा में 'थ' को 'ह' होता है और कहीं 'ध' भी होता है तथा 'ह' को कहीं 'ध' होता है।[४]

सं०	शौ०	प्रा०
नाथ	नाध, नाह	नाह
राजपथ	राजपध, राजपह	राजपह
इह	इध	इह

(पालि भाषा में 'घ', 'ध' और 'भ' को 'ह' होता है। देखिये— पा० प्र० पृ० ५६—घ = ह, पृ० ६०—ध = ह, पृ० ६२—भ = ह)

---

१. देखिए— पृ० ३३ लोप (ख)। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८०। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८७। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६७ तथा २६८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चूलिका-पैशाची भाषा में 'घ' को 'ख', 'झ' को 'छ', 'ड' को 'ट', 'ढ' को 'ठ', 'ध' को 'थ' और 'भ' को 'फ' होता है।[1]

सं०	चू० पै०	पै०	प्रा०
घर्म	खम्म	घम्म	घम्म
मेघ	मेख	मेघ	मेह
व्याघ्र	वक्ख	वग्घ	वग्घ
झर्झर	छच्छर	झज्झर	झज्झर
निर्झर	निच्छर	निज्झर	निज्झर, ओज्झर
प्रतिमा	पटिमा	पतिमा	पडिमा
तडाग	तटाक[2]	तडाग	तडाय
मण्डल	मंटल	मंडल	मंडल
डमरुक	टमरुक	डमरुक	डमरुअ
गाढ	काठ	गाढ	गाढ
षण्ढ	संठ	संढ	संढ
ढक्का	ठक्का	ढक्का	ढक्का
मधुर	मथुर	मधुर	महुर
धूलि	थूलि	धूलि	धूलि
बान्धव	पंथव	बंधव	बंधव
रभस	रफस	रभस	रहस
रम्भा	रम्फा	रंभा	रंभा
भगवती	फकवती	भगवती	भगवई

(पालि भाषा में 'ब' को 'प' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६२—ब = प)

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२५। २. 'तटाक' शब्द संस्कृत में भी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'ट' को 'ड' होता है[१]।

घट–घड, घटते–घडइ, नट–नड, भट–भड।

(पालि भाषा में 'ट' को 'ड' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ५८–ट = ड)

पैशाची भाषा में 'टु' को 'तु' भी होता है[२]।

सं०	पै०	प्रा०
कुटुम्ब	कुतुंब, कुटुंब	कुडुंब
कटुक	कतुअ, कटुक	कडुअ
पटु	पतु, पटु	पडु

६. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'ठ' को 'ढ' होता है[३]।

मठ–मढ, कुठार–कुढार, पठति–पढइ।

७. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'ड' को 'ल' होता है[४]।

तडाग–तलाय, गरुड–गरुल, क्रीडति–कीलइ।

(पालि भाषा में भी 'ड' को 'ळ' होता है और 'ण' को 'न' होता है। देखिए—क्रमशः पा० प्र० पृ० ४३–ड = ळ ; पा० प्र० पृ० ५८–ण = न)

८. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'न' को 'ण' नित्य तथा शब्द के आदि में रहे 'न' को 'ण' विकल्प से होता है[५]।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९५। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३११।
३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९९। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२०२।
५. हे० प्रा० व्या० ८।१।२२८, २२९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं०	प्रा०	सं०	प्रा०
कनक	कणय	नदी	णई, नई
वचन	वयण	नर	णर, नर
वदन	वयण	नयति	णेइ, नेइ

(पालि भाषा में 'ण' को 'न' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६१—न = ण)

पैशाची भाषा में 'ण' को 'न' होता है[1]।

सं०	पै०	प्रा०
गुण	गुन	गुण
गण	गन	गण

९. 'अ' तथा 'आ' के बाद आनेवाले 'प' को[2] 'व' ही होता है[3]।

कपिल—कविल, कपाल—कवाल, तपति—तवइ।
ताप—ताव, पाप—पाव, शाप—साव

१०. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'प' को 'व' होता है[4]।

उपसर्ग—उवसग्ग, उपमा—उवमा, गोपति—गोवइ, प्रदीप-पईव, महिपाल—महिवाल।

(पालि भाषा में 'प' को 'व' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६१, प = व)

अपभ्रंश भाषा में 'प' को 'व' भी होता है[5]।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०६। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१७९। ३. पृ० ३३—लोप (ख) का अपवाद है। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३१। ५. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं०	अप०	प्रा०
शपथ	सबध–सवध	सवह

११. प्राकृत और अपभ्रंश भाषा में दो स्वरों के बीच में आए हुए 'फ' को 'भ' अथवा 'ह' होता है।[१]

रेफ–रेभ, रेह। शिफा–सिभा, सिहा। मुक्ताफल–मुत्ताहल। 'मुत्ताभल' नहीं होता है। शफरी–सभरी, सहरी। सफल–सभल, सहल। अप० सभलअ।

१२. दो स्वरों के मध्य में आए हुए 'ब' को 'व' होता है।[२]

शबल–सवल, अलाबू–अलावू (पालि अलापू)

(पालि-भाषा में भी 'ब' को 'व' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६२, ब = व)

अपभ्रंश भाषा में दो स्वरों के बीच में आए हुए 'म' को विकल्प से 'वँ' होता है।[३]

सं०	अप०	प्रा०
कमल	कवँल, कमल	कमल
भ्रमर	भवँर, भमर	भमर
यथा	जिवँ, जिम	जह, जहा
कुमर	कुवँर, कुमर	कुमर
तथा	तिवँ, तिम	तह, तहा

१३. शब्द के आदि में 'य' को 'ज' होता है।[४]

यज्ञ–जन्न, यशस्–जसो, याति–जाइ। यम–जम, यथा–जहा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३६। तथा ८।४।३९६। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३७। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९७। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पालि भाषा में भी 'य' को 'ज' होता है। गवय = गवज देखिए—पा० प्र० पृ० ६२)

मागधी भाषा में शब्द के आदि 'य' का 'य' ही रहता है।[१]

सं०	मा०	प्रा०
याति	यादि	जाइ
यथा	यधा	जहा
यान	याण	जाण

मागधी भाषा में 'र' के स्थान में 'ल' होता है[२]।

सं०	मागधी	प्रा०
कर	कल	कर
विचार	विआल	विआर
नर	नल	नर

चूलिका-पैशाची में 'र' के स्थान में विकल्प से 'ल' होता है[3]

सं०	चू० पै०	प्रा०
हर	हल, हर	हर

पैशाची भाषा में 'ल' के स्थान मे 'ळ' होता है[४]।

सं०	पै०	प्रा०
कमल	कमळ	कमल
कुल	कुळ	कुल
शील	सीळ	सील

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६२। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२८८। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैदिक भाषा में 'ड' के स्थान में 'ळ' हो जाता है ।

"अग्निमीळे पुरोहितम्" ऋग्वेद का प्रारम्भिक छन्द ।

(पालि भाषा में भी 'ड' को 'ल' हो जाता है । देखिए—पा० प्र० पृ० ४३, ड = ळ)

१४. मागधी भाषा को छोड़कर सभी प्राकृत भाषाओं में 'श' तथा 'ष' के स्थान में 'स' होता है[१] ।

कुश–कुस । दश–दस । विंशति–विसइ । शब्द–सद्द । शोभा–सोहा । कषाय–कसाय । घोष–घोस । निकष–निकस । षण्ड–संड । पौष–पोस । विशेष–विसेस । शेष–सेस । निःशेष–नीसेस ।

मागधी भाषा में 'श', 'ष' तथा 'स' के स्थान में केवल 'श' ही बोला जाता है[२] ।

सं०	मा०	प्रा०
शोभन	शोभण	सोहण ।
श्रुत	शुद	सुअ ।
सारस	शालश	सारस ।
हंस	हंश	हंस ।
पुरुष	पुलिश	पुरिस ।

१५. यदि अनुस्वार से परे 'ह' आया हो तो उसके स्थान में 'घ' भी हो जाता है[३] ।

सिंह सिंघ, सीह । संहार संघार, संहार ।

१६ (अपवादनियम को छोड़कर सामान्य प्राकृत में बताए सभी नियम शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाची और अप-

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६० तथा ८।४।३०६ । २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२८८, ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ्रंश भाषा में भी लागू होते हैं। जैसे:—१४ वाँ नियम शौरसेनी, पैशाची, चूलिका-पैशाची और अपभ्रंश में भी लागू होता है।)

—:०:—

शब्द के बीच में स्थित असंयुक्त व्यञ्जन के *विशेष परिवर्तन।

१. [1]'क' का परिवर्तन

'क' को 'ख' कर्पर—खप्पर। कील—खील। कीलक—खीलअ। कुब्ज—खुज्ज (खुज्ज=कुबडा)।

'क' को 'ग' अमुक—अमुग। असुक—असुग। आकर्ष—आगरिस। आकार—आगार। उपासक—उवासग। एक—एग। एकत्व—एगत्त। कन्दुक—गेन्दुअ। सं० गेन्दुक। तीर्थंकर—तित्थगर। दुकूल—दुगुल्ल। मदकल—मयगल। मरकत—मरगय। श्रावक—सावग। लोक—लोग।

'क' को 'च' किरात—चिलाअ (चिलाअ याने भील)।

'क' को 'भ' शीकर—सीभर, सीअर।

'क' को 'म' चन्द्रिका—चन्दिमा। सं० चन्द्रिमा।

'क' को 'व' प्रकोष्ठ—पवट्ठ, पउट्ठ।

'क' को 'ह' चिकुर—चिहुर। सं० चिहुर। निकष—निहस। स्फटिक—फलिह। शीकर—सीहर, सीअर।

(पालि भाषा में 'क' को 'ख' तथा 'ग' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ५५, क=ख तथा क=ग)

---

*जहाँ परिवर्तन का विशेष नियम लागू होता है वहाँ परिवर्तन का सामान्य नियम नहीं लगता ऐसी बात नहीं है। जैसे:—तीर्थंकर-तित्थयर। लोक—लोअ आदि। देखिए—पृ० ३३, सामान्य नियम १. (ख) तथा पृ० ३७, ३। १. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. [1]'ख' का परिवर्तन

'ख' को क शृङ्खला–संकला। शृङ्खल–संकल

३. [2]'ग' का परिवर्तन

'ग' को 'म' भागिनी–भामिणी। सं० भामिनी। पुंनाग–पुंनाम।
'ग' को 'ल' छाग–छाल। सं० छगल। छागी–छाली।
'ग' को 'व' सुभग–सूहव, सुहअ। दुर्भग–दूहव, दुहअ।

४. [3]'च' का परिवर्तन

'च' को 'ज' पिशाची–पिसाजी, पिसाई।
'च' को 'ट' आकुञ्चन–आउंटण तथा आउण्टण।
'च' को ल्ल पिशाच–पिसल्ल, पिसाअ।
'च' को 'स' खचित–खसिअ, खइअ।

५. [4]'ज' का परिवर्तन

'ज' को 'झ' जटिल–झडिल, जडिल।

६. [5]'ट' का परिवर्तन

'ट' को 'ढ' कैटभ–केढव। सकट–सयढ। सटा–सढा।
'ट' को 'ल' स्फटिक–फलिहो†। चपेटा–चविला, चविडा।
+पाटयति–फालेइ, फाडेइ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८९। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९०, १९१, १९२। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९३। तथा हे० प्रा० व्या० ८।१।१७७ वृत्ति। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९४। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९६, १९७, १९८। †देखो पृ० ४४–'क' का परिवर्तन। +यहाँ पाट् धातु समझना चाहिए। अतः इस धातु के सभी रूपों में यह नियम लागू होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पालि भाषा में 'ट' को 'ल' तथा 'ळ' दोनों होते हैं। देखिए-पालि प्र० पृ० ५८ – ट=ल, ट=ळ)

७. [1]'ठ' का परिवर्तन

'ठ' को 'ल्ल'	अङ्कोठ	अंकोल्ल
'ठ' को 'ह'	पिठर	पिहड, पिढर×

८. [2]'ण' का परिवर्तन

'ण' को ल' वेणु-वेलु, वेणु। वेणुग्गाम-वेलुग्गाम (बेलगांव)

(पालि भाषा में 'ण' को 'ळ' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ५८-ण = ळ)

९. [3]'त' का परिवर्तन

'त' को 'च'	तुच्छ-चुच्छ, तुच्छ
'त' को 'छ'	तुच्छ-छुच्छ, तुच्छ
'त' को 'ट'	तगर-टगर
	तूबर-टूबर
	त्रसर-टसर

(पालि भाषा में 'त' को 'ट' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ५८ – त = ट)

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२००, २०१। × देखिए नियम ६. पृ० ३६ 'ठ' का सामान्य परिवर्तन। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२०३। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, १५६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'त' को 'ड' पताका–पडाया

प्रति–पडि (पालि पटि)

÷प्रतिमा–पडिमा

प्रतिपत्–पडिवया (पडिवा–तिथि)

प्रतिहार–पडिहार

प्रभृति–पहुडि । प्राभृत–पाहुड। बिभीतक–बहेडअ । मृतक–मडअ । व्यापृत–वावड। सूत्रकृत–सुत्तगड। श्रुतकृत–सुअगड । हरीतकी–हरडई । अपहृत–ओहड, ओहय । अवहृत–अवहड, अवहय । आहृत–आहड, आहय । कृत–कड, कय । दुष्कृत–दुक्कड, दुक्कय । मृत–मड, मय । वेतस–वेडिस, वेअस । सुकृत–सुकड, सुकय । हृत–हड, हय ।

'त' को 'ण' अतिमुक्तक–अणिउँतय । गर्भित–गब्भिण ।

'त' को 'र' सप्तति–सत्तर ।

'त' को 'ल' अतसी–अलसी । सातवाहन–सालाहण। सं० सालवाहन । सातवाहनी–सालाहणी । पलित–पलिल, पलिअ ।

'त' को 'व' आतोद्य–आवज्ज, आउज्ज

पीतल–पीवल, पीअल

'त' को 'ह' वितस्ति–विहत्थि

(पालि भाषा में 'विदत्थि' होता है । देखिये–पा० प्र० पृ० ५६–त=द)

कातर काहल, कायर

भरत भरह, भरय

मातुलिंग–माहुलिंग, माउलिङ्ग

वसति–वसहि, वसइ

÷ जिन शब्दों में 'प्रति' लगा हो उन सभी शब्दों में यह नियम लगता है । जैसे :—प्रतिपत्ति–पडिवत्ति आदि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१० [1]'थ' का परिवर्तन

'थ' को 'ढ' प्रथम–पढम । मेथि–मेढि । सं० मेथि । शिथिल–सिढिल । निशीथ–निसीढ, निसीह । पृथिवी–पुढवी, पुहवी ।

(पालि में 'पठवी' होता है । देखिये–पा० प्र० पृ० ५६–थ=ठ)

'थ' को 'ध' पृथक्—पिधं, पिहं ।

११ [2]'द्' का परिवर्तन

'द्' को 'ड' ÷दंश्–डंस् । दह्–डह् । कदन–कडण, कयण । दग्ध–दड्ढ, दड्ढ । दण्ड–डंड, दंड । दम्भ–डंभ, दंभ । दर्भ–डब्भ, दब्भ । दष्ट–डट्ठ, दट्ठ आदि ।

(पालि भाषा में 'द' को 'ड' होता है । देखिये—पा० प्र० पृ० ५६–द=ड)

'दित' को 'ण्ण' रुदित–रुण्ण ।

'द्' को 'ध' ÷दीप्–धीप्, दीप् ।

'द्' को 'र' एकादश–एआरह । द्वादश–बारह । *त्रयोदश–तेरह । +कदली–करली । गद्गद्–गग्गर ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१५, २१६, १८८ । २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१८, २१७, २०६, २२३, २१६, २२०, २२१, २२२, २२४, २२५ । ÷ इस चिह्न वाले शब्द धातु हैं, अतः इन धातुओं के सभी रूपों में यह नियम लगता है । * यहाँ दकार वाले सभी शब्दों को संख्यावाचक समझना चाहिए । जो शब्द संख्यावाचक नहीं है उनको यह नियम नहीं लगता । + यहाँ कदली का अर्थ 'केले का वृक्ष' नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'द' को 'ल' प्रदीप–पलीव। दोहद–दोहल। कदम्ब–कलंब, कयंब; सं० कलम्ब।

(पालि भाषा में 'द' को 'ळ' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६०–द = ळ)

'द' को 'व' कदर्थित–कवट्टिअ।
'द' को 'ह' ककुद–कउह।

१२. [1]'ध' का परिवर्तन

'ध' को 'ढ' निषध–निसढ। औषध–ओसढ, ओसह।

१३. [2]'न' का परिवर्तन

'न' को 'ण्ह' नापित–ण्हाविअ, नाविअ। सं० स्नापक।
'न' को 'ल' निम्ब–लिंब, निंब।

(पालि भाषा में 'न' को 'ल' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६१–न=ल)

१४ [3]'प' का परिवर्तन

'प' को 'फ' पनस–फणस। सं० फनस तथा पणस।
√पाट् (धातु) फाड्।
पाटयति–फाडेइ।
पाटयित्वा–फाडेऊण।
परुस–फरुस।
परिखा–फलिहा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२२६, २२७। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३०। ३. हे० प्रा० व्या० २३२, २३३, २३४, २३५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पालि भाषा में भी 'प' को 'फ' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ४०—प=फ)

'प' को 'म' आपीड—आमेल, आवेड।
नीप—नीम, नीव।
'प' को 'ब' प्रभूत—बहुत्त।
'प' को 'र' पापर्द्धि—पारद्धि।

१५. [1]'ब' का परिवर्तन

'ब' को 'भ' बिसिनी—भिसिणी

(पालि भाषा में 'ब' को 'भ' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६२—ब=भ)

'ब' को 'म' कबन्ध—कमंध, कयंध।

१६. [2]'भ' का परिवर्तन

'भ' को 'व' कैटभ—केढव।

१७. [3]'म' का परिवर्तन

'म' को 'ढ' विषम—विसढ, विसम।
'म' को 'व' मन्मथ—वम्मह।
अभिमन्यु—अहिवन्नु, अहिमन्नु।
'म' को 'स' भ्रमर—भसल, भमर ; सं० भसल।
'म' को 'अनुनासिक' अतिमुक्तक—अणिउँतय।
कामुक—काउँअ।

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३८, २३९। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४०। ३. हे० प्रा० व्या ८।१ २४१, २४२, २४३, २४४,१७८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चामुण्डा–चाउँडा।
यमुना–जउँणा।

१८. [1]'य' का परिवर्तन

'य' को 'आह' कतिपय–कइवाह।

(पालि भाषा में 'कतिपयाह' शब्द का 'कतिपाह' रूप बनता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६२–नियम–६४)

'य' को 'ज्ज' उत्तरीय–उत्तरिज्ज, उत्तरीअ।
तृतीय–तइज्ज, तइअ।
द्वितीय–बिइज्ज, बीअ।
करणीय–करणिज्ज, करणीअ।
पेया–पेज्जा, पेआ।

'य' को 'त' युष्मद्–तुम्ह।
युष्मदीय–तुम्हकेर।
युष्मादृश–तुम्हारिस।

'य' को 'र' स्नायु–ण्हारु।

(पालिभाषा में भी 'य' को 'र' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ४७–टिप्पण–स्नायु–सिनेरु)

'य' को 'ल' यष्टि–लट्ठि।

(पालिभाषा में भी 'य' को 'ल' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६३–य=ल)

'य' को 'व' कतिपय–कइअव।

(पालिभाषा में 'य' को 'व' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६३–य=व)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५०, २४८, २४६, २४७, २४९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'य' को 'ह' छाया—छाही, छाया (छाही = वृक्ष की छाया। छाया = वृक्ष की छाया तथा शरीर की कान्ति)।

१९. [1]'र' का परिवर्तन

'र' को 'ड' किरि–किडि ; सं० किटि।
पिढर–पिहड, पिढर।
भेर–भेड; सं० भीरु।

'र' को 'डा' पर्याण–पडायाण, पल्लाण ; सं० पल्ययन।

'र' को 'ण' करवीर–कणवीर ; सं० कणवीर।

'र' को 'ल' अङ्गार–इंगाल।
करुण–कलुण।
चरण–चलण।
दरिद्र–दलिद्द।
परिघ–फलिह।
भ्रमर–भसल, भमर ; सं० भसल।
मुखर–मुहल।
युधिष्ठिर–जहुट्ठिल।
रुग्ण–लुक्क।
वरुण–वलुण।
स्थूर–थूल, थोर।
हरिद्रा–हलिद्दा इत्यादि।
जठर–जढल, जढर।
बठर–बढल, बढर।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५१, २५२, २५३, २५४, २५५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निष्ठुर–निट्ठुल, निट्ठुर[1]।

२० [2]'ल' का परिवर्तन

'ल' को 'ण' ललाट–णलाड, णिलाड (पालि–नलाट)।
लाङ्गल–णंगल, लङ्गल (पालि–नांगल)।
लाङ्गूल–णंगूल, लंगूल।
लाहल–णाहल, लाहल।

(पालिभाषा में 'ल' को 'न' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६३–ल=न)

'ल' को 'र' स्थूल–थोर ; सं० स्थूर।

२१. [3]'व' का परिवर्तन

'व' को 'भ' विह्वल–भिब्भल, विब्भल, विहल।
'ब' को 'म' शबर–समर।
'व' को 'म' नीवी–नीमी, नीवी।
स्वप्न–सिमिण, सुमिण, सिविण।

२२. [4]'श' का परिवर्तन

'श' को 'छ' शमी–छमी।
शाव–छाव

१. संस्कृत भाषा में भी 'र' का 'ल' होता है—परिघः–पलिघः। पर्यङ्कः–पल्यङ्कः। कपरिका–कपलिका–सिद्धहेम० सं० व्या० २।३।६६ से २।३।१०४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५७, २५६, २५५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।५८। तथा हे० प्रा० व्या० ८।१।२५८, २५६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६५, २६२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिरा–छिरा, सिरा (यह शब्द पैशाची भाषा में भी बोला जाता है।)

(पालि में भी 'श' को 'छ' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६३–श = छ)

'श' को 'ह' दश–दह, दस। एकादश–एआरह, एआरस। दशबल–दहबल, दसबल।

२३. [1]'ष' का परिवर्तन

'ष' को 'छ' षट्–छ। षट्पद–छप्पअ। षष्ठ–छट्ठ।
'ष' को 'ण्ह' स्नुषा–सुण्हा, सुसा।
'ष' को 'ह' पाषाण–पाहाण, पासाण।
प्रत्यूष–पच्चूह, पच्चूस।

२४. [2]'स' का परिवर्तन

'स' को 'छ' सप्तपर्ण–छत्तिवण्णो। सुधा–छुहा।
'स' को 'ह' दिवस–दिवह, दिअह, दिवस।

२५. [3]'ह' का परिवर्तन

'ह' को 'र' उत्साह–उत्थार, उच्छाह।

२६. [4]स्वर सहित व्यञ्जनों का लोप

(यह नियम पैशाचीभाषा में भी लगता है।)

'क' तथा 'का' का लोप व्याकरण–वारण, वायरण।
प्राकार–पार, पायार।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६५, २६१, २६२ तथा ८।२।१४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६५, २६३। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।४८। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६७, २६८, २६६, २७०, २७१। शब्दान्तर्गत सस्वर व्यंजन के लोप करने की प्रक्रिया यास्कने स्वीकृत की है तथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'ग' का लोप	आगत–आअ, आगअ।
'ज' का लोप	दनुज–दणु, दणुअ।
	दनुजवध–दणुवह, दणुअवह।
	भाजन–भाण, भायण।
	राजकुल–राउल, रायउल।
'द', 'दु' तथा	पादपीठ–पावीढ, पायवीढ।
'दे' का लोप	पादपतन–पावडण, पायवडण।
	उदुम्बर–उंबर, उउंबर; सं० उम्बर।
	दुर्गादेवी–दुग्गावी, दुग्गाएवी अथवा दुग्गादेवी।
'य' का लोप	किसलय–किसल, किसलय; सं० किसल।
	काल + आयस = कालायस–कालास, कालायस।
	हृदय–हिअ, हिअअ।
	सहृदय–सहिअ, सहिअय।
'व' का लोप	अवड–अड, अयड।
	आवर्तमान–अत्तमाण, आवत्तमाण।
	एवमेव–एमेव, एवमेव।
	तावत्–ता, ताव।
	देवकुल–देउल, देवउल।
	प्रावारक–पारअ, पावारअ।
	यावत्–जा, जाव।
'वि' का लोप	जीवित–जीअ, जीविअ।

संस्कृतभाषा में भी ऐसी प्रक्रिया संमत है—आगताः = आताः, दिशावाचक शब्द–यास्क। सं० उदुम्बर–उम्बुरक अथवा उम्बर। सुदत्त–सुत्त। प्रदत्त–प्रत्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. **आदि व्यञ्जन का लोप**

जिस शब्द के प्रारम्भ में व्यञ्जन रहता है उसका अर्थात् शब्द के आदि व्यंजन का कहीं-कहीं लोप[1] हो जाता है। जैसे :—

च–अ।

चिह्न–इंध।

पुनः–उण, उणो।

१. संयुक्त व्यञ्जनों का सामान्य परिवर्तन

पूर्ववर्ती व्यञ्जन का लोप

क्, ग्, ट्, ड्, त्, द्, प्, श्, ष् और स् व्यञ्जनों का किसी भी संयुक्त व्यञ्जन के पूर्ववर्ती होने पर लोप हो जाता है[2] और लोप होने के बाद शेष बचा व्यञ्जन यदि शब्द के आदि में न हो तभी उनका द्वित्व (डबल) होता[3] है। द्वित्व हुआ अक्षर खख, छछ, ठठ, थथ और फफ हो तो उसके स्थान में क्रमशः क्ख, च्छ, ट्ठ, त्थ और प्फ हो जाता है[4]। अगर द्वित्व हुआ अक्षर घघ, झझ, ढढ, धध, तथा भभ हो तो उसके स्थान में क्रमशः ग्घ, ज्झ, ड्ढ, द्ध, तथा ब्भ हो जाता है। जैसे :—

पूर्ववर्ती 'क' का लोप भुक्त – भुत – भुत्त*। मुक्त – मुत – मुत्त।
शक्त–सत–सत्त। सिक्थ–सिथ–सिथ्थ–सित्थ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१७७। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।७७।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।८९। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।९०।

*इन उदाहरणों में जो अन्तिम रूप है वही प्रयोग में व्यवहार करने योग्य है। बीच का कोई भी रूप प्रयोग में नहीं आता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्ववर्ती 'ग' का लोप दुग्ध–दुध–दुध्ध–दुद्ध ।
मुग्ध–मुध–मुध्ध–मुद्ध ।
" 'ट' " षट्पद—छपअ—छप्पअ ।
कट्फल–कफल–कफ्फल, कप्फल ।
" 'ड' " खड्ग–खग–खग्ग । षड्ज–सज–सज्ज ।
" 'त' " उत्पल—उपल—उप्पल ।
उत्पाद–उपाअ–उप्पाअ । धात्री–धारी[1] ।
" 'द्' " मुद्गर–मुगर–मुग्गर । मुद्ग–मुग–मुग्ग ।
" 'प' " गुप्त–गुत–गुत्त । सुप्त–सुत–सुत्त ।
" 'श' " निश्चल–निचल, निच्चल–(पालि–निच्चल)।
श्मशान–मसाण । श्च्योतति–चुअइ ।
श्मश्रु–मस्सु ।
" 'ष' " निष्ठुर–निठुर–निठ्ठुर–निट्ठुर ।
शुष्क–सुक–सुक्क । षष्ठ–छठ–छ्ठ–छट्ठ ।
" 'स' " निस्पृह–निपह–निप्पह । स्तव–तव ।
स्नेह–नेह । स्कन्द–कंद ।

(पालि भाषा में भी संयुक्त व्यंजन के पूर्ववर्ती क्, ग् आदि व्यंजनों का लोप होता है तथा उनका द्वित्व वगैरह भी प्राकृत भाषा के अनुसार होता है देखिए—पा० प्र० पृ० ४१, २४ (नियम ३०), २५ (नि० ३१), ३८, ५१, २६ (नि० ३२), ३७, ३५, ३६, २८ । और पालि भाषा में श्मश्रु–मस्सु । शुष्क–सुक्ख । स्कन्द–खंद तथा खंध ऐसे प्रयोग होते हैं)।

परवर्ती व्यञ्जन का लोप

संयुक्त व्यञ्जन के परवर्ती 'म्', 'न्', और 'य्' का लोप हो जाता

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।८१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है[1] और लोप होने के पश्चात् शेष बचे व्यञ्जन का तभी द्वित्व होता है यदि वह व्यञ्जन शब्द के आदि में न हो।

परवर्ती 'म' का लोप युग्म–जुग–जुग्ग* । स्मर–सर ।
रश्मि–रसि–रस्सि । स्मेर–सेर ।

,, 'न' ,, नग्न–नग–नग्ग । लग्न–लग–लग्ग ।
धृष्टद्युम्न–धट्ठज्जुण★ ।

,, 'य' ,, कुड्य–कुड–कुड्ड । व्याध–वाह । श्यामा–सामा । चैत्य–चइत्त, चेइअ ।

(पालिभाषा में 'न' तथा 'य' के लोप के लिए देखिए–पा० प्र० पृ० ५० तथा पृ० ४८–(नि० ६६), पृ० २१–(नि० २६) ।

पूर्ववर्ती तथा परवर्ती व्यञ्जन का लोप

ब, व, र, ल तथा विसर्ग किसी भी संयुक्त व्यञ्जन के पूर्ववर्ती हो अथवा परवर्ती हो तो उनका लोप हो जाता है[2] और लोप होने के बाद शेष बचे व्यञ्जन का द्वित्व तभी होता है यदि वह शब्द के आदि में न हो।

पूर्ववर्ती 'ब' का लोप अब्द–अद–अद्द* । शब्द–सद–सद्द ।
स्तब्ध–थध–थध्ध–थद्ध और ठद्ध ।
लुब्धक–लुधअ–लुध्धअ–लुद्धअ और लोद्धअ ।

परवर्ती 'व' ,, ध्वस्त–धत्थ । पक्व–पक्क और पिक्क ।
ध्वज–धअ । द्वेटक–खेडअ । द्वोटक–खोडअ ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।७८ । *विशेष सूचना के लिए देखिए पृ० ५६ की *टिप्पणी । ★'ण' का द्वित्व नहीं होता है । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।७९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्ववर्ती 'र' का लोप अर्क–अक–अक्क। वर्ग–वग–वग्ग।
दीर्घ–दिघ–दिघ्घ–दिग्घ। वार्ता–वता–वत्ता।
सामर्थ्य–सामथ–सामथ्थ–सामत्थ।

परवर्ती 'र' ,, क्रिया–किया। ग्रह–गह। चक्र–चक–चक्क।
रात्रि–रति–रत्ति। धात्री–धाती और धाई।

पूर्ववर्ती 'ल' ,, उल्का–उका–उक्का। वल्कल–वकल–वक्कल।

परवर्ती 'ल' ,, विक्लव–विकव–विक्कव। श्लक्ष्ण–सण्ह।

विसर्ग का लोप दुःखित–दुखिअ–दुख्खिअ–दुक्खिअ।
दुःसह–दुसह–दुस्सह। निःसह–निसह–निस्सह।
निःसरइ–निसरइ–निस्सरइ।

(पालिभाषा में होने वाले ऐसे रूपान्तरों के लिए देखिए—पालिप्रकाश पृ० २६, ३०, ३१ (नि० ३६, ३७), पृ० ३२, ३३ (नि० ३८, ३६), पृ० ३५ (नि० ४२), पृ० १० (नि० १२), पृ० १२ (नि० १५, १६)।

[**सूचना :**—जहाँ पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों प्रकार के व्यञ्जनों के लोप होने का प्रसंग आ जाय वहाँ प्रचलित प्रयोगों को ध्यान में रख कर लोप करना उचित है। जैसे—उद्विग्न, द्विगुण, द्वितीय इत्यादि शब्दों में 'द्व' में 'द्' पूर्ववर्ती है और 'व्' परवर्ती है अतः यहाँ 'द्' तथा 'व' दोनों के लोप का प्रसंग है। उद्विग्न का 'उव्विग्ग', द्विगुण का 'बिउण' तथा द्वितीय के 'बिईय' प्रयोग बनते हैं इस लिए उन शब्दों में केवल पूर्ववती 'द्' का ही लोप करना चाहिए परवर्ती 'व्' का लोप नहीं। 'व्' का लोप करने से उद्दिग्ग प्रयोग बनता है और ऐसा प्रयोग विशेषतः नहीं मिलता है। इसलिए 'व्' का लोप न करके 'द्' का ही लोप करना उचित है।]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निम्नलिखित शब्दों में भी यही नियम है :—

पूर्ववर्ती 'ल' का लोप कल्मष - *कमस—कम्मस । शुल्व—सुव—सुव्व ।
पूर्ववर्ती 'र' „ „ सर्व—सव—सव्व । सार्व—सव—सव्व ।
परवर्ती 'य' „ „ काव्य—कव—कव्व । माल्य—मल—मल्ल ।
परवर्ती 'व' „ „ द्विप—दिअ । द्विजाति—दुआइ ।

पूर्ववर्ती तथा परवर्ती का क्रमशः लोप

पूर्ववर्ती 'ग' का लोप उद्विग्न—उव्विग्ण—उव्विग्ग*।
„ 'द्' „ „ द्वार—वार अथवा बार ।
परवर्ती न „ „ उद्विग्न—उव्विग—उव्विग्ग
„ व „ „ द्वार—दार ।

केवल 'ज्ञ' के ञ् तथा 'द्र' के 'र' का लोप विकल्प से होता है ।[1] यथा:—

ज्ञ—ज[2], ण[3] ।
ज्ञात—जात अथवा णात, णाय ।
ज्ञातव्य—जातव्व अथवा णातव्व, णायव्व ।
ज्ञाति—जाति „ णाति, णाइ ।
ज्ञान—जाण „ णाण ।
ज्ञानीय—जाणीअ „ णाणीअ ।

---

*वही पृ० ५६ की * सूचना । १. हे० प्रा० व्या० ८।२।८३। तथा ८० । २. 'ज्' तथा 'ञ्' मिलकर 'ज्ञ' बनता है अतः 'ज्ञ' में से 'ञ्' का लोप होने पर शेष 'ज' बचे, यह स्वाभाविक है । ३. जब 'ज्ञ' में से 'ज्' का लोप हो जाय तब 'ञ्' बचे यह भी स्वाभाविक है और बचा हुआ 'ञ', 'ञ' के रूप में न रह कर 'न' के रूप में (अर्थात् अपने मूल रूप में) आ जाता है तब उसका 'ण' होता है देखिए नियम ८ 'ण' विधान पृ० ३६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञानीय–जाणिज	,,	णाणिज।
ज्ञापना–जावणा	,,	णावणा।
ज्ञेय–जेय	,,	णेय।
अभिज्ञ–अहिज्ज,	,,	अहिण्णु।
अल्पज्ञ–अप्पज्ज	,,	अप्पण्णु।
आत्मज्ञ–अप्पज्ज	,,	अप्पण्णु।
इङ्गितज्ञ–इंगिअज्ज	,,	इंगिअण्णु।
आज्ञा–अज्जा	,,	आणा।
दैवज्ञ–देवज्ज	,,	देवण्णु।
दैवज्ञ–दइवज्ज	,,	दइवण्णु।
प्रज्ञा–पज्जा	,,	पण्णा।
मनोज्ञ–मणोज्ज	,,	मणोण्ण।
संज्ञा–संजा	,,	सण्णा, संणा।
संप्रज्ञ–संपज्ज	,,	संपण्ण।
सर्वज्ञ–सव्वज्ज	,,	सव्वण्णु।

(पालि भाषा में भी 'ज्ञ' को 'ज' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० २४—टिप्पण प्रज्ञान–पजान)

'द्र' के 'र' का लोप चन्द्र–चंद, चन्द्र। रुद्र–रुद्द, रुद्र।
समुद्र–समुद्द, समुद्र। भद्र–भद्द, भद्र।
द्रव–दव, द्रव। द्रह–दह, द्रह। द्रुम–दुम, द्रुम।

अपभ्रंश भाषा में संयुक्त अक्षर में परवर्ती 'र' का लोप विकल्प से होता है।[1] प्रिय–पिउ अथवा प्रिउ। प्राकृत भाषा में–पिय।

अः को ओ।[2]

शब्द के अंत में आये हुए 'अः' का 'ओ' होता है। जैसे:—

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९८। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।३७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्रतः–अग्गतो[१] । अद्यतः–अज्जतो । अन्ततः–अंततो । आदितः–आदितो । इतः–इतो[२] । इतः इतः–इदो इदो (शौर०) । कुतः–कुतो । कुदो (शौर०) । ततः–ततो । तदो । तदो तदो । पुरतः–पुरतो । पृष्ठतः–पिट्ठतो । मार्गतः–मग्गतो । सर्वतः–सव्वतो ।

नाम के रूप

जिनः–जिणो । देवः–देवो । भवतः–भवतो । भवन्तः–भवन्तो । भगवन्तः–भगवन्तो । रामः–रामो । सन्तः–संतो इत्यादि ।

२. 'ख' विधान

यह बात विशेष ध्यान में रखनी चाहिए कि यहाँ जो जो विधान किये जा रहे हैं उन सब में एक अक्षर के–असंयुक्त अक्षर के–विधान (जैसे ख, च, छ इत्यादि के विधान) शब्द के आदि में अर्थात् शब्द के प्रारम्भ में किये गये हैं और दोहरे (डबल) अक्षर के सभी विधान–(जैसे क्ख, ग्ग, च्च, च्छ इत्यादि के विधान) शब्द के अन्दर किये गये हैं ऐसा समझना चाहिए ।

'क्ष[३]' को 'ख' क्षण–खण (= समय का छोटा भाग) । क्षमा–खमा (= क्षमा याने सहन करना) । क्षय–खअ । क्षीण–खीण । क्षीर–खीर । क्ष्वेटक–खेडअ । क्ष्वोटक–खोडअ ।

'क्ष' को 'क्ख' इक्षु–इक्खु । ऋक्ष–रिक्ख । मक्षिका–मक्खिआ । लक्षण–लक्खण ।

---

१. पृ० ३३ नियम (ख) के अनुसार अग्गओ, तओ, सव्वओ ऐसे भी रूप होते हैं । २. पृ० ३४–शौरसेनी भाषा में 'त' का 'द' होता है–इस नियम से अग्गदो, तदो, सव्वदो, पुरदो ऐसे भी रूप होते हैं । ३. हे० प्रा० व्या ८।२।३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मागधी भाषा में 'क्ष' के स्थान में जिह्वामूलीय[1] अक्षर—≍ 'क' बोला जाता है।

सं०	मा०	प्रा०
यक्ष	य≍क	जक्ख
राक्षस	ल≍कश	रक्खस

'ष्क'[2] को 'ख' निष्क-निक्ख। पुष्कर-पोक्खर।
पुष्करिणी-पोक्खरिणी। शुष्क-सुक्ख।

'स्क' को 'ख' स्कन्द-खंद। स्कन्ध-खंध।
स्कन्धावार-खंधावार।

'स्क' को 'क्ख' अवस्कन्द-अवक्खंद। प्रस्कन्देत्-पक्खंदे।
उपस्कर-उवक्खर। उपस्कृत-उवक्खड।
अवस्कर-अवक्खर याने पुरीष=विष्ठा।

(पालि भाषा में 'ष्क' को 'क्ख', 'स्क' को 'ख' तथा 'क्ख' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ३६, ३७।)

मागधी भाषा में[3] जहाँ-जहाँ संयुक्त 'ष' अथवा 'स' आता है वहाँ सर्वत्र 'स' ही बोला जाता है।

संयुक्त 'ष'	सं	मा०	प्रा०
	उष्मा	उस्मा	उम्हा।
	धनुष्खण्ड	धनुस्खंड	धणुक्खंड।
	कष्ठ	कस्ट	कट्ठ।
	निष्फल	निस्फल	निप्फल।
	विष्णु	विस्नु	विण्हु।
	शष्प	शस्प	सप्फ।
	शुष्क	शुस्क	सुक्क।

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९६। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।४।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२८९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं०	मा०	प्रा०
प्रस्खलति	पस्खलदि	पक्खलइ।
बृहस्पति	बुहस्पदि	बुहप्फइ।
मस्करी	मस्कली	मक्खरी।
विस्मय	विस्मय	विम्हय।
हस्ती	हस्तो	हत्थी।

(पालि भाषा में इस विधान के लिए देखिए—पा० प्र० पृ० ५१–नि० ६८)।

३. 'च' विधान

'त्य'[1] को 'च' त्याग–चाय। त्यागी–चाई। त्यजति–चयइ।
'त्य' को 'च्च' प्रत्यय–पच्चय। प्रत्यूष–पच्चूह। सत्य–सच्च।
'त्व' को 'च' कृत्वा–किच्चा। ज्ञात्वा–णच्चा। दत्वा–दच्चा।
भुक्त्वा–भोच्चा। श्रुत्वा–सोच्चा। चत्वर–चच्चर।

(पालि भाषा में त्य को च, च्च तथा त्व को च, च्च, होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० २० तथा पृ० ३४ टिप्पण।)

४. 'छ' विधान

'क्ष'[2] को 'छ' क्षण–छण (=उत्सव)। क्षत–छय।
क्षमा–छमा (=पृथिवी)। क्षार–छार। क्षुत–छीअ।
'क्ष' को 'च्छ' अक्षि–अच्छि। इक्षु–उच्छु। उक्षा–उच्छा।
ऋक्ष–रिच्छ। कुक्षि–कुच्छि।

(पालि भाषा में 'क्ष' को 'क', 'ख', 'क्ख' तथा 'क्ष' को 'च' 'छ' तथा 'च्छ' भी होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० १७–क्ष–ख, क्ष–च, क्ष–छ, तथा क्ष को झ टिप्पण पृ० १७। तथा ऋक्ष–अच्छ, इक्क। ध्वाङ्क्ष–धंक। लाक्षा–लाखा देखिए पा० प्र० पृ० १८।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१३ तथा १५।२. हे० प्रा० व्या० ८।२।३ तथा २०, १८, १९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'श्व'[1] को 'च्छ' पृथ्वी–पिच्छी।

'थ्य'[2] को 'च्छ' पथ्य–पच्छ। पथ्या–पच्छा। मिथ्या–मिच्छा। सामर्थ्य–सामथ्य, सामच्छ।

'श्च' को 'च्छ' आश्चर्य–अच्छेर। पश्चात्–पच्छा। पश्चिम–पच्छिम। वृश्चिक–विंछिअ।

'त्स' को 'च्छ' उत्सव–उच्छव। उत्साह–उच्छाह। उत्सुक–उच्छुअ चिकित्सति–चिइच्छइ। मत्सर–मच्छर। संवत्सर–संवच्छर।

'प्स' को 'च्छ' अप्सरा–अच्छरा। जुगुप्सति–जुगुच्छइ। लिप्सति–लिच्छइ। जुगुप्सा–जुगुच्छा। लिप्सा–लिच्छा। ईप्सति–इच्छइ।

मागधी भाषा में 'च्छ' के स्थान में 'श्च' प्रयुक्त[3] होता है :—

सं०	मा०	प्रा०
गच्छ	गश्च	गच्छ
पिच्छिल	पिश्चिल	पिच्छिल
पृच्छति	पुश्चदि	पुच्छइ
वत्सल	वश्चल	वच्छल
उच्छलति	उश्चलदि	उच्छलइ
तिर्यक्	तिरिश्चि	तिरिच्छि

(पालि भाषा में 'थ्य' को 'च्छ', 'श्च' को 'च्छ', 'त्स' को 'च्छ' तथा 'प्स' को 'च्छ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० २१, ३८, २६।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।२१। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. 'ज' विधान

'द्य'[१] को 'ज' द्युति–जुइ। द्योत–जोअ।

'द्य' को 'ज्ज' वैद्य–वेज्ज। मद्य–मज्ज। अद्य–अज्ज। अवद्य–अवज्ज।

'य्य' को 'ज्ज' शय्या–सेज्जा। जय्य–जज्ज।

'र्य' को 'ज्ज' आर्य–अज्ज। कार्य–कज्ज। पर्याप्त–पज्जत्त। भार्या–भज्जा। मर्यादा–मज्जाया। आर्यपुत्र–अज्जउत्त।

शौरसेनी भाषा में 'र्य' के स्थान में विकल्प से 'य्य'[२] भी बोला जाता है।

सं०	शौ०	प्रा०
आर्यपुत्र	अय्यउत्त, अज्जउत्त	अज्जउत्त।
आर्य	अय्य, अज्ज	अज्ज।
कार्य	कय्य, कज्ज	कज्ज।
सूर्य	सुय्य, सुज्ज	सुज्ज।

(मागधी भाषा में 'द्य', 'ज्ज', तथा 'र्य' के स्थान पर विकल्प से आदि में 'य' और शब्द के अन्दर 'य्य'[३] बोला जाता है।)

सं०	मा०	प्रा०
अद्य	अय्य	अज्ज।
मद्य	मय्य	मज्ज।
विद्याधर	वियाहल	विज्जाहर।
यथा	यधा	जहा
कुरु	कलेय्यहि	करेज्जहि

(पालि भाषा में 'द्य' को ज, ज्ज और य्य भी होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० १८ और १६ वें का टिप्पण। पालि भाषा में र्य को यिर, य्य अथवा रिय होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० १५, १६।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।२४। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६६।
३. हे० प्रा० व्या ८।४।२९२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. 'झ' विधान

'ध्य' को 'झ'	ध्यान–झाण। ध्यायति–झायइ।
'ध्य'[1] को 'ज्झ'	उपाध्याय–उवज्झाय। बध्यते–बज्झइ। विन्ध्य–विंझ। साध्य–सज्झ। स्वाध्याय–सज्झाय।
'ह्य' को 'झ'	नह्यति–नज्झति। गुह्य–गुज्झ। मह्यं–मज्झं। सह्य–सज्झ।
'ह्य'[2] को 'य्ह'	गुह्य–गुय्ह, गुज्झ। सह्य–सय्ह, सज्झ।
'क्ष'[3] को 'झ'	क्षीण–झीण। क्षीयते–झिज्जइ।
'क्ष' को 'ज्झ'	प्रक्षीण–पज्झीण।

(पालि भाषा में भी ध्य को झ और ह्य को य्ह होता है। क्रमशः देखिये—पा० प्र० पृ० १६—ध्य=झ, ध्य=ज्झ। पा० प्र० पृ० २२—ह्य=य्ह)

७. 'ट' विधान

'र्त'[4] को 'ट्ट'	कैवर्त–केवट्ट। नर्तकी–नट्टई। वर्ती–वट्टी। वर्तुल–वट्टुल। वार्ता–वट्टा।

(कुछ शब्दों में 'र्त' के 'रेफ' का लोप हो जाता है। जैसे :— आवर्तक–आवत्तअ। मुहूर्त–मुहुत्त। मूर्ति–मुत्ति। धूर्त–धुत्त। कीर्ति–कित्ति। कार्तिक–कत्तिअ। कर्तरी–कत्तरी इत्यादि)

(पालि भाषा में 'त' को 'ट' होता है। देखिए–प्रा० प्र० पृ० ५८) शौरसेनी भाषा में किसी-किसी प्रयोग में 'न्त' को 'न्द'[5] हो जाता है। जैसे :—

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।२६। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१२४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।३०। ५. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं०	शौ०	प्रा०
अन्तःपुर	अन्देउर	अन्तेउर ।
निश्चिन्त	निश्चिन्द	निचिन्त ।
महान्-महन्त	महन्द	महन्त ।

८. 'ठ' विधान

'ष्ट'[1] को 'ट्ठ' इष्ट–इट्ठ । अनिष्ट–अणिट्ठ । कष्ट–कट्ठ ।
दष्ट–दट्ठ । दृष्टि–दिट्ठी । पुष्ट–पुट्ठ !
मुष्टि–मुट्ठि । यष्टि–लट्ठि । सुराष्ट्र–सुरट्ठ ।
सृष्टि–सिट्ठि ।

(अपवाद :—इष्टा–इट्टा । उष्ट्र–उट्ट । संदष्ट–संदट्ट ।)

मागधी भाषा में 'ट्ट' तथा 'ष्ठ' के स्थान में 'स्ट'[2] बोला जाता है ।

'ट्ट' को 'स्ट' पट्ट–पस्ट, प्रा० पट्ट । भट्टारिका–भस्टालिया, प्रा० भट्टारिया । भट्टिनी–भस्टिणी, प्रा० भट्टिणी ।

'ष्ठ' को 'स्ट' कोष्ठागार–कोस्टागाल, प्रा० कोट्ठागार ।
सुष्ठु–शुस्टु, प्रा० सुट्ठु ।

पैशाची भाषा में 'ष्ट' के बदले 'सट'[3] बोला जाता है ।

कष्ट–कसट, प्रा० कट्ठ । दृष्ट–दिसट प्रा० दिट्ठ ।

(पालि भाषा में 'ष्ट' को 'ट्ठ' होता है । देखिये पा० प्र० पृ० २६ तथा उसी पृष्ठ का टिप्पण)

९. 'ण' विधान

'ज्ञ'[4] को 'ण' आज्ञा–आणा । ज्ञान–णाण । संज्ञा–संणा ।
'ज्ञ' को 'ण्ण' विज्ञान–विण्णाण । प्रज्ञा–पण्णा ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।३४ । २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९० ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।३१४ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।४२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'म्न' को 'ण्ण' निम्न–निण्ण। प्रद्युम्न–पज्जुण्ण।

मागधी भाषा में न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज—इन चार अक्षरों की जगह 'ञ्ञ'[1] बोला जाता है तथा पैशाची भाषा में न्य, ण्य, तथा ज्ञ–इन तीन अक्षरों के स्थान में 'ञ्ञ'[2] बोला जाता है।

		सं०	मा०पै०	प्रा०
मागधी पैशाची	'न्य' को 'ञ्ञ'	अभिमन्यु	अभिमञ्ञु	अहिमन्नु।
		कन्यका	कञ्ञका	कन्नका।
,,	'ण्य' को 'ञ्ञ'	पुण्य	पुञ्ञ	पुण्ण।
		पुण्याह	पुञ्ञाह	पुण्णाह।
		पुण्यकर्म	पुञ्ञकम्म	पुण्णकम्म।
'ज्ञ' को 'ञ्ञ'		प्रज्ञा	पञ्ञा	पण्णा।
		सर्वज्ञ	शव्वञ्ञ सव्वञ्ञ	सव्वण्णु।
मागधी	'ञ्ज' को 'ञ्ञ'	अञ्जलि	अञ्ञलि	प्रा० अंजलि।
		धनञ्जय	धनञ्ञय	प्रा० धणंजय।
		प्राञ्जल	पञ्ञल	प्रा० पंजल।

(पालि भाषा में 'ज्ञ' को 'ण्ण' तथा 'म्न' को 'न्न' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० २४ टिप्पण तथा ४८। तथा ज्ञ, ण्य, और न्य को 'ञ्ञ' भी होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० २३, २४।)

'श्न'[3] को 'ण्ह' प्रश्न–पण्ह। शिश्न–सिण्ह।
'ष्ण' को 'ण्ह' कृष्ण–कण्ह। विष्णु–विण्हु।
जिष्णु–जिण्हु। उष्णीष–उण्हीस।
'स्न' को 'ण्ह' स्नात–ण्हाअ। ज्योत्स्ना–जोण्हा।
प्रस्नुत–पण्हुअ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९३। २. हे० प्रा०व्या० ८।४।३०३ तथा ३०५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।७५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'ह्न' को 'ण्ह' जह्नु–जण्हु । वह्नि–वण्हि ।
'ह्ण' को 'ण्ह' अपराह्ण–अवरण्ह । पूर्वाह्ण–पुव्वण्ह ।
'क्ष्ण' को 'ण्ह' तीक्ष्ण–तिण्ह । श्लक्ष्ण–सण्ह ।
'क्ष्म' को 'ण्ह' सूक्ष्म–सण्ह ।

(पैशाची भाषा में स्न के स्थान में 'सिन'[1] बोला जाता है ।)

सं०	पै०	प्रा०
स्नान	सिनात	ण्हाअ
स्नुषा	सिनुसा, सुनुषा	ण्हुसा, सुण्हा ।

(पालि भाषा में इस रूपान्तर के लिए देखिये—क्रमशः प्रा० प्र० पृ० ४६ (नि० ६३) तथा पृ० ४७ श्न=ण्ह, ल्ह तथा ष्ण–ण्ह पृ० ४८ टिप्पण=तीक्ष्ण–तिण्ह, तिक्ख, तिक्खिण तथा पृ० ४९ टिप्पण–पूर्वाह्ण–पुव्वण्ह ।)

(पालि भाषा में स्नान–सिनान । स्नुषा–सुणिसा, सुण्हा, हुसा ऐसे तीन रूप होते हैं । देखिये— पा० प्र० पृ० ४६ नियम ६३ ।)

१० 'थ' विधान

'स्त[2]' को 'थ' स्तव–थव, तव । स्तम्भ–थंभ ।
स्तब्ध–थद्ध, ठद्ध । स्तुति–थुई । स्तोक–थोअ ।
स्तोत्र–थोत्त । स्त्यान–थीण ।

'स्त' को 'त्थ' अस्ति–अत्थि । पर्यस्त–पल्लत्थ, पल्लट्ट । प्रशस्त–पसत्थ । प्रस्तर–पत्थर । स्वस्ति–सत्थि । हस्त–हत्थ ।
(अपवाद:–समस्त–समत्त, स्तम्ब–तंब)

(मागधी भाषा में 'र्थ' तथा 'स्थ' के स्थान में 'स्त'[3] बोला जाता है)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३१४ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।४५ ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	सं०	मा०	प्रा०
'र्थ' को 'स्त'	अर्थपति	अस्तवदि	अत्थवई ।
	सार्थवाह	शस्तवाह	सत्थवाह ।
'स्थ' को 'स्त'	उपस्थित	उवस्तिद	उवट्ठिअ ।
	सुस्थित	सुस्तिद	सुट्ठिअ ।

(पालि भाषा में 'स्त' को 'थ' और 'त्थ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० २७)

११. 'प' विधान

'ड्म'[1] को 'प' कुड्मल–कुंपल ।

'क्म' को 'प्प' रुक्म–रुप्प । रुक्मिणी–रुप्पिणी । रुक्मी–रुप्पी, रुच्मी ।

'ष्प'[2] को 'प्प' निष्पाप–निप्पाव । निष्पुंसन–निप्पुंसण ।

निष्प्रभ–निप्पह । निष्प्राण–निप्पाण ।

'स्प' को 'प्प' परस्पर–परोप्पर । बृहस्पति–बुहप्पइ । निष्पृह–निप्पिह ।

(पालि भाषा में 'ड्म' को 'डुम' और 'क्म' को 'कुम' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ४९ कुड्मल–कुडुमल अथवा कुटुमल । रुक्म–रुकुम तथा रुक्म देखिये, पा० प्र० पृ० ४३ टिप्पण)

१२. 'फ' विधान

'ष्प'[3] को 'प्फ' निष्पाव–निप्फाव । निष्पेष–निप्फेस ।

पुष्प–पुप्फ । शष्प–सप्फ ।

'स्प' को 'फ' स्पन्दन–फंदण । स्पन्द–फंद । स्पर्धा–फद्धा ।

स्पन्दते–फंदए । स्पर्धते–फद्धए ।

'स्प' को 'प्फ' प्रतिस्पर्धी–पडिप्फद्धी । प्रतिस्पर्धा–पडिप्फद्धा ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।५२ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।५३ ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।५३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिस्पर्धते–पडिप्फद्धए। बृहस्पति–बुहप्फइ, बिहप्फइ, बुहप्पइ, बिहप्पइ। वनस्पति–वणप्फइ।

(पालि भाषा में ष्प को प्फ तथा स्फ को फ और प्फ होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ३६)

१३. 'भ' विधान

'ह्व'[1] को 'भ' ह्वान–भाण। ह्वयते–भयए

'ह्व' को 'ब्भ' आह्वान–अब्भाण। आह्वयते–अब्भयते। जिह्वा–जिब्भा, जीहा। विह्वल–विब्भल, भिब्भल, विहल।

(पालि भाषा में भी ह्व को भ होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ६४ तथा गह्वर–गब्भर पृ० ३५ टिप्पण।)

१४. 'म' विधान

'ग्म'[2] को 'म्म' युग्म–जुम्म, जुग्ग। तिग्म–तिम्म, तिग्ग।

'न्म' को 'म्म' जन्म–जम्म। मन्मथ–वम्मह। मन्मन–मम्मण।

(पालि भाषा में ग्म को गुम तथा न्म को म्म होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० क्रमशः ४९ तथा ४६)

'द्म' को 'म्ह' पद्म–पम्ह। पद्मल–पम्हल।

'श्म' " " कश्मीर–कम्हार। कुश्मान–कुम्हाण।

'ष्म' " " उष्मा–उम्हा। ग्रीष्म–गिम्ह।

'स्म' " " अस्मादृश–अम्हारिस। विस्मय–विम्हय।

'ह्म' " " ब्रह्म–बम्ह। ब्राह्मण–बम्हण। ब्रह्मचर्य–बम्हचेर, बंभचेर। सुह्म–सुम्ह।

(अपभ्रंश भाषा में पूर्वनिर्दिष्ट म्ह के स्थान में 'म्भ'[3] भी बोला जाता है।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।५७,५८। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।६२, ६१, ७४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।४१२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं०	अप०	प्रा०
ग्रीष्म	गिम्ह, गिम्भ	गिम्ह
श्लेष्म	सिम्ह, सिम्भ	सिम्ह
पद्म	पम्ह, पम्भ	पम्ह
पक्ष्मल	पम्हल, पम्भल	पम्हल ।
ब्राह्मण	बम्हण, बंभण	बम्हण

(पालि भाषा में श्म=म्ह, ष्म=म्ह, स्म=म्ह होता है और कहीं-कहीं श्म और स्म को स्स तथा स होता है। देखिये पा० प्र० पृ० ५०)

१५. 'ल्ह' विधान

'ह्ल'[1] को 'ल्ह' कह्लार–कल्हार। प्रह्लाद–पल्हाअ।

(पालि भाषा में 'ह्ल' के बदले 'हिल' बोला जाता है :—ह्लाद–हिलाद। देखिये—पा० प्र० पृ० ३२)

१६. कुछ संयुक्त व्यञ्जनों के मध्य में स्वरों का आगम

'क्ल'[2] के स्थान में 'किल' क्लाम्यति–किलम्मइ। क्लाम्यत्–किलमंत। क्लिष्ट–किलिट्ठ। क्लिन्न–किलिन्न। क्लेश–किलेस। शुक्ल–सुकिल, सुइल।

'ग्ल' के स्थान में 'गिल' ग्लायति–गिलाइ। ग्लान–गिलाण।

'प्ल' के „ „ 'पिल' प्लुष्ट–पिलुट्ठ। प्लोष–पिलोस।

'म्ल' „ „ „ 'मिल' अम्ल–अंबिल। म्लान–मिलाण। म्लायति–मिलाइ।

'श्ल' „ „ „ सिल' श्लेष–सिलेस। श्लेष्मा–सिलिम्हा। श्लोक–सिलोग। श्लिष्ट–सिलिट्ठ।

'र्य'[3] के स्थान में 'रिअ' अथवा 'रिय' आचार्य–आयरिअ। गाम्भीर्य–गंभीरिअ। गाभीर्य–गहीरिअ। ब्रह्मचर्य–बम्हचरिअ।

---

१. है० प्रा० व्या० ८।२।७६। २. है० प्रा० व्या० ८।२।१०६।
३. है० प्रा० व्या० ८।२।१०७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भार्या–भारिश्रा। वर्य–वरिश्र। वीर्य–वीरिश्र। स्थैर्य–थेरिश्र।
सूर्य–सूरिश्र। सौन्दर्य–सुंदरिश्र। शौर्य–सोरिश्र।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में 'रिय' भी समझना चाहिए। लेकिन यह विधान व्यापक न होकर प्रयोगानुसारी है देखिए—ब विधान नियम–५। पैशाची भाषा में 'र्य' के स्थान में 'रिय'[1] भी बोला जाता है।

सं०	पै०	प्रा०
भार्या	भारिया, भज्जा	भज्जा

'र्श[2]' के स्थान में 'रिस' आदर्श–आयरिस, आयंस। दर्शन–दरिसण, दंसण। सुदर्शन- सुदरिसण, सुदंसण।

'र्ष' " " " वर्ष–वरिस, वास। वर्षशत–वरिससय, वाससय। वर्षा–वरिसा, वासा।

'र्ह' " " " रिह अर्हति–अरिहइ। अर्ह–अरिह। गर्हा–गरिहा। बर्ह–बरिह।

[3]स्त्रीलिङ्गी पद के संयुक्त व्यञ्जनों में स्वरों का आगम

'घ्वी' के स्थान में 'घुवी'		लघ्वी—लघुवी, लहुवी।
थ्वी " " "	थुवी	पृथ्वी—पुथुवी, पुहुवी।
द्वी " " "	दुवी	मृद्वी—मिदुवी, मिउवी।
न्वी " " "	णुवी	तन्वी—तणुवी।
र्वी " " "	रुवी	गुर्वी—गुरुवी।
ह्वी " " "	हुवी	बह्वी—बहुवी।

(पालि भाषा में भी कई संयुक्त व्यञ्जनों के बीच में स्वरों का आगम होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ४६ (नि० ६२), पृ० ३२, पृ० ११, पृ० २६२ स्त्री प्रत्यय।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३१४। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०५। १०४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।११३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संयुक्त व्यञ्जनों का विशेष परिवर्तन

१. 'क्क'[1]

'क्त' को 'क्क'	मुक्त–मुक्क, मुत्त । शक्त–सक्क, सत्त ।
'ग्ण' " 'क्क'	रुग्ण–लुक्क, लुग्ग ।
'त्व' " 'क्क'	मृदुत्व–माउक्क, माउत्तण ।
'ष्ट' " "	दष्ट–डक्क, दट्ठ ।

[सूचना :—जहाँ दो-दो रूप दिए हैं वहाँ विकल्प से समझना चाहिए ।]

(पालि भाषा में भी शक्त–सक्क । प्रतिमुक्त–पतिमुक्क । देखिये—पा० प्र० पृ० ४१ (टिप्पणी) । रुग्ण–लुग्ग पृ० ४६ टिप्पण)

२. क्ख[2]

'क्ष्ण' को 'क्ख'	तीक्ष्ण–तिक्ख, तिण्ह देखिये—'ण' विधान नियम क्ष्ण को ण्ह, पृ० ७० ।

(तीक्ष्ण–तिक्ख, तिण्ह, तिक्खिण देखिए पा० प्र० पृ० ४८ टिप्पण)

३. ख[3]

'स्त' को 'ख'	स्तम्भ–खंभ, थंभ ।
'स्थ' " "	स्थाणु–खाणु अर्थात् ठूँठ वृक्ष, थाणु (=महादेव) ।
'स्फ' को "	स्फेटक–खेडअ । स्फोटक–खोडअ । स्फेटिक–खेडिअ ।

४. ग्ग[4]

'क्त' को 'ग्ग'	रक्त–रग्ग, रत्त ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।२ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।३ ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।८,७,६ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।१० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. ङ्क[1]

'ल्क' को 'ङ्क' शुल्क–सुङ्क, सुंग, सुक्क* ।

(शुल्क—सुंक देखिए पा० प्र० पृ० ३० टिप्पण)

६. च्च[2]

'त्त' को 'च्च' कृत्ति–किच्ची ।

'थ्य' " 'च्च' तथ्य–तच्च, तच्छ ।

७. छ तथा च्छ[3]

'स्थ' को 'छ' स्थगित–छइअ, थइअ ।

'स्पृ' " " स्पृहा–छिहा । स्पृहावत्–छिहावंत ।

'स्पृ' " 'च्छ' निस्पृह–निच्छिह, निप्पिह ।

८. ज्ज तथा ञ्ज[4]

'न्य' को 'ज्ज', 'ञ्ज' अभिमन्यु–अहिमज्जु, अहिमञ्जु, अहिमंजु, अहिमन्नु ।

मागधी[5] में अभिमन्यु–अहिमञ्ञु ।

(अभिमन्यु–अभिमञ्जु देखिये—पा० प्र० पृ० २२)

९. ञ्झ[6]

'न्ध' को 'ञ्झ' इन्ध–इञ्झाइ । (तृतीय पुरुष, एकवचन, वर्तमानकाल)

सम् + इन्ध—समिञ्झाइ ,,

वि + इन्ध— विञ्झाइ ,,

१०. ञ्चु[7]

---

१. हे० प्रा०व्या० ८।२।११। । *तुलना कीजिए–हिन्दी-'चुंगी' से । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१२,२१ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७,२३ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।२५ । ५. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९३ । ६. हे० प्रा० व्या० ८।२।२८ । ७. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'श्चि' को 'ञ्चु' वृश्चिक—विञ्चुअ, विंचुअ, विंछिअ ।
(वृश्चिक–विच्छिक देखिये—पा० प्र० पृ० ३८)

११. ट्ट[1]

'त्त' को 'ट्ट' पत्तन–पट्टण । मृत्तिका–मट्टिआ । वृत्त-वट्ट ।
'र्थ' ,, ,, कदर्थित–कवट्टिअ ।
'स्त' ,, ,, पर्यस्त–पल्लट्ट ।
(देखिए पा० प्र० पृ० ५८ र्त=ट्ट, वर्ति–वट्टि ।)

१२. ठ–ड्ड[2]

'स्त' को 'ठ' स्तम्भयते – ठंभिज्जइ (=गतिहीन) । स्तब्ध–ठड्ढ[3] ।
(याने निस्पंद–गतिहीन, हिन्दी में खडा)
स्तम्भ्–ठंभ्, ठंभइ क्रियापद ।
स्तम्भ–ठंभ, खंभ । स्त्यान–ठीण, थीण ।
'स्थ' को 'ठ' विसंस्थुल–विसंठुल ।
'र्थ' को 'ट्ठ' अर्थ—अट्ठ (=प्रयोजन), अत्थ (=धन) ।
चतुर्थ—चउट्ठ, चउत्थ ।
'स्थ' को 'ट्ठ' अस्थि—अट्ठि ।

(देखिये—पा० प्र० पृ० २७ टिप्पण, परिवस्तव्य—परिवट्ठव्व । अर्थ—अट्ट, अट्ठ देखिये—पा० प्र० पृ० १० टिप्पण । वयःस्थ--वयट्ठ, अस्थि–अट्ठि देखिए पा० प्र० पृ० २८ स्थ=ठ तथा पृ० २६ स्थ=ट्ठ ।

१३. ड्ड[4]

'र्त' को 'ड्ड' गर्त—गड्ड । गर्ता—गड्डा ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।२९, ४७ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।६, ८, ३२, ३३, ३९ । ३. तुलना–हिन्दी–ठाढ़ो—"सूरदास द्वारे ठाढ़ो आंधरो भिखारी" । ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।३५,३६,३७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'र्द' ,, ,, कपर्द—कवड्ड । छर्द—छड्डइ (क्रियापद) ।
छर्दि—छड्डि । मर्दित—मड्डिअ । वितर्दि—विअड्डि ।
गर्दभ—गड्डह, गद्दह ।

१४. ढ, ड्ढ[1]

'र्ध' को 'ढ' मूर्ध--मुंढा, मुद्ध ।
'र्ध' ,, 'ड्ढ' अर्ध--अड्ढ, अद्ध ।
'ग्ध' ,, ,, दग्ध–दड्ढ । विदग्ध–विअड्ढ ।
'द्ध' ,, ,, ऋद्धि–इड्ढि, इद्धि । वृद्ध–वुड्ढ, विद्ध । वृद्धि–वुड्ढि ।
श्रद्धा–सड्ढा, सद्धा ।
'ब्ध' ,, ,, स्तब्ध–ठड्ढ ।

(देखिए—पा० प्र० पृ० ४२–वृद्धि–वुड्ढि । वर्धमान–वड्ढमान । अर्ध–अड्ढ । दग्ध–दड्ढ आदि । द्ध = ड्ढ, र्ध = ड्ढ, ग्ध = ड्ढ ।

१५. ण्ट, ण्ड, ण्ण[2]

'न्त' को 'ण्ट' वृन्त–वेण्ट अथवा वेंट । तालवृन्त–तालवेण्ट ।
'न्द' ,, 'ण्ड' कन्दरिका–कण्डलिया । भिन्दिपाल–भिण्डिवाल ।
'ञ्च' ,, 'ण्ण' पञ्चदश–पण्णरह । पञ्चाशत्–पण्णासा ।
'त्त' ,, 'ण्ण' दत्त–दिण्ण (जहाँ ण्ण न हो वहाँ दत्त पद समझना चाहिए । जैसे, दत्तं । परन्तु देवदत्त, चारुदत्त आदि नामों में 'त्त' का परिवर्तन नहीं होता है ।)
'ह्न' ,, 'ण्ण' मध्याह्न–मज्झण्ण, मज्झण्ह ।

(देखिए—पा० प्र० पृ० ५८–वृन्त–वण्ट–नियम ८५ ।)

१६. त्थ[3]

'त्स' को 'त्थ' उत्साह–उत्थाह ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२,४१,४०,३९ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२। ३१, ३८, ४३, ८४ तथा ८।१।४६ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।४८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'त्म' ,, ,, अध्यात्म–अज्झत्थ, अज्झप्प ।

(देखिये—पालि प्र० पृ० ३० टिप्पण उत्साह–उस्साह ।)

१७. न्त[1]

'न्य' को 'न्त' मन्यु–मन्तु अथवा मंतु, मन्नु ।

१८. द्ध[2]

'ष्ट' ,, 'द्ध' आश्लिष्ट–आलिद्ध ।

१९. न्ध[3]

'ह्न' ,, 'न्ध' चिह्न–चिन्ध, चिंध, चिण्ह ।
चिह्नित–चिन्धिअ, चिंधिअ, चिण्हिअ ।

२०. प्प, प्फ, फ[4]

'त्म' को 'प्प' आत्मा–अप्पा, अत्ता । आत्मानः–अप्पाणो, अत्ताणो ।
'स्म' ,, 'प्प' भस्म–भप्प, भस्स ।
'ष्म' ,, 'प्फ' भीष्म–भिप्फ ।
'ष्म' ,, 'फ' श्लेष्मन्–सेफ, सिलिम्ह ।

(समानता–'श्ले' और 'ष्म' के बीच में 'अ' का प्रक्षेप करने पर शलेषम–गुजराती में 'सलेखम')

(आत्मा–अत्ता, आतुमा देखिये—पा० प्र० पृ० ५० नियम ५७ । श्लेष्मा–सिलेसुमा, सेम्ह देखिये—पा० प्र० पृ० ४६ ।)

२१. ब्भ, म्व, म्भ[5]

'र्ध्व' को 'ब्भ' ऊर्ध्व–उब्भ, उद्ध ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।४४ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।४९ ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।५० । ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।५१,५४,५५ ।
५. हे० प्रा० व्या० ८।२।५६, ५६, ६०, ७४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'म्र' ,, 'म्ब' आम्र--अम्ब। ताम्र--तम्ब।
'श्म' ,, 'म्भ' कश्मीर--कम्भार, कम्हार।
'ह्म' ,, 'म्भ' ब्राह्मण--बम्भण, बम्हण।
ब्रह्मचर्य--बम्भचेर, बम्हचेर।

(आम्र--अम्ब, ताम्र--तम्ब देखिये—पा० प्र० पृ० १५ नियम १८)

२२. र[1]

'त्र' को 'र' धात्री--धारी।
'र्य' को 'र' आश्चर्य--अच्छेर। तूर्य--तूर। धैर्य--धीर, धिज।
पर्यन्त--पेरन्त, पज्जंत। ब्रह्मचर्य--बंभचेर।
शौण्डीर्य--सोंडीर, सं० शौण्डीर। सौन्दर्य--सुंदेर।
'ह' को 'र' उत्साह--उत्थार।
'र्ह' को 'र' दशार्ह--दसार।

(देखिए—पा० प्र० पृ० १४ टिप्पण—धात्री--धाती। पा० प्र० पृ० ४ इस्सेरं, मच्छेरं)

२३. ल, ल्ल[2]

'ण्ड' को 'ल' कूष्माण्ड--कोहल, कोहंड। कूष्माण्डी--कोहली, कोहंडी।
'र्य' को 'ल्ल' पर्यस्त--पल्लट्ट, पल्लत्थ। पर्याण--पल्लाण, सं० पल्ययन।
सौकुमार्य--सोगमल्ल, सोअमल्ल, सं० सौमाल्य।

(देखिए—पा० प्र० पृ० १६ टिप्पण--पर्यस्तिका--पल्लत्थिका आदि)

२४. स्स[3]

'स्प' को 'स्स' बृहस्पति--बहस्सइ, बहप्फइ।
बनस्पति--वणस्सइ, वणप्फइ।

(देखिए—पा० प्र० पृ० ३९, वनस्पति--वनप्पति, नियम ४८)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।८१, ६६, ६४, ६३, ६५, ४८, ८५। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।७३, ६८। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।६६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. ह[1]

'क्ष' को 'ह'	दक्षिण—दाहिण, दक्खिण ।
'ख' ,, 'ह'	दुःख—दुह, दुक्ख । दुःखित—दुहिअ, दुक्खिअ ।
'ष्प' ,, 'ह'	बाष्प—बाह (अश्रु—अंसु गू०, आँसू) तथा बाष्प-बप्फ (=भाफ) ।
'ष्म' को 'ह'	कुष्माण्ड—कोहण्ड । कुष्माण्डी—कोहंडी ।
र्घ ,, ,,	दीर्घ—दीह, दिग्घ ।
र्थ ,, ,,	तीर्थ—तूह, तित्थ ।
र्ष ,, ,,	कार्षापण—काहापण ।

(देखिये—पा० प्र० पृ० ८, दुःख—दुक्ख)

२६. द्विर्भाव[2]

कुछ शब्दों में 'र' और 'ह' को छोड़कर इकहरे व्यञ्जन को द्वित्व हो जाता है । द्वित्व का ही अपर नाम द्विर्भाव है । यह द्विर्भाव कुछ शब्दों में नित्य होता है और कुछ में वैकल्पिक ।

नित्य द्विर्भाव :—ऋजु-उज्जु । तैल—तेल्ल । प्रभूत—बहुत्त । प्रेम—पेम्म । मण्डूक—मंडुक्क । यौवन—जुव्वण । विचकिल—बेइल्ल । व्रीडा—विड्डा इत्यादि ।

वैकल्पिक द्विर्भाव :—एक—एक्क, इक्क, एअ, एग । कर्णिकार—कण्णिआर, कणिआर । कुतूहल—कोउहल्ल, कोउहल । चैव—च्चिअ, च्चिअ, चिअ । चैव—चेअ, च्चेअ, चेअ । तूष्णीक—तुण्हिक्क, तुण्हिक । दैव—दइव्व, दइव । नख—नक्ख, नह । निहित—निहित्त, निहिअ । नीड—नेड्ड, नीड । मूक—मुक्क, मूअ । सेवा—सेव्वा, सेवा ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।७२, ७०, ७३, ९१, ७१ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।८९, ९५, ९८, ९७, ९२, ८।१।२२ ।

६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थूल–थुल्ल, थूल। स्थाणु–खण्णु, खाणु। हूत–हुत्त, हूअ इत्यादि।

सामासिक शब्दों में द्विर्भाव :—आलानस्तम्भ–आणालक्खंभ, आणालखंभ। कुसुमप्रकर–कुसुप्पयर, कुसुमपयर। देवस्तुति–देवत्थुइ, देवथुइ। नदीग्राम–नइग्गाम, नइगाम। हरस्कन्द–हरक्खंद, हरखंद इत्यादि।

जिस इकहरे व्यञ्जन के पूर्व दीर्घ अथवा अनुस्वार हो तो उसे द्वित्व नहीं होता है। जैसे :—

क्षिप्त–छूढ का छुड्ढ नहीं होता है।
स्पर्श–फास ,, फस्स ,, ,,
त्र्यस्र–तंस ,, तस्स ,, ,,
संध्या–संझा ,, संज्झा ,, ,,

(पालि भाषा में भी द्विर्भाव की प्रक्रिया है। देखिये पा० प्र० पृ० १०, नियम १२।)

२७. **शब्दों में विशेष परिवर्तन**[1]

अयस्कार–एक्कार। आश्चर्य–अच्छअर, अच्छरिअ, अच्छरिज्ज, अच्छरीअ। उदूखल–ओहल, उऊहल। उलूखल–ओक्खल, उलूहल। कमल–केल, कमल। कदली–केली, कयली। कर्णिकार–कण्णेर, कणिआर, कण्णिआर। चतुर्गुण–चोग्गुण, चउग्गुण। चतुर्थ–चोत्थ, चउत्थ। चतुर्दश–चोद्दस, चउद्दस। चतुर्वार–चोव्वार, चउव्वार। त्रयस्त्रिंशत्–तेत्तीसा। त्रयोदश–तेरह।

(पालि में अच्छरिय, अच्छयिर देखिये पा० प्र० पृ० ४४ टिप्पण।)

---

१. प्रा० व्या० ८।१।१६६, १६५, १६७, १६८, १७०, १७१, १७४, १७५ तथा ८।२।६६, ६७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रयोविंशति–तेवीसा । त्रिंशत्–तीसा । नवनीत–नोणीअ, लोणीअ । नवफलिका–नोहलिआ । नवमालिका—नोमालिआ । निषण्ण–णुमण्ण । पूगफल–पोप्फल । पूतर–पोर । प्रावरण–पंगुरण, पाउरण, पावरण । बदर–बोर । मयूख–मोह । रुदित–रुण्ण । लवण–लोण । विचकिल–बेइल्ल । विंशति–वीसा । सुकुमार–सोमाल (सं० सोमाल) । स्थविर–थेर ।

(देखिये पा० प्र० पृ० ४४ नियम ५७, लवण–लोण तथा पृ० ६२, लयन–लेन । देखिये—पा० प्र० पृ० २८ नि० ३४, स्थविर–थेर ।)

२८. **शब्दों में विविध परिवर्तन**[१]

अधस्–हेट्ठ । अप–ओ । अप्सरस्–अच्छरसा, अच्छरा । अयि–ऐ, अइ । अव–ओ । अवधि–ओहि । आयुष्–आउस । आरब्ध–आढत्त, आरद्ध । इदानीं–एण्हि, एत्ताहे, दाणिं, इआणिं (शौरसेनी–दाणिं) । ईषत्–कूर, ईसिं, ईसि । उत–ओ । उप–ऊ, ओ । उपाध्याय–ऊज्झाय, ओज्झाय, उवज्झाय । उभय–अवह, उवह, उभयो । ककुभ्–कउहा । क्षिप्त–छूढ, खित्त । क्षुध्–छुहा । गृह–घर । गृहस्वामी–घरसामी । राजगृह–रायघर । गृहपति–गहवइ । छुप्त–छिक्क, छुत्त । तिर्यक्–तिरिया, तिरिच्छ । त्रस्त–हित्थ, तट्ठ, तत्थ । दिश–दिसा । दुहिता–धूआ, दुहिआ । दंष्ट्रा–दाढ़ा (सं० दाढा) ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४१ । ८।१।१७२, २०, १६६, १७२, २० । ८।२।१३८, १३४ । ८।४।२७७ । ८।२।१२९ । ८।१।१७२, १७३ । ८।२।१३८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धनुष्–धणुह, धणु। धृति–दिहि। पदाति–पाइक्क, पयाइ। प्रावृष्–पाउस। पितृष्वसा–पिउच्छा, पिउसिआ। पूर्व–पुरिम, पुव्व (शौरसेनी–पुरव)। बहिस्–बाहिं, बाहिरं। बृहस्पति–भयस्सइ, बहस्सइ। भगिनी–बहिणी, भइणी। मलिन–मइल, मलिण। मातृष्वसा–माउच्छा, माउसिआ। मार्जार–मञ्जर, वञ्जर, मज्जार। वनिता–विलया, वणिआ। विद्रुत–विद्दाअ। वृक्ष–रुक्ख, वच्छ। वैडूर्य–वेरुलिय, वेडुज्ज। शुक्ति–सिप्पि, सुत्ति। स्तोक–थेव, थोव, थोक्क, थोअ। स्त्री–इत्थी, थी। श्मशान–सीआण, सुसाण, मसाण[1]।

[2]अपभ्रंश भाषा में निम्नलिखित शब्दों का विशेष परिवर्तन इस प्रकार है :—

सं०	प्रा०	अपभ्रंश
अन्यादृश	अन्नारिस	अन्नाइस
अपरादृश	अवरारिस	अवराइस

(देखिये—पा० प्र० पृ० ५६ नि० ७८, गृह–घर। गृहणी–घरणी। पृ० १६, तिर्यक्–तिरिय। पृ० ३४ टिप्पण, पितृष्वसा–पितुच्छ। पृ० २७, स्तोक–थोक। पृ० ५१ टिप्पण—श्मशान–मसान, मुसान।)

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१। ८।२।१२७, ८।१।१७, ८।२।१४४, ८।२।१३८, ८।२।१४३, ८।२।१३६। ८।१।१९, ८।२।१२६, ८।२।१३९, ८।१।२२, ८।२।१३१, ८।२।१३८, ८।१।१९, ८।२।१४२, ८।२।१३५, ८।४।२७०, ८।२।१४०, ८।२।१३७, ८।२।१२६, ८।२।१३८, ८।२।१४२, ८।२।१३२, ८।२।१२८, ८।१।१०७, ८।२।१२७, ८।२।१३३, ८।२।१३८, ८।२।१२५, ८।२।१३०, ८।२।८६। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।४१३, ८।४।४०३, ८।४।४०२, ८।४।४२१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईदृश	एरिस	अइस, एह
कीदृश	केरिस	कइस, केह
तादृश	तारिस	तइस, तेह
यादृश	जारिस	जइस, जेह
वर्त्म	वट्ट	विच्च
विषण्ण	विसण्ण	वुन्न

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगम

कुछ शब्दों के संयुक्त व्यञ्जनों के बीच में स्वरों का आगम होता है। इसे स्वर-प्रक्षेप वा अन्तःस्वरवृद्धि अथवा स्वर-भक्ति कहते हैं।

[1]**अ का आगमः**—अग्नि–अगणि, अग्गि। अर्हन्–अरहंत। कृष्ण–कसण, कण्ह (अर्थात् काला रंग)। क्ष्मा–छमा। प्लक्ष–पलक्ख। रत्न–रतन, रयण। शार्ङ्ग–सारंग। श्लाघा–सलाहा। स्निग्ध–सणिद्ध। सूक्ष्म–सुहम। स्नेह–सणेह, नेह।

[2]**इ का आगमः**—अर्हत्–अरिहंत। कृत्स्न–कसिण, कण्ह। क्रिया–किरिया, किया। चैत्य–चेइअ। तप्त–तविअ। दिष्ट्या–दिट्ठिआ। भव्य–भविअ, भव्व। वज्र–वइर, वज्ज। श्री–सिरी। स्निग्ध–सिणिद्ध, निद्ध। स्याद्–सिआ। स्याद्वाद–सिआवाअ। स्वप्न–सिविण, सिमिण, सुमिण। ह्यः–हिओ। ह्री–हिरी।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०२, ८।२।१११, ८।२।११०, ८।२।१०१, ८।२।१०३, ८।२।१०१, ८।२।१००, ८।२।१०१, ८।२।१०९, ८।२।१०१, ८।२।१०२। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१११, ८।२।११०, ८।२।१०४, ८।२।१०७, ८।२।१०५, ८।२।१०४, ८।२।१०७, ८।२।१०५, ८।२।१०४, ८।२।१०६, ८।२।१०७, ८।२।१०८, ८।२।१०४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[1]ई का आगमः—ज्या–जीआ।

[2]उ का आगमः—अर्हत्–अरुहंत। छद्म–छउम। द्वार–दुवार, दुआर, दार, देर, बार। पद्म–पउम, पोम्म। मूर्ख–मुरुक्ख, मुक्ख। श्वः–सुवे। स्नुषा–सुनुसा, सुण्हा, ण्हुसा, सुसा। सूक्ष्म–सुहुम, सुहम, सण्ह, सुण्ह। स्रुघ्न–सुरुग्घ। स्व–सुव।

२९. [3]विशेष शब्दों में अनुस्वार का आगमः—अतिमुक्तक–अइमुंत्तय, अइमुत्तय। अश्रु–अंसु। उपरि–अवरिं, उवरि। कर्कोट–कंकोड। कुड्मल–कुंपल। गुच्छ–गुंछ। गृष्टि–गिंठि, गिट्ठि। त्र्यस्र–तंस,। दर्शन–दंसण, दरिसण। देवनाग–देवंनाग। पर्शु–पंसु, परिसु। पुच्छ–पुंछ, पुच्छ। प्रतिश्रुत–पडंसुआ। बुध्न–बुंध। मनस्वि–मणसि। मनस्विनी–मणंसिणी। मनःशिला–मणंसिला, मणसिला, मणासिला, मणोसिला। मूर्धन्–मुंढ, मुद्ध। मार्जार–मंजार, मज्जार। वक्र–वंक, वक्क। वयस्य–वयंस, वयस्स। वृश्चिक–विंछिअ, विंचुअ। श्मश्रु–मंसु, मस्सु।

[4]शौरसेनी भाषा में णकार का विकल्प से आगमः—

सं०	प्रा०	शौ०
युक्तम् इदम्	जुत्तं इणं	जुत्तं णिमं, जुत्तं इणं।
सदृशम् इदम्	सरिसं इणं	सरिसं णिमं, सरिसं इणं।
किम् एतद्	किं एअं	किं णेदं, किं एदं।
एवम् एतद्	एवं एअं	एवं णेदं, एवं एदं।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।११५। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१११, ८।२।११२, ८।२।११४, ८।२।११३, ८।२।११४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२७६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[1]अपभ्रंश भाषा में विशेष शब्दों के किसी-किसी प्रयोग में स्वर अथवा व्यञ्जन का आगमः—

सं०	प्रा०	अप०
उक्त	उत्त	वुत्त—'व' का आगम
परस्पर	परोप्पर	अपरोप्पर—'अ'का आगम
व्यास	वास	व्रास—'र' का आगम

३०. [2]अक्षरों का व्यत्यय (व्यतिक्रम) :—

अचलपुर–अलचपुर। आलान–आणाल। करेणु–कणेरु महाराष्ट्र–मरहट्ठ। लघुक–हलुअ, लहुअ। ललाट–णडाल, णलाड। वाराणसी–वाणारसी, सं० वराणसी, वाणारसी, वराणसि। हरिताल–हलिआर, हरिआल। ह्रद–द्रह, हर।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।४२१, ८।४।४०६, ८।४।३९९। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।११८, ८।२।११७, ८।२।११६, ८।२।११९, ८।१।१२२, ८।२। १२३, ८।२।११६, ८।२।१२१, ८।२।१२०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिंगविचार

कुछ[1] शब्दों के लिंग में जो परिवर्तन होता है वह इस प्रकार है :—

जिन शब्दों के अन्त में स् अथवा न् हो वे सभी शब्द पुंलिग में होते हैं।

सं०	पु०	सं०	पु०
यशस्	जसो	जन्मन्	जम्मो
पयस्	पयो	नर्मन्	नम्मो
तमस्	तमो	मर्मन्	मम्मो
तेजस्	तेओ	वर्म्मन्	वम्मो
उरस्	उरो	धामन्	धामो

'जसो', 'पयो' आदि शब्दों के अन्त में 'ओकार' नर जाति (पुंलिग) सूचित करता है।

अपवाद :—दामन्–दामं। शर्मन्–सम्मं। चर्मन्–चम्मं। शिरस्–सिरं। सुमनस्–सुमणं।

प्रावृष्–शरद् और तरणि शब्द पुंलिग में प्रयुक्त होते हैं। प्रावृष्–पाउसो। शरद्–सरओ। तरणि–तरणी। 'आँख' अर्थवाले सभी शब्द पुंलिग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं।

सं०	पुं०	नपुं०
अक्षि	अक्खी	अक्खि
अक्षि	अच्छी	अच्छि
चक्षु	चक्खू	चक्खुं

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।३२, ८।१।३१, ८।१।३३, ८।१।३४, ८।१।३५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नयन	नयणो	नयणं
लोचन	लोयणो	लोयणं

निम्नलिखित शब्द पुंलिग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं ।

वचन	वयणो	वयणं
विद्युत्	विज्जुणा	विज्जुए (तृतीया विभक्ति)
कुल	कुलो	कुलं
छन्द	छंदो	छंदं
माहात्म्य	माहप्पो	माहप्पं
दुःख	दुक्खो	दुक्खं
भाजन	भायणो	भायणं

निम्नलिखित शब्द नपुंसकलिग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं ।

गुण	गुणं	गुणो
देव	देवं	देवो
विन्दु	बिन्दुं	बिन्दू
खड्ग	खग्गं	खग्गो
मण्डलाग्र	मंडलग्गं	मंडलग्गो
कररूह	कररुहं	कररुहो
वृक्ष	रुक्खं	रुक्खो

जिन शब्दों के अन्त में भाववाची 'इमा' प्रत्यय हो तो वे शब्द स्त्रीलिंग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं ।

सं०	पुंलिग	स्त्रीलिंग
गरिमन्	गरिमा	गरिमा
महिमन्	महिमा	महिमा
निर्लज्जिमन्	निल्लज्जिमा	निल्लज्जिमा
धूर्तिमन्	धुत्तिमा	धुत्तिमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अञ्जलि आदि शब्द स्त्रीलिंग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं।

सं०		स्त्रीलिंग
अञ्जलि	अंजलि	अंजली
पृष्ठ	पिट्ठं	पिट्ठी
अक्षि	अच्छि	अच्छी
प्रश्न	पण्हो	पण्हा
चौर्य	चोरिअ	चोरिआ
कुक्षि	कुच्छी	कुच्छी
बलि	बली	बली
निधि	निही	निही
रश्मि	रस्सी	रस्सी
विधि	विही	विही
ग्रन्थि	गंठी	गंठी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्धि

सन्धि अर्थात् परस्पर मिल जाना, एक दूसरे में मिल जाना अथवा एक दूसरे में छिप जाना।

प्रथम पद के अन्तिम स्वर और पिछले पद के पूर्व स्वर के मिल जाने पर जो परिवर्तन होता है उसे स्वर-सन्धि कहते हैं।

पद के अन्दर के व्यञ्जन का अपने पीछे आनेवाले व्यञ्जन के कारण जो परिवर्तन होता है उसे व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं। जैसे:—

कंठ—कण्ठ। चंद—चन्द। कंकण—कङ्कण। संख—सङ्ख।
गंगा—गङ्गा आदि।

अर्धमागधी में संस्कृत की भाँति पृथक्-पृथक् व्यञ्जनों की सन्धि नहीं होती।

१. एक पद में सन्धि नहीं होती है[1]:

प्राकृत भाषा के अनेकानेक शब्द स्वरबहुल होते हैं ऐसे पदों में सन्धि करने से अर्थभ्रम होता है अतः इस भाषा में एक पद में सन्धि नहीं होती है। जैसे:—

नई (नदी), पइ (पति), कइ (कवि), गअ (गज), गउआ (गो=गाय), काअ (काक), लोअ (लोक), रुइ (रुचि), रइ (रति) आदि।

अपवाद:—कुछ शब्दों में एक पद में भी स्वरसन्धि हो जाती है। जैसे:—

---

१. हे० प्रा० व्या ८।१।४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि + ईअ = बीअ }
वि + इअ = बिइअ } द्वितीय (दूसरा)

काहि + इ = काही }
काहिइ } करेगा (करिष्यति)

[१]थ + इर = थेर (वृद्ध = स्थविर)

च + उ + द्दस = चोद्दस (चौदह = चतुर्दश)

[२]कुम्भ + आर = कुम्भार (कुम्हार = कुम्भकार)

चक्क + आअ = चक्काअ (चक्रवाक् = चकवा पक्षी)

साल + आहण = सालाहण (शालिवाहन राजा)

२. क्रियापद के स्वर की स्वर परे रहनेपर सन्धि नहीं होती है।[३] जैसे :—

होइ + इह = होइ इह । सं० भवति + इह = भवति इह ।

३. 'ई अथवा उ, ऊ' के पश्चात् कोई भी विजातीय स्वर आ जावे तो सन्धि नहीं होती[४] । जैसे :—

इ—जाइ + अन्ध = जाइअंध (जाति अन्ध–जात्यन्ध = जन्मान्ध)

ई—पुढवी + आउ = पुढवीआउ (पृथ्वी–आप = पृथ्वी और पानी)

उ—बहु + अट्ठिअ = बहुअट्ठिय (बहुअस्थिक = बहुत-सी हड्डियोंवाला)

ऊ—बहू + अवगूढ = बहूअवगूढ (वधू अवगूढ)

४. 'ए और ओ' के बाद स्वर परे होने पर सन्धि नहीं होती[५] । जैसे :—

ए—महावीरे + आगच्छइ । एगे + आया । एगे + एवं ।

ओ—अहो + अच्छरियं । गोयमो + आघवेइ ।

आलक्खिमो + इण्हि ।

---

१. देखिये, पिछले उदाहरणों में नियम २७ के अन्तर्गत । २. हे० प्रा० व्या० ८।१।८ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।९ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।६ । ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. दो पदों में भी व्यञ्जन के लोप होने पर शेष स्वरों की सन्धि नहीं होती[1]। जैसे :—

निशाकर—निसा + अर = निसाअर। निसि + अर = निसिअर।

रजनीकर—रयणी + अर = रयणीअर।

रजनीचर—रयणी + अर = रयणीअर।

निशाचर—निसा + अर = निसाअर। निसि + अर = निसिअर।

गन्धपुटी—गंध + उडी = गंधउडी।

६. 'अ और आ' के बाद अ और आ रहने पर दीर्घ आकार हो जाता है[2]। जैसे :—

(अ + अ = आ। अ + आ = आ। आ + अ = आ। आ + आ = आ।)

अ—जीव + अजीव = जीवाजीव।

विसम + आयव = विसमायव (विषम + आतप)।

आ—गंगा + अहिवइ = गंगाहिवइ।

जउणा + आणयण = जउणाणयण (यमुना + आनयन)।

७. 'इ और ई' के परे इ और ई हो तो दीर्घ ईकार हो जाता है[5]। जैसे :—

(इ + इ=ई। इ + ई=ई। ई + इ=ई। ई + ई = ई।)

इ—मुणि + इयर=मुणियर। पुहवी + ईस=पुहवीस।

दहि + ईसर=दहीसर। पुहवी + इसि=पुहवीसि।

८. 'उ और ऊ' के बाद उ तथा ऊ रहने पर दीर्घ ऊकार हो जाता है[6]। जैसे :—

(उ + उ=ऊ। उ + ऊ=ऊ ऊ + उ = ऊ। ऊ + ऊ = ऊ।)

बहू + उदग=बहूदग। बहू + उपमा=बहूपमा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।८। २.–५. हे० सं० सिद्धहेम० ल० वृ० १।२।१। ३. सिद्धहे० सं० व्या० १।२।१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सादु + उदग=सादूदग । बहू + ऊसास=बहूसास ।

बहु + ऊसास=बहूसास ।

९. स्वर के बाद स्वर रहने पर पूर्वस्वर का लोप भी हो जाता है[1]। जैसे :—

नर + ईसर—नर् + ईसर = नरीसर, नरेसर ।

तिदस + ईस—तिदस् + ईस=तिदसीस, तिदसेस ।

निसास + ऊसास—नीसास् + ऊसास=नीसासूसास ।

रमामि + अहं—रमामहं । तम्मि + अंसहर=तम्मंसहर ।

उवलभामि + अहं = उवलभामहं ।

देविंद + अभिवंदिअ = देविंदभिवंदिअ ।

ददामि + अहं = ददामहं । ण + एव = णेव ।

१०. जहाँ दो स्वर पास-पास आते हों वहाँ कई स्थानों पर पिछले पद के पहले स्वर का लोप हो जाता है।[2] जैसे :—

फासे + अहियासए = फासे हियासए ।

बालो + अवरज्झइ = बालो वरज्झइ ।

एस्संति अणंतसो = एस्संति णंतसो ।

११. सर्वनाम सम्बन्धी स्वर अथवा अव्यय सम्बन्धी स्वर पास-पास आये हों तो दो में से किसी एक का लोप हो जाता है।[3] जैसे :—

तुब्भे + इत्थ = तुब्भित्थ । जे + एत्थ = जेत्थ ।

अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ । जइ + अहं = जइहं ।

जे + इमे = जेमे । जइ + इमा = जइमा ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१० । २. सिद्धहे० सं० व्या० १।२।२७ । इस सूत्र से मिलता-जुलता यह नियम है । ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।४० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. किसी भी पद के बाद में आये हुए 'अपि' अथवा 'अवि' अव्यय के 'अ' का विकल्प से लोप होता है।[१] जैसे :—
किं + अपि = किंपि, किमवि। केण + अवि = केणवि, केणावि।
केहं + अपि = कहंपि, कहमवि।

१३. किसी भी पद के बाद में आये हुए 'इति' अव्यय के 'इ' का लोप हो जाता है।[२]
जं + इति = जंति। जुत्तं + इति = जुत्तंति। दिट्ठं + इति = दिट्ठंति।

१४. यदि स्वरान्त पद के पश्चात् 'इति' अव्यय आ जाय तो 'इ' का लोप होने पर 'ति' का डबल (द्वित्व) 'त्ति' हो जाता है।[३]
तहा + इति = तहत्ति[४]। पुरिसो + इति = पुरिसोत्ति। पिओ + इति = पिओत्ति।

१५. भिन्न-भिन्न पदों में अ अथवा आ से परे इ अथवा ई हो तो 'ए' (गुण) हो जाता है।[५]
न + इच्छति=नेच्छति। जाया + ईस=जायेस। वास + इसि=वासेसि।
खट्टा + इह = खट्टेह (खट्वा + इह)। दिण + ईस = दिणेस।

१६. भिन्न-भिन्न पदों में अ और आ के बाद उ अथवा ऊ रहने पर 'ओ' (गुण) हो जाता है।[६] जैसे :—
सिहर + उवरि = सिहरोवरि। गंगा + उवरि = गंगोवरि। एग + ऊण = एगोण। वीस + ऊण = वीसोण। पाअ + ऊण = पाओण। पउन (=तीन पाव)

१७. पद के अन्तिम 'अ' का अनुस्वार होता है।[७]
जलम् = जलं। फलम् = फलं। गिरिम् = गिरिं।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।४१। २—३. हे० प्रा० व्या० ८।१।४२। ४. देखिये—नियम (२)। ५-६. सि० हे० सं० व्या० १।२।६। ७. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपवाद:—वणम्मि–वणंमि, वणम्मि ।

१८. **यदि पद के अन्तिम 'म्' के पश्चात् स्वर आ जाये तो उसका विकल्प से अनुस्वार होता है।**[1]

उसमम् + अजिअं = उसमं अजिअं, उसममजिअं। नगरम् + आगच्छइ = नगरं आगच्छइ, नगरमागच्छइ।

१९. **कुछ शब्दों के अन्तिम व्यञ्जन का अनुस्वार हो जाता है**[2] **। जैसे :—**

साक्षात्–सक्खं   पृथक्–पिहं
यत्–जं   सम्यक्–सम्मं
तत्–तं   ऋधक्–इहं
विष्वक्–वीसुं   ऋधकक्–इहयं

२०. **ङ्, ञ्, ण् तथा न् के बाद व्यञ्जन परे रहने पर अनुस्वार हो जाता है**[3] **। जैसे :—**

शङ्ख–सङ्ख, संख।   षण्मुख–छण्मुह, छमुह।
कञ्चुक–कञ्चुअ, कंचुअ।   सन्ध्या–संझा।

२१. **कुछ शब्दों में अनुस्वार का लोप हो जाता है**[4] **। जैसे :—**

विंशति–वीसा।   एवम्–एवं–एव, एवं।
त्रिंशत्–तीसा।   नूनम्–नूनं–नूण, नूणं।
संस्कृत–सक्कय (सं० सस्कृत)। इदानीम्–इआणिं–
संस्कार–सक्कार (सं०सस्कार)। इआणि, इआणिं,
मांस–मांस, मंस।   दाणि, दाणिं।
मांसल–मासल, मंसल।   किम्–किं, कि, किं।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४।
३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२८,२९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कांस्य—कास, कंस। संमुख—समुह, संमुह।
पांशु—पासु, पंसु। किंशुक—केसुअ, किंसुअ।
कथम्—कथं, कह, कहं। सिंह—सीह, सिंघ।

२२. अनुस्वार के बाद वर्ग के किसी भी व्यञ्जन के परे रहने पर विकल्प से वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो जाता है[1]। जैसेः—

पंक—पङ्क, पंक
संख—सङ्ख, संख
अंगण—अङ्गण, अंगण
लंघण—लङ्घण, लंघण
कंचुअ—कञ्चुअ, कंचुअ
लंछण—लञ्छण, लंछण
अंजन—अञ्जण, अंजण
संझा—सञ्झा, संझा
कंटअ—कण्टअ, कंटअ
कंठ—कण्ठ, कंठ
कंड—कण्ड, कंड
संढ—सण्ढ, संढ
अंतर—अन्तर, अंतर
पंथ—पन्थ, पंथ
चंद—चन्द, चंद
बंधु—बन्धु, बंधु
कंप—कम्प, कंप
गुंफ—गुम्फ, गुंफ
कलंब—कलम्ब, कलंब
आरंभ—आरम्भ, आरंभ

२३. कुछ शब्दों में दो पदों के बीच 'म्' का आगम हो जाता है[2]। जैसे :—

अन्न + अन्न = अन्नम् अन्न—अन्नमन्न।
एग + एग = एगम् एग—एग्गमेग।
चित्त + आणंदिय = चित्तम् आणंदिय—चित्तमाणंदिय।
जहा + इसि = जहाम् इसि—जहामिसि।
इह + आगअ = इहम् आगअ—इहमागअ।
हट्ठतुट्ठ + अलंकिअ = हट्ठतुट्ठम् आलंकिय—हट्ठतुट्ठमालंकिय।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।३०। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणेगछन्दा + इह = अणेगछंदाम् इह--अणेगछंदामिह ।

जुव्वण + अप्फुण्ण = जुव्वणम् अप्फुण्ण--जुव्वणमप्फुण्ण ।

२४. कुछ शब्दों का अन्तिम व्यञ्जन लोप होने की अपेक्षा पास वाले स्वर में ही मिल जाता है[1]। जैसे :—

किम् + इहं = किमिहं   निर् + अन्तर = निरन्तर ।

यद् + अस्ति = यदत्थि, जदत्थि   दुर् + अतिक्रम = दुरतिक्रम ।

पुनर् + अपि = पुणरवि   दुर् + अइक्कम = दुरइक्कम ।

२५. यहाँ सन्धि के जो-जो नियम बताये गये हैं उनका उपयोग दो पदों में ही करना चाहिये। जहाँ एक से अधिक नियम लागू हों वहाँ प्रचलित प्रयोगों के अनुसार सन्धि करनी चाहिए जिससे अर्थभ्रम न हो। अक्षरपरिवर्तन तथा लोप के नियम का उपयोग करते समय भी अर्थभ्रम न हो इसका ख्याल रखना जरूरी है।

●

---

१. स्वरहीनं परेण संयोज्यम् । तथा है० प्रा० व्या० ८।१।१४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समास[1]

समास का अर्थ है संक्षेप याने थोड़े शब्दों में अधिक अर्थ बतानेवाली शैली का नाम समास है। जिसमें लिखना और बोलना कम पड़ता है फिर भी विशेष अर्थ समझने में किसी प्रकार की कोई न्यूनता न रहे ऐसी शैली की खोज में समास शैली की शोध हुई। इस शोध का विकास पण्डितों की शैली में विशेष रूप से हुआ। बोलचाल की लोकभाषा में इस शैली का प्रचार बहुत कम दिखाई देता है। परन्तु जब लोकभाषा केवल साहित्य की भी भाषा बन जाती है तब उसमें भी इसका प्रयोग प्रचुर मात्रा में होता है।

'न्याय का अधीश' कहना हो तो समास विहीन शैली में 'नायस्स अधीसो' कहा जाएगा। जब कि समासशैली में 'नायाधीसो' कहा जाएगा अर्थात् जिस अर्थ को बताने के लिए समास विहीन शैली में छः अक्षरों की आवश्यकता पड़ती है उसी अर्थ को बताने के लिए समासशैली में केवल चार अक्षरों से ही काम चल जाता है।

इसी प्रकार "जिस देश में बहुत से वीर हैं वह देश" कहना हो तो समास विहीन शैली में "जम्मि देसे बहवो वीरा सन्ति सो देसो" इतना लम्बा वाक्य कहना पड़ता है जब कि उसी अर्थ को बताने के लिए समास-शैली में "बहुवीरो देसो" इतने कम अक्षरों से ही काम चल जाता है। अर्थात् जिस अर्थ को बताने के लिए समास विहीन शैली में चौदह अक्षरों की आवश्यकता पड़ती है, उसी अर्थ को संपूर्ण रूप से बताने वाली समास-शैली में केवल छः अक्षरों से ही सुन्दर रूपेण काम चल जाता है। समास-शैली की यही सब से बड़ी विशेषता है।

---

१. सिद्धहेम० सं० व्या० ३।१।१ से १६३–सम्पूर्ण समास प्रकरण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसके अतिरिक्त समासशैली की और भी अनेक विशेषताएँ हैं जैसे 'अहिणउलं' (अहिनकुलम्) में एकवचनी द्वन्द्व समास साँप और नकुल दोनों के जातिगत स्वाभाविक विरोध को प्रकट करता है—जब कि 'देवासुरं' में एकवचनी द्वन्द्व समास देव और असुरों में मात्र विरोध को ही सूचित करता है।

इसके अतिरिक्त कई बार जब समास में पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता तब वह किसी अर्थविशेष को बताता है; जैसे 'गेहेसूरो' समास मनुष्य की कायरता को सूचित करता है। "तित्थे कागो अत्थि" यह समास विहीन वाक्य कोई खास विशेष अर्थ नहीं बताता। जबकि 'तित्थकाग' (तीर्थकाक) सामासिक वाक्य तीर्थवासी मनुष्य की अधमता बतलाता है।

कहीं-कहीं समास में मध्यमपद के लोप होने पर भी उसका अर्थ बराबर सूचित होता रहता है। जैसे 'झसोदर' सामासिक शब्द का अर्थ "मछली के पेट की भाँति पेट है जिसका" ऐसा होता है। वस्तुतः ऐसा अर्थ बताने के लिए 'झसोदरोदर' (झस-मछली, उदर-पेट, उदर-पेट) शब्द प्रयुक्त होना चाहिए जब कि इसके बदले केवल 'झसोदर' शब्द ही उक्त अर्थ को पूर्णरूप से बता देता है। इस समास का ही यह एक चमत्कार है। ऐसे समास को 'मध्यमपद-लोपी' समास कहते हैं। इसके अतिरिक्त समासशैली की विशेषता बताने के लिए 'दंडादंडी' (दण्डादण्डि), केसाकेसी (केशाकेशि), अनुरूव (अणुरूव), जहासत्ति (यथाशक्ति) आदि अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं परन्तु उन सभी उदाहरणों को विस्तारपूर्वक देने का यह स्थान नहीं है।

इस बात का यहाँ विशेष ध्यान रखना चाहिए कि समासों की जो खूबी पण्डिताऊ भाषा में है वह खूबी एक समय की लोकभाषारूप इस प्राकृत भाषा में नहीं। परन्तु जब से यह भाषा भी साहित्यिक भाषा बनी तब से इसके ऊपर भी पण्डितों की भाषा के समासों का प्रभाव पर्याप्त रूप से पड़ा है और इसीलिए यहाँ समासों की थोड़ी चर्चा करना समुचित है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समास के प्रसिद्ध चार भेद अथवा प्रकार निम्नलिखित हैं : १. दंद (द्वन्द्व), २. तप्पुरिस (तत्पुरुष), ३. बहुव्वीहि (बहुव्रीहि), ४. अव्वईभाव (अव्ययीभाव) । जिन शब्दों का समास किया जाता है उन्हें अलग-अलग कर देने को विग्रह कहते हैं, विग्रह याने अलग करना ।

१. द्वन्द्व समास :--

द्वन्द्व याने जोड़ा (युगल), द्वन्द्व समास के जोड़े में प्रयुक्त दो अथवा दो से भी अधिक शब्दों में कोई मुख्य अथवा गौण नहीं होता अर्थात् द्वन्द्व समास में प्रयुक्त सभी शब्दों की समान मर्यादा है । जैसे :—'माता-पिता', 'सगा-सम्बन्धी' ये दोनों उदाहरण द्वन्द्व समास के हैं । उसी प्रकार 'पुण्णपावाइं', 'जीवाजीवा', 'सुहदुक्खाइं', 'सुरासुरा' आदि उदाहरण भी द्वन्द्व समास के हैं । द्वन्द्व समास का विग्रह इस प्रकार है :—

पुण्णं च पावं च पुण्णपावाइं ।
जीवा य अजीवा य जीवाजीवा ।
सुहं च दुक्खं च सुहदुक्खाइं ।
सुरा य असुरा य सुरासुरा ।

द्वन्द्व समास द्वारा बने शब्द अधिकतर बहुवचन में प्रचलित हैं । इसी प्रकार 'हत्थपाया' (हस्तपादाः), 'लाहालाहा' (लाभालाभा:), 'सारासारं' (सारासारम्), 'देवदाणवगंधव्वा' (देवदानवगन्धर्वा:) आदि ।

द्वन्द्व समास के विग्रह में य, अ अथवा च प्रयुक्त होता है ।

२. तप्पुरिस समास :—

जिस समास का पूर्वपद अपनी-विभक्ति के सम्बन्ध से उत्तरपद के साथ मिला हुआ हो वह तत्पुरुष समास कहलाता है । इस समास का पूर्वपद द्वितीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक होता है । पूर्वपद जिस विभक्ति का हो उसी नाम से तत्पुरुष समास कहा जायेगा । जैसे:—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिईया तप्पुरिस (द्वितीया तत्पुरुष), तईया तप्पुरिस (तृतीया-तत्पुरुष), चउत्थी तप्पुरिस (चतुर्थी तत्पुरुष), पंचमी तप्पुरिस (पञ्चमी तत्पुरुष), छट्ठी 'तप्पुरिस (षष्ठी तत्पुरुष) और सत्तमी तप्पुरिस (सप्तमी तत्पुरुष)।

इन सभी के उदाहरण क्रमशः इस प्रकार हैं।

बिईया तप्पुरिसः—

इंदियं अतीतो—इंदियातीतो। वीरं अस्सिओ—वीरस्सिओ (वीराश्रितः)।
सुहं पत्तो—सुहपत्तो। खणं सुहा—खणसुहा (क्षणसुखा)।
दिवं गतो—दिवंगतो।

तईया तप्पुरिसः—

ईसरेण कडे—ईसरकडे (ईश्वरकृतः)। मायाए सरिसी—माउसरीसी
दयाए जुत्तो—दयाजुत्तो। कुलेण गुणेण सरिसी—कुलगुणसरिसी।
गुणेहिं संपन्नो—गुणसंपन्नो। रूवेण समाणा—रूवसमाणा।
रसेण पुण्णं—रसपुण्णं।

चउत्थो तप्पुरिसः—

लोगाय हितो—लोगहितो। बहुजणस्स हितो—बहुजणहितो।
लोगस्स सुहो—लोगसुहो। थंभाय कट्ठं—थंभकट्ठं।

पंचमी तप्पुरिसः—

दंसणाओ भट्ठो—दंसणभट्ठो। वग्घाओ भयं—वग्घभयं।
अन्नाणाओ भयं—अन्नाणभयं। रिणाओ भुत्तो—रिणभुत्तो (भुक्तः)।
संसाराओ भीओ—संसारभीओ।

छट्ठी तप्पुरिसः—

देवस्स मंदिरं—देवमन्दिरं। लेहस्स साला—लेहसाला।
कन्नाए मुहं—कन्नामुहं। विज्जाए ठाणं—विज्जाठाणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरस्स इंदो–नरिन्दो। समाहिणो ठाणं–समाहिठाणं।
देवस्स इंदो–देविंदो।

सत्तमी तत्पुरिसः—

कलासु कुसलो–कलाकुसलो। जिणेसु उत्तमो–जिणोत्तमो।
बंभणेसु उत्तमो–बंभणोत्तमो। दिएसु उत्तमे–दिओत्तमे
नरेसु सेट्ठो–नरसेट्ठो।

उववय समास (उपपद समास) तत्पुरुष समास के अन्दर ही समाविष्ट हो जाता है। उववय (उपपद) समास में अन्तिम पद कृदन्तसाधित होता हैं यही इसकी विशेषता है।

उववय समास के कुछ उदारहण :—

कुंभगार	(कुम्भकार)	भासगार	(भाष्यकार)
सव्वण्णु	(सर्वज्ञ)	निण्णया	(निम्नगा)
पायव	(पादप)	नीयगा	(नीचगा)
कच्छव	(कच्छप)	नम्मया	(नर्मदा)
अहिव	(अधिप)	सगडब्भि	(स्वकृतभित्)
गिहत्थ	(गृहस्थ)	पावनासग	(पापनाशक)
सुत्तगार	(सूत्रकार)	वुत्तिगार	(वृत्तिकार) आदि।

विशेषण और विशेष्य का समास भी तत्पुरुष के भीतर समा जाता है उसका दूसरा नाम 'कम्मधारय समास' है। उसके उदारहणः—

पीअं च तं वत्थं च–पीअवत्थं।
रत्तो च सो घडो च–रत्तघडो।
गोरो च सो वसभो च–गोरवसभो।
महंतो च सो वीरो च–महावीरो।
वीरो च सो जिणो च–वीरजिणो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महंतो च सो रायो च–महारायो ।

कण्हो च सो पक्खो च–कण्हपक्खो ।

सुद्धो च सो पक्खो च–सुद्धपक्खो ।

कभी इस समास में दोनों विशेषण भी होते हैं ।

रत्तपीअं वत्थं–(रक्तपीतं वस्त्रम्) ।

सीउण्हं जलं–(शीतोष्णं जलम्) ।

कई बार पूर्वपद उपमासूचक होता है ।

चन्दो इव मुहं–चंदमुहं ।

घणो इव सामो–घणसामो ।

वज्ज इव देहो–वज्जदेहो (वज्रदेहः) ।

कई बार अन्तिम पद उपमासूचक होता है ।

मुहं चंदो इव–मुहचंदो । जिणो इंदो इव–जिणेंदो ।

कई बार पूर्वपद केवल निश्चयबोधक होता है ।

संजमो एव धणं–संजमधणं ।

तवो चिअ धणं–तवोधणं ।

पुण्णं चेअ पाहेज्ज–पुण्णपाहेज्जं (पुण्यपाथेयम्) ।

कम्मधारय समास का प्रथमपद यदि संख्यासूचक हो तो उसको द्विगुसमास कहते हैं ।

नवण्हं तत्ताणं समाहारो–नवतत्तं ।

चउण्हं कसायाणं समूहो–चउक्कसायं ।

तिण्हं लोआणं समूहो–तिलोई ।

तिण्हं लोगाणं समूहो–तिलोगं ।

अभाव या निषेधार्थक 'अ' अथवा 'अण' के साथ संज्ञा शब्दों के समास को नतप्पुरिस (नञ् तत्पुरुष) समास कहते हैं । जैसेः—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न लोगो–अलोगो । न इट्ठं–अणिट्ठं ।
न देवो–अदेवो । न दिट्ठं–अदिट्ठं ।
न आयारो–अणायारो । न इत्थी–अणित्थी ।

(जिस शब्द के आदि में स्वर हो वहीं 'अण' का प्रयोग करना चाहिए) ।

५, अइ, अव, परि और नि आदि उपसर्गों के साथ संज्ञा शब्दों के समास को पादितप्पुरिस (प्रादि तत्पुरुष) समास कहते हैं ।

पगतो आयरियो–पायरियो । उग्गओ वेलं–उव्वेलो ।
संगतो अत्थो–समत्थो । निग्गओ कासीए–निक्कासि ।
अइक्कंतो पल्लंकं–अइपल्लंको ।

पुणोपवुड्ढो (पुनःप्रवृद्धः), अंतब्भूओ आदि भी इसी प्रकार समझना चाहिए ।

३. बहुव्वीहि समास :—

इस समास में दो से भी अधिक पदों का उपयोग होता है । 'बहुव्वीहि' यानी बहुत व्रीहि (चावल) हैं जिसके पास ऐसा जो कोई हो वह 'बहुव्वीहि' कहलाता है । 'बहुव्वीहि' का जैसा अर्थ है वैसा ही इस समास द्वारा तैयार किये हुए शब्दों का अर्थ भी है । तात्पर्य यह है कि इस समास का पूर्वपद अधिकतर ,विशेषणरूप अथवा उपमासूचक होता है और प्रथम-पद के पश्चात् आनेवाला पद विशेष्य रूप होता है और समास हो जाने पर जो एक संपूर्ण शब्द तैयार होता है वह भी किसी दूसरे का विशेषण ही होता है । इस समास में प्रयुक्त शब्द प्रधान नही होते, परन्तु उनसे पृथक् अन्य कोई अर्थ प्रधान होता है इसलिए इस समास को अन्यपदार्थ-प्रधान समास भी कहते हैं । उपर्युक्त 'बहुव्वीहि' पद का अर्थ ही इस बात को स्पष्ट करता है । जब इस समास में प्रयुक्त शब्द समान विभक्ति वाले हों तो उसे समानाधिकरण बहुव्वीहि समास कहते हैं और जब शब्द

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलग-अलग विभक्ति वाले हों तो उसे वहिकरण (व्यधिकरण) बहुव्वीहि कहते हैं ।

समानाधिकरण बहुव्वीहि के उदाहरण :—

आरूढो वाणरो जं रुक्खं सो आरूढवाणरो रुक्खो (वृक्षः) ।
जिआणि इंदियाणि जेण सो जिइंदियो मुणी ।
जिओ कामो जेण सो जिअकामो महादेवो ।
जिआ परीसहा जेण सो जिअपरीसहो गोयमो ।
भट्ठो आयारो जस्स सो भट्ठायारो जणो ।
नट्ठो मोहो जस्स सो नट्ठोमोहो साहू ।
घोरं बंभचेरं जस्स सो घोरबंभचेरो जंबू ।
समं चउरंसं संठाणं जस्स सो समचउरंससंठाणो—रामो ।
कओ अत्थो जस्स सो कयत्थो कण्हो ।
आसा अंबरं जेंसि ते आसंबरा ।
सेयं अंबरं जेंसि ते सेयंबरा ।
महंता बाहुणो जस्स सो महाबाहू ।
पंच वत्ताणि जस्स सो पंचवत्तो—सीहो ।
चत्तारि मुहाणि जस्स सो चउम्मुहो-बम्हा ।
एगो दंतो जस्स सो एगदंतो-गणेसो ।
वीरा नरा जम्मि गामे सो गामो वीरणरो ।
सुत्तो सिंघो जाए सा सुत्तसीहा गुहा ।

वधिकरण बहुव्वीहि :—

चक्कं पाणिम्मि जस्स सो चक्कपाणी ।
गंडीवं करे जस्स सो गंडीवकरो अज्जुणो ।

उपमान जिसके प्रथम पद में है ऐसे बहुव्वीहि के उदाहरण :—

मिगनयणाइं इव नयणाणि जाए सा मिगनयणा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसी प्रकार कमलनयणा, गजाणणो, हंसगमणा, चंदमुही आदि ।

न बहुव्रीहि :—

न-कार सूचक 'अ' और 'अण' के साथ भी बहुव्रीहि समास होता हैं। जैसे :—

न अत्थि भयं जस्स सो अभयो ।
न अत्थि पुत्तो जस्स सो अपुत्तो ।
न अत्थि नाहो जस्स सो अणाहो ।
न अत्थि पच्छिमो जस्स सो अपच्छिमो ।
न अत्थि उयरं जीए सा अणुयरा ।

स बहुव्रीहि :—

इसी प्रकार सहसूचक 'स' अव्यय के साथ बहुव्रीहि समास होता है।

पुत्तेण सह सपुत्तो राया ।
सीसेण सह ससीसो आयरियो ।
पुण्णेण सह सपुण्णो लोगो ।
पावेण सह सपावो रक्खसो ।
कम्मणा सह सकम्मो नरो ।
फलेण सह सफलं ।
मूलेण सह समूलं ।
चेलेण सह सचेलं ण्हाणं ।
कलत्तेण सह सकलत्तो नरो ।

प, नि, वि, अव, अइ, परि आदि उपसर्गों के साथ जो बहुव्रीहि समास होता है उसे पादिबहुव्रीहि समास कहते हैं :—

प (पगिट्ठं) पुण्णं जस्स सो पपुण्णो जणो
नि (निग्गया) लज्जा जस्स सो निल्लज्जो
वि (विगओ) धवो जीए सा विधवा
अव (अवगतं) रूवं जस्स सो अवरूवो (अपरूप:)
अइ (अइक्कंतो) मग्गो जेण सो अइमग्गो रहो
परि (परिगतं) जलं जाए सा परिजला परिहा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. अव्वईभाव समास :—

जब युद्ध, अथवा झगड़ा बताने के लिए बराबर क्रिया बतानी हो तब इस समास का उपयोग होता है। जैसे भाषा में प्रचलित 'मारा-मारी', 'मुक्का-मुक्की' आदि शब्द इस समास के माने जाते हैं। प्रस्तुत में 'केसाकेसि', 'दण्डादण्डि' आदि शब्द हैं। इस समास में जिन दो शब्दों का समास होता है दोनों शब्द बिलकुल एक जैसे होने चाहिए। यही इसकी विशेषता है 'हत्थ' और 'पाय' ऐसे अलग-अलग शब्दों का यह समास नहीं हो सकता। यह समास अव्यय के समान ही माना जाता है।

इसके अतिरिक्त अव्ययों के साथ भी यह समास होता है।

उव—गुरुणो समीवं उपगुरु।

अणु—भोयणस्स पच्छा अणुभोयणं।

अहि (अधि)—अप्पंसि अंतो अज्झप्पं।

जहा—सत्ति अणइक्कमिऊण जहासत्ति।

जहा—विहि अणइक्कमिऊण जहाविहि।

जहा—जुग्गयं अणइक्कीमऊण जहारिहं

पइ—पुरं पुरं पइ पइपुरं।

समास में अधिकतर प्रथम शब्द के अन्तिम स्वर में ह्रस्व हो तो दीर्घ हो जाता है और दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है।[1] जैसे—

ह्रस्व को दीर्घ :—

अन्तर्वेदि—अंतावेइ भुजयन्त्र—भुआयंत, भुअयंत।

सप्तविंशति—सत्तावीसा पतिगृह—पईहर, पइहर।

वारिमती—वारीमई, वारिमई। वेणुवन—वेलूवण, वेलुवण।

---

१. दे० प्रा० व्या० ८।१।४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीर्घ को ह्रस्व :—

यमुनातट—जँउणयड, जंउणायड

नदीस्रोतस्—नइसोत्त, नईसोत्त

गौरीगृह—गोरिहर, गोरीहर

वधूमुख—बहुमुह, वहूमुह

संस्कृत भाषा में भी समास में ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व होने का विधान पाणिनिकाल से पाया जाता है—

ह्रस्व का दीर्घ :—

अष्टकपालम्—अष्टाकपालम् ।

अष्टगवम्—अष्टागवम् ।

अष्टपदः—अष्टापदः, इत्यादि ।

दीर्घ का ह्रस्व :—

दर्शनीया + भार्याः—दर्शनीयभार्यः ।

अता + थ्यम्—अतथ्यम् ।

पचन्ती + तरा—पचन्तितरा ।

नर्तकी + रूपा—नर्तकिरूपा ।

स्त्री + तरा—स्त्रितरा, इत्यादि ।

दीर्घका ह्रव—देखिए–काशिका ६।३।३४, ६।३।३, ६।३।४४, ६।३।४५।
ह्रस्व का दीर्घ—देखिए–काशिका ६।३।११५ से ६।३।१३२, ६।३।४६।

इसके अतिरिक्त इस समास के और भी बहुत से प्रयोग पण्डितों की भाषा में उपलब्ध होते हैं परन्तु उन सबका यहाँ कोई उपयोग नहीं होने से नहीं दिये गये हैं। इस प्रकार समासों के विषय में उपयोगिता की दृष्टि से आवश्यकतानुसार स्पष्टता हो जाती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैदिक तथा लौकिक संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत भाषा की तुलना

१. वैदिक संस्कृत और प्राकृत भाषा में अधिक समानता है। जिस प्रकार वैदिक संस्कृत के धातुओं में किसी प्रकार का गणभेद नहीं है उसी प्रकार प्राकृत भाषा में भी धातुओं में गणभेद नहीं है। जैसे :—

पाणिनीय धातुरूप	वैदिक धातु रूप	प्राकृत धातु रूप
हन्ति	हनति	हनति, हणति
शेते	शयते	सयते, सयए
भिनत्ति	भेदति	भेदति, भेदइ
म्रियते	मरते	मरते, मरए

—देखिये, वैदिक प्रक्रिया सू० २।४।७३, ३।४।८५, २।४।७६, ३।४।११७, ऋग्वेद पृ० ४७४ महाराष्ट्र संशोधन मण्डल।

२. वैदिक संस्कृत में और प्राकृत भाषा में आत्मनेपद तथा परस्मैपद का भेद नहीं है। जैसे :—

पाणि० सं०	वै० सं०	प्रा० भा०
इच्छाति	इच्छति, इच्छते	इच्छति, इच्छते
युध्यते	युध्यति, युध्यते	जुज्झति, जुज्झते

—देखिये, वैदिक प्रक्रिया ३।१।८५।

३. वैदिक संस्कृत के तथा प्राकृत भाषा के क्रियापदों में अन्य पुरुष का (तृतीय पुरुष का) एक वचन 'ए' प्रत्यय लगने से पाणि० सं० 'शेते' के स्थान में वेदों में शये तथा पाणि० सं० ईष्टे के स्थान में वेदों में 'ईशे' क्रियापद होते हैं। इसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकार प्राकृत भाषा में 'शेते' के स्थान में 'सए' तथा 'ईष्टे' के स्थान में 'ईसे' अथवा -ईसए' प्रयोग होते हैं।

—देखिये, वैदिकप्रक्रिया सू० ७।१।१। तथा ऋग्वेद पृ० ४६८ महाराष्ट्र संशोधन मण्डल।

४. वर्तमानकाल, भूतकाल वगैरह कालों की वेदों में तथा प्राकृत भाषा में कोई नियमिता नहीं है अर्थात् वैदिक क्रियापद में वर्तमान के स्थान में परोक्ष भी होता है—म्रियते के स्थान में ममार—देखिये, वै० प्र० ३।४।६।

इसी प्रकार प्राकृत भाषा में परोक्ष के स्थान में वर्तमान का प्रयोग भी होता है—प० प्रेक्षांचक्रे के स्थान में व० पेच्छइ। प० आबभाषे के स्थान में व० आभासइ तथा व० शृणोति के स्थान में भू० सोहीअ—देखिये, हे० व्या० ८।४।४४७।

५. काल के व्यत्यय की तरह वैदिक नामों के रूपों में तथा प्राकृत भाषा के नामों के रूपों में विभक्तियों का भी व्यत्यय होता रहता है। वेदों में और प्राकृत में चतुर्थी विभक्ति के स्थान में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग विहित है। —देखिये वै० प्र० सू० २।३।६२ तथा हैम० प्रा० व्या० ८।३।१३१।

वेदों में तृतीया विभक्ति के स्थान में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है —वै० प्र० २।३।६३ तथा है० प्रा० व्या० ८।३।१३४। १३५, १३६, १३७ तथा कच्चायण पालिव्याकरण कारककप्पं कां ६, सू० २०, ३६, ३७, ३८, ३६, ४०, ४१, ४२।

६. सब प्रकार के विधानों में वैदिक व्याकरण में बहुलम् का व्यवहार होता है। इसी प्रकार प्राकृत भाषा के व्याकरण में सर्वत्र बहुलम् का व्यवहार होता है। देखिये—बहुलं छन्दसि २।४।३९ तथा ७३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है० प्रा० व्या० ८।१।२ तथा ३। कच्चायण पालिव्या० नामकप्प-कांड १, सू० १, संधिकप्प कांड ४, सू० ९।

७. वैदिक शब्दों में अन्तिम व्यञ्जन का लोप होता है। इसी प्रकार प्राकृत भाषा में अन्त्यव्यंजन का लोप व्यापक है।

वैदिक रूप :—

पश्चात्--पश्चा, पश्चार्ध—वै० प्र० ५।३।३३।
उच्चात्–उच्चा—तैत्ति० सं० २।३।१४।
नीचात्–नीचा—तैत्ति० सं० १।२।१४।
विद्युत्–विद्यु—अन्त्यलोपः छान्दसः, ऋग्वेद पृ० ४६६ म० सं० मं०।
युष्मान्–युष्मा—वाज० सं० १।१३।१। शत० ब्रा० १।२।६।
स्यः–स्य—वै० प्र० ६।१।१३३।

प्राकृत रूप :—

तावत्–ताव।
यावत्–जाव।
तमस्–तम।
चेतस्–चेत, इत्यादि।

—देखिए पृ० १२ व्यंजन का परिवर्तन-लोप।

८. वैदिक भाषा में 'स्प' को 'प' हो जाता है। प्राकृतिक भाषा में भी स्प को प हो जाता है।

वै०	प्रा०
स्पृशन्य—पृशन्य।	स्पृहा—पिहा, निस्पृह—निप्पह।
—ऋग्वेद पृ० ४६६ म० सं०।	—देखिए, पृ० ५७। पूर्ववर्ती 'स' का लोप।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. 'र' का लोप :—

वै०	प्रा०
अप्रगल्भ—अपगल्भ	क्रिया—किया
—तै० सं० ४।५।६।१ ।	—देखिए पृ० ५९—परवर्ती 'र' का लोप ।

१०. 'य' का लोप :—

वै०	प्रा०	
त्र्यृच:—तृच:	श्याम—साम	—देखिए पृ० ५८—
—वै० प्र० ६।१।३४ ।	व्याध—वाह	परवर्ती व्यंजन का लोप ।

११. 'ह' को 'ध' :—

वै०		प्रा०
सह—सध सहस्थ—सधस्थ	वै० प्र० ६।३।९६ ।	इह—इध
गाह—गाध वहू—वधू	—निरुक्त पृ० १०१	तायह—तायध देखिए पृ० ३७—चतुर्थ
शृणुहि—शृणुधि—वै० प्र० ६।४।१०२ ।		नियम का अपवाद ।

१२. 'थ' को 'ध' तथा 'ध' का 'थ' :—

वै०	प्रा०
माधव—माथव	नाथ—नाध
—शत० ब्रा० १।३।३।१०,	देखिए पृ० ३७ चतुर्थ
११, १७ ।	नियम का अपवाद ।

१३. 'द्य' को 'ज' :—

वै०	प्रा०
द्योतिस्—ज्योतिस्	द्युति—जुति
—अथर्व० सं० ४।३७।१० ।	उद्योत—उज्जोत
;निरुक्त पृ० १०१, १२ ।	—देखिए पृ० ६६, 'ज' विधान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्योतते—ज्योतते

—निरुक्त पृ० १७०, १६।

अवद्योतयति—अवज्योतयति

—शत०ब्रा० १, २, ३, १६।

द्योतय—ज्योतय

अवद्योत्य—अवज्योत्य

—का० श्रौ० ४।१४।५।

१४. 'ह' को 'घ' तथा 'भ' :—

वै० प्रा०

आहृणि—आघृणि। दाह, दाघ

—निरुक्त पृ० ३८२, ३६। (प्राकृत में ये दोनों शब्द प्रचलित हैं।)

विदेह—विदेघ।

—शत० ब्रा० १।३।३; १०।११।१२।

मेह—मेघ। विह्वल—विब्भल।

—निरुक्त पृ० १०१,१। जिह्वा—जिब्भा।

गृहीत—गृभीत।

गृहाण—गृभाण्य।

जहार—जभार।

} वै० प्र० ३।१।८४। —देखिए पृ० ७२ 'भ' विधान

१५. 'ड' को 'ल' तथा 'ड' को 'ळ':—

वै० प्रा०

ईडे—ईळे ईडे, ईले, ईळे।

अहेडमानः—अहेळमानः। अहेळमानो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दृढ–दृळह ।	दळह ।
सोढा–साळ्हा ।	सोळहा
—वै० प्र० ६।३।११३ ।	देखिए पृ० ३६, नियम ७ तथा पृ० ४२, ४३ ।

१६. अनादिस्थ 'य' तथा 'व' का ल़ोप :—

वै०	प्रा०
प्रयुग–पउग —वा० सं० १५-६ ।	प्रयुग–पउग
'सिव्' धातु का—सीमहि —ऋ०वे० पृ० १३५, ३ । पृथुजव:–पृथुज्रय: —निरुक्त पृ० ३८३, ४० ।	पृथुज्रव:–इस प्रयोग में 'व' का लोप होकर फिर शेष 'अ' की 'य' श्रुति हुई है जैसे लावण्य–लायण्ण । देखिए—पृ० ३३ (ख) तथा पृ० ३७ नियम ३ ।

१७. अभूतपूर्व 'र' का आगम :—

अधिगु–अध्रिगु । —निरुक्त पृ० ३८७, ४३ ।	
पृथुजव:–पृथुज्रय: । इन रूपों में अभूतपूर्व 'र' का आगम हो गया है ।	अपभ्रंश-प्राकृत में व्यास का व्रास तथा चैत्य का चैत्र जैसे रूपों में अभूतपूर्व 'र' का आगम हो गया है । देखिये—नियम २९ आगम–पृ० ८८ ।

१८. 'क' तथा 'च' का लोप :—

वै०	प्रा०
याचामि–यामि	कचग्रह–कयग्गह
—निरुक्त पृ० १००, २४१ ।	शची–सई
अन्तिक–अन्ति	लोक–लोअ
—ऋग्वेद पृ० ४६६ म० सं० ।	–देखिए पृ० ३३ (ख)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. आन्तर अक्षर का लोप :—

वै०	प्रा०
शतक्रतवः—शतक्रत्व	राजकुल—राउल
पशवे—पश्वे	प्राकार—पार
—वै०प्र० ७।३।९७।	दुर्गादेवी—दुग्गावी
निविविशिरे—निविविश्रे	आगत—आय
—ऋ० सं० ८।१०१।१८।	—देखिए पृ० ५४, नियम २६।
आगतः—आताः	
—निरुक्त पृ० १४२ दिशानाम।	

२०. संयुक्त व्यञ्जनों के मध्य में स्वरों का आगम :—

वै०	प्रा०
तन्वम्—तनुवम्	अर्हन्—अरुहंत
—तै० आ० ७।२२।१।	लघ्वी—लघुवी
स्वर्गः—सुवर्गः	
—तै० आ० ४।२।३।	
त्र्यम्बकम्—त्रियम्बकम्	आश्चर्य—अच्छरिय
—वै०प्र० ६।४।८६।	
विभ्वम्—विभुवम्	तन्वी—तणुवी
सुध्यो—सुधियो	अर्हन्—अरिहंत
राच्या—रात्रिया	क्रिया—किरिया
सहस्र्यः—सहस्रियः	दिष्टया—दिट्ठिआ
—यजु०वे०।	
तुव्र्यासु—तुग्रियासु	भव्य—भविय
—वै० प्र० ४।४।११५।	—देखिए पृ० ७३ नियम १६ तथा पृ० ८६ आगम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. 'ऋ' को 'र' तथा 'उ' :—

वै०	प्रा०
ऋजिष्ठम्–रजिष्ठम्	ऋद्धि–रिद्धि
—वै० प्र० ६।४।१६२।	
वृन्द–वुन्द	वृन्द–वुन्द
—निरुक्त पृ० ५३२, अं० १२८।	
तॄ–ततुरिः	ऋषभ–उसभ
	ऋतु–उतु
गॄ–जगुरिः	वृद्ध–वुड्ढ
—वै०प्र० ७।१।१०३।	
वृणीत–वुरीत	—देखिए पृ० १४, १५ नियम–८, ६।
—शु०य०सं० पृ० ६२ मंत्र ८।	तथा पृ० २७, २८ 'ऋ' का
कृत–कुट	परिवर्तन।
—निरुक्त पृ० ४२२, ७०।	

२२. 'द' को 'ड' :—

वै०	प्रा०
दुर्दभ–दूडभ	दण्ड–डंड
—वा० सं० ३, ३६।	दंभ–डंभ
पुरोदाश–पुरोडाश	—देखिए—पृ० ४८ नियम ११
—शु० प्रा० ३।४४।	'द' का परिवर्तन।
वै० प्र० ३।२।७१।	

२३. 'अव' को 'ओ' तथा 'अय' को ए :—

वै०	प्रा०
श्रवणा–श्रोणा	अवहसित–ओहसित
—तै०ब्रा० १.५–१.४; ५.२.६।	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	नयति—नेति
अन्तरयति—अन्तरेति	कयल—केल
—शत० ब्रा० १.२—३.१८;	अयस्कार—एक्कार
४.२०; ३.१.१६।	—देखिए पृ० ८२ नियम २७

२४. संयुक्त के पूर्व का ह्रस्व :—

वै०	प्रा०
रोदसीप्रा—रोदसिप्रा	तीर्थ—तित्थ
—ऋ० सं० १०.८८.१०।	ताम्र—तंब
अमात्र—अमत्र	—देखिए पृ०—१२ (२)।
ऋ० सं० २.३६.४।	

२५. 'क्ष' को 'छ' :—

वै०	प्रा०
अक्ष—अच्छ	अक्षि—अच्छि
—अथ० सं० ३.४.३।	अक्ष—अच्छ
	—देखिए पृ० ६४
	नियम ४—'छ' विधान

२६. अनुस्वार के पूर्व के दीर्घ का ह्रस्व :—

वै०	प्रा०
युवाम्—युवम्	मांस—मंस
—ऋ०सं० १।१५-६।	मालाम्—मालं

२७. विसर्ग का 'ओ' :—

वै०	प्रा०
सः चित्—सो चित्।	देवः अस्ति—देवो अत्थि।
—ऋ० वे० पृ० १११२ म० सं०।	पुनः एति—पुणो एति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवत्सरः अजायत—संवत्सरो अजायत
——ऋ० सं० १–१९१–१०–११ ।
आपः अस्मान्—आपो अस्मान्
—वै० प्र० ६।१।११७

इत्यादि । देखिए पृ० ६१
अः को ओ ।

२८. ह्रस्व को दीर्घ तथा दीर्घ को ह्रस्व :—

वै०	प्रा०
एव, एवा	अहव, अहवा (अथवा)
अच्छ, अच्छा	एव, एवा (एव)
—वै० प्र० ६।३।१३६'।	जह, जहा (यथा)
घ, घा,	तह, तहा (तथा)
मक्षु, मक्षू	चतुरन्त—चाउरंत
कु, कू	
अत्र, अत्रा	परकीय—पारक्क
यत्र, यत्रा	——देखिये पृ० १६ तथा पृ० २० ।
तु, तू	विश्वास—वीसास
नु, नू	मनुष्य—मणूस
पुरुष, पूरुष	—देखिए पृ० ११ ।
—वै० प्र० ६।३।११३ तथा १३७ ।	
दुर्दभ, दूदभ	
दुर्लभ, दूळभ	
—वा० सं० ३ । ३६ । ऋ० सं० ४।६।८ ।	
दुर्नाश, दूनाश ।	
—शु० प्रा० ३।४३ ।	

२९. अक्षरों का व्यत्यय :—

वै०	प्रा०
निसृकर्त्य—निष्टर्क्य ।	आलान—आणाल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—वै०प्र० ३।१।१२३ ।

कर्तुः—तर्कुः ।

—निरुक्त पृ० १०१-१३ ।

नमसा—मनसा ।

—ऋग्वेद पृ० ४८६ म०सं० ।

तङ्ककः—कङ्कतः ।

"तकतेर्गत्यर्थस्य वर्णव्यत्ययेन कङ्कत इति"

—ऋग्वेद पृ० ११०६ म० सं० ।

महाराष्ट्र—मरहट्ठ ।

वाराणसी—वाणारसी ।

—देखिए पृ० ८८ अक्षरों का व्यत्यय ।

३०. हेत्वर्थ कृदन्त के प्रत्यय में समानता :—

वै०	प्रा०
कर्तुम्—कर्तवे । —वै० प्र० ३।४।९ वै०प्र० ३।४।९ सूत्र में 'से', 'सेन्' और 'असे' प्रत्ययों का विधान 'तुम्' के स्थान में किया गया है । इस नियम से 'इ' धातु का 'एसे' (एतुम्) रूप होगा ।	कत्तवे, कातवे, कत्तिए । गणेतुये, दक्खिताये नेतवे, निधातवे एसे —देखिए पालिप्र० संकीर्णक० कृ० पृ० २५८ ।

३१. (क) क्रियापद के प्रत्ययों में समानता :—

वै०	प्रा०
अन्यपुरुष बहुवचन—दुह् + रे = दुह्रे । —वै०प्र० ७।१।८ ।	अन्यपुरुष के बहुवचन में 'रे' और 'इरे' प्रत्यय का भी व्यवहार होता है । गच्छ—गच्छरे, गच्छिरे । —हे०प्रा०व्या० ८।३।१४२ तथा पा० प्र० पृ० १७१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ख) आज्ञार्थसूचक 'इ' प्रत्यय :—

वै०	प्रा०
बोध् + इ = बोधि ।	बोध् + इ = बोधि, बोहि ।
	सुमर्—इ = सुमरि ।
	—देखिये हे० प्रा० व्या० ८।४।३७।

३२. संज्ञा शब्दों के रूपों में प्रत्ययों की समानता :—

वै०	प्रा०
देवेभिः	देवेभि, देवेहि ।
—वै० प्र० ७।१।१०।	
पतिना	पतिना ।
—वै०प्र० १।४।६।	
गोनाम्	गोनं, गुन्नं ।
—वै० प्र० ७।१।५७।	
युष्मे	तुम्हे ।
अस्मे	अम्हे ।
—वै० प्र० ७।१।३९।	
त्रीणाम्	तिन्नं, तिण्हं ।
—वै० प्र० ७।१।५३।	
नावया	नावाय, नावाए ।
—वै० प्र० ७।१।३९।	
इतरम्	इतरं
—वै प्र० ७।१।२६।	
वाह + अन = वाहनः	वाहणओ, वोल्लणओ
('कर्ता' सूचक 'अन' प्रत्यय)	इत्यादि ।
—वै० प्र० ३।२।६५,६६।	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. अनुस्वारलोप :—

वै०	प्रा०
मांस—मास	मांस–मास, मंस ;
—वैदिकग्रामर	–देखिए पृ० ६२
कंडिका ८३–१	नियम २१

३४. भूतकाल में आदि में 'अ' का अभाव :—

वै०	प्रा०
अमथ्नात्–मथीत्	मथीअ
अरुजन्–रुजन्	रुजीअ
अभूत्–भूत्	भवीअ

—ऋ० वे० पृ० ४६४,४६५ म० सं० ।

३५. इकारांत शब्द के प्रथमा विभक्ति का बहुवचन :—

वै०	प्रा०
अत्रिणः	हरिणो

तृजन्तस्य 'अत्तृ' शब्दस्य (प्रथमा बहुवचन)
जसः छान्दसः 'इनुड्' आगमः ।
ऋ० वे० पृ० ११३–५ सूत्र मेक्स०

३६. 'कृ' का तथा 'जि' धातु का रूप :—

वै०	प्रा०
कृणोति	कुणति—हे० प्रा० व्या० ८।४।६५ ।
जेन्यः	जिणइ—हे० प्रा० व्या० ८।४।२४१ ।

–ऋ० वे० पृ० २२६–२२७ ।
तथा पृ० ४६५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. **अकारांत शब्द में लगनेवाला प्रत्यय ईकारान्त में भी लगता है :—**

वै०	प्रा०
नद्यैः	नदीहि—हे० प्रा० व्या० ८।३।१२४
—वै० प्र० ७।१।१०। पाणि० काशिका ।	
इस रूपमें अकारान्त में लगनेवाला प्रत्यय ईकारांत में भी लगा है ।	प्राकृत में अकारान्त में लगने वाले प्रत्यय ईकारांत में भी लगते हैं ।

द्विवचन का रूप बहुवचन के समान :—

वै०	प्रा०
देवा	प्राकृतभाषा में द्विवचन होता ही नहीं है ।
उमा	द्विवचन के सब रूप बहुवचन के समान
वेनन्ता	होते हैं—"द्विवचनस्य बहुबचनम्"
—ऋग्वेद पृ० १३६–६।	—हे० प्रा० व्या० ८।३।१३०
इन्द्रावरुणा	
—ऋ० सं० ७।८२।१।४ ।	
मित्रावरुणा	हत्था
या	पाया
दिविस्पृशा	थणया
अश्विना	नयणा, इत्यादि ।
—वै० प्र० ७।१।३९ ।	

सृण्या—'आकारः छन्दसि द्विवचनादेशः' —तन्त्रवार्तिक पृ० १५७, आनन्दाश्रम ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. विभक्तिरहित प्रयोग :—

वै०		प्रा०
आर्द्रे चर्मन् लोहिते चर्मन् परमे व्योमन्	सप्तमी का अप्रयोग ।	प्राकृत भाषा में भी अनेक प्रयोग विभक्तिरहित ही पाये जाते हैं ।
—वै० प्र० ७।१।३९ ।		गय—षष्ठी का बहुवचन
वीळु दळ्हा अभिज्ञु	द्वितीया का अप्रयोग ।	बहुशत— ,, ,, इत्यादि ।
—ऋ०वे० पृ० ४६४ तथा ४७२ म० सं० ।		

३९. समान अर्थयुक्त अव्यय :—

वै०	प्रा०
कुह (कुत्र)	कुह (कुत्र)
न (उपमासूचक)	णं (उपमासूचक)
—ऋ०वे० पृ० ७३३ म० सं० ; तथा निरुक्त पृ० २२० ; तथा ऋ० वे० पृ० ४६०-४६२- ५२८ म० सं० ।	
दिवेदिवे	दिविदिवि —हे०प्रा०व्या० ८।४।३९९।

४०. संधि का विकल्प :—

वै०	प्रा०
ईषा + अक्षो ज्या + इयम् पूषा + अविष्टु —वै०प्र० ६।१।१२६ ।	पदयोसन्धिर्वा —हे॰ प्रा० व्या० ८।१।५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संस्कृत और प्राकृत में स्वरों का समान परिवर्तन[1]

१. 'अ' का लोप :—

सं०	प्रा०
अलावू, लावू ।	देखिए—पृ० १९ 'अ' का लोप ।

२. 'अ' को 'आ :—

पति—पाति ।	देखिए—पृ० १७ नि० १ ।

३. 'अ' को 'इ' :—

कन्दुक, गिन्दुक ।	देखिए—पृ० १७ 'अ' को 'इ' ।

४. 'आ' को 'अ' :—

कुमार, कुमर फाल, फल कलाज्ञ, कलज्ञ	देखिए—पृ० १३ नि० ३ ।

५. 'इ' को 'अ' :—

सं०	प्रा०
पेटिक, पेटक	देखिए—पृ० २१ नि० ३ ।

६. 'इ' को 'ए' :—

सं०	प्रा०
मुहिर, मुहेर गिन्दुक, गेन्दुक	देखिए—पृ० २२ 'इ' को 'ए' ।

---

१. अर्थात् वैयाकरण जिसको अवैदिक संस्कृत कहते हैं ऐसी प्राचीन पुरोहितों की पंडिताऊ संस्कृतभाषा के शब्दों के साथ भी प्राकृतभाषा के शब्दों की तुलना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. 'ई' को 'ए' :—

सं०	प्रा०
पीयूष, पेयूष	देखिए—पृ० २४ 'ई' को 'ए'।

८. 'ऋ' को 'रि' :—

सं०	प्रा०
ऋज, रिज	देखिए—पृ० १५ नि० (६)।

९. 'ऋ' को 'लृ' :—

सं०	प्रा०
ऋफिड, लृफिड	प्राकृत में भी 'र' का 'ल' होता है।—देखिए पृ० ५२ 'र' का परिवर्तन

(१०) 'औ' को 'उ' :—

सं०	प्रा०
कौतुक, कुतुक।	देखिये, पृ० ३२ 'औ' को 'उ'।
कौक्कुण, कुक्कुण।	

संस्कृत तथा प्राकृत में व्यंजनों का समान परिवर्तन

१. अन्त्यव्यंजन का लोपः—

सं०	प्रा०
धामन्, धाम	
महस्, मह	
तमस्, तम	
सोमन्, सोम	देखिये, पृ० ३२ नि० (क)।
रोचिस्, रोचि	
शोचिस्, शोचि	
चर्मन, चर्म	
शवस्, शव	
होमन, होम	
तपस्, तप	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. 'क' को 'ग' :—

सं०	प्रा०
दक, दग	
कन्दुक, गिन्दुक	देखिये, पृ० ४४ 'क' को 'ग'।
द्रकट, द्रगड	
काश्मरी, गम्भारी	

३. 'ख' को 'ह' :—

मुखल, मुहल (मुसल) — देखिये, पृ० ३७ नि० ४।

४. 'घ' को ह :—

घस्र, हस्र — देखिए ,, ,, ,,

५. 'द' को ज :—

जम्पती, दम्पती (प्राचीन शब्द)। देखिए पा० प्र० पृ० ५७ ज-द तथा पृ० ६६ 'ज' विधान ।

६. 'ट' को 'ड' :—

तटाक, तडाक

पेटा, पेडा — देखिए पृ० ३९, नि० ५।

कुटी, कुडी

७. 'ड' को 'ल' :—

जड, जल

बिडाल, बिलाल

कडत्र, कलत्र — देखिए पृ० ३९, नि० ९।

नाडी, नाली

कडेवर, कलेवर

बडिश, बलिश

बाडिश, बालिश

दुडि, दुलि

ताडक, तालक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. 'ण' को 'ल' :—

श्लेष्मण, श्लेष्मल — देखिए पृ० ४६ नि० ८।

९. 'त' को 'ट' :—

विकृत, विकट (प्राचीन शब्द) — देखिए पृ० ४६ नि० ९।

१०. 'त' को 'थ' :—

पीती, पोथी — देखिए पा० प्र० पृ० ५९ त-थ।

११. 'त' को 'र' :—

प्रतिदान, परिदान — देखिए पृ० ४७ 'त' को 'र'।

१२. 'थ' को 'ध' :—

मथुरा, मधुरा — देखिए पृ० ३७ नि० ४—अपवाद।

१३. 'द' को 'त' :—

बादाम, बाताम — देखिए पृ० ३५, पैशाची तथा पालि।

राजादन, राजातन

१४. 'प' को 'ब' :—

तम्पा, तम्बा — देखिये पृ० ४९ 'प' का परिवर्त्तन।

१५. 'प' को 'व' :—

कपाट, कवाट — देखिए पृ० ४० नि० १०।

जपा, जवा

पारापत, पारावत

लिपि, लिवि

१६. 'भ' को 'ब' :—

करम्भ, करम्ब — दे० पृ० ५० 'भ' का परिवर्तन।

१७. 'म' को 'व' :—

श्रमण, श्रवण — दे० पृ० ५० 'म' का परिवर्तन।

९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. 'य' को 'ज' :—

यमन, जमन

यानि, जानि — दे० पृ० ४१ नि० १३।

यातु, जातु

यातुधान, जातुधान

१९. 'र' को 'ल' :—

पुरुष, पुलुष

तरुण, तलुन

क्षुधारु, क्षुधालु — दे० पृ० ५३ 'र' का परिवर्तन।

शीतारु, शीतालु

राक्षा, लाक्षा

रोम, लोम

चरण, चलन

ऋफिड, ऋफिल

२०. 'व' को 'ब' :—

द्वार, बार — प्राकृत भाषा में व और ब समान माने जाते हैं। दे० पृ० ४१ नियम १२।

२१. 'व' को 'म'

द्रविड, द्रमिड — दे० पृ० ४० 'व' का परिवर्तन।

यवनी, यमनी

२२. 'श' को 'स' :—

शूर्प, सूर्प (प्राचीन शब्द)

काशी, कासी

शाक, साक — दे० पृ० ४३ नि० १४।

शर्करा, सर्करा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुभ, सुभ
शची, सची
शर्वरी, सर्वरी

२३. 'ष' को 'श' :—
अभीषु, अभीशु — दे० पृ० ४३ मागधी ष-श ।
वेष्या, वेश्या

२४. 'ष' को 'स' :—
वृषी, वृसी
चाष, चास — दे० पृ० ४३ नि० १४ ।
मषी, मसी

२५. 'स' को 'श' :—
सूरि, शूरि
स्याल, श्याल — दे० पृ० ४३ मागधी स-श ।
अस्र, अश्रु
दासी, दाशी

२६. 'ह' को 'घ' :—
अंह्रि, अङ्घ्रि — दे० पृ० ४३ नि० १५ ।

संयुक्त व्यंजन का परिवर्तन

१. 'क' का 'लोप' :—
योक्त्र, योत्र — देखिए पृ० ५६ लोपविधान ।

२. 'द' का 'लोप' :—
कुद्दाल, कुदाल — दे० पृ० ५७ लोपविधान ।

३. 'य' का 'लोप' :—
श्याली, शाली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मत्स्य, मत्स तूर्य, तूर चैत्य, चैत्र	दे० पृ० ५७ परवर्ती व्यंजन का लोप।

४. 'र' का 'लोप' :—

कुर्कुट, कुक्कुर कुर्कुर, कुक्कुर वप्र, वप्प (बाप = पिता) द्राढिका, दाढिका प्रियाल, पियाल	दे० पृ० ५६ लोपविधान।

५. 'ल' का लोप :—

झल्लरी, झलरी	दे० पृ० ५६ लोपविधान।

६. 'व' का 'लोप' :—

ऊर्ध्व, ऊर्ध	दे० पृ० ५८ लोपविधान।

७. 'स' का 'लोप' :—

स्तूप, तूप	दे० पृ० ५७ लोपविधान।

८. 'अनुस्वार का 'लोप' :—

अम्बा, अब्बा	दे० पृ० ९७ नि० २१ तथा पा० प्र० पृ० ८२ नि० २५।

९. स्वर का लोप तथा स्वरसहित मध्यस्थित व्यंजन का लोप :—

रसना, रस्ना वासर, वास्र भगिनी, भग्नी उदुम्बर, उम्बुरक, उम्बर	दे० पृ० ५४ नि० २६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुदत्त, सुत्त
आदत्त, आत्त
प्रदत्त, प्रत्त
वह्नी, वेणी

१०. 'अनुस्वार' का 'आगम' :—

भद्र, भन्द्र — दे० पृ० ८७ अनुस्वार का आगम।
अत्तिका, अन्तिका
लक्षण, लाञ्छन

११. र्थ, र्भ, म्र, र्ष और ह्र इन संयुक्तव्यंजनों के बीच में अकार तथा इकार का आगम :—

मनोऽर्थ, मनोरथ
कम्र, कमर
गर्भ, गरभ — दे० पृ० ८६ आगम।
हर्ष, हरिष
वर्षा, वरिषा
वर्ष, वरिष
पर्षत्, परिषत्
दह्र, दहर

१२. 'क्ष' को 'ख' :—

क्षुल्लक, खुल्लक — दे० पृ० ६२ खविधान।
क्षुर, खुर
पक्ष, पुङ्ख

१३. 'क्ष' को 'च्छ' :—

पक्ष, पिच्छ — दे० पृ० ६४ नि० ४।
क्षुरी, छुरी
कक्ष, कच्छ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. 'त्त को 'ट्ट' :—

पत्तन, पट्टण — दे० पृ० ६७ नि० ७।

१५. 'र्त' को 'ट' :—

कर्तक, कण्टक — दे० पृ० ५७ नि० ७।

१६. 'त्स' को 'च्छ' :—

मत्स, मच्छ — दे० पृ० ६५ नि० ४।

गुत्स, गुच्छ

१७. 'र' को 'ल' :—

ह्रीका, ह्लीका

प्रवङ्ग, प्लवङ्ग — दे० पृ० ५२ 'र' का परिवर्तन।

१८. 'श्च' को 'च्छ' :—

पश्च, पुच्छ अथवा पिच्छ — दे० पृ० ६५ नि० ४।

१९. 'श्म' को 'म्भ' :—

काश्मरी, कम्भारी — दे० पृ० ७२ नि० १४—
ग्रीष्म, गिम्ह, गिम्भ।

२०. 'ष्ट्र' को 'ढ' :—

दंष्ट्रिका, दाढिका — दे० पृ० ६३ शब्दों में
विविध परिवर्तन।

२१. 'र' का 'आगम' :—

पामर, प्रामर — दे० पृ० ८७ नि० २६

चैत्य, चैत्र

दाढिका, द्राढिका

२२. 'अयू' को 'ओ' :—

मयूर, मोर — दे० पृ० ८२ शब्दों में
विशेष परिवर्तन नि० २७—
मयूख—मोह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. 'एक ही शब्द के विविध उदाहरण :—

चन्द्र, चन्द, चन्दिर ।

विकुस्र, विकस्र, विक्रस्र ।

हट्ट, अट्ट ।

मुसल, मुषल ।

बुक्कस, पुक्कस, पुत्कस ।

तविश, तविष, ताविष ।

वनीपक, वनीयक, वनवक ।

खोट, खोड, खोर ।

वराणसी, वाराणसी, वाणारसी ।

हण्डे, हञ्जे ।

सुवासिनी, स्ववासिनी ।

मौक्तिक, मुकुतिक, मकुतिक ।

मस्तक, मस्तिक ।

अषाढ, आषाढ ।

एतश, ऐतश ।

बिडोजा, बिडौजा ।

निघण्टु, निर्घण्टु ।

नेतृ, नेत्र ।

दिवोका, दिवौका ।

यहाँ जो संस्कृत के ये शब्द दिये गए हैं उन सबका उल्लेख प्राचीन संस्कृत कोशों में है । देखिए, अमरकोश, हेमचन्द्र अभिधान-नाममाला-कोश, पुरुषोत्तमदेवप्रणीत द्विरूपकोश, शब्दरत्नाकरकोश, शब्दकल्पद्रु-कोश इत्यादि ।

विविध परिवर्तनयुक्त वैदिकशब्द तथा संस्कृत के शब्द इसलिए यहाँ दरसाये गए हैं कि इन शब्दों के तथा उनमें हुए परिवर्तनों के साथ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृतभाषा के शब्द तथा उनके परिवर्तन कितनी अधिक समानता रखते हैं। इससे यह भी फलित होता है कि वैदिक संस्कृत, पुरोहितों की संस्कृत तथा प्राकृतभाषा—ये तीनों भाषाएँ अंग्रेजी, गुजराती, उड़िया भाषा की तरह सर्वथा स्वतंत्र रूप से नहीं हैं परन्तु भाषा तो एक ही है मात्र उच्चारण का तथा उनकी शैली का ही इसमें भेद है। जैसे; दिल्ली की हिन्दी, अजमेर—मेवाड़ की हिन्दी और साक्षरी हिन्दी—इन तीनों हिन्दी भाषाओं में कोई भेद नहीं है परंतु उनमें बोलने की शैली तथा उच्चारणों का ही भेद है।

वाक्यपदीयकार श्रीभर्तृहरि ने कहा है कि

यद् एकं प्रक्रियाभेदैर्बहुधा प्रविभज्यते।
तद् व्याकरणमागम्य परं ब्रह्माधिगम्यते ॥ २२ ॥

—वाक्यपदीय प्रथम खंड.

एक दूसरी स्पष्टता—

आजकल एक ऐसी कल्पना प्रचलित है कि प्राकृतभाषा नीचों की भाषा है, स्त्रियों की और शूद्रों की भाषा है परन्तु पंडितों की भाषा नहीं।

सचमुच यह कल्पना सच होती तो प्रवरसेन, वाक्पति, शालिवाहन, राजशेखर जैसे धुरंधर वैदिक पंडितों ने इस भाषा में सुंदर से सुंदर काव्य ग्रन्थ न लिखे होते तथा वररुचि, भामह, वाल्मीकि, लक्ष्मीधर, क्रमदीश्वर, मार्कंडेय कात्यायन, सिंहराज इत्यादि वैदिक पंडितों ने इस भाषा के विविध व्याकरण ग्रंथ भी न लिखे होते। सच तो बात यह है कि प्राकृत भाषा आमजनता की भाषा रही इसी कारण इस भाषा का उपयोग सब लोग करते रहे और पंडित लोग भी अपने बच्चों के साथ तथा वृद्ध माता-पिता और अपठित पत्नियों के साथ इसी भाषा से व्यवहार करते रहे, केवल यज्ञादिक विधियों में तथा शास्त्रार्थ-सभा में पुरोहित पंडित प्रचलित भाषा को ही अपने ढंग के उच्चारणों द्वारा बोलते थे और उन्होंने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ही उसे संस्कृत नाम रख दिया, महर्षि पणिनि तथा महर्षि भाष्यकार पतंजलि ने तो भाषा का नाम 'संस्कृत' कहा ही नहीं परन्तु केवल भाष्यकार ने ही लौकिक शब्दों के अनुशासन की बात कही है उससे मालूम होता है कि भाष्यकार को भाषा का नाम 'लौकिक' अभिप्रेत था, न कि संस्कृत।

इसके अतिरिक्त अमरकोश, वैजयन्तीकोश; मंखकोश, धनंजयकोश इत्यादि कोशकारों ने भी अपने-अपने कोशों में भी 'संस्कृत शब्दों का कोश करते हैं' ऐसा कहीं भी नहीं दरसाया है। अमरकोश में कहा है कि 'संस्कृत' शब्द के दो अर्थ हैं—१. कृत्रिम, २. लक्षणोपेत—शास्त्र के अनुशासनसहित अर्थात् शास्त्र द्वारा व्यवस्थित : "संस्कृतम् । कृत्रिमे लक्षणोपेते" कां० ३, नानार्थवर्ग श्लो० १२५४ अभिधान संग्रह-निर्णय-सागर, सन् १८८९ का संस्करण।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठमाला—वाक्यरचना विभाग

पहला पाठ

वर्तमानकाल

एकवचन के पुरुषबोधक[1] प्रत्यय

१. पुरुष—मैं	मि[2], ए[3]
२. पुरुष—तू	सि[4], से[5]
३. पुरुष—वह	ति, ते[5]
	इ, ए[5]

धातु—

हरिस्[6] (हर्ष्) हर्ष होना, प्रसन्न होना

घरिस् (घर्ष्) घसना, धंसना, घुसना, धृष्ट होना

---

१. पुरुष याने कर्ता अथवा कर्म, ये प्रत्यय जब प्रयोग 'कर्तरि' होगा तब कर्ता को सूचित करते हैं और जब प्रयोग 'कर्मणि' होगा तब कर्म को सूचित करते हैं—क्रियापद के साथ जिसका सम्बन्ध सीधा हो—समानाधिकरणरूप हो उसका नाम पुरुष—देक्खामि—मैं देखता हूँ अथवा देक्खिज्जामि—उनसे मैं दीख पड़ता हूँ, 'देक्खामि' का 'मैं' के साथ सीधा सम्बन्ध है और 'मैं' कर्ता है, तथा देक्खिज्जामि का भी मैं के साथ सीधा सम्बन्ध है, देक्खिज्जामि का कर्म 'मैं' है पर कर्ता तो 'उनसे' है अर्थात् तृतीयपुरुष है (हे० प्रा० व्या० ८।३।१४१, १४०, १३९)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. पालि के प्रत्यय— शौरसेनी के प्रत्यय— मागधी के प्रत्यय— अपभ्रंश के प्रत्यय— संस्कृत के प्रत्यय—

पालि के प्रत्यय—	शौरसेनी के प्रत्यय—	मागधी के प्रत्यय—	अपभ्रंश के प्रत्यय—	संस्कृत के प्रत्यय—
१. मि, ए	मि, ए	मि, ए,	उं, मि	मि, ए
२. सि, से	सि, से	शि, शे	हि, सि, से	सि, से
३. ति, ते	दि, दे	दि, दे	दि, दे, इ, ए	ति, ते

३. प्रथमपुरुष के एकवचन के इस 'ए' प्रत्यय का प्रयोग विरल होता है—प्राचीन प्राकृत में—आर्ष प्राकृत में—प्रायः होता है—
वन्दे उसभं अजिअं "चतुर्विंशतिस्तव–लोगस्स" सूत्र द्वितीय गाथा।

४. संस्कृत के समान पालि भाषा में धातुओं का गणभेद है तथा आत्मनेपद और परस्मैपद के प्रत्यय भी जुदा-जुदा हैं (देखो पा० प्र० पृ० १७१ आख्यातकल्प) परन्तु प्राकृतभाषा में वैसा गणभेद नहीं है तथा आत्मनेपद के और परस्मैपद के प्रत्यय भी जुदे-जुदे नहीं हैं परन्तु इन्हीं प्रत्ययों के अन्तर्गत दोनों पदों के प्रत्यय बता दिए हैं। जब शौरसेनी, मागधी, पैशाची, अपभ्रंश में इन प्रत्ययों का उपयोग करना हो तब उस उस भाषा के अक्षरपरिवर्तन के नियम लगाकर करना चाहिए, शौरसेनी वगैरह भाषा के प्रत्यय दूसरे टिप्पण में बता दिए हैं, पैशाची के प्रत्यय प्राकृत के समान हैं अतः नहीं बताए हैं।

शौरसेनी रूप प्राकृत के समान हैं परन्तु तृतीयपुरुष में 'हसदि, हसदे' दो रूप होते हैं।

मागधी रूप शौरसेनी के समान हैं परन्तु 'हस्' के स्थान में 'हश्' होगा।

पैशाची रूप प्राकृत के समान हैं।

अपभ्रंश रूप— १. हसउं, हसमि।
२. हसहि, हससि, हससे।
३. हसदि, हसदे, हसइ, हसए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरिस्[७] (वर्ष्) बरसना, बरसात, होना
करिस् (कर्ष्) काढ़ना, खींचना
मरिस् (मर्ष्) सहन करना, क्षमा रखना
घरिस् (घर्ष्) घिसना
तुरिय् (तूर्य्) त्वरा करना, उतावला करना, जलदी करना
अरिह् (अर्ह्) पूजना, अर्घना
पुरिय् (पूर्य्) पूरना, पूर्ण करना, भरना
मरिस् (मर्श्) विचारना, विचार-विमर्श करना

गरिह् (गर्ह्) गर्हणा करना, निंदा करना
जेम् (जेम्) जीमना, भोजन करना
देक्ख (दृश्) देखना, जोहना, आंखों से देखना
पुच्छ् (पृच्छ्) पूछना, प्रश्न करना
पूर् (पूर्) पूरा करना, भरना
कर् (कर्) करना, बनाना
वंद्, वन्द् } (वन्द्) वंदन करना, नमस्कार करना
पत्, पड् } (पत्) पड़ना, गिरना।

---

५. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४५। जब धातु के अन्त में 'अ' हो तब ही से, ते और ए प्रत्यय लगते हैं, 'अ' न हो तो ये प्रत्यय नहीं लगते—

ठा धातु से ठासे, ठाते, ठाए रूप नहीं होंगे परन्तु ठासि, ठाति और ठाइ रूप ही बनेंगे।

६. देखिए पृ० ८६ आगम।

७. ( ) इस निशान में दिये हुए सब शब्द (धातु वा संज्ञा शब्द) संस्कृत भाषा के हैं और मात्र तुलना के लिए बताए हैं। बताए हुए धातु वा संज्ञा शब्द का शौरसेनी, मागधी, पैशाची में प्रयोग करना हो तब उन धातुओं में व संज्ञा शब्दों में उस उस भाषा के अक्षरपरिवर्तन का नियम लगाना जरूरी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम

१. मि, ति, न्ति आदि प्रत्ययों को लगाने के पूर्व मूल धातुओं के अन्त में विकरण 'अ' का प्रयोग होता है।[1] जैसेः—

वन्द् + ति—वन्द् + अ + ति = वंदति ।

पुच्छ् + ति—पुच्छ् + अ + ति = पुच्छति ।

२. प्रथमपुरुष के मकारादि प्रत्ययों के पूर्व आनेवाले 'अ' विकरण का विकल्प से 'आ' होता है।[2] जैसेः—

वंद् + अ + मि = वंदामि, वंदमि ।

पड् + अ + मि = पडामि, पडमि ।

३. पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने के बाद धातु के अंग 'अ' का विकल्प से 'ए' हो जाता है।[3] जैसेः—

वंद् + अ + इ = वंदेइ, वंदइ, [4]वन्दए, वन्देए ।

जाण् + अ + सि = जाणेसि, जाणसि, [4]जाणसे, जणेसे ।

पुच्छ् + अ + मि = पुच्छेमि, पुच्छामि, पुच्छमि ।

रूपाख्यान

१.	देक्खमि	देक्खामि	देक्खेमि ।
२.	[4]देक्खसि	देक्खेसि	देक्खसे, देक्खेसे ।
३.	[4]देक्खइ	देक्खेइ	देक्खए, देक्खेए ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२३९ । २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५४-१५५ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५८ । ४. देखिए पृ० १४० टिप्पण ७ । शौरसेनी रूप—२. देक्खशि, देक्खेशि, देक्खशे, देक्खेशे । ३. देक्खदि, देक्खेदि, देक्खदे, देक्खेदे । मगधी रूप—शौरसेनी की तरह समझ लें ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठीक इसी प्रकार शौरसेनी, मागधी तथा अपभ्रंश के रूप भी बना लेने चाहिए। उस भाषा के प्रत्यय तथा रूप के कुछ उदाहरण टिप्पण में भी दिये गये हैं।

भाषान्तर वाक्य

वन्दना करता हूँ।	वह घिसता है।
धसता हूँ।	वह जानता है।
करता हूँ।	वह गिरता है।
तू वन्दना करता है।	तू खींचता है।
तू जीमता (भोजन करता) है।	तू बरसता है।
तू हर्ष करता है।	भोजन करता है।
वह देखता है।	वह विचार करता है।
वह करता है।	वह पूर्ण करता है।
वह सहता है।	तू उतावला करता है।
मैं घिसता हूँ।	तू निन्दा करता है।
मैं गिरता हूँ।	तू पूजता है।
मैं पूछता हूँ।	मैं सहता हूँ।
मैं करता हूँ।	
मैं गिरता हूँ	
[1]वंदामि	करते
करिससे	जाणेसि
हरिसमि	करिससि
वरिसति	पूरइ

१. प्रथमपुरुष के एकवचन में 'वंदे' रूप भी प्रयोग में आता है। वन्द् अ + ए = वंदे। (संस्कृत में वंदे—मैं वन्दना करता हूँ) "उसभं अजिअं च वंदे"। —चतुर्विंशतिस्तव सूत्र गाथा २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देक्खसि	हरिससि
गरिहामि	मरिसामि
तुरियइ	गरिहसि
अरिहेइ	जेमइ
पुच्छामि	धरिसेमि
धरिससि	मरिसामि, तुरियेसि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूसरा पाठ

किसी भी लोक-व्यापक दूसरी भाषा में द्विवचन-सूचक प्रत्यय अलग उपलब्ध नहीं होते। इसी प्रकार लोकव्यापक प्राकृतभाषा में भी द्विवचनदर्शक अलग प्रत्यय नहीं हैं। इसीलिए इस पाठ में एकवचनीय प्रत्ययों के पश्चात् बहुवचनीय प्रत्ययों का ही प्रकरण दिया गया है। परन्तु जब द्विवचन का अर्थ सूचित करना हो तब क्रियापद अथवा संज्ञा शब्द साथ 'द्वि' शब्द के बहुवचनीय प्राकृतरूपों का उपयोग करना पड़ता है। वे रूप इस प्रकार हैं :—

प्रथमा तथा द्वितीया	दोण्णि, दुण्णि (द्वीनि ?) वेण्णि, विण्णि दो (द्वौ) दुवे (द्वे) वे, बे (द्वे)

प्रयोग :—बे सिव्वामो—हम दोनों सीते हैं।

---

१. 'दु' शब्द के जो रूप ऊपर बताये हैं उसके साथ बिल्कुल मिलते-जुलते रूप आज भी अलग-अलग लोक भाषाओं में प्रचलित हैं। जैसे :—

वे, बे गुजराती—बे
विण्णि, वेण्णि ,,—बन्ने
दो, हिन्दी—दो
दुण्णि, दोण्णि मराठी—दोन
दुवे बंगाली—दुई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमान काल

बहुवचन के पुरुषबोधक प्रत्यय

	प्रा०प्र०	पालिप्र०	शौ०प्र०	मा०प्र०	सं० प्र०
१ पु०	मो, मु, म[1]	म्हे	मो, मु, म[4]	शौरसेनी	मः, महे
२ पु०	इत्था, ह[2]	व्हे	इत्था, ध, ह	के समान	थ, ध्वे
३ पु०	न्ति[3], न्ते, इरे	अन्ते, रे	न्ति, न्ते, इरे	होते हैं	न्ति, न्ते।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४४। 'मो' प्रत्यय के साथ 'मु' और 'म' प्रत्यय तथा संस्कृत के 'महे' प्रत्यय की भाँति 'म्ह' प्रत्यय भी प्रयुक्त होता है—देक्खामो, देक्खामु, देक्खाम, देक्खम्ह।

२. 'ह' की तरह 'इत्था' प्रत्यय भी प्रयुक्त होता है—बोल्लह, बोल्लित्था—हे० प्रा० व्या० ८।३।१४३।

३. 'न्ति' की तरह 'न्ते' तथा 'इरे' प्रत्यय भी प्रयोग में आते हैं—करंति करन्ते, करिरे—हे० प्रा० व्या० ८।३।१४२। तथा देखिए वैदिक भाषा के साथ समानता पृ० १२१, नि० ३१।

४. अपभ्रंश के बहुबचन के प्रत्यय :—१ हुं, मो, मु, म। २ हु, ह, ध, इत्था। ३ हिं, न्ति, न्ते, इरे।

अपभ्रंश रूपाख्यान का उदाहरण—१ हरिसहुं, हरिसेहुं, हरिसमो, हरिसामो, हरिसिमो, हरिसेमो, हरिसमु, हरिसामु, हरिसिमु, हरिसेमु, हरिसम, हरिसाम, हरिसिम, हरिसेम, हरिसेज्ज, हरिसिज्ज, हरिसेज्जा, हरिसिज्जा। २ हरिसहु, हरिसेहु, हरिसह, हरिसेह, हरिसध, हरिसेध, हरिसइत्था, हरिसित्था, हरिसेत्था, हरिसेज्ज, हरिसिज्ज, हरिसेज्जा, हरिसिज्जा। ३ हरिसहिं, हरिसेहिं, हरिसंति, हरिसेंति, हरिसिंति, हरिसंते, हरिसेंते, हरिसिंते, हरिसइरे, हरिसिरे, हरिसेइरे, हरिसेज्ज, हरिसिज्ज, हरिसेज्जा, हरिसिज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातुएँ—

खुब्भ् (क्षुभ्य[1]) क्षुब्ध होना, घबराना	दीव (दीप्) दीपना, चमकना, प्रकाशित होना
कुप्प् (कुप्य) कोप करना, क्रोध करना, गुस्सा करना,	जव् (जप्) जपना, जाप करना।
सिव्व् (सिव्य) सीना	खिव् (क्षप्) फेंकना।
लव् (लप्[2]) लप्-लप् करना, व्यर्थ बोलना	खिप्प् (क्षिप्य) फैंकना
तव् (तत्) तपना, संतान होना तप करना,	लुह् (लुप्य) लोटसा, आलोटना
वेव् (वेप्) काँपना	दिप्प् (दीप्य) दीपना, चमकना, शोभित होना, प्रकाशित होना
सव् (शप्) शाप देना	गच्छ् (गच्छ्) जाना
	बोल्ल् (ब्रू) बोलना

४. प्रथम पुरुष के 'म' से शुरू होने वाले बहुवचनीय प्रत्ययों के पूर्व आये 'अ' का विकल्प से 'इ'[3] हो जाता है। जैसे :—

बोल्ल् + अ + मो = बोल्लमो, बोल्लामो,[4] बोल्लिमो, बोल्लेमो।

श्री तुलसीकृत रामायण में करहिं, नच्चहिं, लहहुं ऐसे अनेक प्रयोग पाये जाते हैं।

१. देखिए पिछे के पकरण में नियम १.।

२. देखिए पिछले प्रकरण में नियम—९। ३. हे०प्रा०व्या० ७।३।१५५।

४. 'मो' की भाँति 'मु', 'म', तथा 'म्ह' प्रत्ययों के रूप भी इसी प्रकार करने चाहिए जैसे :—

बोल्लमु, बोल्लामु, बोल्लिमु, बोल्लेमु। बोल्लम, बोल्लाम, बोल्लिम, बोल्लेम। बोल्लम्ह, बोल्लाम्ह। बोल्लिम्ह, बोल्लेम्ह।—दे०पृ० १२ नि०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूपाख्यान

१. पु० बोल्लमो, बोल्लामो, बोल्लिमो, बोल्लेमो
२. पु० बोल्लह, बोल्लेह[1]
३. पु० बोल्लंति,[2] बोल्लेंति

वाक्य

हम सीते हैं । तुम दोनों बन्दना करते हो ।
हम वन्दना करते हैं । तुम जाप कहते हो ।
हम लोटते हैं । तुम कुपित होते हो ।
तुम दोनों बोलते हो । तुम घबराते हो ।
तुम दोनों सीते हो । हम दोनों शोभित होते हैं, चमकते हैं ।
हम दोनों फेंकते हैं । वह सीता है ।
हम दोनों काँपते हैं । मैं काँपता हूँ ।
वे दोनों शाप देते हैं । मैं फेंकता हूँ ।
वे दोनों वन्दना करते हैं । तू लोटता है ।
वे दोनों जाप करते हैं । तू सीता है ।
मैं जाता हूँ । तू जाप करता है ।
वह दीप्त होता है, शोभित होता है, चमकता है, प्रकाशित होता है ।

बंदामो	वंदेते	वन्ददे[3]
सविरे	गच्छंति	वन्दधे

---

१. बोल्ल् + अ + इत्था = बोल्लित्था अथवा बोल्लइत्था देखिए पृ० ६५ नि० ९ । २. बोल्ल् + अ + न्ते = बोल्लन्ते, बोल्ल् + अ + इरे = बोल्लिरे रूप भी समझना चाहिए । ३. अभ्यास के लिए शौरसेनी के तथा मागधी भाषा के नियम लगाकर ऐसे धातु रूपों के वाक्य बनाना जरूरी है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदह	जीवमो
बोल्लमो	वंदेम
लवेम	वन्दंते
दुण्णि लुट्टह	बोल्लामु
बे खिप्पित्था	लुट्टामि
दो खुब्भित्था	कुप्पेह
कुप्पेह	खिवामि
गच्छम्ह	बोल्लसि
	वंदति

•

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीसरा पाठ

वर्तमानकाल

सर्व पुरुष } ज्ज
सर्व वचन } ज्जा

'ज्ज' तथा 'ज्जा' प्रत्ययों के लगने से पूर्व 'अंग' के अन्त्य 'अ' को 'ए' होता[2] है।

वंद् + अ + ज्ज = वंदेज्ज[3]।

वंद् + अ + ज्जा = वंदेज्जा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७७। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५९।

३. पुरुषबोधक प्रत्यय और स्वरान्त धातुओं के बीच में ज्ज तथा ज्जा दोनों में से किसी एक प्रत्यय के लगाने से भी रूप बन सकते हैं। जैसेः—

हो + इ = हो + ज्ज + इ = होज्जइ अथवा होइ।

हो + इ = हो + ज्जा + इ = होज्जाइ अथवा होइ —हे० प्रा० व्या० ८।३।१७८। विकरण लगने के पश्चात् :—

हो + अ + इ = हो + अ + ज्ज + इ = होएज्जइ, होअइ।

हो + अ + इ = हो + अ + ज्जा + इ = होएज्जाइ, होअइ।

होज्जइ अथवा होएज्जइ के साथ श्रीज्ञानेश्वरप्रणीत गीताजी (चौदहवाँ शतक) में 'अयेच्चिजे', 'मथिजे', 'भोगिजे', 'कीजे', 'किजसी' 'सांडिजे' ऐसे अनेक क्रियापद आते हैं वे तथा होजे, थजे, करज, चालजे, देजे, लेजे इत्यादि वर्तमान में प्रचलित गुजराती भाषा के क्रियापद के रूप बिल्कुल मिलते-जुलते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरान्त धातुएँ :—

दा (दा)—देना ।
वा (वा)—बोना, वपन करना, उगाना ।
पा (पा)—पीना ।
गा (गा)—गाना ।
जा (जा)—जाना ।
धा (धाव्)—दौड़ना ।
खा (खाद्)—खाना, भोजन करना ।
ठा (स्था)—स्थिर रहना, ठहरना ।
झा (ध्या)—ध्याना, ध्यान करना ।
हा (हा)—छोड़ना, त्यागना ।
बू (ब्रू)—बोलना ।
हो (भू)—होना ।
णी, णे (नी)—ले जाना, पहुँचाना ।

अकारान्त धातुओं को छोड़कर शेष सभी स्वरान्त धातुओं के अन्त में पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने से पहले विकरण 'अ' विकल्प से होता है (हे० प्रा० व्या० ८।४।२४०) ।

हो + इ = होइ ।	हो + अ + इ = होअइ ।
खा + इ = खाइ ।	खा + अ + इ = खाअइ ।
धा + इ = धाइ ।	धा + अ + इ = धाअइ ।

(अकारान्त धातुओं के अन्त में 'अकार' विद्यमान है । इसलिए उनके बाद विकरण 'अ' दुबारा लगाने की आवश्यकता नहीं है ।)

अकारान्त धातुएँ :—

चिइच्छ (चिकित्स)—चिकित्सा करना, शंका करना, अथवा उपाय करना, उपचार करना ।

जुउच्छ (जुगुप्स)—घृणा करना अथवा दया करना ।

अमराय (अमराय)—देव की भाँति रहना ।

चिइच्छइ । जुउच्छइ । अमरायइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूपाख्यान

विना विकरण के रूप :—

एकवचन	बहुवचन
१. पु० होमि	होमो
२. पु० होसि	होह
३. पु० होइ	होंति, हुंति।

विकरण वाले रूप :—

१. पु० होअमि, होआमि, होएमि। होअमो, होआमो, होइमो, होएमो।

२. पु० होअसि, होएसि। होअह, होएह।

३. पु० होअइ, होएइ। होअंति, होएंति, होइंति।

सर्व पुरुष } होज्ज, होज्जा (विकरण रहित)
सर्व वचन } होएज्ज, होएज्जा (विकरण वाले)

वाक्य

हम गाते हैं।	तुम पीते हो।
तुम दौड़ते हो।	वे गाते हैं।
वे बोलते हैं।	हम दोनों छोड़ते हैं, त्याग करते हैं।
वे दोनों खाते हैं।	वे देते हैं।
मैं खड़ा हूँ।	वह बोता है, उगाता है।
तू ले जाता है।	हम ले जाते हैं।
हम जाते हैं।	वे ले जाते हैं।
तुम चिकित्सा करते हो।	मैं घृणा करता हूँ।
हम देव की भांति रहते हैं।	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुंति	धाह	गाह
होंति	गाइ	ठाह
जंति	जासि	ठाइत्था
बूमो	ठामि	हामि
बिंति[1]	बूम	णेंति
बेजामो	णेमि	पामो
झामो	देंति	बेमि[2]
गाएसि	खाएमो	

●

---

१. बू + अ + न्ति = बू + ए + न्ति = बेंति तथा बिंति ।

२. बू + अ + मि = बू + ए + मि = बेमि । पालिभाषा में 'ब्रू' धातु है। उसके रूप—

एकवचन	बहुवचन
१. ब्रूमि	ब्रूम
२. ब्रूसि	ब्रूथ
३. ब्रूति, ब्रवीति	ब्रुवन्ति

देखिए—पा० प्र० पृ० १७६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौथा पाठ

अस् = विद्यमान होना ।

अस् धातु के रूप अनियमित हैं । वे इस प्रकार हैं[1] :—

	एकवचन	बहुवचन
१. पु०	अम्हि, म्हि (अस्मि) मि, अंसि[3], अत्थि[3]	म्ह, म्हो, मो[2] मु० (स्मः) अत्थि
२. पु०	सि, असि (असि), अत्थि[3]	थ (स्थ), अत्थि
३. पु०	अत्थि[4]	अत्थि, संति (सन्ति) ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४६, १४७, १४८ ।

२. व्याकरण में 'म्ह' तथा 'म्हो' रूप विहित किये गये हैं परन्तु प्राचीन आर्ष प्राकृत भाषा में म्हु, मु, मो, ऐसे रूप भी प्राप्त होते हैं ।

३. 'अंसि' (अस्मि) रूप विशेषत: आर्षप्राकृत में पाया जाता है और 'अत्थि' रूप सभी पुरुषों और सभी वचनों में प्रयुक्त होता है ।

४. अस् धातु के पालि रूप—

	एकव०	बहुव०
१.	अस्सि, अम्हि	अस्म, अम्ह
२.	असि, अहि	अत्थ
३.	अत्थि	संति

—देखिए पा० प्र० पृ० १७८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातुएँ

मज्ज् , (मद्य)—मद करना, खुश होना, अभिमान करना।

खिज्ज् (खिद्य)—खीझना, खिन्न होना, खेद करना :

सं + पज्ज् (सं + पद्य)—प्राप्त होना।

नि + प्पज्ज (निष्पद्य) निष्पादन करना, होना।

विज्ज् (विद्य)—विद्यमान होना, उपस्थित होना।

जोत्, जोअ (द्योत)—घोतित होना, प्रकाशित होना, देखना।

सिज्ज् (स्विद्य)—स्वेद का आना (होना), पसीजना, चिकना होना।

दिव्व् (दीव्य)—द्यूत खेलना, क्रीड़ा करना।

वाक्य

तू देता है।
वह होता है।
हम गाते हैं।
तुम दौड़ते हो।
वे दोनों खाते हैं।
मैं खड़ा हूँ।
(तुम) हो।
वह जाता है।
मैं खुश होता हूँ।
वह खेद करता है।
वह निष्पादन करता है।
वह सम्पादन करता है।

हम दोनों ध्यान करते हैं।
तुम पीते हो।
वे दोनों खेलते है।
पसीजता है।
(हम) हैं।
विद्यमान है।
तुम दो हो।
तू दीप्त होता है।
हम छोड़ते हैं।
मैं जाता हूँ।
मैं हूँ। मैं पूर्ण करता हूँ।
हम प्रकाशित होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुंति
जंति
बूम
वाइ
बे जाम
दो मो
निप्पज्जसे
संति
सिज्जंति
मज्जंते
म्ह
सि

गाएसि
जोतसि
जोआमु
खिज्जेह
बेण्णि संति
धाह
बूमि
संपज्जइ
गाइ
थ
असि
अम्हि

जासि
ठामि
म्हि
निप्पज्जह
असि
अत्थि
दो मज्जह
दोण्णि
दिव्वामु
बूमो
बे खाएमु
मज्जेसि

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाचवाँ पाठ

पुज्ज् (पूर्य)[1]—पूरा करना ।
विज्झ् (विध्य[2])—वींधना ।
गिज्झ् (गृध्य)—ललचाना ।
कुज्झ् (क्रुध्य)—क्रोध करना ।
सिज्झ् (सिध्य)—सिद्ध होना ।
नज्झ् (नह्य[2])—बाँधना ।
जुज्झ् (युध्य)—जूझना, युद्ध करना ।
बोह् (बोध)—बोध होना, जानना, ज्ञान होना ।
वह् (वध)—वध करना, जान से मारना, प्राणों का हनन करना ।
सोह् (शोभ)—शोभना, शोभित होना ।
खाद्, खाय् } (खाद)—खाना ।
कह् (कथ[3])—कहना ।
कुह् (कुथ)—सड़ना ।
बाह् (बाध)—बाधा करना, अड़चन—रुकावट डालना ।
लिह् (लिख[3])—लिखना ।
लह् (लभ)—लेना, प्राप्त करना ।
सिलाह (श्लाघ)—श्लाघा करना, सराहना, प्रशंसा करना ।
सोह् (शोध)—शोधना, शुद्ध करना, साफ करना ।

---

१. देखिए पृ० ६६ ५। २. पृ० ६७ नियम ६। ३. पृ० ३७ नियम ८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुज्झ् (शुध्य)—शोधना, साफ करना।
धाव्,धाय् (धाव)—दौड़ना, भागना।

वाक्य

हम दोनों ध्यान करते हैं।	तुम हो।
वह बींधता है।	वे हैं।
हम ललचाते हैं।	हूँ।
तुम दोनों घबराते हो	तू है।
तुम दोनों सड़ते हो।	हम हैं।
हम बींधते हैं।	वह है।
तुम सुशोभित होते हो।	तुम द्योतित होते हो।
तुम शोधते हो।	वह जानता है।
तुम साफ करते हो।	मैं खुश होता हूँ।
हम दोनों लिखते हैं।	वे दोनों जाते हैं।
तुम खींचते हो।	तुम काँपते हो।
वह सम्पादन करता है।	वे दोनों प्रशंसा करते हैं।
वे दोनों निन्दा करते हैं।	वह बोता है।
तुम दोनों दौड़ते हो।	हम होते हैं।
मैं गाता हूँ।	हम खेद करते हैं।
वह शाप देता है।	वह खड़ा रहता है।
वह प्रकाशित होता है।	मैं सिद्ध करता हूँ।

कुहंति	झाम
सिलाहंति	होंति
गिज्झम	दुन्नि बोहेंति
मि	जुज्झेम
कहेमि	सि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नज्झसि	बिंति
ठाइ	लिहेज्ज
बे सोहामो	सिज्झंति
मुज्झिमु	दो लहेज्जा
वेन्नि विज्जंति	कुज्झेसि
ठाएह	अंसि
बे बाहह	

धातुएँ

बीह्[1] (भी)—भयभीत होना, डरना।

छज्ज् (सज्ज)—छाजना, शोभा देना।

वेढ् (वेष्ट)—वेष्ठन करना, वींटना, लपेटना।

कर् (कर)—करना।

तर् (तर)—तरना, तैरना।

चिण् (चिनु)—चयन करना, चुनना, इकट्ठा करना।

डह (दह)—दग्ध होना, दाझना, जलना।

डज्झ् (दह्य)—दग्ध होना, जलना, जलाना।

नम्, नव् (नम)—नमना, झुकना, प्रणाम करना।

चय् (त्यज)—त्यागना, छोड़ना।

जिण् (जिना)—जीतना।

छिंद् (छिनद्)—छेदन करना, फाड़ना।

चल् (चल)—चलना।

निंद्, निन्द् (निन्द)—निन्दना, निन्दा करना, शिकायत करना।

---

१. समानता 'बीह्' और 'भी' :—ब् + ह + ई; ब् और ह् के मिल जाने से भ् और ई के मिलने से 'भी'।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूस
सुस्स } (शुष्य[1])—शोषण करना।

सुण् (शृणु)—सुनना।

सुमर् (स्मर)—स्मरण करना, याद करना।

गच्छ् (गच्छ)—गति करना, जाना।

नस्स
नास् } (नश्य) नाश होना।

गेण्ह् (गृह्णा)—ग्रहण करना।

नच्च् (नृत्य)—नाचना।

कुण् (कृणु)—करना।

रूस
रूस्स } (रूष्य)—रूठना, रोश करना, गुस्सा करना, क्रोध करना।

हण् (हन्)—हनना, मारना।

सार और प्रश्न

	एकवचन	बहुवचन
१. पु०	वंदमि, वंदामि, वंदेमि।	वंदमो, वंदामो, वंदिमो, वंदेमो, वंदमु, वंदामु, वंदिमु, वंदेमु, वंदम, वंदाम, वंदिम, वंदेम।
२. पु०	वंदसि, वंदेसि, वंदसे, वंदेसे।	वंदह, वंदेह, वंदइत्था, वंदेइत्था, वंदित्था।
३. पु०	वंदइ, वंदेइ, वंदए, वंदेए, वंदति, वंदेति, वंदते वंदेते।	वंदति, वंदेंति, वंदिंति, वंदंते, वंदेंते, वंदिते, वंदइरे, वंदेइरे, वंदिरे।

सर्व पुरुष
सर्व वचन } वंदेज्ज, वंदेज्जा

१. देखिए पृ० ११ नि० १।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरान्त धातुओं के बिना विकरण के रूप :—

१. पु० होमि ।	होमो, होमु, होम ।
२. पु० होसि ।	होह, होइत्था ।
३. पु० होइ, होति ।	होंति, हुंति, होन्ति, हुन्ति, होन्ते, हुन्ते, होइरे ।

सर्व पुरुष / सर्व वचन } होज्ज, होज्जा

स्वरान्त धातुओं के विकरण वाले रूप :—

एकवचन	बहुवचन
१. पु० होअमि, होआमि, होएमि ।	होअमो, होआमो, होइमो, होएमो, होअमु, होआमु, होइमु, होएमु, होअम, होआम, होइम, होएम ।
२. पु० होअसि, होएसि, होअसे, होएसे ।	होअह, होएह, होअइत्था, होएइत्था ।
३. पु० होअइ, होएइ, होअए, होएए, होअति, होएति ।	होअंति, होएंति, होइंति, होंते, होअंते, होएंते, होअइरे, होएइरे ।

सर्व पुरुष / सर्व वचन } होएज्ज, होएज्जा

प्रश्न

१. प्राकृत भाषा में कौन-कौन से स्वरों का प्रयोग नहीं होता ? जिन स्वरों का प्रयोग नहीं होता, उनके स्थान पर कौन-कौन से स्वर प्रयुक्त होते हैं ? उदाहरण सहित समझाओ ।

२. निम्नलिखित शब्दों के प्राकृत में रूप बताओ ?
मृत्तिका, ताम्बूल, कीदृश, दैत्य, पौर, कौमुदी, तमस्, तीर्थकर, गोष्ठी, नग्न, चन्द्र ।

३. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ ।

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

समुद्द, वंक, साहा, पदइ, साहु, हलद्दा, अंगाल, सद्द, चोद्दह, छट्ठ, भायण ।

४. निम्नलिखित संयुक्त व्यंजनों के परिवर्तित रूप उदाहरण सहित बताओ ?

क्ष, त्य, द्य, प्स, ष्ट ।

५. निम्नांकित संयुक्त व्यञ्जन वाले शब्दों के प्राकृत-रूपान्तर बताओ ?

ग्रीष्म, स्तम्भ, पुष्प, प्रश्न, मुष्टि, ध्यान, शौण्डोर्य, ऊर्ध्व, तीर्थ, निम्न, कर्तरी ।

६. निम्नलिखित शब्दों में संधि बताओ ?

वासेसि, ददामहं, बहूदगं, पुहवीसो, काही ।

७. निम्नलिखित शब्दों में समास समझाओ ?

देवदाणवगंधव्वा, वीतरागो, तित्थयरो, नरिंदो, महावीरो ।

८. दीर्घ को ह्रस्व और ह्रस्व को दीर्घ कब-कब होता है ? उदाहरण सहित समझाओ ।

९. स्वरान्तधातु और व्यञ्जनांतधातु की रूप-साधना में क्या-क्या अन्तर है ?

१०. प्राकृत में द्विवचन है ? वहाँ द्विवचन का अर्थ किस प्रकार सूचित किया जाता है ?

११. प्राकृत भाषा के रूपों के साथ गुजराती भाषा के रूपों का कैसा सम्बन्ध है ?

१२. शौरसेनी, मागधी तथा अपभ्रंश भाषा के परिवर्तन के नियमानुसार प्राकृत भाषा से कहाँ-कहाँ भिन्नता है ?

१३. पालि भाषा तथा प्राकृत भाषा के परिवर्तनों में समानता बताओ ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवसग्ग (उपसर्ग)

उपसर्ग धातु के पूर्व में आकर धातु के मूल अर्थ में न्यूनाधिकता करके विशेष, न्यून, अधिक अथवा भिन्नार्थ बताते हैं। जो इस प्रकार हैं :—

प (प्र) = आगे, प + जाइ=पजाइ=आगे जाता है।

प + जोतते=प्रजोतते=विशेष प्रकाशित होता है।

प + हरति=पहरति=प्रहार करता है।

परा—सामने, उल्टा, परा + जिणइ=पराजिणइ=पराजय करता है।

ओ अव अप	(अप)—हल्का, रहित, नीचे, दूर,	ओ + सरइ अव + सरइ अप + सरइ	=सरकता है, दूर हटता है।
		अप + अर्थकम् = अवत्थयं = अपार्थक, व्यर्थ।	
		ओ + माल्यम् = ओमल्लं = निर्माल्य।	
सं	(सम)–इकट्ठा, साथ,	सं + गच्छति = संगच्छति = साथ जाता है। सं + चिणइ = संचिणइ = संचय करता है, इकट्ठा करता है।	
अनु	(अनु)–पीछे, समान,	अणु + जाइ = अणुजाइ = पीछे जाता है।	
अणु	,, ,, ,,	अणु + करइ = अणुकरइ = अनुकरण करता है।	
ओ	(अव)–नीचे	ओ + तरइ = ओतरइ=अवतार लेता है।	
अव	,, ,,	अव + तरइ=अवतरइ=उतरता है, नीचे जाता है।	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर् (निर्)–निरन्तर, नि सतत, रहित नी ,,	निर् + इक्खइ = निरिक्खइ=निरीक्षण करता है, देखता है। नि + ज्झरइ=निज्झरइ=झरता है। नि + सरइ=नीसरइ=निकलता है। निर् + अंतरं=निरंतरं=निरंतर। निर् + धनः=निद्धणो=निर्धन,गरीब।
दु (दुर)—दुष्टता	दु + गच्छइ = दुग्गच्छइ=दुर्गति में जाता है।
दू ,,	दो + गच्चं = दोगच्चं=दौर्गत्य, दुर्गति। दू + हवो = दूहवो=भाग्यहीन, बदनसीब।
अभि (अभि)–सामने	अभि + भासइ = अभिभासइ = सामने जाता है।
अहि ,, ,,	अहि + मुहं = अहिमुहं = अभिमुख, सामने।
वि—विशेष, नहीं, विपरीत	वि + जाणइ = विजाणइ = विशेष जानता है (करता है)। वि + जुंजइ = विजुंजइ = वियुक्त होता है (करता है)। अलग होता है। वि + कुव्वइ = विकृत करता है।

१. 'दू' और 'सू' का उपयोग केवल 'हव' (भग) शब्द के पूर्व ही होता है। देखिए, पृ० २३ नियम ५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधि	(अधि)—अधिक	अधि + गच्छति = अधिगच्छइ = प्राप्त करता है, जानता है, ऊपर जाता है।
अहि	,, ,,	अधि + गमो = अहिगमो = अधिगम, ज्ञान।
[1]सु	(सु)—श्रेष्ठ	सु + भासए = अच्छा बोलता है।
सू	,, ,,	सू + हवो = सूहवो=भाग्यवान।
उ	(उत्)—ऊँचा	उ + गच्छते = उग्गच्छते—ऊँचा जाता है, ऊगता है।
अइ	(अति)—अतिशय, हद से बाहर, अमर्यादित	अइ + सेइ = अइसेइ = अतिशय करता है, अति प्रशंसा करता है।
अति	,, ,,	अइ + गच्छति = अतिगच्छति = हद से बाहर जाता है।
णि	(नि)—निरन्तर, नीचे	णि + पडइ = णिपडइ = निरन्तर गिरता है, नीचे गिरता है।
नि	,, ,,	नि + पडइ = निपडइ = नीचे गिरता है, निरन्तर गिरता है।
पडि	(प्रति)—सामने, समान, विपरीत	पडि + भासए = पडिभासए=सामने बोलता है।
पति	,, ,,	पति + ठाइ = पतिठाइ=पतिष्ठित होता है।
[1]परि	,, ,,	परि + ट्ठा = परिट्ठा = प्रतिष्ठा। पडि + मा=पडिमा=समान आकृति। पडि + कूलं = पडिकूलं = प्रतिकूल।

१. 'परि' यह 'पडि' का ही एक भिन्न उच्चारण है। 'र' और 'ड' का—उच्चारण स्थान भी समान ही है। देखिए, पृ० ५२ नि० १६ 'र' को 'ड'।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परि (परि)—चारों तरफ	परि + बुडो = परिवुडो=परिवृत, चारों ओर से घिरा हुआ।
पलि ,, ,,	पलि + घो = पलिघो=परिघ,घन।
अपि (अपि)–भी, उल्टा	अवि + हेइ = अविहेइ = ढाँकता है।
अवि ,, ,, ,,	अपि + हेइ = अपिहेइ = ,,
[1]पि ,, ,, ,,	पि + हेइ = पिहेइ = ,,
वि ,, ,, ,,	को + वि = कोवि = कोइ भी।
इ ,, ,, ,,	को + इ = कोइ = ,, किम् + अवि = किमवि = कुछ भी। जं + पि = जंपि = जो भी।
उ (उप)—पास	उव + गच्छइ = पास जाता है।
ओ ,, ,,	ऊ + ज्झायो = ऊज्झायो = उपाध्याय।
उव ,, ,,	ओ + ज्झायो = ओज्झायो = ,, उव + ज्झायो = उवज्झायो = ,,
आ—मर्यादा, उल्टा,	आ + वसइ = आवसइ=अमुक मर्यादा में रहता है। आ + गच्छइ = आता है।

उपसर्गों के अर्थ निश्चित नहीं होते। इसीलिए कोइ उपसर्ग धातु के मूल अर्थ से विपरीत अर्थ बताता है, कोई मूल अर्थ को बताता है, कोई

---

१. इन सब संस्कृत उपसर्गों में शौरसेनी, मागधी, तथा पैशाची भाषा के अनुसार परिवर्तन कर लेना चाहिये, जैसे—अति, शौ० अदि। परि, मा० पलि। अभि, पै० अभि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु के मूल अर्थ में कुछ अतिशय अर्थ बताता है और कोई केवल शोभा के लिये ही प्रयोग में आता है—धातु के अर्थ में बिल्कुल परिवर्तन नहीं करनेवाला उपसर्ग 'अपि' है और वह 'भी' अर्थ में अव्यय भी है। इसलिए 'अपि' के उदाहरणों में उसके दोनों प्रकार के प्रयोग दिखाये हैं।

धातुएँ

पुण् (पुना)—पवित्र करना।

थुण् (स्तु)—स्तुति करना।

वच्च् (व्रज)—गति करना, जाना।

कुद्द (कुर्द)—कूदना।

अच्च् (अर्च)—अर्चना करना, पूजा करना।

वड्ढ् (वर्ध)—बढ़ना।

भम (भ्रम)—भ्रमण करना, घूमना।

भम्म (भ्राम्य)— ,, ,,

भिद् (भिनद्)—भेदना, टुकड़े-टुकड़े करना।

चिइच्छ (चिकित्स)—चिकित्सा करना, रोग का उपचार करना।

जग्ग् (जागृ)—जागना।

छिद् (छिन्द्)—छेदना, चीरना, फाड़ना।

सिच् (सिञ्च)—सींचना, पीना, तर करना।

मुंच् (मुञ्च)—छोड़ना, त्यागना।

लुण् (लुना)—काटना, लवना।

गंठ् (ग्रन्थ)—गाँठना, गूँथना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गज्ज् (गर्ज)—गाजना, गर्जना ।

मिला (म्ला)—म्लान होना, कुम्हला जाना ।

गिला (ग्ला)—ग्लानि होना, क्षीण होना ।

वीसर् (वि + स्मर)—विस्मृत होना, भूल जाना ।

जम्म् (जन्मन्)—जन्म लेना, पैदा होना ।

रुव् (रुद्)—रोना ।

तोल् (तोल)—तोलना, मापना ।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छठा पाठ

अकारान्त शब्द के रूप (पुंलिंग)

वीर +

	शब्द: प्रत्यय एकव०	बहुव०
प्र०	वीर + ओ = वीरो (वीरः[1])	वीर + आ = वीरा[1] (वीराः)
	वीर + ए = वीरे	

+ तुलना के लिए 'अकारान्त' 'बुद्ध' शब्द के पालिभाषा के एकवचनी रूप :—

एकवचन	बहुवचन
प्र० बुद्धो	बुद्धा (बुद्ध से)
द्वि० बुद्धं	बुद्धे
तृ० बुद्धेन	बुद्धेहि, बुद्धेभि

[किसी-किसी स्थान मे तृतीया के एकवचन में बुद्धसो' रूप भी होता है और तृतीया के एकवचन में कहीं-कहीं 'सा' प्रत्यय भी लगता है—जलसा, बलसा]

च० बुद्धाय, बुद्धस्स	बुद्धानं
पं० बुद्धा, बुद्धस्मा, बुद्धम्हा	बुद्धेहि, बुद्धेभि
ष० बुद्धस्स	बुद्धानं
स० बुद्धे, बुद्धस्सि, बुद्धम्हि	बुद्धेसु
सं० बुद्ध !, बुद्धा !	बुद्धा—दे०पा०प्र०पृ०,८५,८६।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२। तथा ८।४।२८७, ८।३।४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि०	वीर + म् = वीरं[2] (वीरं)	वीर + आ = वीरा (वीरान्), वीर + ए = वीरे[3]

संस्कृत भाषा में 'स्मात्' 'स्मिन्' प्रत्यय मात्र सर्वादि शब्द में ही लगते हैं। प्राकृत भाषा में ये प्रत्यय व्यापक हैं इसी हेतु बुद्धस्मा, वीरंसि जैसे रूप प्राकृत भाषा में प्रचलित हैं।

शौरसेनी, मागधी, पैशाची भाषा के रूप भी 'वीर' के रूप जैसे ही बनेंगे, विशेषता इस प्रकार है :

पंचमी एकवचन—शौरसेनी—वीरादो, वीरादु।

मागधी रूप—

प्रथमा एकवचन—'वीले' (मागधी भाषा में पुंलिंग में प्रथमा के एकवचन में 'वीले' ऐसा एकारान्त रूप होता है, 'वीलो' ऐसा ओकारान्त रूप नहीं होता)।

पंचमी एकवचन—वीलादो, वीलादु।

षष्ठी ,, वीलाह, वीलश्श।

षष्ठी बहुवचन—वीलाहं, वीलाणं (हे०प्रा०व्या० ८।४।२९९,३००)।

पैशाची रूप—

पंचमी एकवचन—वीरातो, वीरातु।

अपभ्रंश रूपों में विशेष भिन्नता है :—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	वीरु, वीरो, वीर, वीरा।	वीर, वीरा।
द्वि०	वीरु, वीर, वीरा।	वीर, वीरा।
तृ०	वीरें, वीरेण, वीरेणं	वीरेहिं, वीराहिं, वीरहिं।
च०	वीरस्सु, वीरासु, वीरसु, वीराहो,	वीराहं, वीरहं, वीर,

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ० वीर + ऐण = वीरेण[4] (वीरेण), [5]वीर + एहि=वीरेहि (वीरेभिः)
वीरेणं वीरेहिं, वीरेहिँ[6] (वीरैः)

च० वीर + आय = वीराय (वीराय), वीर + ण=वीराण[7] (वीराणाम्),
वीर + आए = वीराए वीराणं
वीर + स्स = वीरस्स (वीरस्य)

पं० *वीर + आ = वीरा[8] (वीरात्), वीर + ओ = वीराओ[9]

वीरहो, वीर, वीरा। वीरा।

पं० वीराहु, वीरहु, वीराहे, वीरहे। वीराहुं, वीरहुं।

ष० वीरस्सु, वीरासु, वीरसु, वीराहो, वीराहं, वीरहं।
वीरहो, वीर, वीरा।

सं० वीरि, वीरे। वीराहिं, विरहिं।

सं० वीरु, वीरो, वीर, वीरा। ×वीराहो, वीरहो,
वीर, वीरा।

× वैदिक छान्दस—'देवासः' रूप के साथ 'वीराहो' रूप की तुलना हो सकती है।

४. हे० प्रा० व्या० ८।३।६।, ८।३।१४।, ८।१।२७। ५. हे० प्रा० व्या० ८।३।७।, ८।३।१५। ६. हे० प्रा० व्या० ८।४।४४८।, ८।३।१३१, १३२। ७ हे० प्रा० व्या० ८।३।६।, ८।३।१२। * पांचमी विभक्ति में निम्न अधिक रूप बनते हैं :

एकवचन	बहुवचन
वीर + तो = वीरातो	वीरातो
वीर + तु = वीरातु	वीरातु
वीर + हि = वीराहि	वीराहि,
वीर + हिंतो = वीराहिंतो	वीरेहि,
वीर + त्तो = वीरत्तो (वीरतः)	वीरत्तो (वीरतः)

८. हे० प्रा० व्या० ८।३।८।, ८।३।१२। ९. हे० प्रा० व्या० ८।३।६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीर + ओ = वीराओ

वीर + उ = वीराउ

वीर + उ = वीराउ

वीर + हिंतो = वीराहिंतो, वीरेहिन्तो (वीरेभ्यः)

वीर + सुंतो = वीरासुंतो, वीरेसुंतो

ष० वीर + स्स = वीरस्स[10] (वीरस्य) वीर + ण = वीराण[11] (वीराणाम्), वीराणं

स० वीर + ए = वोरे[12] वीर + सु—वीरेसु[13] (वीरेषु), वीरेसुं

वीर + अंसि = वीरंसि (वोरस्मिन्),

वीर + म्मि = वीरम्मि १२.

सं० वीर ! (वीर !) वीरा[14] (वीराः !)

वीरा !

वीरो !

वीरे !

( ) इस निशान में बताये हुए संस्कृत रूपों और प्राकृत रूपों के उच्चारणों में नहीं जैसा भेद है। यह भेद रूपों के बोलते ही समझ में आ जाता है। केवल पंचमी विभक्ति में अधिक अनियमित रूप बनते हैं।

तथा १२।१५। १०. हे० प्रा० व्या० ८।३।१०। ११. हे० प्रा० व्या० ८।३।६, ८।१।२७। १२. हे० प्रा० व्या० ८।३।११। १३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५, ८।१।२७। १४. हे० प्रा० व्या० ८।३।३८, तथा ४,१२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूप बताते समय शब्द (नाम) का मूल अंग और प्रत्यय का अंश दोनों पृथक्-पृथक् बताये गये हैं और उसके साथ ही उस पद्धति से साधित रूप भी अलग-अलग बताये गए हैं। अतः पाठक उक्त पद्धति से ही अकारान्त शब्द के रूप समझ लेंगे।

साधनपद्धति की जानकारी

१. प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी और सप्तमी विभक्ति के 'स्वरादि-प्रत्यय' तथा पंचमी का केवल 'आ' प्रत्यय लगाने पर अंग के अन्त्य 'अ' का लोप करना चाहिए (देखिए पृ० ६५ नियम—१)।
जैसे :—
वीर + ओ = वीरो

२. वीर + म् = वीरं (विरं)
वीरम् + अवि = वीरं अवि, वीरमवि, (देखिये पृ० ९६, ९७; क्रमशः नियम १७, १८)।

३. तृतीया और षष्ठी विभक्ति के 'ण' तथा सप्तमी विभक्ति के 'सु' परे रहने पर (आगे) विकल्प से अनुस्वार होता है।
वीर + एण = वीरेण, वीरेणं।
वीर + ण = वीराण, वीराणं।
वीर + सु = वीरेसु, वीरेसुं।

४. तृतीया और सप्तमी विभक्ति के बहुवचनीय प्रत्ययों के पूर्व अकारान्त अंग के अन्त्य 'अ' को 'ए' तथा इकारान्त और उकारान्त अङ्ग के अन्त्य 'इ' तथा 'उ' को दीर्घ हो जाता है।
वीर + हि = वीरेहि। रिसि + हि = रिसीही। भाणु + हि = भाणूहि।
वीर + सु = वीरेसु। रिसि + सु = रिसीसु। भाणु + सु = भाणूसु।

५. पञ्चमी के 'ओ', 'उ', 'हिंतो' प्रत्ययों के पूर्व स्वरान्त अंग के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तिम स्वर को दीर्घ होता है और पञ्चमी के बहुवचन के 'हि', 'हिंतो', 'सुंतो' प्रत्ययों के पूर्व अकारान्त अंग के अन्त्य 'अ' को 'ए' भ हो जाता है ।

एकवचन	बहुवचन
वीर + ओ = वीराओ	वीर + हि = वीराहि, वीरेहि ।
वीर + उ = वीराउ	वीर + हिंतो = वीराहिंतो, वीरेहिंतो ।
	वीर + सुंतो = वीरासुंतो, वीरेसुंतो ।
	रिसि + हि = रिसीहि ।
रिसि + ओ = रिसीओ	भाणु + हि = भाणूहि ।
भाणु + ओ = भाणूओ	रिसि + हिंतो = रिसीहिंतो ।

६. षष्ठी के बहुबचन 'ण' से पूर्व अंग के अन्तिम स्वर को दीर्घ होता है।
वीर + ण = वीराण, वीराणं ।
रिसि + ण = रिसीण ।

७. सम्बोधन—(विभक्ति) के रूप सर्वथा प्रथमा जैसे हैं; विभक्ति रहित केवल मूल अंग भी प्रयोग में देखने को मिलता है । जैसे, वीर! वीरो ! वीरा ! वीरे ।

८. तृतीया विभक्ति के 'हि' प्रत्यय परे रहने पर अनुस्वार और अनुनासिक भी होता है । इस प्रकार इसके तीन रूप होते हैं । वीरेहि, वीरेहिं, वीरेहिँ ।

९. वीराए[1] (च० ए०), वीरंसि (स० ए०) रूपों का व्यवहार विशेषत: आर्ष प्राकृत में दिखाई देता है । कई स्थानों में चतुर्थी के एकवचन में 'आइ' प्रत्यय वाला रूप भी उपलब्ध होता है (हे०

---

१. अजिणाए (अजिनाय), मंसाए (मांसाय), पुच्छाए (पुच्छाय) आदि 'आए' प्रत्यय वाले तथा 'लोगंसि','कंसि', अगारंसि, सुसाणंसि आदि 'अंसि' प्रत्यय वाले रूप आचारांगादि आर्ष सूत्रों में मिलते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रा० व्या० ८।३।१३३)—वहाइ (वधाय), 'आय', 'आए' और 'आइ' इन तीनों में विशेष समानता है। 'आइ' प्रत्ययवाला रूप बहुत प्रचलित नहीं है। इसीलिए उपर्युक्त रूपों में नहीं बताया गया है। कई स्थानों में 'आए' के बदले 'आते' प्रत्यय भी उपलब्ध होता है अतः 'वीराए' की भाँति 'वीराते' रूप भी आर्ष प्राकृत में मिलता है।

छांदस नियम की तरह चतुर्थी विभक्ति के अर्थ में षष्ठी विभक्ति का उपभोग होता है अतः इन दोनों के समान रूप होते हैं।

पुंलिग शब्द [नरजाति]

अरिहंत[2] (अर्हत्) = वीतराग देव। बाल (बाल) = बालक।

---

२. अरिहंत वगैरह अनेक शब्द समग्र पुस्तक में दिए गए हैं। उन शब्दों को शौरसेनी, मागधी तथा पैशाची के शब्दपरिवर्तन के नियम लगाकर शौरसेनी, मागधी, पैशाची रूप बनाना, बादमें उनके सातों विभक्तियों के रूप बनाने चाहिए।

अरिहंत का मागधी अलिहंत।
णिव का पैशाची निप
नयण का ,, नयन
जिण का ,, जिन
जिण का मागधी यिण
पुच्छ का ,, पुश्च
पिच्छ का ,, पिश्च
हस्त का ,, हस्त
वदण का पैशाची वतन
वात का शौरसेनी वाद
अज्ज का शौरसेनी अय्य।

इस प्रकार सब शब्दों में तत्-तत् भाषा के परिवर्तन नियमों का उपयोग करना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हर (हर) = महादेव ।

बुद्ध (बुद्ध) = बुद्धदेव ।

मग्ग (मार्ग) = मार्ग (रास्ता) ।

कलह (कलह) = कलह (झगड़ा) ।

हत्थ (हस्त) = हाथ ।

पाय (पाद) = पाद (पैर), पाँव, पग ।

भार (भार) = भार ।

उवज्झाय (उपाध्याय) = उपाध्याय, अध्यापक, गुरु, ओझा ।

आयरिय (आचार्य) = सदाचारवान्-चरित्रवान्-गुरु ।

सिद्ध (सिद्ध) = अदेही, वीतराग ।

निव (नृप) = नृप, राजा ।

बुह (बुध) = बुद्धिमान् ।

पुरिस (पुरुष) = पुरुष ।

आइच्च (आदित्य) = आदित्य, सूर्य ।

इंद (इन्द्र) = इन्द्र ।

चंद (चन्द्र) = चन्द्र ।

मेह (मेघ) = मेघ, बादल ।

भारवह (भारवह) = भार उठानेवाला, मजदूर ।

समुद्द, समुद्र (समुद्र) = समुद्र ।

नयण (नयन) = नयन, नेत्र, आँख ।

कण्ण (कर्ण) = कान ।

महावीर (महावीर) = महावीर देव ।

जिण (जिन) = जय पानेवाला—वीतराग ।

अज्ज (आर्य) = आर्य, सज्जन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाक्य (हिन्दी में)

बादल मार्ग को सींचते हैं।
इन्द्र बुद्धदेव को नमस्कार करता है।
बुद्धिमान् पुरुष बालक को पूछता है।
आँख से चन्द्र को देखता हूँ।
कान से समुद्र को सुनता हूँ।
बालक के हाथ में चन्द्र है।
कलह को छिन्न कर (मिटा) दो।
सूर्य तपता है।
राजा मार्ग को जानता है।
सिद्धों को नमस्कार करो।
मजदूर लोग मार्ग पर दौड़ते हैं।
हम समुद्र में चन्द्र को देखते हैं।
बालक उपाध्याय को पूछते हैं।
राजा के चरणों में पड़ता हूँ।
वीतराग देव ! नमस्कार करता हूँ।
दो बालक बोलते हैं।
समुद्र गरजते हैं।
राजा सुशोभित होता है।

वाक्य (प्राकृत में)

नमो[1] अरिहन्ताणं।
भारवहो हरं वंदइ।
महावीरो जिणो झाअइ।

---

१. 'णमो' अथवा 'नमो' के साथ प्रयुक्त शब्द षष्ठी विभक्ति में आते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्णेहिं सुणेमि ।

नयणेहिं देक्खामु ।

भारवहा भारं चिणंति ।

नमो उवज्झायाणं ।

समुद्दो खुब्भइ ।

मेहो समुद्दम्मि पडइ ।

बाला हत्थे धरिसंति ।

समुद्दं तरह ।

हत्थेण हरं अच्चेमि ।

नमो आयरियाणं ।

आयरियाण पाए नमाम ।

बाला कुद्दंति

चन्दो वड्ढइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सातवाँ पाठ

अकारान्त कमल शब्द के रूप (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	कमल + म् = कमलं (कमलम्)	कमल + णि = कमलाणि[1] ; कमल + इं = कमलाइं ; कमल + इँ = कमलाइँ } कमलानि
द्वि०	,, ,,	,, ,, ,,
सं०	[2] कमल ! (कमल !)	,, ,,

शेष रूप (तृतीया से सप्तमी विभक्ति पर्यन्त) वीर शब्द की भाँति होते हैं ।

१०. 'णि', 'इं', 'इँ' प्रत्ययों के पूर्व अंग के अन्त्य ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है । जैसे :—

[3] कमल + णि = कमलाणि ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२६।

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।३७ ।

पालि रूप :—

३. प्र० एकव०

कमलं

प्र० बहुव०

कमला, कमलानि ।

द्वि० एकव०

कमलं

द्वि० बहुव०

कमले, कमलानि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वारि + इं = वारीइं ।

महु + इं = महूइं ।

११. सम्बोधन के एकवचन में केवल मूल अंग ही प्रयुक्त होता है। जैसे, कमल !

४.	प्र० एकव०	प्र० बहुव०
	वारि	वारी, वारीनि ।
	द्वि० एकव०	द्वि० बहुव०
	वारिं	वारी, वारीनि
५.	प्र० एकव०	प्र० बहुव०
	मधु	मधू, मधूनि ।
	द्वि० एकव०	द्वि० बहुव०
	मधुं	मधू, मधूनि ।

पृ० ८९ में लिंगविचार बताया है तदनुसार सकारांत तथा नकारांत शब्द प्राकृत भाषा में पूंलिंग हो जाते हैं लेकिन पालि भाषा में ये शब्द पुंलिंग होते हैं तथा नपुंसकलिंग भी। संस्कृत के सकारान्त तथा नकारान्त शब्द प्राकृत भाषा में अन्त्य व्यंजन के लोप होने के बाद स्वरान्त बन जाते हैं (दे० पृ० ३२ लोप०)। स्वरान्त होने से उनके रूप स्वरान्त जैसे समझने चाहिए।

पुंलिंग अकारान्त शब्द का अकारान्त की तरह तथा पुंलिंग इकारान्त, उकारान्त का इकारान्त उकारान्त की तरह। नपुंसकलिंगी अकारान्त का कमल की तरह तथा इकारान्त का वारि की तरह और उकारान्त का महु की तरह रूप होते हैं।

मनस्—मण तथा कर्मन्—कम्म के रूपों में थोड़ी विशेषता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द (नपुंसकलिंग)

नयण (नयन) = नयन, नेत्र, आँख ।

मत्थय (मस्तक) = मस्तक, सिर ।

मण—तृतीया एकवचन मणसा ।
पंचमी ,, मणसो ।
च० ष० ,, मणसो ।
सप्तमी ,, मणसि ।

पालि में भी 'मन' शब्द के मनसा, मनसो, मनसि रूप होते हैं ।

कर्मन्—कम्म—
तृ० ए०—कम्मणा, कम्मुणा ।
च० ष० ए०—कम्मणो, कम्मुणो ।
पं० ए०—कम्मुणा, कम्मुणो ।
स० ए०—कम्मणि ।

इसी तरह पालि में भी कम्मना, कम्मुना, कम्मुनो, कम्मनि रूप होते हैं ।

शिरस्—सिर का तृ० ए० में सिरसा रूप भी होता है । ये सब रूप आर्षप्राकृत में प्रचलित हैं । संस्कृत के रूपों में परिवर्तन करने से इन रूपों की सिद्धि करनी सरल है (हे० प्रा० व्या० शेषं संस्कृतवत् ८।४।४४८) ।

पालि की विशेष विशेषता के लिए—दे० पा० प्र० पृ० १३५ नं० ६१–६२ ।

अपभ्रंश रूपों की विशेषता—

कमलं कमलाइं, कमलइं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाण (ज्ञान) = ज्ञान ।
चंदण (चन्दन) = चन्दन का वृक्ष अथवा लकड़ी ।
णगर, नगर, णयर, नयर (नगर) = नगर, शहर ।
मुह (मुख) = मुख ।
पित्त (पित्त) = पित्त ।
सिंग (शृङ्ग) = सींग ।
फल (फल) = फल ।

अपभ्रंश में 'क' प्रत्ययवाला शब्द हो तो उसके रूप इस प्रकार हैं—

	कमलक—कमलअ		
प्र० ए०	कमलउं	बहुवचन पूर्ववत्	
द्वि० ए०	कमलउँ	,,	
	केलक–केलअ (= केला)		
	केलउं	,,	प्रचलित गुजराती—केलुं
	केलउं	,,	
कुण्डक	(कुण्डा=पानी का कुंडा)	,,	कुंडूं
	कुंडउ	बहुवचन पूर्ववत्	
	कुंडउं	,,	

अपभ्रंश में शब्द (नाम) के रूप :

शब्द का अन्त्य स्वर दीर्घ हो तो ह्रस्व करके तथा ह्रस्व हो तो दीर्घ करके भी रूप बनते हैं। उन रूपों में कोई विभक्ति भी नहीं लगती तथा जैसा शब्द है उसमें कोई परिवर्तन न करके भी रूप बनते हैं अतः विभक्ति लगाने की जरूरत नहीं होती । जैसे—पुंलिग में वीरा, वीर; नपुंसकलिंग में केला, कुण्डा ।

हिन्दीमें प्रचलित चितारा (चित्रकर), केला, जल शब्द से इनकी तुलना की जा सकती है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वण (वन) = वन ।
भायण, भाण (भाजन) = भाजन, पात्र ।
वेर (वैर) = वेर, वैर ।
वयण (वचन) = वचन ।
वयण, वदण(वदन) = वदन, मुख ।
मंगल (मङ्गल) = मंगल ।
पास (पार्श्व) = पास, नज़दीक ।
हियय (हृदय) = हृदय ।
गल (गल) = गला, गर्दन, ।
पुच्छ (पुच्छ) = पूंछ ।
पिच्छ (पिच्छ) = पींछी ।
मंस (मांस) = मांस ।
अजिन (अजिन) = अजिन, चमड़ा ।
भय (भय) = भय, डर ।
चम्म (चर्म) = चमड़ा ।

शब्द (पुंलिंग)

सीह, सिंघ (सिंह) = सिंह ।
वग्घ (व्याघ्र) = बाघ ।
सिगाल,सिआल (शृगाल) = शियाल, सियार ।
सीआल (शीतकाल) = शरद् काल ।
गय (गज) = गज, हाथी ।
वसह (वृषभ) वृषभ, बैल ।
ओट्ठ (ओष्ठ) = होठ, ओठ ।
दन्त (दन्त) = दांत ।
कुम्भार (कुम्भकार) = कुम्हार, कोंहार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चम्मार (चर्मकार) = चमार ।

हव्ववाह (हव्यवाह) = हव्यवाह, अग्नि ।

कोह (क्रोध) = क्रोध ।

लोह (लोभ) = लोभ ।

दोस (द्वेष) = द्वेष ।

दोस (दोष) = दोष ।

राग (राग) = राग, आसक्ति ।

धातु (क्रियापद)

घड् (घट्) = घड़ना, गढ़ना, बनाना ।

जहा (जहा) = छोड़ना, त्यागना ।

जागर् (जागर) = जागना ।

भक्ख (भक्ष) = भक्षण करना, खाना ।

जाय (जाय) = जन्म होना, पैदा होना ।

परि + क्कम् (परिक्रम्) = परिक्रमण करना, प्रदक्षिणा करना, चारों तरफ घूमना ।

इच्छ (इच्छ) = इच्छा करना ।

रक्ख (रक्ष) = रक्षा करना, पालना ।

वह् (वह्) = वपन करना, बोना ।

विशेषण

लंब (लम्ब) = लम्बा ।

बज्झ (बाह्य) = बाहर का ।

लण्ह (श्लक्ष्ण) = छोटा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अव्यय

न (न) = नहीं ।

व (वा) = वा, अथवा ।

विणा, विना (विना) = विना ।

सया, सइ (सदा) = सदा, हमेशा ।

सह (सह) = साथ ।

सद्धिं (सार्धम्) = साथ ।

निच्चं, णिच्चं (नित्यम्) = नित्य ।

वाक्य (हिन्दी में)

वैर से वैर बढ़ता है ।

नगर के पास चन्दन का वन है ।

सिंह अथवा बाघ से शृगाल डरता है ।

कुम्हार सर्दी में पात्र बनाता है ।

बाघ के सींग नहीं होते ।

अग्नि वन को जलाती है ।

ज्ञान में मंगल है ।

महावीर को मस्तक झुकाकर वन्दन करता हूँ ।

राजा के कान नहीं होते ।

सिंह के हृदय में भय नहीं है ।

वन में हाथी सूंढ़ से फल खाता है ।

मांस के लिए सिंह को मारते हो ।

दांतों के लिए हाथियों को मारते हैं ।

बुद्ध के साथ महावीर बोलते हैं ।

चमड़े के लिए बाघ को मारता है ।

हाथी बैलों से नहीं डरते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंह की पूंछ लम्बी होती है ।
आँख में क्रोध को देखता हूँ ।
सूर्य अथवा चन्द्र नहीं घूमते ।
बैल सींगो से शोभा पाता है ।
चमार चमड़े को साफ करता है ।
मुख से वचन बोलता हूँ ।
पुरुष पतले होठ से शोभा पाता है ।
वर्षा नित्य होती है ।
वर्षा बिना वन सूखते हैं ।

वाक्य (प्राकृत में)

अजिणाए वहंति वग्घे ।
फलाइं मायणम्मि सोहन्ति ।
बुहा पुरिसा हियये वेरं न रक्खन्ति ।
निवो वणेसु सिंघे वा वग्घे वा हणइ ।
सिंघो फलं न खायइ ।
चंदणस्स वणंसि जामि ।
कुम्मारो नगराओ आगच्छइ ।
चम्मारो अजिणाए नगरं जाइ ।
निवस्स मत्थयंमि कमलाणि छज्जन्ति ।
मत्थयेण वंदामि महावीरं ।
वणे गए देक्खह ।
वग्घस्स वा सीहस्स वा सिंगं नत्थि ।
लोहाओ लोहो वड्ढइ ।
रागा दोसो जायइ ।
कोहेण पित्तं कुप्पई ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आठवाँ पाठ

पुंलिंग शब्द

घड	(घट)	= घड़ा ।
नड	(नट)	= नट, अभिनेता ।
पडह	(पटह)	= ढोल ।
भड	(भट)	= भट, शूर, वीर ।
मोह	(मोह)	= मोह, मूढ़ता ।
काय	(काय)	= काय, काया, शरीर ।
सद्द	(शब्द)	= शब्द, आवाज़ ।
हरिस	(हर्ष)	= हर्ष, खुशी ।
मढ	(मठ)	= मठ, सन्यासियों का निवास-स्थान ।
सढ	(शठ)	= शठ, धूर्त ।
कुढार	(कुठार)	= कुठार, कुल्हाड़ी ।
पाढ	(पाठ)	= पाठ ।
समण	(श्रमण)	= शुद्धि के लिए श्रम करने वाला सन्त पुरुष ।
मोक्ख	(मोक्ष)	= मोक्ष, छुटकारा ।
वेय	(वेद)	= ऋग्वेद आदि चारों वेद ।
फास	(स्पर्श)	= स्पर्श ।
तलाय	(तडाग)	= तालाव ।
गरुल	(गरुड)	= गरुड, एक पक्षी ।
खार, छार	(क्षार)	= खार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंध (स्कन्ध) = स्कन्ध, भाग, मोटी डाली ।
पोक्खर (पुष्कर) = तालाब ।
खय (क्षय) = क्षय ।
कोस (कोश) = पानी निकालने का कोस, खज़ाना ।
पाण (प्राण) = प्राण, जीव ।
गंध (गन्ध) = गंध ।
काम (काम) = काम, इच्छा, तृष्णा ।
अप्पाण (आत्मन्) = आत्मा, स्वयं ।

नपुंसकलिंग शब्द

जल (जल) = जल, पानी ।
रयय (रजत) = रजत, चाँदी ।
गीअ, गीत (गीत) = गीत, गाया हुआ ।
सीस (शीर्ष) = मस्तक, सिर ।
गुत्त (गोत्र) = गोत्र, वंश ।
गहण (ग्रहण) = ग्रहण करने का साधन ।
पञ्जर (पञ्जर) = पिंजड़ा ।
सील (शील) = शील, सदाचार ।
लावण्ण, लायण्ण (लावण्य) = लावण्य, कान्ति ।
रसायल (रसातल) = रसातल, पाताल ।
कुम्पल, कुंपल (कुड्मल) = कुंपल, कोंपल, अंकुर ।
रुप्प (रुक्म) = चाँदी ।
जुम्म, जुग्ग (युग्म) = युग्म, जोड़ा ।
कम्म (कर्म) = कर्म, काम, अच्छी-बुरी प्रवृत्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मित्त (मित्र) = मित्र ।

दुक्ख (दुःख) = दुःख ।

सुक्ख (सुख) = सुख ।

चारित्त (चारित्र) = सच्चारित्र, सद्वर्तन ।

घाण (घ्राण) = नाक, सूँघने का साधन ।

सयढ (शकट) = शकट, गाड़ी, छकड़ा ।

पद, पय (पद) = पग, चरण, पाद ।

जुग (युग) = युग, जुम्रा ।

छीर, खीर (क्षीर) = क्षीर, खीर, दूध ।

लक्खण, लच्छण (लक्षण) = लक्षण, चिह्न ।

छीअ (क्षुत्) = छींक ।

खेत्त, छेत्त (क्षेत्र) = क्षेत्र, खेत, मैदान ।

सोअ, सोत्त (श्रोत्र) = श्रोत्र, कान, सुनने का साधन ।

वीरिय (वीर्य) = वीर्य, बल, शक्ति ।

विशेषण

मूढ (मूढ) = मूढ, मोहवाला, अज्ञानी ।

पुट्ठ (पुष्ट) = पुष्ट ।

संजय (संयत) = संयम वाला ।

पुट्ठ (पृष्ट) = पूछा हुआ !

पण्डित, पंडिअ (पण्डित) = पण्डित, शिक्षित, पतित, तोता, शुक पक्षी ।

दुल्लह (दुर्लभ) = दुर्लभ, दुल्लभ, कठिन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अव्यय

नो (नो,नहि) = नहीं।
च, अ, य (च) = और।
बहिआ, बहिया (बहिर्) = बाहर।
बज्झओ (बाह्यत:) = बाहर की ओर
जहासुतं (यथासूत्रम्) = सूत्र के अनुसार।
ण, पुणो, उण (पुन:) = पुन:, दुबारा, फिर से।
तत्तो (तत:) = उससे।
किं (किम्)=किसलिए।

धातु

गवेस् (गवेष) = गवेषणा करना, शोधना।
वस् (वस) = निवास करना, रहना।
वय् (वद) = बोलना।
पिब् (पिब) = पीना।
आ + पिब् = थोड़ा पीना।
आ + पिय् = मर्यादा से पीना।
आ + विय् = किसी प्राणी की हानि न हो इस रीति से चूसना।
जय् (जय) = जीतना।
हव्, भव् (भव) = होना।
पढ् (पठ) = पढ़ना।
सोअ्, सोच् (सोच) = सोचना, विचारना, शोक करना।
भण् (भण) = पढ़ना।

आकारान्त पुंलिंग हाहा शब्द के रूपः—

	एकव०	बहुव०
प्र०	हाहा	हाहा
द्वि०	हाहां	हाहा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ० हाहाण	हाहाहि, हाहाहिं, हाहाहिँ
च०ष० हाहस्स, हाहे	हाहाण, हाहाणं
पं० हाहत्तो, हाहासो,	हाहत्तो, हाहासो,
हाहाउ, हाहाहितो	हाहाउ, हाहाहितो, हाहासुंतो
स० हाहम्मि, हाहंसि	हाहासु, हाहासुं
संबो० हाहा	हाहा

इसी प्रकार गोवा (गोपा), सोमवा (सोमपा),किलालवा (किलालपा) इत्यादि शब्दों के रूप होंगे।

'षड्भाषा चंद्रिका' नामक व्याकरण के नियमानुसार गोवा वगैरह शब्द ह्रस्व हो जाते हैं अर्थात् गोव, सोमव, किलालव ऐसे हो जाते हैं तब इन सबके रूप अकारांत 'बीर' शब्द की तरह चलेंगे।

वाक्य (हिन्दी में)

घड़े में तालाब का पानी है।
नट ढोल के साथ मार्ग में नाचते हैं।
बालक कान्ति से शोभायमान होते हैं।
जिन शील की स्तुति करते हैं।
कुल्हाड़ी से चन्दन को काटता हूँ।
गरुड़ का जोड़ा तालाब में है।
बालक छींकते हैं।
क्षेत्र में क्षार तत्त्व है इसलिए अंकुर जल जाते हैं।
शब्दों का कोश बताता हूँ।
कलह से वैर होता है।
श्रमण मठ में रहते हैं।
तुम खीर पीते हो।
बैल जल का मोट खींचते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा के भण्डार में चाँदी है।

पण्डित पुरुष मोक्ष चाहते हैं।

तृष्णा से कलह होता है और कलह से द्वेष होता है।

संयमी श्रमण न तो सुखों से हर्षित होता है और न दुःखों से घबराता ही है।

नट गीत गाते हैं और नाचते हैं।

सिंह और बाघ तालाब का पानी पीते हैं।

बाघ और सिंह पिंजरे में दौड़ते हैं।

बैल के कन्धे पर जुआ शोभा पाता है।

पण्डित शील को ढूँढ़ते हैं, लेकिन गोत्र नहीं पूछते।

शील का मार्ग दुर्लभ (कठिन) है।

बालक उपाध्याय से पढ़ता है।

वीर पुरुष दुःख से शोक नहीं करते।

प्रयोग (प्राकृत में)

घाणं गन्धस्स गहणं वयंति।

लोहा मोहो जायइ।

दुक्खेसुंतो वेया वि न रक्खंति।

सोत्तं सद्दस्स गहणं वयंति।

दुक्खेहितो बीहंति पंडिता।

कायं फासस्स गहणं वयंति।

सुक्खेसु मित्तं सुमिरति।

समणे महावीरे जयति।

मूढो पुणो पुणो बज्झं देक्खइ।

पण्डिता खीरं पिबित्था।

मूढा कामेसु मुज्झंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चन्दणस्स रसमापिबति ।

अप्पाणो अप्पाणस्स मित्तं किं बहिया मित्तमिच्छसि ।

पुरिसे वीरियं पुण दुल्लहं ।

अप्पाणं जिणामु संजया ।

पुट्ठो पंडिओ जहासुत्तं वदति ।

पण्डिता पुट्ठा न होंति ।

गीअस्स सद्दं सुणह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवाँ पाठ

अकारान्त सर्वादि शब्द (पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग)

सव्व (सर्व)
ज (यद्)
त (तद्)
क (किम्)

अकारान्त सर्वनामों के रूप पुंलिग में 'वीर' जैसे और नपुंसकलिङ्ग में 'कमल' जैसे होते हैं। उनमें जो विशेषताएँ हैं वे निम्नलिखित हैं :—

१. प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में केवल 'सव्वे' (सर्वे), 'जे' (ये), 'ते' (ते), 'के' (के) होता है अर्थात् अकारान्त सर्वनामों के पुंलिङ्ग में प्रथमा के बहुवचन में 'ए' प्रत्यय होता है (हे० प्रा० व्या० ८।३।५८)।

६. षष्ठी के बहुवचन में 'सव्वेसिं' (सर्वेषाम्), 'जेसिं' (येषाम्), 'तेसिं' (तेषाम्), 'केसिं' (केषाम्) भी होता है अर्थात् षष्ठी के बहुवचन में अकारान्त सर्वनामों के पुंलिङ्ग में 'ण' के अतिरिक्त 'एसिं' प्रत्यय भी होता है (हे० प्रा० व्या० ८।३।६२)। जैसे, सव्व + एसिं = सव्वेसिं, सव्व + ण = सव्वाण।

७. सप्तमी के एकवचन में सव्वस्सि, सव्वहिं (सर्वस्मिन्), सव्वत्थ (सर्वत्र); जस्सि, जहिं (यस्मिन्); जत्थ (यत्र); तस्सि, तहिं (तस्मिन्); तत्थ (तत्र); कस्सि, कहिं (कस्मिन्); कत्थ (कुत्र); इस प्रकार तीन-तीन रूप बनते हैं। सप्तमी के एकवचन में अकारान्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वनामों के पुंलिङ्ग में 'स्सि', 'हिं' और 'त्थ' प्रत्ययों (हे० प्रा० व्या० ८।३।५९) के अतिरिक्त पूर्वोक्त 'अंसि' और 'म्मि' प्रत्यय' भी लगते हैं।

[1]सव्व (सर्व, पुंलिङ्ग)

	एकव०	बहुव०
प्र०	सव्वे (सर्वः)	सव्वे (सर्वे)
द्वि०	सव्वं (सर्वम्)	सव्वे, सव्वा (सर्वान्)

---

१. सब्ब शब्द के पालि रूप :—

	एकव०	बहुव०
प्र०	सब्बो	सब्बे
द्वि०	सब्बं	सब्बे
तृ०	सब्बेन	सब्बेभि, सब्बेहि
च०	सब्बस्स	सब्बेसं, सब्बेसानं
पं०	सब्बस्मा, सब्बम्हा	सब्बेभि, सब्बेहि
ष०	सब्बस्स	सब्बेसं, सब्बेसानं
स०	सब्बस्मि, सब्बम्हि	सब्बेसु

मागधी में 'शव्व' होगा।

अपभ्रंश में 'सव्व' तथा 'साह' (हे० प्रा० व्या० ८।४।३६६) शब्द प्रचलित हैं।

	एकव०	बहुव०
प्र०	सव्वु, सव्वो, सव्वं, सव्वा	सव्वे, सव्वं, सव्वा
द्वि०	सव्वु, सव्वं, सव्वा	सव्वं, सव्वा
तृ०	सव्वेण, सव्वेणं, सव्वें	सव्वेहिं, सव्वाहिं, सव्वहिं
च०-ष०	सव्वस्सु, सव्वासु, सव्वसु, सव्वहो, सव्वाहो, सव्व, सव्वा	सव्वहं, सव्वाहं, सव्व, सव्वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ०	सव्वेण, सव्वेणं (सर्वेण)	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ (सर्वैः)
च०	सव्वस्स (सर्वस्मै)	सव्वेसिं, सव्वाअ, सव्वाणं (सर्वेभ्यः,)
पं०	सव्वओ	सव्वाओ, सव्वाउ (सर्वतः)
	सव्वाउ	सव्वाहि, सव्वेहि
	सव्वम्हा (सर्वस्मात्)	सव्वाहितो, सव्वेहितो (सर्वेभ्यः)
ष०	सव्वस्स (सर्वस्य)	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं (सर्वेषाम्)
स०	सव्वंसि, सव्वस्सि, सव्वम्मि (सर्वस्मिन्)	सव्वेसु, सव्वेसुं (सर्वेषु)
	सव्वहिं, सव्वत्थ (सर्वत्र)	

सव्व (नपुंसकलिङ्ग)

प्र०	सव्वं (सर्वम्)	सव्वाणि, सव्वाइं, सव्वाइँ (सर्वाणि)
द्वि०	,, ,,	,, ,, ,,

शेष रूप पुंलिङ्ग 'सव्व' शब्द की भाँति ही चलते हैं।

ज[1] (यद्, पुंल्लिङ्ग)

प्र०	जो, जे (यः)	जे (ये)

स०	सव्वहां, सव्वाहां	सव्वहुं, सव्वाहुं
	सव्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं, सव्वाहिं

सब विभक्ति और वचनों में 'सव्व', 'सव्वा' रूप तो समझना ही; 'साह' शब्द के भी रूप 'सव्व' की तरह समझना चाहिये।

१. पालि भाषा में 'ज' नहीं होता परन्तु 'य' होता है तथा मागधी भाषा में भी 'य' समझना दे० पृ० ३४ मागधी ज-य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि०	जं (यम्)	जे, जा (यान्)
तृ०	जेण, जेणं (येन)	जेहि, जेहिं, जेहिँ (यैः)
च०	जस्स, जास (यस्मै यस्मै)	जेसिं जाण, जाणं (ये येभ्यः)
पं०	जम्हा (यस्मात्)	जाओ, जाउ (यतः)
	जाओ, जाउ (यतः)	जाहि, जेहि, जाहिन्तो, जेहिंतो, जासुंतो, जेसुंतो (येभ्यः)
ष०	षष्ठी के रूप चतुर्थी विभक्ति के समान होंगे।	
स०	जंसि, जस्सि (यस्मिन्)	जेसु, जेसुं (येषु)
	जहिं, जम्मि, जत्थ (यत्र)	जाहे, जाला, जईआ★(यदा)

ज (नपुंसकलिङ्ग)

जं (यत्)	जाणि, जाइं, जाइँ (यानि)
,, (,,)	,, ,, (,,)

शेष सभी रूप पुंल्लिग 'ज' के समान चलते हैं।

[1]त, ण (तद्, पुंल्लिङ्ग)

प्र०	स, सो, से (सः)	ते, णे (ते)
द्वि०	तं, णं (तम्)	ते, ता, णे, णा (तान्)
तृ०	तेण, तेणं, तिणा (तेन)	तेहि, तेहिं, तेहिँ; णेहि, णेहिं, णेहिँ (तैः)

★ हे० प्रा० व्या० ८।३।६५।

१. प्राकृत भाषा में 'त' और 'ण' तथा पालि भाषा में 'त' और 'न' दोनों 'वह' (ते) के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं (हे० प्रा० व्या०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च०	तस्स, तास (तस्मै, तस्मै)	सिं, तास, तेसिं, (तेभ्यः, ते) ताण, ताणं
पं०	तो, ताओ, ताउ (ततः)	ताओ, ताउ (ततः)
	तम्हा (तस्मात्) ताहि, तेहि,	ताहितो, तेहितो (तेभ्यः) तासुंतो, तेसुंतो
	णाओ, णाउ	णाओ, णाउ णाहि, णेहि णाहितो, णेहितो णासुंतो, णेसुंतो
ष०	चतुर्थी विभक्ति के समान होते हैं।	
स०	तंसि, तस्सि, तहि	तेसु, तेसुं (तेषु)
	तम्मि (तस्मिन्)	णेसु, णेसुं
	तत्थ (तत्र)	
	[1]ताहे, ताला, तइआ★ (तदा)	
	णंसि, णस्सि, णहि	
	णम्मि, णत्थ	

त (नपुंसकलिंग)

प्र०	तं (तत्)	ताणि, ताइं, ताइँ (तानि)

८।३।७० तथा पा० प्र० पृ० १४१। इसीलिए 'न' के साथ 'ण' के रूप भी बता दिए हैं। 'त' और 'न' तथा 'ण' लिखने में सर्वथा समान हैं इसलिये यह 'ण' तथा 'न' लिपिदोष के कारण कदाचित् प्रचलित हुए हों। 'त्यां' के स्थान में 'न्यां' का प्रयोग गुजराती गोहिलवाडी में प्रचलित ही है।

१. ये तीनों रूप 'तब' (तदा) अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं।

★ हे० प्रा० व्या० ८।३।६५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	णं	णाणि, णाइं, णाइँ
द्वि०	,, (,,)	,, ,, ,, (,,)

शेष रूप पुंल्लिग 'तत्' शब्द के समान बनते हैं।

क (किम्, पुंल्लिङ्ग)

प्र०	को (कः)	के (के)
द्वि०	कं (कम्)	के, का (कान्)
तृ०	केण, केणं, किणा, किण्णा (केन)	केहि, केहिं, केहिँ, (कैः)
च०	कस्स, कास (कस्मै, कस्य)	कास, केसिं, (केभ्यः, के)
पं०	कम्हा (कस्मात्)	काओ, काउ
	किणो, कीस	काहि, केहि
	काओ, काउ	काहितो, केहितो
		कासुंतो, केसुंतो
ष०	चतुर्थी विभक्ति के समान होते हैं।	
स०	कंसि, कस्सि, कहिं	केसु, केसुं (केषु)
	कम्मि (कस्मिन्)	
	कत्थ (कुत्र)	
	[1]काहे, काला, कइआ* (कदा)	

क (नपुंसकलिङ्ग)

प्र०-द्वि० किं (किम्) काणि, काइं, काइँ (कानि)

('क' के पालिरूप भी इन रूपों के समान हैं, दे० पा०प्र० पृ०१४९)

सर्वनाम शब्द

अण्ण, अन्न (अन्य) = अन्य, दूसरा।

---

१. ये तीनों रूप 'तब' अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं।

* हे० प्रा०व्या० ८।३।६५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्णयर, अन्नयर	(अन्यतर) = दूसरा कोई ।
अंतर	(अंतर) = अन्दर का, आन्तरिक ।
अवर	(अपर) = अपर, अन्य, दूसरा ।
अहर	(अधर) = नीचा ।
इम	(इदम्) = यह ।
इयर	(इतर) = कोई अन्य ।
उत्तर	(उत्तर) = उत्तर दिशा, उत्तर का ।
एण, इक्क, एक्क	(एक) = एक ।
एय, एअ	(एतद्) = यह ।
तुम्ह	(युष्मद्) = तू ।
अम्ह	(अस्मद्) = मैं ।
क	(किम्) = कौन ।
कइम, कतम	(कतम) = कितना ।
कयर	(कतर) = कौन-सा ।
अमु	(अदस्) = यह ।
ज	(यद्) = जो ।

त, ण (तद्) = वह ।
दाहिण, दक्खिण (दक्षिण) = दक्षिण, दक्षिण का ।
[1]पुरिम (पुरा + इम) = पहले का, पूर्व ।
पुव्व (पूर्व) = पूर्व, पूर्व का ।
वीस (विश्व) = विश्व, सर्व (सब) ।
स, सुव (स्व) = स्व, अपना, आत्मा का ।
सम (सम) = सब ।
सव्व (सर्व) = सर्व, सब ।

---

१. दे० पृ० ८३ शब्दों में विविध परिवर्तन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिम (सिम) = सब ।

सामान्य शब्द

भूअ (भूत) = भूत—प्राण—जीव, पृथ्वी आदि ।
सिस्स, सीस (शिष्य) = चेला, छात्र, शागिर्द ।
कसिबल (कृषिबल) = किसान ।
अंक (अङ्क) = अंक, गोद ।
बंधव (बान्धव) = भाई-बन्धु ।
पासाय (प्रासाद) = प्रसाद, महल ।
जीव (जीव) = जीव ।
ताव (ताप) = उष्णता, गर्मी, धूप ।
बंभण, बम्हण, माहण (ब्राह्मण) = ब्राह्मण ।
कोड (क्रोड) = गोद ।
पास (पास) = पाश-फांसी, फंदा ।
दिणयर (दिनकर) = सूर्य, लड़का ।
संसार (संसार) = संसार, जगत् ।

नपुंसकलिङ्ग शब्द

अंगण (अङ्गण) = आंगन ।
सीअ (शीत) = सर्दी ।
खेम (क्षेम) = क्षेम, कुशल ।
महब्भय (महाभय) = बड़ा भय, महद् भय ।
वत्थ (वस्त्र) = वस्त्र ।
कट्ठ (काष्ठ) = काष्ठ, काठ, लकड़ी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मबीअ (कर्मबीज) = कर्मबीज, सदसत्संस्कार का बीज ।
भोयण (भोजन) = भोजन, आहार ।
धण (धन) = धन ।
ताण (त्राण) = रक्षण, शरण, आश्रय ।
घर (गृह) = गृह ।
आउय (आयुष्य) = आयुष्य, जिन्दगी, उमर ।

विशेषण

पडुप्पन्न (प्रत्युत्पन्न) = वर्तमान, ताजा, ठीक समय पर होने वाला ।
पमत्त (प्रमत्त) = प्रमत्त, प्रमादी ।
सम (सम) = समान वृत्तिवाला, सदृश ।
वीयराग, वीयराय (वीतराग) = जिसमें राग नहीं वह व्यक्ति ।
सुजह (सु + हान) = अनायासेन छोड़ने या त्यागने योग्य ।
जुन्न (जीर्ण) = जीर्ण, पुराना, गला हुआ, फटा हुआ ।
पिय (प्रिय) = प्रिय, इष्ट, प्यारा ।
आसत्त (आसक्त) = आसक्त, मोही ।
हअ (हत) = वध किया हुआ, नष्ट हुआ, मारा हुआ ।
आगअ, आगत, आअ (आगत) = आया हुआ ।
पिआउय (प्रियायुष्क) = आयुष्य को प्रिय समझने वाला ।
उत्तम, उत्तिम (उत्तम) = उत्तम, श्रेष्ठ ।
बुद्ध (बुद्ध) = ज्ञानी, बोध पाया हुआ ।
बद्ध (बद्ध) = बंधा हुआ, बद्ध ।
सीअ (शीत) = शीतल, सर्दी, ठंढक ।
अधीर (अधीर) = अधीर, बिना धैर्य का ।
हंतव्व (हन्तव्य) = मारने योग्य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्प (अल्प) = अल्प, थोड़ा ।
अणाइअ (अनादिक) = जिसकी आदि नहीं ।

अव्यय

कत्तो, कुत्तो, कुओ, कओ (कुतः) = क्यों, कहाँ से, किस ओर से ।
जहा, जह, (यथा) = जैसे, यथा, जिस प्रकार ।
एव, एवं (एवम्) = एवं, इस प्रकार ।
सव्वत्तो, सव्वतो, सव्वओ (सर्वतः) = सब प्रकार से, चारों ओर से, सर्वतः ।
तहा, तह (तथा) = तथा, वैसे, उस प्रकार से ।
अन्तो (अन्तर) = अन्दर ।
खलु (खलु) = निश्चय ।

धातुएँ

जाण् (ज्ञा)—जानना, मालूम करना, ज्ञात करना ।
प + मत्थ् (प्र + मत्थ्)—मन्थन करना, नाश करना ।
कील्, कीड् (क्रीड्)—खेलना, क्रीड़ा करना ।
रम् (रम्) = खेलना, रमना, रमाना ।
णम्, नम् (नम्)—नमस्कार करना, झुकना ।
दह्, डह् (दह्)—दग्ध होना, जलना, जलाना ।
सह् (सह्)—सहन करना ।
पास (पश्य)—देखना ।
परि + अट्ट (परि + वर्त)—घूमना, पर्यटन करना ।
आ + इक्ख (आ + चक्ष)—कहना, बोलना ।

वाक्य (हिन्दी में)

सभी को सदा सुख प्रिय है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो शरीर में आसक्त हैं वे मूढ़ हैं।
संसार में राग और द्वेष अनादिकाल से हैं।
मेघ सर्वत्र चारों ओर से बरसते हैं।
हम दोनों जिसका कपड़ा सीते हैं वह राजा है।
जैसे अग्नि लकड़ी को जलाती हैं वैसे ही महापुरुष अपने दोषों को जलाते हैं।
प्रमादी पुरुष भय से काँपता है।
उत्तर-पूर्व में शीत है और दक्षिण में ताप है।
एक भी प्राणी मारने योग्य नहीं।
सभी बालक गाते हैं।
सभी किसान सर्दी और गर्मी सहन करते हैं।
जो किसी प्राणी को मारता नहीं उसे हम ब्राह्मण कहते हैं।
कौन कहाँ से आया है ?
मनुष्य शरीर की कुशलता के लिए तप करते हैं।
पण्डित लोग हर्ष से दुःख सहन करते हैं।
सभी शिष्य आचार्य को मस्तक झुका कर प्रणाम करते हैं।
मैं सभी के लिए चन्दन घिसता हूँ।
जो आकुल-व्याकुल हो जाता है वह शूर नहीं।
बद्ध और आसक्त पुरुष कर्मबीज से संसार में चक्र काटते हैं।
हम दूसरों का कल्याण चाहते हैं।
वह अपने दोषों को देखता है।
हाथी से घायल किसान भय से काँपता है।
तुम्हारे आँगन में सभी बालक खेलते हैं।
जो मूढ़ शिष्य आचार्य के सामने झुकता नहीं वह दुःख सहन करता है।
वीतराग पुरुष सबमें उत्तम ब्राह्मण है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीतराग सभी जीवों को समान दृष्टि से देखता है।

वाक्य (प्राकृत में)

जहा जुन्नाइं कट्ठाइं हव्ववाहो पमत्थति तहा जुन्ने दोसे समणो दहइ।
जस्स मोहो हओ तस्स न होइ दुक्खं।
शव्वेसिं पाणाणं भूआणं दुक्खं महब्भयं ति बेमि।
सव्वे पि पाणा न हंतव्वा एवं जे पडुप्पन्ना जिणा ने सव्वे वि आइक्खंति।
जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ।
पमत्तस्स सव्वतो भयं विज्जइ।
इअ महावीरो भासते
जस्स मोहो न होइ तस्स दुक्खं हयं।
एगेसिं भाणवाणं आउयं अप्पं खलु।
अधीरेहिं पुरिसेहि इमे कामा न सुजहा।
पुरिमाओ, दाहिणाओ उत्तराओ वा कत्तो आगओ त्ति न जाणइ जीवो।
जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ।
समो य जो सव्वेसु भूएसु स वीअरागो।
जेहिं बद्धो जीवो संसारे परियट्टइ ते रागा य दोसा य कम्मबीअं।
जेण मोहो हओ न सो संसारे परियट्टइ।
सव्वे पाणा पियाउअ सुहमिच्छन्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसवाँ पाठ

तुम्ह, अम्ह, इम और एअ के रूप :—

तुम्ह (युष्मद्) = तुम (तीनों लिङ्ग)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	तुं, तुमं[1], तं (त्वम्)	तुम्हे, तुब्भे (यूयम्)
द्वि०	,, ,, ,, तुमे, तुए (त्वाम्), वो (वः)	तुम्हे, तुब्भे (युष्मान्)
तृ०	ते, तइ (त्वया)	तुम्हेहि, तुम्हेहिं, तुम्हेहिँ, तुब्भेहि, तुब्भेहिं, तुब्भेहिँ (युष्माभिः)
च०	तुह, तुज्झ, तुव, तुम, ते, तुव, तुहं (तव, ते तुभ्यम्)	तुमाण, तुमाणं (युष्माकम्) तुम्हाण, तुम्हाणं तुज्झाण, तुज्झाणं तुम्हाहँ, वो (वः)
पं०	तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ (त्वत्) तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ तुज्झत्तो तुज्झाओ तुज्झाउ तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ, तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ	तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहिंतो, तुम्हेहिंतो, तुम्हासुंतो, तुम्हेसुंतो (युष्मत्)
ष०	चतुर्थी के समान होते हैं।	

१. देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।९० से १०४ तक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	तुवम्मि, तुवंसि, तुवस्सि, तुमम्मि, तुमंसि, तुमस्सि, तुमे, तुम्हम्मि, तुम्हंसि, तुम्हस्सि, तुम्मि, तइ, तए (त्वयि)	तुवेसु, तुवेसुं, तुवसु, तुवसुं, तुमेसु, तुमेसुं, तुमसु, तुमसुं, तुहसु, तुहसुं, तुम्हेसु, तुम्हेसुं, तुम्हसु, तुम्हसुं, तुसु, तुसुं (युष्मासु)

('तुम्ह' के पालि रूपों के लिए दे० पा० प्र० पृ० १५१)

अम्ह (अस्मद्) = मैं (तीनों लिङ्ग)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	[1]अहं, अहयं (अहम्) (मागधी-[2]हगे)	मो, अम्ह, अम्हे, अम्हो (वयम्) (मागधी-हगे)
द्वि०	म्मि, अम्मि, अम्ह, मं, (माम्)	,, ,, ,, (अस्मान्), णे (नः)
तृ०	मइ, मए (मया)	अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे (अस्माभिः)
च०	मम, मज्झ, मज्झं, (मह्यम्, मम, मे) ममत्तो, ममाओ, ममाउ	मज्झ, अम्ह, अम्हं अम्हे, अम्हो, अम्हाण, अम्हाणं, णो (नः) (अस्माकम्)
पं०	अम्ह, अम्हं, महं ममाहि, ममा (मत्)	ममत्तो, ममाओ, ममाउ अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ, (अस्मत्)

---

१. देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।६९।७२।७३।७४।७५।७७।७८।८१।

२. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ष०	चतुर्थी के समान होते हैं।	
स०	मे, ममाइ, मि, मए, (मयि)	मइ, अम्हेसु, अम्हेसुं, अम्हसु, अम्हसुं★ (अस्मासु)

('अम्ह' के पालि रूपों के लिए दे० पा० प्र० पृ० १५३)

इम (इदम्) = यह (पुंल्लिङ्ग)

	एकव०	बहु०
प्र०	अयं, इमो, इमे, (अयम्)	इमे (इमे)
द्वि०	इमं, इणं, णं (इयम्)	इमे, इमा, णे, णा (इमान्)
तृ०	इमेण, इमेणं, इमिणा णेण, णेणं (अनेन)	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ एहि, एहिं, एहिँ (एभिः) णेहि, णेहिं, णेहिँ
च०	इमस्स, से, अस्स (अस्मै)	सिं, इमेसिं, इमाण, इमाणं (एभ्यः)
पं०	इमत्तो, इमाओ, इमाउ इमाहि, इमाहितो, इमा (अस्मात्)	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमेहि (एभ्यः) इमाहिंतो, इमेहिंतो, इमासुंतो, इमेसुंतो
ष०	चतुर्थी के समान होंगे।	
स०	इमंसि, इमस्सि, इमम्मि इह, अस्सि (अस्मिन्)	इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं (एषु)

('इम्' के पालि रूपों के लिये दे० पा० प्र० पृ० १४४–१४५)

★ 'अम्ह' के शेष रूप 'सर्व' की भाँति होंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'इम' (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	इमं[1], इणमो, इदं, (इदम्)	इमाणि, इमाइं, इमाइँ (इमानि)
द्वि०	,, ,, ,,	,, ,, ,,

शेष रूप पुल्लिङ्ग की भाँति।

[2]एअ (एतत्) = यह (पुल्लिङ्ग)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एस, एसो, एसे (एषः) इणं, इणमो	एए (एते)
द्वि०	एअं (एतम्)	एए, एआ (एतान्)
तृ०	एएण, एएणं (एतेन) एइणा	एएहि, एएहिं, एएहिँ (एतैः)
च०	से, एअस्स (एतस्मै, एतस्य)	सिं, एएसिं (एतेभ्यः एते) एआण, एआणं
पं०	एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो, एआओ, एआउ एआहि, एआहिंतो (एतस्मात्)	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एएहिं एआहिंतो, एएहिंतो, (एतेभ्यः) एआसुंतो, एएसुंतो
ष०	चतुर्थी के समान् होते हैं।	
स०	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि, एअंसि, एअस्सि, (एतस्मिन्) एअम्मि	एएसु, एएसुं (एतेषु)

---

१. देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।७९।

२. देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।८१।८२।८३।८४।८५।८६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एअ (नपुंसकलिङ्ग)

प्र० एस, एअं, इणं, इणमो (एतत्) एआणि, एआइं, एआइँ★ (एतानि)
द्वि० ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
शेष रूप पुंल्लिङ्ग की भाँति होंगे।

सामान्य शब्द

दुम (द्रुम) = द्रुम, वृक्ष।
भमर (भ्रमर) = भ्रमर, भँवरा।
रस (रस) = रस।
जणय (जनक) = जनक, पिता।
साव (शाप) = शाप, श्राप, दुराशीष।
भारहर (भारहर) = भार वहन करने वाला, मजदूर।
लाभ, लाह (लाभ) = लाभ।
अलाभ, अलाह (अलाभ) = अलाभ, लाभ न होना, हानि, घाटा, नुकसान।
कयविक्कय (क्रय-विक्रय) = क्रयविक्रय, खरीदना और बेचना।
जम्म (जन्मन्) = जन्म, उत्पत्ति।
छत्त (छात्र) = छात्र, विद्यार्थी।
वद्धमाण (वर्धमान) = वर्धमान—महावीर का नाम।
पमाद (प्रमाद) = प्रमाद, आलस्य, असावधानता।
संग (संग) = संग, संगति, सोहबत।
असमण (अश्रमण) = अश्रमण, जो श्रमण न हो।
तअ (तेजस्) = तेज।

★ हे० प्रा० व्या० ८।३।८५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस (त्रस) = त्रास पाने पर गति करने वाला प्राणी।
थावर (स्थावर) = स्थावर, स्थिर रहनेवाला प्राणी, जो गति न कर सके ऐसा प्राणी, पृथ्वी आदि।
एरावण (एरावण) ऐरावत, एक हाथी विशेष का नाम, बड़ा हाथी।
लोग, लोअ (लोक) = लोग–लोक, जगत्।
मुहुत्त (मुहूर्त) = मुहूर्त, समय, थोड़े समय का नाम।
नह (नभस्) = नभ, आकाश, गगन।
महादोस (महादोष) = महादोष, बड़ा दोष।
नास (नाश) = नाश, अन्त।
नास (न्यास) = न्यास, रखना, स्थापन करना।
सूअर (शूकर) = सूअर।
काल (काल) = काल, समय।
खत्तिअ (क्षत्रिय) = क्षत्रिय (जाति विशेष का नाम)।
नमिराय (नमिराज) = मिथिला का एक राजर्षि।
पव्वय (पर्वत) = पर्वत, पहाड़।
तव (तपस्) = तप, तपश्चर्या।
नह (नख) = नख, नाखून, नह।
अय (अयस्) = लोहा।
जायतेय (जाततेजस्) = अग्नि।
पाय (पाद) = पाद–चौथा (चतुर्थ) भाग।
उट्ट (उष्ट्र) = ऊँट।

नपुंसक शब्द

पाव (पाप) = पाप।
पावग (पापक) = पाप।
फंदण (स्पन्दन) = फरकना, थोड़ा-थोड़ा हिलना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुज्झ, जुद्ध (युद्ध) = युद्ध ।
कारण (कारण) = कारण ।
पय (पद) = पद, चरण ।
सत्थ (शस्त्र) = शस्त्र, हथियार ।
महाभय, महब्भय (महाभय) = बड़ा भय ।
रय (रजस्) = रज, पाप, धूल ।
अरविंद (अरविन्द) = अरविन्द, कमल विशेष ।
दाण (दान) = दान ।
छत्त (छत्र) = छत्र, छत्री, छाता ।
बम्हचेर, बंभचेर (ब्रह्मचर्य) = ब्रह्मचर्य, सदाचारवृत्ति, ब्रह्म में परायण रहना ।
सच्च (सत्य) = सत्य ।
अभयप्पयाण (अभयप्रदान) = अभयदान, प्राणियों को निर्भय करना ।
असाय, असात (असात) = असाता होना, सुख न होना, दुःख होना ।
रज्ज (राज्य) = राज्य ।
सरण (शरण) = शरण, आश्रय ।
धीरत्त (धीरत्व) = धीरत्व, धैर्य, धीरता ।
पुप्फ (पुष्प) = पुष्प, फूल ।
अत्थ (अस्त्र) = अस्त्र, फेंककर मारने का हथियार ।
सत्थ (शास्त्र) = शास्त्र ।
चेइअ (चैत्य) = चिता ऊपर बनाया हुआ स्मारक चिह्न—छत्री, चरणपादुका, वृक्ष, कुंड, मूर्ति आदि ।
साय, सात (सात) = साता, सुख होना ।
गुरुकुल (गुरुकुल) = सदाचारी गुरुओं का निवासस्थान ।
सुत्त (सूत्र) = सूत्र, छोटा वाक्य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अव्यय

अलं[1] (अलम्) = बस, पर्याप्त ।
तओ, तत्तो (ततः) = उससे, उसके पश्चात् ।
अवंरिं, उवंरिं (उपरि) = ऊपर ।
मुसं, मुसा, मूसा, मोसा (मृषा) = मिथ्या, झूठ, असत्य ।
हु, खु, खो (खलु) = निश्चय ।
एगया (एकदा) = एकदा, एक समय, एक बार ।
धुवं (ध्रुवम्) = निश्चय ।
अज्झप्पं, अज्झत्थं (अध्यात्म) = आत्मा सम्बन्धि, आंतरिक ।
सततं, सययं (सततम्) = सतत, निरन्तर ।
इइ[2], इअ, त्ति, ति, इति (इति) = इति–इस प्रकार, समाप्ति सूचक अव्यय ।

विशेषण

अवज्ज (अवद्य) = अवद्य, न कहने योग्य काम–पाप, दोष ।
अणवज्ज, अनवज्ज (अनवद्य) = पापरहित निर्दोष ।
दुरणुचर (दुरनुचर) = जिसका आचरण कठिन लगे ।
सुत्त (सुप्त) = सुप्त, सोया हुआ ।
सुत्त (सूक्त) = सुभाषित ।
वद्धमाण (वर्धमान) = बढ़ता हुआ ।
गढिय (गृद्ध) = अतिशय लालची ।

---

१. 'अलं' के योग में तृतीया विभक्ति होती है—'अलं जुद्धेण', 'अलं तवेणं' ।

२. 'इति' अव्यय के उपयोग के लिये देखिए पृ० ९६ नि० १३, १४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहम (अधम) = अधम, नीच, हलका ।
जिइंदिय (जितेन्द्रिय) = इन्द्रियों को जीतनेवाला ।
निरट्ठय (निरर्थक) = निरर्थक, व्यर्थ ।
धीर (धीर) = धीर, धैर्यधारी ।
अणारिय (अनार्य) = अनार्य, आर्य से विपरीत ।
पिय (प्रिय) = प्रिय, इष्ट, प्यारा ।
दुप्पूरिय (दुष्पूर्य) = दुष्पूर्य—जो कठिनता से पूरा हो सके ।
सयल (सकल) = सकल, सब, सम्पूर्ण ।
कुसल (कुशल) = कुशल, चतुर ।
दुरतिक्कम (दुरतिक्रम) = जिसका अतिक्रमण करना कठिन हो ।
मड, मय (मृत) = मृत, मरा हुआ ।
सेट्ठ (श्रेष्ठ) = श्रेष्ठ, उत्तम ।
दंत (दान्त) = तृष्णा का दमन करने वाला, शान्त ।
कड, कय (कृत) = कृत, किया हुआ ।
विविह (विविध) = विविध, भिन्न-भिन्न प्रकार का ।

धातुएँ

भास् (भाष्) = भाषण करना, बोलना ।
प + मय (प्र + माद्य) = प्रमाद करना, आलस्य करना ।
जुर् (जुर्) = जूरना, वियोग से दुःखित होना ।
तिप्प् = (तिप्) = देना, झरना, रोना ।
पिट्ट (पिट्ट) = पीटना, मारना, पीड़ा देना ।
परि + तप्प (परि + तप्य) = परिताप पाना, दुःखी होना ।
सम् + आ + यर् (सम् + आ + चर) = आचरण करना ।
कप्प् (कल्प) = आवश्यकता होना, उचित होना ।
वज्ज् (वर्ज) = वर्जन करना, रोकना, छोड़ना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चय् (त्यज्) = त्यागना, छोड़ना, तज देना ।
चर् (चर) = चर्वण करना, चबाना, चलना ।
सं + जल् (सं + ज्वल) = जलना, तपना, क्रोध करना ।
अणु + तप्प् (अनु + तप्य्) = अनुताप करना, पश्चात्ताप करना ।
प + यय् (प्र + यत्) = प्रयत्न करना ।
अभि + नि + क्खम् (अभि + निष् + क्रम्) = सदा के लिए घर से निकल जाना, संन्यास लेना ।
परि + हर (परि + हर्) = छोड़ना ।
तच्छ् (तक्ष्) = छीलना, पतला करना ।
अभि + प्प + त्थ
अभिपत्थ } (अभि + प्र + अर्थ) = प्रार्थना करना ।
अभि + जाण् (अभि + ज्ञा) = पहचानना ।
खण् (खन्) = खोदना, कुरेदना ।
परि + च्चय् (परि + त्यज) = परित्याग करना ।

वाक्य

आचार्य कुशलता के लिए सतत प्रयास करते हैं ।
संसार में पाप का बोझ बढ़ता है ।
जैसे-जैसे वासना बढ़ती है वैसे-वैसे लोभ बढ़ता है ।
युद्ध के समय धैर्य दुर्लभ होता है ।
हम निरर्थक नहीं बोलते ।
भँवरे फूलों पर दौड़ते हैं ।
वृक्ष पानी पीते हैं और ताप सहन करते हैं ।
नमिराज युद्ध को छोड़ता है ।
क्षत्रिय शस्त्र और अस्त्रों से निर्दोष मनुष्यों के मस्तक काटते हैं ।
छात्र सदैव गुरुकुल में रहते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हम, तुम और वे सभी संसार के पाश को काटते हैं ।
श्रमण जल से वस्त्र शुद्ध करते हैं—धोते हैं ।
कुशल पुरुष निर्दोष वचन को उत्तम कहते हैं ।
तपों में ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ है ।
क्षत्रियों का लक्षण धैर्य और वीर्य है ।
जितेन्द्रिय पुरुष बुद्ध और महावीर की सेवा करते हैं ।
सभी प्राणी लोभ से पाप के मार्ग पर चलते हैं ।
धीर क्षत्रिय मनुष्य का कुशल-क्षेम चाहते हैं ।
तुम धैर्य से लोभ को जीतते हो ।
वृक्ष बढ़ते और कुम्हलाते हैं इसलिए उनमें जीव है ।
आचार्य जागते हैं और ध्यान करते हैं ।
ब्राह्मण और श्रमण शास्त्रों से लड़ते हैं ।
चैत्य में महावीर और बुद्ध की चरण-पादुकाएँ हैं ।
तप से वृद्धि पाये हुए वर्धमान मनुष्यों के कल्याणार्थ संन्यास लेते हैं ।
दाँत से लोहे को चबाते हो ।
उसके आँगन में सूर्य का तेज दीप्त होता है ।
वह तुम को बार-बार याद करता है ।
हम महल के ऊपर हैं ।
हम में वह एक जितेन्द्रिय पण्डित है ।
तुम इसको बारम्बार वंदना करते हो ।
वे, तुम और हम दूध पीते हैं ।
पापी ब्राह्मण सब से हलका है ।
संसार में कोई किसी का नहीं ।
तुम अन्तर को जानते हो इसलिए प्रमाद नहीं करते ।
मेरा भाई शीत से काँपता है ।
यह ब्राह्मण इन लोगों को शाप देता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह समुद्र क्षुब्ध होता है ।
वह और मैं लकड़ियाँ छीलता हूँ ।
अधिकतर लोग निरर्थक कोप करते हैं ।
तुम उसको, मुझको और इसको जीतते हो ।
सच्चे ब्राह्मण के बिना दूसरा कौन उत्तम है ?
जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं बन सकता ।
संसार में सभी सभी के शरणरूप हैं ।
संसार में सर्वत्र त्रस और स्थावर जीव हैं ।
श्रमण पापमय कर्मों का त्याग करता है।
श्रमणों में वर्धमान श्रेष्ठ है ।
दानों में अभयदान श्रेष्ठ है ।
पाँव से अग्नि को कुचलते हो ।
नखों से तुम पर्वत को खोदते हो ।
पुष्पों में अरविन्द श्रेष्ठ है ।
थोड़ा असत्य भी महाभयंकर है ।
मजदूर चाँदी के लिए पर्वत को खोदते हैं ।
पिता की गोद में पुत्र लोटता है ।

वाक्य (प्राकृत)

एगो हं नत्थि मे को वि नाहमन्नस्स कस्स वि धीरो वा पण्डितो मुहुत्तमपि नो पमायए ।
इमे तसा पाणा, इमे थावरा पाणा न हंतव्वा इति सव्वे आयरिया भासंति ।
अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे विविहेहिं दुक्खेहिं जूरइ ।
तओ से एगया पासेहिं दिव्वइ ।
कोहेण, मोहेण, लोहेण वा चित्तं खुब्भइ तत्तो अलं तव एएहिं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अयं पुरिसे गढिए सोयइ, जूरइ, तिप्पइ, पिट्टइ, परितप्पइ।
जे अज्झत्थ जाणति ते बहिया वि जाणति।
अलं बालस्स संगेणं।
वीराणं भग्गो दुरणुचरो।
एस लोगे संसारंसि गिज्झइ।
तं वयं बूम माहणं जो एगमवि पाणं न हणेज्जा पुरिसा।
तुममेव तुमं मित्तं किं बहिया मित्तमिच्छसि ?
जहा अंतो तहा बाहिं एवं पासंति पण्डिता।
कामा खलु दुरतिक्कमा।
असमणा सया सुत्ता, समणा सया जागरंति।
कडेहि तो कम्मेहितो केसिमवि न मोक्खो अत्थि।
मूढस्स पुरिसस्स संगेण अलं।
बुद्धो कामे जहाइ।
पावगेण कम्मेण पुणो पुणो कलहो जायति।
अलं पमादेण कुसलस्स।
पण्डिओ न हरिसेइ, न कुप्पइ।
पाणाण असातं महब्भयं दुक्खं।
नत्थि जीवस्स नासो त्ति।
मूढाणं अप्पाणे दुप्पूरिए अत्थि
समणाणं कयविक्कयो महादोसो न कप्पइ।
तुमे सच्चं समणं तहा सच्चं माहणं न गरिहह।
'पुत्ता मे', 'धणं मे', 'मोयणं मे' त्ति गढिए पुरिसे मुज्झइ।
ते पुत्ता तव ताणाए नालं तुमं पि तेसिं सरणाए नालं होसि।
लाभो त्ति न मज्जेज्जा, अलाभो त्ति न सोएज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सततं मूढे धम्मं [1]नाभि-जाणति ।
जिणा अलोभेण लोभं जयंति ।
संसारे एगेसिं भाणवाणं अप्पं च खलु आउ[2]
जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं ।
खत्तिया धम्मेणं जुज्झं जुज्झंति ।
जहा लाहो, तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढ
समणा सव्वेसिं पाणाणं सुहमिच्छंति[2] ।

●

१. देखिए, सन्धि पृ० ६४, नियम ६, न + अभिजाणति = नाभिजाणति ।
२. देखिए, सन्धि पृ० ६७, नियम १८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्यारहवाँ पाठ

भूतकालिक प्रत्यय*

स्वरांत धातुओं में लगनेवाले प्रत्यय :—

	एकवचन – बहुवचन			
प्र० पु०	सी[1], ही,	हीअ	(सीत्[1])	
म० पु०	,,	,,	,,	,,
तृ० पु०	,,	,,	,,	,,

* प्राकृत भाषा में भूतकाल के कोई भेद नहीं है। ह्यस्तनी, अद्यतनी और परोक्ष—ये तीनों सामान्य भूतकाल में समाविष्ट हो जाते हैं और इन तीनों के प्रत्यय भी समान ही हैं तथा भूतकाल के तीनों पुरुष तथा सब वचनों के प्रत्यय भी समान हैं। पालि भाषा में तो संस्कृत के समान 'हियतनी', 'अज्जतनी' और 'परोक्ख'—ये तीन भेद भूतकाल के हैं तथा इन तीनों के आत्मनेपद तथा परस्मैपद के तीनों पुरुषों तथा सब वचनों के प्रत्यय भिन्न-भिन्न हैं।

हियतनी (ह्यस्तनी) परस्मैपद के प्रत्यय :—

	एकव०	बहुव०
१. पु०	अ, अं	म्हा
२. पु०	ओ, अ	त्थ
३. पु०	आ, अ	ऊ, उ, उं

आत्मने पद के प्रत्यय :—

१. पु०	इं	म्हसे
२. पु०	से	व्हं
३. पु	त्थ	त्थुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'पा' धातु के रूप

सर्व पुरुष सर्व वचन	}	पासी (पा + सी), पाअसी (पा + अ + सी) पाही (पा + ही), पाअही (पा + अ + ही) पाहीअ (पा + हीअ), पाअहीअ (पा + अ + हीअ)

अज्जतनी (अद्यतनी) परस्मैपद के प्रत्यय :—

१. पु०	इं (इसं, इस्सं)	म्हा, म्ह
२. पु०	ओ, इ	त्थ
३. पु०	ई, इ	उं, इंसु, इसुं, अंसु

आत्मने पद के प्रत्यय :—

	एकव०	बहुव०
१. पु०	अ	म्हे
२. पु०	से	व्हं
३. पु०	आ	ऊ

परोक्ख (परोक्ष) परस्मैपद :—

	एकव०	बहुव०
१. पु०	अ	म्ह
२. पु०	ए	त्थ
३. पु०	अ	उ

आत्मनेपद :—

१. पु०	इ	म्हे
२. पु०	त्थो	व्हो
३. पु०	त्थ	रे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हो' धातु के रूप

होसी (हो + सी) होअसी (हो + अ + सी)
होही (हो + ही) होअही (हो + अ + ही)
होहीअ (हो + हीअ) होअहीअ (हो + अ + हीअ)

हियतनी—रूपनिदर्शन :—

'भू' धातु

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
१. पु०	अभव, अभवं	अभम्हा	अभविं	अभवम्हसे
२. पु०	अभवो	अभवत्थ	अभवसे	अभवव्हं
३. पु०	अभवा	अभवू	अभवत्थ	अभवत्थुं

अज्जतनी—रूपनिदर्शन :—

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
१. पु०	अभविं	अभविम्हा, अभविम्ह	अभव, अभवं	अभविम्हे
२. पु०	अभवो, अभवि	अभवित्थ	अभविसे	अभविव्हे
३. पु०	अभवी, अभवि	अभवुं, अभविंसु	अभवा, अभवित्थ	अभवू

परोक्ख—रूपनिदर्शन :—

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
१. पु०	बभूव	बभूविम्ह	बभूवि	बभूविम्हे
२. पु०	बभूवे	बभूवित्थ	बभूवित्थो	बभूविव्हो
३. पु०	बभूव	बभूवु	बभूवित्थ	बभूविरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यञ्जनांत धातुओं में लगनेवाले प्रत्यय :—

	एकवचन – बहुवचन
प्र० पु०	ईअ[२] (ईत्[२])
म० पु०	,,
तृ० पु०	,,

पालि में धातु के आदि में हियतनी, अज्जतनी में भूतकाल सूचक 'अ' का आगम होता है परन्तु प्राकृत में वैसा नहीं होता तथा पालि में परोक्ष भूतकाल में धातु का द्विर्भाव हो जाता है। प्राकृत में वैसा नहीं होता है। पालिरूपों का भूतकाल-संबंधी विशेषताओं के लिए देखिए, पा०प्र० पृ० २०२ तथा २१२ से ११९ तक। यहाँ बताए हुए पालि प्रत्यय तथा प्राकृत प्रत्यय—इन दोनों में विशेष तो नहीं परन्तु साधारण समानता जरूर देखी जाती है।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६२। सूत्र में प्रयुक्त भूतकाल का 'सी' और संस्कृत में प्रयुक्त भूतकाल 'सीत्' प्रत्यय दोनों एक जैसे हैं। 'अधासीत्', 'अघ्रासीत्' आदि संस्कृत रूपों में प्रयुक्त 'सीत्' (तृतीय पु० एकवचन) भूतकाल को बताता है लेकिन प्राकृत में वह व्यापक होकर सर्वपुरुष और सर्ववचन बताता है। 'ही' और 'हीअ' ये दोनों प्रत्यय भी 'सी' के साथ ही समानता रखते हैं।

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६३। के अनुसार 'ईअ' और संस्कृत का भूतकाल सूचक 'इत्' दोनों हैं। 'अभाणीत्', 'अवादीत्' आदि संस्कृत क्रियापदों में प्रयुक्त 'ईत्' (तृ० पु० एकवचन) भूतकाल को बताता है परन्तु प्राकृत में वह सर्वपुरुष और सर्ववचनों में व्यापक हो जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंद + वंदीअ (वंद् + ईअ)
हस् + हसीअ (हस् + ईअ)
कर् + करीअ (कर् + ईअ)

विशेषतः आर्ष प्राकृत में उपलब्ध प्रत्यय :—

प्रायः तृतीय पुरुष एकवचन	त्था इत्था इत्थ	(इष्ट[1])
प्रायः तृतीय पुरुष बहुवचन	इत्थ इंसु अंसु	(इष्ट) (इषुः[2])

धातु-रूप

हो होत्था (हो + त्था)
री रीइत्था (री + इत्था)
प + हार् = पहारित्था, पहारेत्था (पहार + इत्था)
भुंज्—भुंजित्था (भुंज् + इत्था)
वि + हर् = विहरित्था (विहर् + इत्था)

---

१. यह 'इत्थ' और संस्कृत का 'इष्ट' प्रत्यय दोनों समान हैं। इष्ट—इठुं—इत्थ, त्था, अभविष्ट, अजनिष्ट आदि संस्कृत रूपों में प्रयुक्त 'इष्ट' (तृतीय पु० एकवचन) भूतकाल का सूचक है। प्राकृत में भी प्रायः यह तृतीय पुरुष एकवचन को सूचित करता है।

२. 'इंसु' और 'अंसु' तथा संस्कृत का भूतकाल दर्शक 'इषुः' ये सभी समान हैं। 'अवादिषुः', 'अभ्राजिषुः' आदि संस्कृत क्रियापदों में प्रयुक्त 'इषुः' (तृ० पु० बहुव०) भूतकाल का सूचक है और प्राकृत में भी प्रायः वह उसी काल, पुरुष और वचन को सूचित करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेव्—सेवित्था (सेव् + इत्था)
गच्छ् + गच्छिसु (गच्छ् + इंसु)
पृच्छ्—पुच्छिसु (पुच्छ् + इंसु)
कर्—करिंसु (कर् + इंसु)
नच्च्—नच्चिसु (नच्च् + इंसु)
आह्—आहंसु (आह् + अंसु)

कुछ अनियमित रूपः—

अस्[1]—होना

अत्थि, अहेसि, आसि (सर्वपुरुष-सर्ववचन)

आसिमो, आसिमु (आस्म) रूप कहीं-कहीं आर्ष प्राकृत में प्रथम पुरुष के बहुवचन में उपलब्ध होते हैं। 'वद्' धातु का 'वदीअ' रूप होना चाहिए तथापि आर्ष प्राकृत में इसके बदले 'वदासी' और 'वयासी' रूप उपलब्ध होते हैं। अर्थात् उक्त 'सी' प्रत्यय स्वरान्त धातु में लगाया जाता है, लेकिन आर्ष प्राकृत में कहीं-कहीं व्यञ्जनान्त धातु में भी लगा हुआ मिलता है। वद + सी = वदासी। आर्ष प्राकृत होने से 'वद' को 'वदा' हुआ है।

कर्—करना

भूतकाल में 'कर' के बदले 'का' भी होता है :—

कर + ईअ = करीअ

---

1. पालि भाषा में अस् धातु के भूतकाल में रूप :—

	एकव०	बहुव०
१.	आसिं	आसिम्ह
२.	आसि	आसित्थ
३.	आसि	आसुं, आसिंसु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'कर' का
'का' होने पर } का + सी = कासी
का + ही = काही
का + हीअ = काहीअ

आर्ष प्राकृत में उपलब्ध अन्य अनियमित रूप :—

कर्—अकरिस्सं (अकार्षम्)	१. पु० एकवच०
कर् = क–अकासी (अकार्षीत्)	३. पु० ,,
ब्रू—अब्बवी (अब्रवीत्)	,, ,, ,,
वच—अवोच (अवोचत्)	,, ,, ,,
अस्—आसी, आसि (आसीत्)	,, ,, ,,
आसिमु (आस्म)	१. पु० बहुव०
ब्रू—आह (आह)	३. पु० एकव०
ब्रू—आहु (आहु)	३. पु० बहुवचन
दृश—अदक्खू (अद्राक्षुः)	,, ,, ,,
भू } अभू हू } अहू (अभूत अथवा अभुवन्)	एकव० तथा बहुव०

उक्त आर्षरूप संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं की भिन्नता को स्पष्ट रूप से निषेध करते हैं। ये सभी रूप केवल उच्चारणभेद के नमूने हैं तथा इन आर्ष रूपों के साथ पालि रूप बहुत मिलते-जुलते हैं।

पुंलिङ्ग

आरिय (आर्य) = आर्य, सज्जन।

णायसुय, णातसुत (ज्ञातसुत) = ज्ञातवंश का पुत्र–महावीर।

छगलय (छाग) = बकरा।

नायपुत्त, नातपुत्त, णातपुत्त (ज्ञातपुत्र) = ज्ञातवंश का पुत्र-महावीर।

देस (देश) = देश।

मिलिच्छ (म्लेच्छ) = म्लेच्छ (जातिविशेष)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊसव (उत्सव) = उत्सव ।

मअ (मृग) = मृग ।, हिरण, पशु ।

मयंक (मृगाङ्क) = मृगाङ्क, चन्द्र ।

पज्जुण्ण, पज्जुन्न (प्रद्युम्न) = प्रद्युम्न नामक कृष्ण का पुत्र ।

वच्छ (वत्स) = वत्स, पुत्र, बच्चा ।

उच्छाह (उत्साह) = उत्साह ।

रिच्छ (ऋक्ष) = रीछ, भालू ।

गोतम, गोयम (गौतम) = गौतम गोत्र का मुनि ।

पवंच (प्रपञ्च) = प्रपञ्च ।

संख (शंख) = शंख ।

कंटग (कण्टक) = काँटा ।

पंथ (पन्थ) = पथ, मार्ग, रास्ता ।

कलंब (कदम्ब) = कदम्ब का वृक्ष ।

सप्प (सर्प) = सर्प, साँप ।

मंजार (मार्जार) = बिल्ली ।

दुक्काल (दुष्काल) = दुष्काल ।

वम्मह (मन्मथ) = मन को मथनेवाला—कामदेव ।

पण्ह (प्रश्न) = प्रश्न ।

कण्ह (कृष्ण) = कृष्ण भगवान् ।

पण्हुअ (प्रस्नुत) = वात्सल्य से माँ की छाती में दूध भर आना ।

पुव्वण्ह (पूर्वाह्ण) = दिवस का पूर्व भाग ।

हेमन्त (हेमन्त) = हेमन्त ऋतु, अगहन और पूस का महीना ।

मूसअ, मूसय (मूषक) = मूषक, चूहा, मूस (भोजपुरी में) ।

पल्हाअ, पल्हाद (प्रह्लाद) = प्रह्लाद नामक भक्त, राजपुत्र ।

मोहणदास (मोहनदास) = मोहनदास, गांधीजी का नाम ।

रट्ठधम्म (राष्ट्रधर्म) = राष्ट्रधर्म, देश का हित करनेवाली प्रवृत्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाम (ग्राम) = गाँव ।

देविंद (देवेन्द्र) = देवों का इन्द्र—स्वामी ।

मोर, मयूर (मयूर) = मयूर, मोर ।

हरिएसबल (हरिकेशबल) = चण्डाल कुल में पैदा होनेवाला एक जैन मुनि ।

विछिअ (वृश्चिक) = बिच्छू, बिच्छी ।

नपुंसकलिङ्ग शब्द

गमण (गमन) = गमन करना, जाना ।

पाणीअ, पाणीय (पानीय) = पानी, जल, पीने की वस्तु ।

दुद्ध (दुग्ध) = दूध ।

रायगिह (राजगृह) = राजगृह, मगध देश की राजधानी ।

कुसग्गपुर (कुशाग्रपुर) = राजगृह का दूसरा नाम ।

विण्णाण, विन्नाण (विज्ञान) = विज्ञान ।

भारहवास (भारतवर्ष) = भारतवर्ष, हिन्दुस्तान ।

महाविज्जालय (महाविद्यालय) = महाविद्यालय, कॉलेज ।

पाडलि-पुत्त (पाटलिपुत्र) = पाटलिपुत्र, पटना (शहर) ।

चंडालिय (चाण्डालिक) = चण्डाल का स्वभाव, क्रोध ।

नाण (ज्ञान) = ज्ञान ।

पवहण (प्रवहन) = प्रवहन, बहना ।

अच्छेर (आश्चर्य) = आश्चर्य ।

विशेषण

महिड्ढिय, महड्ढिय (महर्धिक) = ऋद्धिवान् , धनाढ्य ।

वाघायकर (व्याघातकर) = व्याघात करनेवाला, विघ्न करनेवाला ।

महग्घ (महार्घ) = बहुमूल्य, महँगा, किमती, अधिक कीमतवाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सग्घ (स्वर्घ) = सस्ती ।

केरिस (कीदृश) = कैसा ।

नवोण, णवोण, (नवीन) = नवीन, नया ।

अज्जतण, अज्जयण (अद्यतन) = आज का, ताजा ।

सरस (सरस) = सरस, अच्छा, रसवाला ।

पच्छ (पथ्य) = पथ्य—मार्गमें हित करनेवाला, पाथेय ।

जुगुच्छ (जुगुप्स) = जुगुप्सा करनेवाला, घृणा करनेवाला ।

सण्ह, सुहुम, सुखुम (सूक्ष्म) = सूक्ष्म, बारीक, छोटा-सा ।

सहल (सफल) = सफल ।

विहल (विफल) = निष्फल ।

विलिअ (व्यलीक) = झूठ, असत्य ।

पुराण, पुराअण (पुराण) = पुराना, पुरातन ।

निण्ण, नेण्ण (निम्न) = निम्न, नीच ।

वीलिअ (व्रीडित) = लज्जित, शर्मिन्दा ।

अव्यय

तेण (तेन) = उस तरफ, उससे ।

जेण (येन) = जिस तरफ, जिससे ।

अवस्सं (अवश्यं) = अवश्य ।

एव, एवं (एवम्) = एवं, इस प्रकार ।

सुट्ठु (सुष्ठु) = शोभन, अच्छा, सुन्दर, अतिशय ।

दुट्ठु (दुष्ठु) = खराब, असुन्दर ।

खिप्पं (क्षिप्रम्) = शीघ्र ।

पच्छा (पश्चात्) = अनन्तर, बाद, पीछे ।

इहेव (इहैव) = यहीं, यहीं पर ।

असइं (असकृत्) = अनेकबार, बारंबार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गामाणुग्गामं, गामाणुगामं (ग्रामानुग्रामम्)=प्रत्येक गाँव में, गाँव-गाँव में, एक गाँव से दूसरे गाँव में।
नमो, णमो (नमः)=नमस्कार।
पगे (प्रगे)=प्रातःकाल में, सुबह।
मा (मा)=मा, मत, नहीं।

धातु

अच्च (अर्च्)=अर्चना, पूजना।
उव+दिस् (उप+दिश्)=उपदेश करना।
नच्च् (नृत्य)=नृत्य करना, नाचना।
प+हार् (प्र+धार्)=धारना, संकल्प करना।
ने, णे (नी)=ले जाना।
आ+णे (आ+नी)=ले आना।
सेव् (सेव्)=सेवन करना, सेवा करना।
हस् (हस्)=हँसना।
पढ् (पठ्)=पढ़ना।
पुच्छ् (पृच्छ)=पूछना।
भण् (भण्)=पढ़ना, कहना।
रीय् (री)=निकलना, जाना।
वि+हर् (वि+हर्)=विहरना, घूमना, पर्यटन करना, विहार करना।
अणु+भव् (अनु+भव)=अनुभव करना।

वाक्य (हिन्दी)

मैं गाँव में गया और अपने साथ बकरों को ले गया।
आर्यपुरुषों ने महावीर को अनेकबार वंदन किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेघ बरसा और मयूर नाचे ।
ब्राह्मणों ने पूछा, 'महावीर का शील कैसा है ?'
उन्होंने पानी पिया और हमने दूध ।
कौन नहीं जानता कि पानी नीचे जाता है ?
मै ज्ञान से क्रोध को अवश्य मारता हूँ ।
उसने दुष्ट रीति से संकल्प किया ।
हम दोनों ने अच्छी तरह से सेवा की ।
आज का दूध अच्छा था ।
प्रातः और उसके पश्चात् भी बालक आँगन में खेले ।
श्रमण बहुमूल्य वस्त्रों को नहीं छूते ।
लोगों ने ज्ञानार्थ पण्डितों की पूजा की ।
हमने सत्य बोला ।
राजा और इन्द्र विनयपूर्वक बोले ।
मैं और तू महाविद्यालय में गये और राष्ट्रधर्म पढ़ा ।
उसने बहुत अच्छा-अच्छा काम किया और जीवन को सफल किया ।
महावीर हेमन्त ऋतु में निकले ।
जब उसने पूछा तब तुमने झूठ बोला ।
हमने सत्य का जाप किया ।
अनार्यों ने कहा 'सभी प्राणी मारने योग्य हैं' लेकिन आर्यों ने कहा 'कोई भी प्राणी मारने योग्य नहीं ।'
मोहनदास महापुरुष ने प्रत्येक गाँव में घूमकर राष्ट्र-धर्म का उपदेश दिया ।
प्रद्युम्न का शिष्य पाटलिपुत्र गया ।
देश में मनुष्यों ने दुष्काल में दुःख भोगा ।
शरमिन्दे शिष्य हँसते नहीं ।
तुमने शिष्यों से शीघ्र पूछा, झूठ क्यों बोले ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुराना सब सच्चा है ऐसा भी नहीं और नया सब झूठा है ऐसा भी नहीं ।

आर्यों को नमस्कार ।

पूर्वाह्न के समय सूर्य का पूजन किया ।

हिन्दुस्तानी सस्ता अन्न खाते हैं ।

वाक्य (प्राकृत)

बाला धाविसु ।

मा य चंडालियं कासी[1] ।

तवस्स वाघायकरं वयणं वयासी ।

इमं पण्हं उदाहरित्था ।

गोयमो समणं महावीरं एवं वयासी ।

सोलं कहं नायसुतस्स आसी ?

नमिरायो देविंदमिणमब्बवी ।

अंगणम्मि बाला मोरा य नच्चिसु ।

ते पुत्ता जणयं इणं वयणं कहिंसु ।

वद्धमाणो जिणो अभू ।

सो दुद्धं पासी ।

तुमं छगलयं गामं नेही ।

माणवा हसीअ ।

जिणा एवं कहिंसु ।

आसी अम्हे महिड्ढिया ।

तेणं कालेणं तेणं समयेणं पाडलिपुत्ते नयरे होत्था ।

---

१. संस्कृत का 'मा कार्षीत्' (अद्यतनभूत तृ० एकव०) रूप और यह 'मा कासी' रूप बिल्कुल एक जैसे हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेणेव समणे महावीरे तेणेव गोयमो गच्छीअ पुच्छिसु णं समणा माहणा य, सो पुरिसो पाडलिपुत्तं नयरं गमणाए पहारेत्थ ।

रायगिहे नयरे होत्था ।

अट्ठ जिणा, अत्थि जिणा सव्वेवि जिणा धमम्मि सच्चमुत्तमं आहंसु ।

ते पाणीयं पाहीअ ।

बालो हसीअ । मिच्छा ते एवमाहंसु ।

तुम्हे तत्थ ठाहीअ ।

आसिमु बंधवा दोवि ।

सो इमं वयणमब्बवो ।

अत्थि इहेव भारहवासे कुसग्गपुरं नाम नयरं ।

सोसे विणयेणं आयरिये सेवित्था ।

तंसि हेमंते नायपुत्ते महावीरे रीइत्था ।

जे आरिया ते एवं वयासी ।

समणे महावीरे गामाणुगामं विहरित्था ।

हरिएसबलो नाम जिइन्दियो समणो आसि[१] ।

किं अम्हे असच्चं भासीअ ?

तंसि देसंसि दुक्कालो होसी ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६४ । देखिए पृ० २२४ = अस्—होना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारहवाँ पाठ

इकारान्त और उकारान्त पुंलिंग शब्द के रूप :—

रिसि*

एकवचन	बहुवचन
प्र० रिसि = रिसी[1] (ऋषिः)	रिसि + अउ[2] = रिसउ
	रिसि + अओ[2] = रिसओ
	रिस + अयो = रिसयो (ऋषयः)

---

* रिसि शब्द के पालिरूप :—

	एकव०	बहुव०
प्र०	रिसि	रिसी, रिसयो
द्वि०	रिसिं	रिसी, रिसयो
तृ०	रिसिना	रिसीहि, रिसिहि, रिसीभि, रिसिभि
च०	रिसिनो, रिसिस्स	रिसीनं
पं०	रिसिना, रिसिस्मा, रिसिम्हा	रिसोहि, रिसिहि, रिसीभि, रिसिहि
ष०	रिसिनो, रिसिस्स	रिसीनं
स०	रिसिस्मि, रिसिम्हि	रिसीसु, रिसिसु
सं०	रिसे !, रिसि !	रिसी, रिसयो

पालिभाषा में प्रथमा तथा द्वितीया के बहुवचन में प्राकृत के 'णो' प्रत्यय की तरह 'नो' प्रत्यय भी लगता है—सारमतिनो, सम्मादिट्ठिनो, मिच्छादिट्ठिनो, वजिरबुद्धिनो, अधिपतिनो, जानिपतिनो, सेनापतिनो, गहपतिनो (देखिए, पा० प्र० पृ० ८४ से ६१)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	एकव०	बहुव०
		रिसि + णो[3] = रिसिणो रिसि = रिसी
द्वि०	रिसि + म्[४] = रिंसि (ऋषिम्)	रिसि = रिसी (ऋषीन्) रिसि + णो = रिसिणो
तृ०	रिसि + णा = रिसिणा[५] (ऋषिणा)	रिसि + हि = रिसीहि,[६] रिसीहिं, रिसीहिँ (ऋषिभिः)
च०	रिसि + अये = रिसये (ऋषये) रिसि + स्स = रिसिस्स रिसि + णो[७] = रिसिणो	रिसि + ण = रिसीण, रिसीणं (ऋषिभ्यः)

पालिभाषा में पुंल्लिग 'सखि' शब्द के विशेष रूप होते हैं। उन रूपों में सखि को कहीं 'सख', कहीं 'सखि' तथा कहीं 'सखार' और कहीं पर 'सखान' ऐसे आदेश होते हैं। प्रथमा के एकवचन में 'सखा' तथा द्वितीया के एकवचन में 'सखारं' तथा 'सखानं' रूप होते हैं और प्रथमा तथा द्वितीया के बहुवचन में 'सखायो' रूप भी होता है (देखिए, पा० प्र० पृ० ८६)।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१९। इसके अतिरिक्त अन्य वैयाकरण ह्रस्व इकारान्त तथा उकारान्त के अनुस्वारयुक्त रूप भी प्रथमा के एकवचन में मानते हैं—रिसी, रिंसि; भाणू, भाणुं।

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।२०।

३. हे० प्रा० व्या० ८।३।२२।

४. हे० प्रा० व्या० ८।३।५; ८।३।१२४।

५. हे० प्रा० व्या० ८।३।२४।

६. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं० रिसि + त्तो = रिसित्तो	रिसि + त्तो = रिसित्तो (ऋषितः)
(ऋषितः)	
रिसि + ओ[7] = रिसीओ	रिसिओ = रिसीओ (ऋषितः)
(ऋषितः)	
रिसि + उ = रिसीउ	रिसि + उ = रिसीउ (ऋषितः)
(ऋषितः)	
रिसि + णो = रिसिणो	रिसि + हिंतो=रिसीहिंतो (ऋषिभ्यः)
(ऋषितः)	
रिसि + हिंतो=रिसीहिंतो	रिसि + सुंतो = रिसीसुंतो
ष० रिसि + स्स = रिसिस्स	रिसि + ण = रिसीण,
(ऋषेः)	
रिसि + णो = रिसिणो	रिसिणं (ऋषीणाम्)
स० रिसि + ंसि = रिसिंसि	रिसि + सु=रिसीसु,रिसीसुं (ऋषिषु)
(ऋषौ)	
रिसि + म्मि = रिसिम्मि	
सं० रिसि = रिसि !	रिसि + अउ = रिसउ ! (ऋषयः)
रिसी = रिसी ! (ऋषे !)	रिसि + अओ = रिसओ ! (ऋषयः)
	रिसि + अयो = रिसयो ! (ऋषयः)
	रिसि + णो = रिसिणो !
	रिसि = रिसी !

७. हे० प्रा० व्या० ८।३।२३ तथा ८।३।१२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*भाणु (भानु = सूर्य)

एकव०	बहुव०
प्र० भाणु, भाणू (भानुः)	भाणु + अवो = भाणवो[1] (भानवः)
	भाणु + अवे = भाणवे[2] (,,)
	भाणु + अओ = भाणओ (,,)
	भाणु + अउ = भाणउ (,,)
	भाणु + णो = भाणुणो
	भाणु = भाणू

---

* भानु शब्द के पालिरूप :—

	एकव०	बहुव०
प्र०	भानु	भानू, भानवो
द्वि०	भानुं	भानू, भानवो
तृ०	भानुना	भानूहि, भानूभि
च०	भानुनो, भानुस्स	भानूनं
पं०	भानुना, भानुस्मा, भानुम्हा	भानूहि, भानूभि
ष०	भानुनो, भानुस्स	भानूनं
स०	भानुस्मि, भानुम्हि	भानूसु
सं०	भानु	भानू, भानवो, भानवे

—देखिए, पा० प्र० पृ० ९१–९३, ९४।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२१ सूत्र के द्वारा उकारान्त पुंल्लिग रूप भी सिद्ध होते हैं।

२. 'अवे' प्रत्यय का उपयोग आर्ष प्राकृत में पर्याप्त उपलब्ध होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि० भाणु + म् = भाणुं (भानुम्)   भाणु + णो = भाणुणो,
भाणु = भाणू (भानून्)

तृ० भाणु + णा=भाणुणा (भानुना)   भाणु + हि = भाणूहि,
भाणूहिं, भाणूहिँ
(भानुभिः)

च० भाणु + अवे = भाणवे   भाणु + ण = भाणूण,
भाणु + णो = भाणुणो   भाणूणं (भानुभ्यः)
भाणु + स्स = भाणुस्स (भानवे)

पं० भाणु + त्तो = भाणुत्तो

भाणु + ओ = भाणूओ   भाणूओ (भानुतः)

भाणु + उ = भाणूउ   भाणूउ (,,)

(भानुतः, भानोः)

भाणु + णो = भाणुणो   भाणु + हिंतो = भाणूहिंतो,

भाणु + हिंतो = भाणूहिंतो   भाणूसुंतो (भानुभ्यः)

ष० भाणु + स्स = भाणुस्स   भाणु + ण = भाणूण,

भाणु + णो = भाणुणो (भानोः)   भाणूणं (भानूनाम्)

स० भाणु + ंसि = भाणुंसि   भाणु + सु = भाणूसु,

भाणु + म्मि = भाणुम्मि   भाणूसुं (भानुषु)

(भानौ)

सं० भाणु = भाणु ! (भानो !) भाणु + अवो = भाणवो ! (भानवः)

भाणु = भाणू !   भाणु + अओ = भाणओ (,,)

भाणु + अउ = भाणउ

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

भाणु + णो = भाणुणो

भाणु + भाणू

अकारान्त शब्द के रूप सिद्ध करने में जो प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं, अधिकतर उन्हीं प्रत्ययों का प्रयोग उपर्युक्त रूपसाधना में किया गया है। सर्वथा नये रूप बहुत थोड़े हैं।

१. **प्रथमा और सम्बोधन के एकवचन तथा बहुवचन में और द्वितीया के बहुवचन में इकारान्त और उकारान्त के मूल अंग केवल दीर्घ होकर प्रयुक्त होते हैं।**

यथा :—रिसि = रिसी; भाणु = भाणू।

२. **स्वरादि प्रत्यय परे रहने पर प्रथमा, सम्बोधन और चतुर्थी के अंग के अन्त्य स्वर का याने अंग का अन्त्य 'इ' अथवा 'उ' का लोप हो जाता है।**

जैसे :—रिसि + अओ = रिस् + अओ = रिसओ
भाणु + अवो = भाण् + अवो = भाणवो
रिसि + अये = रिस् + अये = रिसये
भाणु + अवे = भाण् + अवे = भाणवे।

३. **नये रूपों में तृतीया एकवचन, 'णो' प्रत्ययवाले सभी रूप और चतुर्थी का एकवचन है। लेकिन वे सभी उपर्युक्त प्रयोग रूपसाधना से समझे जा सकते हैं।**

संस्कृत में 'इन्' प्रत्ययान्त (दण्डिन्, मालिन्) शब्दों के प्रथमा-द्वितीया-बहुवचन में तथा पञ्चमी-षष्ठी के एकवचनमें 'दण्डिनः मालिनः;' इत्यादि रूप प्रसिद्ध हैं; इन्हीं रूपों का प्राकृत रूपान्तर 'दंडिणो; मालिणो' होता है। ये सब देखते हुए 'रिसिणो', 'भाणुणो' रूपों की घटना सहज में ही समझी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जा सकती है। 'इन्' प्रत्ययान्त शब्दों के सभी रूप लगभग इकारान्त शब्द की भाँति होते हैं।

इकारान्त-उकारान्त नपुंसकलिङ्ग

इकारान्त-उकारान्त नपुंसकलिङ्ग अंग के तृतीया से सप्तमी पर्यन्त सभी रूप, इकारान्त-उकारान्त पुंलिङ्ग रूपसाधना की भाँति हैं और प्रथमा, द्वितीया तथा सम्बोधन की रूपसाधना अकारान्त नपुंसकलिङ्ग की भाँति है। यथा :—

वारि (वारि = जल)

प्र०-द्वि० वारि + म् = वारिं (वारि) वारि + णि = वारीणि
वारि + इं = वारीइं
वार + इँ = वारीइँ } वारीणि

सं० वारि ! (वारि !) ,, ,, ,,

(सूत्रों के लिये देखिये पाठ सातवाँ का प्रारम्भ)

महु (मधु = शहद)

प्र०-द्वि० महु + म् = महुं (मधु) महु + णि = महूणि
महु + इं = महूइं
महु + इँ = महूइँ } (मधूनि)

सं० महु ! (मधु !) ,, ,, ,, (,,)

(सूत्रों के लिए देखिए पाठ सातवाँ का प्रारम्भ)

चतुर्थी के एकवचन में 'वारिणे', 'वारिस्स'; 'महुणे', 'महुस्स' रूप समझना चाहिए। लेकिन 'वारये', 'महवे' नहीं।

इकारान्त और उकारान्त शब्द (पुंल्लिङ्ग)

मुणि (मुनि) = मुनि—मनन करने वाला, मौन धारण करनेवाला सन्त।

सउणि (शकुनि) = शकुनि—पक्षी ।
पइ (पति) = पति—स्वामी, मालिक, रक्षक ।
घरवइ, गहवइ (गृहपति) = गृहपति—गृहस्थ, घरका स्वामी ।
रिसि, इसि (ऋषि) = ऋषि, महात्मा ।
दुक्खदंसि (दुःखदर्शिन्) = दुःख देखनेवाला, दुःखी पुरुष ।
भोगि, भोइ (भोगिन्) = भोगी, भोग भोगनेवाला, संसारी पुरुष ।
उदहि (उदधि) = समुद्र, उदक—जल धारण करनेवाला, समुद्र ।
साहु (साधु) = साधक, साधु पुरुष, सज्जन, साहुकार ।
जन्तु (जन्तु) = जन्तु, प्राणी ।
सिसु (शिशु) = शिशु; छोटा बच्चा, बालक ।
मच्चु, मिच्चु (मृत्यु) = मृत्यु ।
बिंदु (बिन्दु) = बिन्दु ।
भाणु (भानु) = भानु, सूर्य ।
वाउ, वायु (वायु) = वायु, पवन ।
विण्हु (विष्णु) = विष्णु ।
हत्थि (हस्तिन्) = हाथी ।
कुलवइ (कुलपति) = कुलपति—आचार्य ।
नरवइ (नरपति) = नरपति—नरों-पुरुषों का पति = राजा, राजा ।
भूवइ (भूपति) = भूपति—भू—पृथ्वी का पति, राजा ।
गणवइ (गणपति) = गणों का पति—गणपति, गणेश ।
अमुणि (अमुनि) = जो मुनि नहीं हो (बड़-बड़ करने वाला) ।
कोहदंसि (क्रोधदर्शिन्) = क्रोधदर्शी, क्रोधी ।
भूमिवइ (भूमिपति) = भूमि का पति—राजा ।
उवाहि (उपाधि) = उपाधि ।
सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) = श्रेष्ठी, सेठ, साहुकार ।
गब्भदंसि (गर्भदर्शिन्) = गर्भ देखने वाला, जन्म लेने वाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभोगि, अभोइ (अभोगिन्) = अभोगी (योगी) ।
पक्खि (पक्षिन्) = पक्षी ।
सोमित्ति (सौमित्रि) = सुमित्रा का पुत्र, लक्ष्मण ।
भिक्खु (भिक्षु) = भिक्षु ।
चक्खु (चक्षुष्) = चक्षु, आँख ।
सयंभु (स्वयंभू) = स्वयंभू, ब्रह्मा, समुद्र का नाम ।
संसारहेउ (संसारहेतु) संसार बढ़ने का कारण ।
गुरु (गुरु) = गुरु, माता-पिता आदि गुरुजन ।
तरु (तरु) = तरु, वृक्ष ।
बाहु (बाहु) = बाहु, भुजा ।

इकारान्त और उकारान्त (नपुंसकलिङ्ग) शब्द

अक्खि, अच्छि (अक्षि) = आँख ।
अट्ठि (अस्थि) = हड्डी, अस्थि ।
धणु (धनुष्) = धनुष ।
जाणु (जानु) = घुटना ।
वारि (वारि) = वारि, जल, पानी ।
जउ (जतु) = जतु, लाख, लाह ।
वत्थु (वस्तु) = वस्तु, पदार्थ ।
दहि (दधि) = दही ।
महु (मधु) = मधु, शहद ।
खाणु (स्थाणु) = स्थाणु, अचल, ठूँठ (वृक्ष) ।

अकारान्त (पुँल्लिङ्ग) शब्द

वसह (वृषभ) = वृषभ, बैल ।
कोसिअ (कौशिक) = कौशिक गोत्र वाला इन्द्र, चण्डकौशिक सर्प ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहार (आहार) = आहार, भोजन ।
ण्हाविअ, नाविअ (स्नापयितृ) = नापित, नाई ।
मअ (मृग) = मृग, वन्यपशु, हिरण ।
मार (मार) = मार ।
कुमारवर (कुमारवर) = श्रेष्ठ कुमार ।
आहार (आधार) = आधार ।
गरुल (गरुड़) = गरुड़ ।
रण्णवास (अरण्यवास) = अरण्यवास, जंगल में रहना ।
सव्वसंग (सर्वसङ्ग) = सर्व प्रकार का सङ्ग—सम्बन्ध-आसक्ति ।
महासव (महास्रव) = पाप का बड़ा मार्ग ।
महप्पसाय (महाप्रसाद) = सुप्रसन्न, महाकृपालु ।
मास (मास) = मास, महीना ।
पक्ख (पक्ष) = पक्ष—शुक्ल पक्ष, कृष्णपक्ष ।
वेसाह (वैशाख) = वैशाख मास ।
उवासग (उपासक) = उपासक, उपासना करने वाला ।
कोववर (कोपपर) = कोप करने में तत्पर, क्रोधी ।
सोवाग (श्वपाक) = श्वपाक, चण्डाल ।

अकारान्त (नपुंसकलिङ्ग) शब्द

आभरण (आभरण) = आभरण, आभूषण, गहना ।
घर (गृह) = गृह, घर ।
पंजर (पञ्जर) = पञ्जर–हड्डियों का ढाँचा, पिंजरा ।
उदग, उदय (उदक) = उदक, पानी, जल ।
हुअ (हुत) = होम ।
रूव (रूप) = रूव, आकृति ।
कुल (कुल) = कुल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घय (घृत) = घी ।
तण (तृण) = तृण, घास ।
मित्तत्तण (मित्रत्व) = मित्रता, दोस्ती, भाई-बन्धुता ।

विशेषण

बुद्ध (बुद्ध) = बोध—ज्ञान पाया हुआ, ज्ञानी ।
हुत (हुत) = हवन किया हुआ ।
सेट्ठ (श्रेष्ठ[1]) = श्रेष्ठ, उत्तम ।
संभूअ (संभूत) = हुआ ।
चउत्थ } (चतुर्थ) = चतुर्थ, चौथा ।
चतुत्थ }
तिण्ण (तीर्ण) = तीर्ण, तिरा हुआ ।
सुत्त (सुप्त) = सुप्त, सोया हुआ ।
अप्पणिय (आत्मीय) = अपना ।
पासग (दर्शक) = द्रष्टा, समझदार, विचारक ।
परिसोसिय, परिसोसिअ (परिशोषित) = परिशोषित ।
विइज्ज (द्वितीय) = द्वितीय, दूसरा ।

अव्यय

ताव, ता (तावत्) = तब तक ।
एगया (एकदा) = एकदा, एकबार ।
सया (सदा) = सदा, हमेशा ।

---

१. उपयोग :—जिसमें श्रेष्ठ कहना हो वह शब्द षष्ठी और सप्तमी विभक्ति में आता है 'पाणीसु सेट्ठे माणवे' अथवा 'पाणीण सेट्ठे माणवे' याने प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव, जा (यावत्) = जब तक, जो।
एत्थ (अत्र) = यहाँ।
चिरं = (चिरम्) = चिरकाल तक।

धातुएँ

अव + मन्न् (अप + मन्)—अपमान करना।
अ + क्खा (आ + ख्या)—बोलना, कहना।
जाय् (याच्)—याचना करना, माँगना।
प + वय् (प्र + वद्)—कहना।
पूज, पूअ (पूज्)—पूजना, पूजा करना।
चय् (त्यज्)—त्यागना, छोड़ना।
डस् (दश्)—डसना, दंशना, डंक मारना।
रक्ख् (रक्ष)—रक्षा करना, सम्भालना।
वि + राअ } (वि + राज्) = विराजमान होना, शोभायमान होना।
वि + राज् }
उ + ड्डो (उत् + डी)—उड़ना।
नि + मंत् (नि + मन्त्र)—निमन्त्रण देना, बुलाना।
जागर् (जागर्)—जागना।
ताल्, ताड् (ताड्)—ताड़न करना, मारना।
वि + चर् (वि + चर्)—विचरना, घूमना।

वाक्य (हिन्दी)

एकबार साधु ब्राह्मण के घर गये।
भिक्षु उपाधियों को छोड़ते हैं और स्वयंभू का ध्यान करते हैं।
अनार्य तप से परिशोषित मुनि का उपहास करते हैं।
ब्राह्मणों ने भिक्षुओं का अपमान किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हे मुनि ! तू संसार से तिरा हुआ है ।
कर्म से उपाधि होती है ।
सभी प्राणियों के प्रति मेरी मित्रता है किसी के साथ वैर नहीं है ।
अमुनि सदा सोते रहते हैं और मुनि हमेशा जागते रहते हैं ।
चंडकौशिक सर्प ने श्रमण महावीर को डसा ।
जो क्रोधदर्शी है वह गर्भदर्शी है और जो गर्भदर्शी है वह दुःखदर्शी है।
हे पण्डितो ! मैं सब प्रकार से लोभ का त्याग करता हूँ ।
महावीर ने चण्डकौशिक सर्प और देवेन्द्र दोनों में मित्रता रखी ।
वायु से वृक्ष काँपे और जल की बूँदें उड़ीं ।
क्या विचारक को उपाधि होती है ?
कौशिक देवेन्द्र ने श्रमण महावीर को पूजा ।
हाथी ने समुद्र का पानी पिया ।
लोभ संसार का हेतु है ।
कोई भी व्यक्ति कुलपति के बैल तथा मृग को नहीं मारता ।
बैल और मृग घास खाते हैं और मुनि घी पीते हैं ।
महावीर के उपासक सेठ ने वैशाख मास में तप किया ।
सभी आभूषण भाररूप हैं ।
कुलपति ने श्रमण महावीर को कहा—'कुमारवर ! यहाँ ऋषियों का मठ है ।'
सौमित्रि राम को प्रणाम करता है ।
मुनि आहार के लिए सभी कुलों में जाते है ।
महावीर ग्रीष्म के दूसरे महीने चौथे पक्ष में बुद्ध बने ।
सुप्रसन्न मुनि क्रोधदर्शी नहीं होते ।
यह भिक्षु सेठ के कुल का था ।
हे भिक्षु ! मेरे घर में दूध नहीं, घी नहीं लेकिन पानी है ।
इस गृहस्थ के दो बालक थे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उन्होंने हाथ से पिंजरा फेंक दिया।
किस को आँखें नहीं हैं ?
पक्षी पिंजरे में काँपा और हिला (सरका)।
सेठ ने राजा को और राजा ने गणपति को नमस्कार किया।
तुम पानी पीना चाहते हो ?
मुनियों का पति महावीर राजगृह में बिहार किया।

वाक्य (प्राकृत)

मुणिणो सया जागरंति, अमुणिणो सया सुत्ता संति।
'घयं पिबामि' त्ति साहुस्स णो भवइ[1]।
पक्खीसु वा उत्तमे गुरुले विराजइ।
मच्चू नरं णेइ हु अंतकाले।
गहवइ मुणिणो बुद्धं दिज्ज।
भूवइ, घरवइ य दोवि गुरुं वंदंति।
महरिसी ! तं पूजयामु।
न मुणो रण्णवासेण किंतु णाणेण मुणी होइ।
नमो भूमिवइ कयावि न चडालियं कासी।
भिक्खू धम्मं आइक्खेज्जा।
लोहेण जंतुणो दुक्खाणि जायंति।
सिसुणो किं किं न छिदिरे ?
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे।
एगे भिक्खुणो उदगेण मोक्खं पवयंति।
सउणी पंजरंसि उड्डेइ।
ते उवासगा भिक्खुं निमंतयंति।

---

१. 'भवइ' अर्थात् योग्य होता है।

बहवे गहवइणो भिक्खुं वंदंते ।
अन्ने मुणिणो हुएण मोक्खं उदाहरंति ।
भिक्खू सव्वसंगे महासवे परिजाणीअ ।
भोगिणो संसारे भमोअ, अभोगी चयइ रयं ।
हत्थीसु एरावणमाहु सेट्ठं ।
एगया पाडलिपुत्तस्स नरवइ ण्हाविओ होत्था ।
महप्पसाया इसिणो हवंति ।
न हु मुणी कोववरा हवंति ।
महासवं संसारहेउ वयंति बुद्धा ।
बुद्धो भयं मच्चुं च तरोअ ।
गणवइ हत्थिस्स सिसुं रक्खोअ ।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेरहवाँ पाठ

भविष्यत्कालिक प्रत्यय*

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	स्सामि[1] (ष्यामि)	स्सामो[1] (ष्यामः)
	हामि[2]	हामो[2]
	हिमि[3]	हिमो[3]
	स्सं[4]	

---

*. पालि में भविष्यत्काल के प्रत्यय :—

परस्मैपद

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	स्सामि	स्साम
म०पु०	स्ससि	स्सथ
तृ०पु०	स्सति	स्संति
प्र०पु०	हामि	हाम
म०पु०	हिसि	हित्थ
तृ०पु०	हिति	हिन्ति
प्र०पु०	हिस्सामि	हिस्साम
म०पु०	हिस्ससि	हिस्सथ
तृ०पु०	हिस्सति	हिस्सन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म०पु०	स्ससि (ष्यसि)	स्सह	(ष्यथ)
	स्ससे (ष्यसे)	स्सथ	
	हिसि	हित्था	
	हिसे	हिह	(ष्यध्वे)

आत्मनेपद

प्र०पु०	स्सं	स्साम्हे
म०पु०	स्ससे	स्सव्हे
तृ०पु०	स्सते	स्सन्ते

प्राकृत भाषा के भविष्यत्काल के 'हिति' वगैरह हकारादि प्रत्यय व्यापक हैं, परन्तु पालिभाषा में ये हकारादि प्रत्यय व्यापक नहीं हैं।

शौरसेनी तथा मागधी में भविष्यत्काल के प्रत्यय :—

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	स्सं, स्सिमि	स्सिमो, स्सिमु, स्सिम
म०पु०	स्सिसि, स्सिसे	स्सिह, स्सिध, स्सिइत्था
तृ०पु०	स्सिदि, स्सिदे	स्सिंति, स्सिंते, स्सिइरे

इन्हीं प्रत्ययों में 'स' के स्थान में 'श' करने से मागधी के प्रत्यय हो जाते हैं।

शौरसेनी रूप :—

प्र०पु०	भणिस्सं, भणिस्सिमि	भणिस्सिमो, भणिस्सिमु, भणिस्सिम
म०पु०	भणिस्सिसि, भणिस्सिसे	भणिस्सिह, भणिस्सिध, भणिस्सिइत्था
तृ०पु०	भणिस्सिदि, भणिस्सिदे	भणिस्सिंति, भणिस्सिंते, भणिस्सिइरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ०पु०	स्सइ, स्सति (ष्यति); स्सए, स्सते (ष्यते)	स्संति (ष्यन्ति)	स्संते (ष्यन्ते)
	हिइ	हिंति	
	हिति	हिंते	
	हिए	हिइरे	
	हिते		

मागधी रूप :—

प्र०पु० भणिश्शं, भणिश्शिमि,

म०पु० भणिश्शिशि, भणिश्शिशे

तृ०पु० भणिश्शदि, भणिश्शदे इत्यादि रूप मागधी भाषा के परिवर्तन-नियमानुसार होंगे।

पैशाची रूप बनाने के लिए तृतीय पुरुष के एकवचन में केवल 'एय्य' प्रत्यय लगाना चाहिए। जैसे, हुव्–एय्य=हुवेय्य (भविष्यति); बाकी रूप शौरसेनी की तरह या प्राकृत की तरह होंगे। (देखिये—हे० प्रा० व्या० ८।४।३२० ।)

अपभ्रंश में भविष्यत्काल के प्रत्यय :—

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	सउं, स्सिउं, समि, स्सिमि	सहुं, स्सिहुं
		समो, स्सिमो
		समु, स्सिमु
		सम, स्सिम
म०पु०	सहि, स्सिहि	सहु, स्सिहु, सधु, सिधु
	ससि, स्सिसि	सह, स्सिह
	ससे, स्सिसे	सध, स्सिध
		सइत्था, स्सिइत्था

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वपुरुष-सर्ववचन:—ज्ज, ज्जा[५]

भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाने से पूर्व धातु के अंग के अन्तिम 'अ' को 'ए' और 'इ' होते हैं[६]।

भण्+अ = भण + स्सामि = भणेस्सामि, भणिस्सामि इत्यादि।

तृ०पु०	सदि, सदे	सहिं, संति
	स्सिदि, स्सिदे	संते, सइरे
	सइ, सए	स्सिहिं, स्सिंति
	स्सिइ, स्सिए	स्सिंते, स्सिइरे

अपभ्रंश में 'भण' धातु के रूप :—

एकव०

प्र०पु० भणिसउं, भणेसउं
भणिस्सिउं, भणेस्सिउं
भणिसमि, भणेसमि
भणिस्सिमि, भणेस्सिमि

म०पु० भणिसहि, भणेसहि
भणिस्सिहि, भणेस्सिहि
भणिससि, भणेससि, भणिस्सिसि, भणेस्सिसि
भणिससे, भणेससे, भणिस्सिसे, भणेस्सिसे

तृ०पु० भणिसदि, भणेसदि
भणिसदे, भणेसदे
भणिस्सिदि, भणेस्सिदि
भणिस्सिदे, भणेस्सिदे
भणिसइ, भणेसइ, भणिसए, भणेसए
भणिस्सिइ, भणेस्सिए
भणेस्सिइ, भणेस्सिए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भण (भण्) धातु (= कहना, पढ़ना)

भविष्यत्काल में रूप :—

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	भणिस्सामि, भणेस्सामि	भणिस्सामो, भणेस्सामो
	भणिहामि, भणेहामि	भणिस्सामु[1], भणेस्सामु
	भणिहिमि, भणेहिमि	भणिस्साम[1], भणेस्साम
	भणिस्सं, भणेस्सं	भणिहामो, भणेहामो
		भणिहामु[1], भणेहामु
		भणिहाम[1], भणेहाम
		भणिहिमो, भणेहिमो
		भणिहिमु[1], भणेहिमु
		भणिहिम[1], भणेहिम

इसी प्रकार सब पुरुषों में बहुवचन के भी रूप होंगे।

प्राचीन गुजराती के भणेश, करेश, (प्रथमपुरुष) वगैरह रूप इन रूपों के साथ तुलनीय हैं। १. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६७। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६७। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६६। ५. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७७। ६. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५७।

१. बारहवें पाठ में भविष्यत्काल—प्रथमपुरुष के बहुवचन में जो 'स्सामो', 'हामो' और 'हिमो' तीन प्रत्यय बताए हैं उनके अतिरिक्त 'स्सामु, स्साम, हामु, हाम , हिमु, हिम' आदि प्रत्यय भी उपलब्ध होते हैं। अतएव उन प्रत्ययों वाले रूप भी ऊपर बता दिये गये हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म०पु०	भणिस्ससि, भणेस्ससि	भणिस्सह, भणेस्सह
	भणिस्ससे, भणेस्ससे	भणिस्सथ, भणेस्सथ
	भणिहिसि, भणेहिसि	भणिहित्था, भणेहित्था
	भणिहिसे, भणेहिसे	भणिहिह, भणेहिह
तृ०पु०	भणिस्सइ, भणेस्सइ	भणिस्संति, भणेस्संति
	भणिस्सति, भणेस्सति	भणिस्संते, भणेस्संते
	भणिस्सए, भणेस्सए	भणिहिंति, भणेहिंति
	भणिस्सते, भणेस्सते	भणिहिंते, भणेहिंते
	भणिहिइ, भणेहिइ	भणिहिइरे, भणेहिइरे
	भणिहिति, भणेहिति	
	भणिहिए, भणेहिए	
	भणिहिते, भणेहिते	

सर्वपुरुष सर्ववचन { भणिज्ज, भणिज्जा
भणेज्ज, भणेज्जा

इकारान्त और उकारान्त शब्द

अग्गि[1] (अग्नि) = अग्नि, आग, वह्नि ।

गणि (गणिन्)=गण–समूह की रक्षा–देख-भाल करनेवाला आचार्य।

गिहि (गृहिन्) = गृहस्थ ।

मणि (मणि) = मणि ।

सव्वण्णु (सर्वज्ञ) = सर्वज्ञ , सब कुछ जाननेवाला ।

किसाणु (कृशानु) = अग्नि ।

जण्हु (जह्नु) = सगर के पुत्र का नाम ।

भिक्खु (भिक्षु) = भिक्षु ।

---

१. अग्गि, अग्गिनि, गिनि । —दे० पा० प्र० पृ० ७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उच्छु (इक्षु) = इक्षु—गन्ना, ईख, उख (भोजपुरी में) ।
महेसि (महा + ऋषि) = महर्षि—व्यासादि महर्षि ।
मेहावि (मेधाविन्) = मेधावी, बुद्धिमान् ।
वणप्फइ, वणस्सइ (वनस्पति) = वनस्पति ।
करेणु (करेणु) = हाथी ।
कुंथु (कुन्थु) = 'कुंथुवा' इस नाम का कोई छोटा त्रीन्द्रिय जीव ।
रायरिसि (राज + ऋषि = राजर्षि) = राजर्षि—जनक आदि ।
जीवाउ (जीवातु) = जीवन की औषध ।
कवि (कवि) = कवि, कविता रचनेवाला ।
कवि (कपि) = कपि, बन्दर, वानर ।
चाइ (त्यागिन्) = त्यागी ।
नमि (नमि) = 'नमि' इस नाम का एक राजर्षि ।
पाणि (पाणि) = पाणि, हाथ, हस्त ।
पाणि (प्राणिन्) = प्राणी, जीव ।
बंभयारि (ब्रह्मचारिन्) = ब्रह्मचारी ।
कमंडलु (कमण्डलु) = कमण्डलु ।
मंतु (मन्तु) = अपराध ।
जंबु (जम्बु) = जामुन का वृक्ष ।
विडवि (विटपिन्) = शाखा—डाल वाला पेड़, वृक्ष ।
साणु (सानु) = शिखर ।
बंधु (बन्धु) = बन्धु, भाई, सगा-सम्बन्धी ।
पीलु (पीलु) = पीलु का वृक्ष ।
ऊरु (ऊरु) = जंघा ।
पावासु (प्रवासिन्) = प्रवासी ।

विशेषण

कयण्णु (कृतज्ञ) = कृतज्ञ, कदरदान, कदर करनेवाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरु (गुरु) = गुरु—भारी, बड़ा ।
लहु (लघु) = लघु, हलका, छोटा ।
मिउ (मृदु) = मृदु, कोमल, नरम ।
दुहि (दुःखिन्) = दुःखी ।
दुग्गंधि (दुर्गन्धिन्) = दुर्गन्धवाला, दुर्गन्धित, दुर्गंधि ।
चारु (चारु) = चारु, सुन्दर ।
सुहि (सुखिन्) = सुखी ।
साउ (स्वादु) = स्वादु, स्वादिष्ट ।
दिग्घाउ (दीर्घायुष्) = दीर्घायु, दीर्घ आयुष्य वाला ।
सुइ (शुचि) = शुचि, पवित्र ।
सुगन्धि (सुगन्धिन्) = सुगन्धित, सुन्दर गन्ध वाला ।
बहु (बहु) = बहुत ।
गामणि (ग्रामणी) = गाँव का मुखिया, ग्राम का अग्रणी—नेता ।

सामान्य शब्द (पुँल्लिंग)

जर (ज्वर) = ज्वर, बुखार, जर (भोजपुरी में) ।
अंब (आम्र) = आम ।
कोकिल, कोइल (कोकिल) = कोयल, कोइल (भोजपुरी में) ।
तिल (तिल) = तिल ।
वाणिज्जार (वाणिज्यकार) = वाणिज्यकार, व्यापारी, बनिजारा ।
कांबलिअ (काम्बलिक) = कम्बलों को बेचनेवाला या ओढ़नेवाला ।
मोचिअ (मौचिक) = मोची, जूता सीने-बनाने वाला ।
कुडुंबि (कुटुंबिन्) = कुटुम्बी ।
कोडुबिअ (कौटुम्बिक) = कुटुम्बी, राजा का काम-काज करनेवाला ।
साड (शाट) = साड़ी, धोती ।
साडय (शाटक) = साड़ी, धोती ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरहिअ (सौरभिक) = सुगन्धित वस्तुएँ—तैलादि बेचनेवाला ।
कस (कश) = चाबुक, कोड़ा ।
लोहार (लोहकार) = लोहार ।
सोवण्णिय (सौवर्णिक) = सुनार, सोनार ।
गंधिअ (गान्धिक) = गन्ध वाली वस्तुएँ बेचनेवाला, गंधी, गांधी ।
सुत्तहार (सूत्रहार) = तरखान, नाटक का मुख्य पात्र, बढ़ई ।
तेलिअ (तैलिक) = तेली, तेल बेचने वाला ।
मालिअ (मालिक) = माली, माला बेचने वाला ।
दोसिअ (दौष्यिक) = दोशी, दूष्य--रेशमी वस्त्र बेचनेवाला ।
उण्हाण (ऊष्णकाल) = ग्रीष्म काल ।
सीआल (शीतकाल) = शीतकाल, ठंढ का समय ।
तंबोलिअ (ताम्बूलिक) = तंबोली, ताम्बुल–पान बेचने वाला ।
दण्ड (दण्ड) = दण्ड; लाठी–लकड़ी या बाँस का डण्डा ।
जोइसिअ (ज्योतिषिक) = ज्योतिषी (जोशी) ।
साडवि, सालवि (शाटविन्) = साड़ी बुननेवाला ।
मणिआर (मणिकार) = जौहरी, मणियार—काँच का सामान बेचनेवाला, मनिहार ।

सामान्य शब्द (नपुंसकलिङ्ग)

लोह (लोह) = लोहा ।
वाणिज्ज (वाणिज्य) = व्यापार ।
तेल (तैल) = तेल ।
तंबोल (ताबूल) = ताम्बूल, नागर वेल का पत्ता, पान (खानेवाला पान) ।
मलीर (मलयचीर) = मलय देशका कोमल और बारीक वस्त्र ।
पगरक्ख (पदकरक्ष) = पगरखा, पैर की रक्षा करनेवाला जूता-चप्पल आदि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वत्थ (वस्त्र) = वस्त्र ।

पट्टोल (पट्टकूल) = पटोल, वस्त्र-विशेष, पटोर (भोजपुरी में) ।

खित्त, खेत्त (क्षेत्र) = क्षेत्र, खेत ।

महिलानयर (मिथिला नगर) = मिथिला नगरी ।

घरचोल (गृहचोल) = घरचोला (घर में पहनने की गुजरात की धोती विशेष) ।

पम्हपड (पक्ष्मपट) = पक्ष्म—बरौंनो के जैसा बारीक वस्त्र ।

कंटयरक्ख (कण्टकरक्ष) = कण्टकों—कांटों से रक्षा करनेवाला—जूता ।

कंबल (कम्बल) = कम्बल ।

चेल (चेल) = चेल, वस्त्र ।

बीअ (बीज) = बीज ।

जीवण (जीवन) = जीवन, जिन्दगी ।

पायत्ताण (पादत्राण) = पादत्राण, जूता ।

वित्त, वेत्त (वेत्र) = बेंत, नेत्तर की लाठी (बेंत) ।

सुवण्ण (सुवर्ण) = सुवर्ण, सोना ।

रयय (रजत) = रजत, चाँदी ।

रूप्प (रुक्म) = रूपा, चाँदी ।

रूप्प (रौप्य) = रूपा का, चाँदी का ।

लोमपड (लोमपट, रोमपट) = रोओं का वस्त्र, लोई ।

पम्ह (पक्ष्मन्) = आँख की बरौंनी, पलक की कोर के बाल ।

नेड्ड, णेड्ड (नीड) = नीड, निलय, घोंसला ।

सामान्य शब्द (विशेषण)

घट्ठ (घृष्ट) = घिसा हुआ, प्रमार्जित किया हुआ, कोमल और मुलायम किया हुआ ।

मट्ठ (मृष्ट) = माँजा हुआ, शुद्ध ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतिअ (अन्तिक) = अन्तिक, नजदीक, पास ।
चंड (चण्ड) = प्रचण्ड, क्रोधी ।
लहुअ, हलुअ (लघुक) = लघु, हलका, छोटा ।
नाय (ज्ञात) = ज्ञात, प्रसिद्ध ।
अम्हारिस (अस्मादृश) = हमारे जैसा ।
सचेलय (सचेलक) = वस्त्र वाला, वस्त्रधारी ।
अचेलय, अएलय (अचेलक) = बिना वस्त्र का, नग्न, दिगम्बर ।

अव्यय

सव्वत्थ (सर्वत्र) = सर्वत्र, सब स्थानों में ।
मज्झे (मध्ये) = मध्य में, बीच में, में ।
जं (यत्) = जो ।
सक्खं (साक्षात्) = साक्षात्, प्रत्यक्ष ।
सययं (सततम्) = सतत, निरन्तर ।
अह (अथ) = प्रारम्भ सूचक अव्यय, शुरू ।
मणा, मणयं (मनाक्) = थोड़ा, इषत्, न्यूनता सूचक ।
सइ (सदा) = सदा, हमेशा ।
अभिक्खणं (अभिक्षणम्) = क्षण-क्षण, बारंबार ।
अहुणा (अधुना) = अब, अभी ।

धातुएँ

जुंज् (युञ्ज्) = जोड़ना, संयुक्त करना, सम्बन्धित करना ।
सोह् (शोध्) = सोधना, शुद्ध करना ।
सिव्व् (सीव्य) = सीना ।
हण् (हन्) = मारना ।
मन्न् (मन्) = मानना, स्वीकार करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओप्प् (अर्प) = पॉलिश करना, पानी चढ़ाना, चमक देना ।
पवस् (प्र + वस्) = प्रवास करना ।
उवचिट्ठ (उप + तिष्ठ) = उपस्थित रहना, सेवा में हाज़िर रहना ।
ताव (ताप्) = तपना, तप्त करना ।
विक्के (वि + क्री) = बेचना, विक्रय करना ।
अप्प, ओप्प् (अर्पय्) = अर्पण करना, देना ।
पील्, पीड् (पीड्) = पीड़ना, पीलना, पेरना ।
फल् (फल्) = फलना, फुलना ।
चिंत् (चिन्त्) = चिन्ता करना ।
वीसर् (वि + स्मर्) = विस्मरण करना, भूल जाना ।
संहर् (सं + स्मर्) = स्मरण करना, याद करना ।
खण् (खन्) = खोदना ।
पाव् (प्र + आप्) = प्राप्त करना, पाना ।
वक्खाण् (वि + आ + ख्यान) = व्याख्यान करना, विस्तार से कहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना ।
अणुसास् (अनु + शास्) = शिक्षा देना, समझाना ।
संबुज्झ (सं + बुध्य) = समझना, बोध प्राप्त करना ।
वण् (वन) = बुनना ।
कूज्, कूअ (कूज्) = कुहू-कुहू करना, कूँजना ।

वाक्य (हिन्दी)

कुम्हार का कुल भी उत्तम होगा ।
व्यापारी गाँव-गाँव में प्रवास करेगा और वस्तुएँ बेचेगा ।
बढ़ई लकड़ियाँ छीलेगा और तत्पश्चात् गढ़ेगा ।
गृहस्थ ब्राह्मणों और साधुओं को अन्न देंगे ।
श्रमण महावीर कुम्हार और मोची को धर्म समझायेंगे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगन्धित वस्तुएँ बेचनेवाला सुगन्धित वस्तुओं की प्रशंसा करेगा ।
मोची मेरे लिए जूता सीयेगा ।
कुशल तैराक अपने दोनों हाथों से तालाब को तैरेगा (पार करेगा) ।
कम्बल बेचनेवाले के शरीर के ऊपर कम्बल और लोई शोभेगी ।
ग्रीष्म के दिनों में आम के पेड़ पर कोयल कुहूकुहू करेगी ।
गुरु विद्यार्थियों को उनका पाठ समझायेंगे ।
तेली तिलों को पेरेंगे और तेल बेचेंगे ।
सुनार सोना और चाँदी के आभूषण गढ़ेगा और उनको साफ करेगा ।
लुहार लोहे को गढ़ेगा ।
नमि विद्यार्थियों और ऋषियों को मुद्ग (मूँगी) देगा ।
साड़ियाँ बेचनेवाला पटोलां, मलीर और घरचोला बेचेगा ।
धर्म मेरे दु:खी जीवन का औषध बनेगा ।
मैं चन्द्रमा को पर्वत के शिखर पर से देखूँगा ।
बन्दर आम के वृक्ष पर कूदेंगे ।
ग्रीष्म में सूर्य का तेज प्रचण्ड होगा ।
तमोली पान बेचेगा और हम खायेंगे ।
आचार्य विद्यार्थियों के बीच शोभा पायेगा ।
यह आम का वृक्ष शीतकाल में फलेगा ।
तुम दोनों दयालु और कृतज्ञ होगे ।
ऋषि कमण्डलु से शोभते हैं ।
जो अपने भोगों को त्याग देंगे, लोग उनको त्यागी कहेंगे ।
सुनार मेरे आभूषणों पर पालिश करेगा ।
कितनी ही वनस्पतियाँ ग्रीष्म में फलेंगी उनको तू खायेगा ।
किसान खेत को बारंबार खोदेगा (जोतेगा या कोड़ेगा) ।
अब मैं पान खाऊँगा, वह अपना पाठ समझेगा और तुम पानी पीओगे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाक्य (प्राकृत)

विज्जत्थी भिक्खू य सया गुरुं उवचिट्ठिस्सइ ।
गुरुणमंतिए सीसो उरुणा सह उरुं न जुंजिस्सइ ।
मिउं पि गुरुं सीसा चण्डं पकरंति ।
हत्थीसु एरावणं नायमाहु ।
मच्चू णरं णेइ हु अन्तकाले ।
रिसो रायरिसिं इमं वयणमब्बवी ।
सव्वे साहुणो, गुरुणो अनुसासणं कल्लाणं मन्निस्संति ।
'अहं अचेलए सचेलए वा' इइ भिक्खू न चिंतिस्सइ ।
सव्वे जणा अंबस्स तरुं वक्खाणिस्संति ।
मज्झे मज्झे तुं बोल्लिस्ससि ।
तुमे नच्चिस्सह, सो य गाइस्सति ।
वाणिज्जारा अम्हे गामे गामे वाणिज्जं करेहामो वत्थूइं च विक्केहिमु ।
अम्हे लोहारा लोहं ताविस्सामु तस्स च सत्थाणि घडेहिमो ।
माहणा पाणिणो पाणे न हणिस्संति ।
अह अम्हे समणं वा माहणं वा निमंतिस्सामो ।
सो सक्खं मूढो किमवि न संबुज्झिहिइ ।
तुमं वत्थं सिव्विस्ससि, अहं च पट्टोलं वणिस्सं ।
अहं सोवण्णिओ सुवण्णं सोहिहामि तस्स च आभरणाइं घडिहिमि ।
आसी भिक्खू जिइन्दियो ।
दण्डेहि, वित्तेहि, कसेहि चेव अणारिया तं रिसिं तालयंति ।
ताहे सो कुलवती समणं महावीरं अणुसासति, भणति य कुमारवर ! सउणी ताव अप्पणियं नेड्डं रक्खति ।
रायरिसिम्मि, नमिम्मि निक्खंते मिहिलानयरे सव्वत्थ सोगो आसी ।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौदहवाँ पाठ

भविष्यत्काल

स्वरान्त धातु के भविष्यत्काल के रूप साधने के लिए तृतीय पाठ में केवल स्वरान्त धातु के लिए जो विशेष साधनिका बताई है उसी का उपयोग करना चाहिए।

अंगों की समझ

विकरणविहीन	विकरणयुक्त
हो*	होअ
पा	पाअ
ने	नेअ

हो, पा, ने का रूप (उदाहरण)

प्र० पु०	होस्सं	होइस्स	होएस्सं
,, ,,	पास्सं	पाइस्सं	पाएस्सं
,, ,,	नेस्सं	नेइस्सं	नेएस्सं

कुछ अनियमित रूप

कर्

भविष्यत्काल में 'कर्' के बदले 'का' भी प्रयुक्त होता है और

---

* पालि भाषा में 'हू (भू) धातु के हू, हे, हो—ये तीन रूप होते हैं, प्राकृत में 'हे' नहीं होता (देखिए, पा० प्र० पृ० २०५)।

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२१४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसके सभी रूप स्वरान्त धातु के समान होते हैं। प्रथम पुरुष के एकवचन में[1] उसका 'काहं' रूप भी होता है। जैसे—

तृ०पु० काहिइ, द्वि०पु० काहिसि, प्र०पु० काहिमि, 'काहं' इत्यादि (पालि—काहिति, काहति—देखिए पा० प्र० पृ० २०६।)।

दा

'दा' धातु के भविष्यत्काल सम्बन्धी सभी रूप स्वरान्त धातु की भाँति होते हैं। केवल प्रथमपुरुष के एकवचन में[2] 'दाहं' रूप अधिक बनता है। जैसे—

तृ०पु० दाहिइ, द्वि०पु० दाहिसि, प्र०पु० दाहिमि, 'दाहं' आदि।

सोच्छ[3] (श्रोष्य) = सुनना।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७०।

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७०। पालि—दस्सति। ददिस्सति, दज्जिस्सति इत्यादि 'दा' के रूप—पा० प्र० पृ० २०४।

३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७२। पालि—

दिस (दृश्)—	जा (इया)—
दक्खिति	जस्सति
दक्खिस्सति	जानिस्सति
दक्खति	जि—
पस्सिस्सति	जेस्सति
सक (शक्)—	जिनिस्सति
सक्खिस्सति	की (क्री)—
वच—	केस्सति
वक्खति	किणिस्सति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोच्छ (रोत्स्य) = रोना ।
मोच्छ (मोक्ष्य) = छोड़ना, मुक्त करना ।

मुच—
मोक्खति
भुज—
भोक्खति
वस—
वच्छति
रुद—
रुच्छति
रोदिस्सति
लभ—
लच्छति
लभिस्सति
गम—
गच्छिस्सति
गमिस्सति
छिद—
छेच्छति
छिन्दिस्सति
रुध—
रुन्धिस्सति
जन—
जायिस्सति
जनिस्सति

सु (श्रु)—
सोस्सति
सुणिस्सति
गह (ग्रह)—
गहिस्सति
गहेस्सति
गण्हिस्सति
इत्यादि ।
—देखिए पा० प्र० पृ० २०६–२०९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोच्छ (भोक्ष्य) = भोजन करना, भोगना ।

वोच्छ (वक्ष्य) = कहना, बोलना ।

वेच्छ (वेत्स्य) = जानना, अनुभव करना ।

भेच्छ (भेत्स्य) = भेदना, टुकड़ा करना ।

छेच्छ (छेत्स्य) = छेदना ।

दच्छ (द्रक्ष्य) = देखना ।

गच्छ (गंस्य) = जाना, प्राप्त करना ।

केवल उपर्युक्त दस धातुओं में 'हि' आदि (हिमि, हिसि, हिमो, हिम, हिइ आदि) प्रत्यय लगाने से पूर्व उनके आदि का 'हि' विकल्प से लुप्त हो जाता है । जैसे—

सोच्छ + हिमि = सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि आदि ।

इन दस धातुओं के प्रथम पुरुष एकवचन में अनुस्वार वाला एक रूप अधिक होता है । जैसे—

सोच्छं, वेच्छं, दच्छं ।

सोच्छिस्सं, वेच्छिस्सं, दच्छिस्सं आदि ।

शेष सबकी साधनिका 'भण' धातु के समान है ।

'सोच्छ' का रूप (उदाहरण)

केवल एकवचन में

प्र० पु०	सोच्छं	सोच्छिमि	सोच्छिस्सामि	
	सोच्छिस्सं	सोच्छेमि	सोच्छेस्सामि	
	सोच्छेस्सं	सोच्छिहिमि	सोच्छिहामि	
		सोच्छेहिमि	सोच्छेहामि	
म० पु०	सोच्छिसि	सोच्छेसि	सोच्छिहिसि	सोच्छेहिसि
	सोच्छिसे	सोच्छेसे	सोच्छिहिसे	सोच्छेहिसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ० पु० सोच्छिइ   सोच्छेइ   सोच्छिहिइ   सोच्छेहिइ
सोच्छिए   सोच्छेए   सोच्छिहिए   सोच्छेहिए इत्यादि।

आर्ष प्राकृत में उपलब्ध कुछ अन्य अनियमित रूप—

(मोक्ष्यामः)—मोक्खामो ।
(भविष्यति)—भविस्सइ ।
(करिष्यति)—करिस्सइ ।
(चरिष्यति)—चरिस्सइ ।
(भविष्यामि)—भविस्सामि ।
(भू—भो + ष्यामि)—होक्खामि ।

अमु (अदस् = यह) शब्द के रूप (पुल्लिंग)

	एकव०		बहुव०	
प्र०	अह[1] अमू[2] असो[3]	(असौ)	अमुणो अमू	(अमी)
द्वि०	अमुं	(अमुम्)	अमुणो अमू	अमून्
स०	अयम्मि[4] इअम्मि अमुम्मि	(अमुष्मिन्)	अमूसु अमूसुं	(अमीषु)

शेष सभी रूप 'भाणु' शब्द की भाँति चलेंगे ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।८७ ।   २. हे० प्रा० व्या० ८।३।८८ ।
३. सं० 'असौ' रूप के अन्त्य 'औ' को 'ओ' करने से यह रूप बनता है ।
४. हे० प्रा० व्या० ८।३।८९ ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अमु (अदस् = यह) शब्द के रूप (नपुंसकलिङ्ग)

	एकव०	बहुव०	
प्र०	अह, अमु (अदः)	अमूणि, अमूइं, अमूइँ	(अमूनि)
द्वि०	,, ,, (,,)	,, ,, ,,	(,,)

शेष रूप 'अमु' शब्द की भाँति होंगे।

इकारान्त और उकारान्त शब्द (पुंल्लिङ्ग)

सारहि (सारथि) = सारथि, रथ चलानेवाला।
वरदंसि (वरदर्शिन्) = श्रेष्ठ रीति से देखनेवाला।
माराभिशंकि (माराभिशंकिन्) = मार—तृष्णा से शंकित—भयभीत रहनेवाला, दूर रहनेवाला।
वाहि (व्याधि) = व्याधि, रोग।
महासड्ढि (महाश्रद्धिन्) = महती श्रद्धा वाला, अचल श्रद्धावान्।
तवस्सि (तपस्विन्) = तपस्वी।
उवाहि (उपाधि) = उपाधि, प्रपञ्च, जञ्जाल।
जन्तु (जन्तु) = जन्तु, प्राणी, जीव-जन्तु।
जोगि (योगिन्) = योगी।
केसरि (केसरिन्) = केसरी, सिंह।
मंति (मन्त्रिन्) = मन्त्री।
चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) = चक्रवर्ती, राजा।
पवासि (प्रवासिन्) = प्रवास करने वाला, प्रवासी, यात्री।
पहु (प्रभु) प्रभु, प्रभावशाली, समर्थ।
तंतु (तन्तु) = तन्तु, धागा।
महातवस्सि (महातपस्विन्) = महातपस्वी।
समत्तदंसि (सम्यक्त्वदर्शिन्) = सत्य को देखने, समझने और आचरण करनेवाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसु (पशु) = पशु ।
विहु (विधु) = विधु, चन्द्र ।
वसु (वसु) = वसु, धन, पवित्र मनुष्य ।
संभु (शम्भु) = शंभु, सुखका स्थान, महादेव ।
संकु (शङ्कु) = शंकु—कीला, खीला ।

सामान्य शब्द (पुंल्लिङ्ग)

मग्ग (मार्ग) = मार्ग, रास्ता ।
मार (मार) = मारनेवाली–तृष्णा ।
दुस्सीस } (दुश्शिष्य) = दुष्ट शिष्य, दुष्ट विद्यार्थी ।
दुस्सिस्स }
ववहारिअ (व्यावहारिक) = व्यापारी ।
थेर (स्थविर) = स्थिर बुद्धि वाला, वयोवृद्ध सन्त ।
गग्ग (गार्ग्य) = गर्ग का पुत्र—गार्ग्य—एक ऋषि ।
वेवाहिअ (वैवाहिक) = लड़के अथवा लड़की के ससुरालवाले ।
ववहार (व्यवहार) = व्यवहार ।
कंसआर, कंसार (कांस्यकार) = कसेरा, ठठेरा, बर्तन बेचनेवाला ।
लेहसालिअ (लेखशालिक) = पाठशाला में पढ़नेवाला विद्यार्थी ।
सुमिण, सिमिण, सुविण, सिविण (स्वप्न) = स्वप्न ।
गणहर, गणधर (गणधर) = गणधर, गण–समूह की व्यवस्था करने वाला आचार्य ।
अणागम, अनागम (अन् + आगम) = न आना, अनागम ।
कण्ण (कर्ण) = कर्ण, कान ।
विराग (विराग) = वैराग्य, अनासक्ति, उदासीन वृत्ति ।
विप्परियास (विपर्यास) = विपर्यास, भ्रान्ति, विपरीतता ।
सढ (शठ) = शठ, धूर्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामान्य शब्द (नपुंसकलिङ्ग)

रूप (रूप) = रूप–वस्तु–पदार्थ ।
कम्म (कर्मन्) = कर्म—पाप-पुण्य की प्रवृत्ति ।
जाण (यान) = यान, वाहन, गाड़ी ।
मच्चुमुह (मृत्युमुख) = मृत्यु-मुख, मौत का मुँह ।
जुम्म, जुग्ग (युग्म) = युग्म, जोड़ा, जुगल ।
छणपअ, छणपय (क्षणपद) = हिंसा का स्थान ।
मरण (मरण) = मृत्यु, मौत ।
धम्मजाण (धर्मयान) = धर्मरूपी वाहन ।
महब्भय (महाभय) = महाभय ।
पुच्छ (पुच्छ) = पूँछ ।

विशेषण

तिम्म, तिग्ग (तिग्म) = तीक्ष्ण, तेज ।
पुण्ण (पुण्य) = पुण्य, पवित्र काम ।
पंत (प्रान्त) = अन्त का, शेष, बचा हुआ ।
विब्भल, विहल (विह्वल) = विह्वल, घबराया हुआ ।
जोइअ, जोइय (योजित) = जुड़ा हुआ, जोड़ा हुआ ।
डज्झमाण (दह्यमान) = जला हुआ ।
पुण्ण (पूर्ण) = पूर्ण, भरा हुआ, सम्पत्ति वाला ।
तुच्छ (तुच्छ) = तुच्छ, रंक, अधूरा ।
पन्नत्त (प्रज्ञप्त), प्रज्ञप्त, बताया हुआ, कहा हुआ ।
लक्ख, लूह (रुक्ष) = रूखा, बिना आसक्ति का ।
सीलभूअ (शीलभूत) = शीलभूत, सदाचाररूप, सदाचारी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अव्यय

इत्थं (इत्थम्) = इस प्रकार।
तु (तु) = तो।
इह (इह) = यहाँ।
दाणि, दाणिं, इयाणि, इयाणिं (इदानीम्) = अब, इस समय, आजकल।
ईसि, ईसिं (ईषत्) = ईषत्, थोड़ा, संकेतमात्र।
एअं (एतत्) = यह।
उप्पि, अवरिं, उवरिं, उवरि (उपरि) = ऊपर।

धातुएँ

वि + हर् (वि + हर्) = विहार करना, घूमना, पर्यटन करना।
डस् (दंश्) = डसना, दंश मारना।
प + गब्भ (प्र + गल्भ) = प्रगल्भ होना, शेखी मारना, बढ़-बढ़ कर बात करना।
अमराय, अमरा (अमराय) = अमर—देव की भाँति रहना, अपने को अमर समझना।
अइ + वाअ (अति + पात) = अतिपात करना, नाश करना।
वि + सीअ (वि + षीद) = विषाद पाना, खेद करना, खिन्न होना।
कत्थ (कत्थ) = कहना।
फुट्ट (स्फुट) = स्फुट होना, खिलना।
वि + चिन्त् (वि + चिन्त) = चिन्तन करना, सोचना।
विंध् (विध्य) = बींधना, छेदना, भेदन करना।
उ + क्कुद्द (उत् + कूर्द) = ऊँचा कूदना।
भज्ज् , भंज् (भञ्ज) = भाँगना, तोड़ना, फोड़ना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अव + सीअ (अव + सीद) = अवसाद पाना, खेद पाना ।
लिप्प् (लिप्य) = लेप करना ।
सं + जम् (सं + यम) = संयम करना ।
पडि + कूल (प्रति + कूल) = प्रतिकूल, विपरीत होना ।
सर् (स्मर्) = स्मरण करना ।
प + मुच्च (प्र + मुच्य) = प्रमुक्त होना, बिलकुल छूट जाना ।
सेव् (सेव्) = सेवन करना ।
विज्ज् (विज्ज्) = विद्यमान रहना, उपस्थित होना ।
हिंस् (हिंस्) = हिंसा करना, जीव मारना ।
उव + इ (उप + इ) = पास जाना, प्राप्त करना ।

वाक्य (हिन्दी)

पण्डितजन हर्षित नहीं होंगे और कोप भी नहीं करेंगे ।
हम दोनों आचार्य से इस प्रकार बारम्बार कहेंगे ।
यह विद्यार्थी बड़ाई नहीं करेगा अपितु संयम रखेगा ।
मैं यह सत्य कह दूँगा ।
गाड़ीवान बैलों को सम्भालेगा और गाड़ी में जोतेगा ।
तपस्वी योगी व्याधियों से नहीं डरेगा ।
गार्ग्य मुनि गणधर बनेगा ।
वन का सिंह जंगली हाथी के मस्तक को छेदेगा ।
आचार्य पुर्ण और तुच्छ दोनों को धर्म कहेगा ।
'सभी को जीवन प्रिय है' ऐसा कौन अनुभव नहीं करेगा ?
दुष्ट शिष्य नहीं पढ़ेंगे अपितु निरंतर अपनी बड़ाई करेंगे और कूदेंगे ।

वाक्य (प्राकृत)

समणे महावीरे जहा पुण्णस्स कत्थिहिइ तहा तुच्छस्स कत्थिहिइ ।
धम्मं वेच्छं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुवं भोच्छं ।
एगे डसइ पुच्छम्मि, एगे विधइ अभिक्खणं ।
दुक्खं मह्ब्भयं ति वोच्छं ।
जिणस्स वयणाइं कण्णेहिं सोच्छं ।
दाणं दाहं, पुण्णं काहं तत्तो य दुक्खं छेच्छं ।
रूवेसु विरागं गच्छं ।
धम्मेण मरणाओ मोच्छं ।
जेहिं अहं विसीएस्सामि तेहिं कयावि सुविणे वि न रोच्छं ।
सोलभूओ मुणी जगे विहरिस्सइ ।
अह सो सारही विचिंतेहिइ ।
वीरो भडो जुद्धं काहिइ ।
रायगिहं गच्छं, महावीरं वंदिस्सं ।
गुरुणो सच्चमाहसु ।
अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ ।
तुमं किं किं पावं, पुण्णं च कासी ।
सढे उक्कुट्टिहिए पगब्भिस्सति य ।
तस्स मुहं दच्छं तेण य सुहं पाविस्सं ।
वीरे छणपएण ईसिमवि न लिप्पिहिइ ।
जं वोच्छं तं सोच्छिसे ।
नाऽणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि ।
तवेण पावाइं भेच्छं ।
महासीड्ढ अमरायइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पन्द्रहवाँ पाठ

ऋकारान्त शब्द

ऋकारान्त शब्दों (नामों) के दो प्रकार हैं। उनमें कुछ ऋकारान्त शब्द सम्बम्धसूचक विशेष्यरूप हैं तथा कुछ केवल विशेषणरूप हैं। सम्बन्धसूचक विशेष्यरूप—जामातृ, पितृ, भ्रातृ आदि। केवल विशेषण-रूप—कर्तृ, दातृ, भर्तृ आदि।

ऋकारान्त (सम्बन्धसूचक-विशेष्यरूप) शब्द

१. प्रथमा और द्वितीया के एकवचन को छोड़कर सब विभक्तियों में सम्बन्धसूचक विशेष्यरूप ऋकारान्त शब्द के अन्त्य 'ऋ' को विकल्प से 'उ' होता है (देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।४४।)। जैसे—पितृ = पितु, पिउ। जामातृ = जामातु, जामाउ। भ्रातृ = भातु, भाउ।

२. सम्बन्धसूचक विशेष्यरूप ऋकारान्त शब्द के अन्त्य 'ऋ' को सब विभक्तियों में 'अर' होता है (देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।४७)। जैसे—पितृ = पितर, पियर। जामातृ = जामातर, जामायर। भ्रातृ = भातर, भायर।

३. केवल प्रथमा के एकवचन में उक्त शब्द के अन्त्य 'ऋ' को 'आ' विकल्प से होता है (देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।४८)। जैसे—पितृ = पिता, पिया। जामातृ = जामाता, जामाया। भ्रातृ=भाता, भाया।

४. केवल सम्बोधन के एकवचन में इन शब्दों (नामों) के अन्त्य 'ऋ' को 'अ' और 'अरं' दोनों विकल्प से होते हैं। जैसे—पितृ = पित ! पितरं ! पितरो ! पितरा ! पिय ! पियरं ! पियरो ! पियरा !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जामातृ = जामात ! जामातरं ! जामातरो ! जामातरा !
जामाय ! जामायरं ! जामायरो ! जामायरा !

मातृ = मात ! मातरं ! मातरो ! मातरा !
माय ! मायरं ! मायरो ! मायरा ।

ऋकारान्त विशेषण-सूचक

१. सम्बन्धसूचक विशेष्यरूप ऋकारान्त शब्दों में पहला और तीसरा नियम लगता है, विशेषणरूप ऋकारान्त शब्द में भी वही लगता है। जैसे—दातृ = दातु, दाउ, कर्तृ = कत्तु, भर्तृ = भत्तु इत्यादि प्रथम नियम के अनुसार।

दाता, दाया; कत्ता, भत्ता दूसरे नियम के अनुसार।

२. विशेषणरूप ऋकारान्त शब्द के अन्त्य 'ऋ' को सभी विभक्तियों में 'आर' होता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।४५) । जैसे—दातृ = दातार, दायार, कर्तृ = कत्तार, भर्तृ = भत्तार ।

३. केवल सम्बोधन के एकवचन में विशेषणरूप ऋकारान्त शब्दों के 'ऋ' को 'अ' विकल्प से होता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।३९)। जैसे—
दातृ = दाय ! दायार ! दायारो ! दायारा !
कर्तृ = कत्त ! कत्तार ! कत्तारो ! कत्तारा !
भर्तृ = भत्त ! भत्तार ! भत्तारो ! भत्तारा !

उक्त दोनों प्रकार के ऋकारान्त शब्द उपर्युक्त साधनिका के अनुसार प्रथमा से सप्तमी पर्यन्त सभी विभक्तियों में अकारान्त और उकारान्त बनते हैं। अतः इसके अकारान्त अंग के रूप 'वीर' शब्द की भाँति और उकारान्त अंग के रूप 'भाणु' शब्द की भाँति होंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिउ, पितु[1], पिअर, पितर (पितृ = पिता) शब्द के रूप*

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	पिअरो, पिआ (पिता) पितरो	पिअरा, पितरा (पितरः) पितुणो, पिउणो, पिअवो, पिअओ पिअउ, पिऊ, पितू

1. 'पितु' के रूप 'पिउ' के समान होंगे तथा 'पितर' के रूप 'पिअर' के समान चलेंगे।

*पितु शब्द के पालि भाषा में रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०	पिता	पितरो
द्वि०	पितरं	पितरो, पितरे
तृ०	पितरा, पितुना (पित्या, पेत्या)	पितरेहि, पितरेभि पितूहि, पितूभि
च०	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं पितूनं, पितुन्नं
पं०	पितरा, पितुना	पितरेहि, पितरेभि पितूहि, पितूभि
ष०	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं पितूनं, पितुन्नं
स०	पितरि	पितरेसु, पितूसु, पितुसु
सं०	पित ! पिता !	पितरो !

—देखिए पा० प्र० पृ० ९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि०	पिअरं, पितरं (पितरं)	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिउ (पितॄन्)
तृ०	पिअरेण, पिअरेणं, पितरेण, पितरेणं पिउणा, पितुना (पित्रा)	पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ (पितृभिः)
च०	पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स (पित्रे)	पिअराण, पिअराणं पिऊण, पिऊणं (पितृभ्यः)
पं०	पिअराओ, पिअराउ पिअरा, पिउणो पिऊओ, पिऊउ (पितृतः पितुः)	पियराओ, पिअराउ पिअराहि, पिअरेहि पिअराहिंतो, पिअरेहिंतो पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो पिऊओ, पिऊउ पिऊहिंतो पिअसुंतो (पितृभ्यः, पितृतः)
ष०	पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स, (पितुः)	पिअराण, पिअराणं पिऊण, पिऊणं (पितॄणाम्)
स०	पिअरंसि, पिअरम्मि, पिअरे, पिउंसि, पिउंम्मि (पितरि)	पिअरेसु, पिअरेसुं पिऊसु, पिऊसुं (पितृषु)
सं०	पिअरं ! पिअ ! (पितः) पिअरो ! पिअरा ! पिअर !	पिउणो ! पिअवो ! पिअओ ! पिअउ, पिऊ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[1]दाउ, दायार* (दातृ = दाता) शब्द के रूप (पुल्लिंग)

प्र०	दायारो, दातारो, दाया (दाता)	दायारा, दाउणो, दायवो, दायओ, दाऊ (दातारः)
द्वि०	दायारं दातारं (दातारम्)	दायारे, दायारा, दाउणो, दाऊ, (दातॄन्)
तृ०	दायारेण, दायारेणं, दातारेण, दाउणा दातुणा (दात्रा)	दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिँ दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिँ (दातृभिः)
च०	दायारस्स दाउणो, दाउस्स (दात्रे)	दायाराण, दायाराणं दाऊण, दाऊणं (दातृभ्यः)

[1]दातु शब्द के पालि रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०	दाता	दातारो
द्वि०	दातारं	दातारो, दातारे
तृ०	दातारा, दातुना	दातारेहि, दातारेभि
च०	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातारानं, दातानं, दातूनं
पं०	दातारा	दातारेहि, दातारेभि
ष०	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातारानं, दातानं, दातूनं
स०	दातरि	दातारेसु, दातूसु
सं०	दात, दाता !	दातारो !

—देखिए पा० प्र० पृ० ९६

★ प्राकृत में 'दातार' शब्द के भी रूप 'दायार' के समान होते हैं तथा 'दातु' शब्द के भी रूप 'दाउ' के समान होते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं०	दायराओ, दायाराउ	दायाराओ, दायाराउ
	दायरा	दायाराहि, दायारेहि
	दाऊणो, दाऊओ, दाऊउ	दायाराहितो, दायारेहितो
	(दातृतः दातुः)	दायारासुंतो, दयारेसुंतो
		दाऊणो, दाऊउ (दातृतः)
		दाउहितो, दाऊसुंतो (दातृभ्यः)
ष०	दायारस्स, दाउणो	दायाराण, दायाराणं
	दाउस्स (दातुः)	दाऊण, दाऊणं (दातृणाम्)
स०	दायारंसि, दायारम्मि	दायारेसु, दायारेसुं
	दायारे (दातरि)	
	दाउंसि, दाउम्मि	दाऊसु, दाऊसुं (दातृषु)
सं०	दायार ! दाय ! (दातः)	दायारा ! (दातारः)
	दायारो ! दायारा !	दाउणो, दायवो, दायओ
		दायउ, दाऊ

(पिआ, पिअरं आदि रूपों में 'आ' तथा 'अ' के स्थान में 'या' और 'य' भी उपलब्ध होता है। जैसे—पिआ, पिया, पिअरं, पियरं, पिअरे, पियरे इत्यादि।)

सम्बन्धवाचक ऋकारान्त (पुंलिङ्ग) अंग

भाउ, भायर (भ्रातृ) = भाई पिउ, पियर (पितृ) = पिता

जामाउ, जामायर (जामातृ) = जामाता

विशेषणवाचक ऋकारान्त (पुलिङ्ग) अंग

दाउ, दायार (दातृ) = दाता, दातारं

भत्तु, भत्तार (भर्तृ) = भर्ता—भरण-पोषण करनेवाला, भर्तार

कत्तु, कत्तार (कर्तृ) = कर्ता, करनेवाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऋकारान्त (नपुंसकलिङ्ग) अंग

ऋकारान्त के 'कत्तार' इत्यादि आकारान्त अंग के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में 'कमल' की भाँति तथा 'कत्तु' आदि उकारान्त अंग के रूप केवल प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में 'महु' की भाँति होते हैं, शेष सम्बोधनसहित सभी रूप पुंल्लिङ्ग रूपों के समान समझें। जैसे—

अकारान्त अंग-दायार के रूप

प्र०	दायारं	दायाराणि, दायाराइं, दायाराइँ
द्वि०	दायारं	दायाराणि ,, ,,
सं०	दाय! दायार!	,, ,, ,,

शेष सभी पुंलिङ्ग रूपों की भाँति होंगे।

उकारान्त अंग एकवचन में प्रयुक्त भहीं होता।

(देखिए पाठ १५ वाँ, नि० १)

प्र०-द्वि० सं० } दाऊणि, दाऊइं, दाऊइँ, दातूणि, दातूइं, दातूइँ (दातॄणि)

अकारान्त अंग—सुपिअर (=सुपितृ) शब्द के रूप

प्र०	सुपिअरं, सुपितरं	सुपिअराणि, सुपिअराइं, सुपिअराइँ सुपितराणि, सुपितराइं, सुपितराइँ
द्वि०	सुपिअरं, सुपितरं	,, ,, ,,
सं०	सुपिअरं! सुपिअर! सुपिअ!	,, ,, ,,

उकारान्त अंग-सुपिउ (=सुपितृ) के रूप

प्र०-द्वि० सं० } सुपिऊणि, सुपिऊइं, सुपिऊइँ, सुपितूणि (सुपितॄणि)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामान्य शब्द (पुलिङ्ग)

कुक्खि, कुच्छि (कुक्षि) = कुक्षि, कोख ।
वाणिअ (वाणिज) = वैश्य, बनिया ।
धणि (धनिन्) = धनपति, धनी ।
वहिणीवइ (भगिनिपति) = भगिनिपति, बहन का पति, जीजा, बहनोई ।
आस (अश्व) = अश्व, घोड़ा ।
पोट्टिय (पृष्ठिक) = पीठ ऊपर वहन करनेवाला महादेव का नन्दी ।
कवड्ड (कपर्द) = कौड़ी ।
गड्डह, गद्दह (गर्दभ) = गर्दभ, गधा ।
उट्ट (उष्ट्र) = ऊँट ।
वच्छ (वत्स) = वत्स, गाय का बछड़ा, बेटा ।
वच्छयर (वत्सतर) = घोड़े का बच्चा, बछेड़ा ।
अंध, अंधल (अन्ध) = अन्धा ।
देवर (देवर) = देवर ।
जेट्ठ (ज्येष्ठ) = ज्येष्ठ ।
रुक्ख (वृक्ष) = वृक्ष, रूख ।
अग्गि (अग्नि) = अग्नि ।
रस्सि (रश्मि) = लगाम, रश्मि, सूर्य की किरण ।
झुणि (ध्वनि) = ध्वनि, आवाज ।
अच्चि (अर्चिस्) = अग्नि की ज्वाला ।
मरहट्ठ (महाराष्ट्र) = महाराष्ट्र, दक्षिण भारत का एक देश, मराठा ।
मरहट्ठीअ (महाराष्ट्रीय) = महाराष्ट्र का निवासी ।
मूअ (मूक) = गूँगा ।
घोडअ (घोडक) = घोड़ा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुरंगम (तुरंगम)= घोड़ा ।
अक्क (अर्क) = सूर्य, आक का झाड़, अकवन ।
नग्ग (नग्न)= नग्न, नंगा, बदमाश, निर्लज्ज ।
सुरट्ठ (सुराष्ट्र) = सोरठ देश ।
सुरट्ठीअ, सोरट्ठीअ (सुराष्ट्रीय)= सोरठ देश का निवासी ।

सामान्य शब्द (नपुंसकलिङ्ग)

अंसु (अश्रु) = आँसू ।
लोहिअ (लोहित) = लाल, रक्त ।
सत्थिल्ल, सत्थि (सक्थि) = जंघा ।
तालु (तालु) = तालु ।
दारु (दारु) = लकड़ी ।
दुवार, बार (द्वार) = द्वार, दरवाजा ।
णडाल (ललाट) ललाट, मस्तक ।
भाल (मस्तक) = भाल, ललाट, मस्तक ।
वरिस (वर्ष) = वर्ष ।
दिण (दिन)= दिन ।
जोव्वण (यौवन) = यौवन ।
दीवेल्ल, दीवतेल्ल (दीपतेल) = दीपक जलाने का तेल ।
कोहल (कूष्माण्ड)= पेठा ।
दहण (दहन) = अग्नि ।
धन्न (धान्य) = धान्य ।
तेल्ल (तैल)= तेल ।
तंब = (ताम्र) = ताम्बा, एक धातु ।
कंजिय (काञ्जिक)= कांजी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संख्यासूचक विशेषण

पढम (प्रथम) = प्रथम, पहला ।

बिइय, बिइज्ज, दुइय, दुइज्ज (द्वितीय) = द्वितीय, दूसरा ।

तइय, तइज्ज (तृतीय) = तृतीय, तीसरा ।

चउत्थ (चतुर्थ) = चतुर्थ, चौथा ।

पञ्चम (पञ्चम) = पाँचवाँ ।

छट्ठ (षष्ठ) = छठा ।

सत्तम (सप्तम) = सातवाँ ।

अट्ठम (अष्टम) = आठवाँ ।

नवम (नवम) = नवाँ ।

दसम (दशम) = दसवाँ ।

सवाय (सपाद) = सवाया, सवा ।

दियड्ढ, दिवड्ढ (द्वितीयार्ध) = डेढ़, एक और आधा ।

अड्ढीय, अड्ढाइअ, अड्ढाइज्ज (अर्धतृतीय) = ढाई, दो और आधा ।

अद्धुट्ठ (अर्धचतुर्थ) = ऊंठ, ऊँठा—साढ़े तीन, तीन और आधा ।

पाय (पाद) = पाव–चोथा भाग, चौथाई, चतुर्थांश ।

अद्ध, अड्ढ (अर्ध) = अर्ध, आधा ।

पाऊण (पादोन) = पौन, $\frac{3}{4}$ पौन भाग ।

अव्यय

अहव[1], अहवा (अथवा) = अथवा ।

अवस्सं (अवश्यम्) = अवश्य, जरूर ।

---

१. उपयोग—'एत्थ तुमं अहवा सो आगच्छउ' अर्थात् यहाँ तू अथवा वह आवे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थं (अस्तम्) = अस्त होना, छिपना, लोप होना।
एगया (एकदा) = एकदा, एक बार।
कहि, कहिं (कुत्र) = कहाँ।
आम (आम) = आम, 'हाँ' सूचक अव्यय।
अंतो (अंतर) = अभ्यन्तर, अन्दर।
इओ (इत:) = इससे, यहाँ से वाक्य, का आरम्भ।
केवलं (केवलम्) = केवल, सिर्फ।
तहि, तहिं (तत्र) = वहाँ।

धातुएँ

अच्चे (अति + इ) = अतीत, व्यतीत होना, पार पाना।
पडि + वज्ज् (प्रति + पद्य) = पाना, स्वीकार करना।
कोव (कोप्) = क्रोध करना, कराना।
आ + गम् (आ + गम्) = आना।
अहि + ट्ठ (अधि + स्था) = अधिष्ठान पाना, ऊपरी स्थान प्राप्त करना।
एस् (एष) = एषणा करना, शोधना।
परि + व्वय् (परि + व्वय्) = परिव्रज्या लेना, बन्धनरहित होकर चारो ओर पर्यटन करना।
सं + प + आउण् (सम् + प्र + आप् + नु) = सम्यक् प्रकार से पाना।
आ + यय् (आ + दय) = आदान करना, ग्रहण करना।
परि + देव् (परि + दिव) = खेद करना।
वि + हड् } (वि + घट) = बिगड़ना, छिन्न-भिन्न होना, नाश होना।
वि + घड् }
प + क्खाल (प्र + क्षाल) = प्रक्षालन करना, धोना।
सम् + आ = समा + रंभ (सम् + आ + रम्भ) = समारम्भ करना, मारना।
णि + व्विज्ज् (निर् + वेद्) = निर्वेद पाना, विरक्त होना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाक्य (हिन्दी)

उनका गधा रंगा हुआ है ।

घोड़ा, बैल (नंदो) और ऊँट धान्य खायेंगे ।

हमारे बहनोई का लड़का प्रतिवर्ष धन पायेगा ।

तुम्हारे भाई ने अपने जामाता को सवाई भाग दिया ।

अढ़ाई वर्ष साढ़े तीन मास डेढ़ दिन में हम आयेंगे ।

तुम्हारा जामाता दिन-प्रतिदिन विरक्त होता जाता है इसलिए तुम्हारा कुटुम्ब खेद पाता है ।

वह पाँचवें अथवा आठवें दिन जायेगा ।

मुनि ने मृत्यु को पार किया ।

हम पिता जी को कुपित नहीं करेंगे ।

चौथे के अन्दर साढ़े तीन हैं ।

हम शब्द बोलेंगे ।

अग्नि की ज्वाला में तेल गिरेगा ।

सातवें वर्ष उस दाता ने सारा धन दे दिया ।

वाक्य (प्राकृत)

सुरट्ठीआ कोहं न काहिंति ।

तुम्हें सोरट्ठीए धोडए वक्खाणेह ।

सोवण्णिओ दहणंसि तंबं खिवित्था ।

भूओ केवलं कंजिअं पाहिइ ।

दुवारंसि कोहलं पडिहिइ ।

गड्डहो तुरंगमो य दोन्नि भायरा संति ।

दिणे दिणे तुमं आसं च पक्खालिस्सं ।

तेल्लेण दीवा दीवेहिंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो तुज्झ भाया तस्स जामाऊहिं सह गच्छीअ ।
तस्स पिउणो भाउणो य जोव्वणं विघडीअ ।
मरहट्टीआ लोहं चयंति ।
सत्तमंसि वरिसंसि आगमिस्सं ।
मम भाउणो भालं विसालमत्थि ।
तस्स छट्टो भायरो न परिव्वयिहिए ।
अहं बिइज्जे दिणे दीवेल्लं पाएहिमि ।
मम बहीणीवई एगया धणं संपाउणित्था ।
पिअ ! मम वयणं न सुणिहिसि ?

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलहवाँ पाठ

आज्ञार्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	मु	मो
म०पु०	सु, हि (स्व, हि) इज्जसु, इज्जहि, इज्जे	ह (ध्वम्)
तृ०पु०	उ, तु (तु)	न्तु (अन्तु)

पालि भाषा में आज्ञार्थक को 'पंचमी' के नाम से पहिचानते हैं* । संस्कृत में श्री हेमचन्द्राचार्य ने भी यही नाम स्वीकार किये हैं परन्तु पाणिनीय व्याकरण में आज्ञार्थ को 'लोट्' कहते हैं । पुरन्त प्राकृत में ये ही प्रत्यय आज्ञार्थ में तथा विध्यर्थ में समान रीति से उपयोग में आते हैं (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।२।१७३ तथा १७६; हे० प्रा० व्या० ८।३।१७५) ।

---

* पालि में 'पंचमी' के प्रत्यय :—

परस्मैपद

	एकवच०	बहुव०
प्र०पु०	मि	म
म०पु०	हि	थ
तृ०पु०	तु	अंतु

आत्मनेपद

प्र०पु०	ए	आमसे
म०पु०	स्सु	व्हो
तृ०पु०	तं	अंतं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्छा-सूचन, विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट, संप्रश्न, प्रार्थना, प्रैष, अनुज्ञा, अवसर और अधीष्टि—इन अर्थों को सूचित करने के लिए विध्यर्थक और आज्ञार्थक प्रत्ययों का प्रयोग होता है। ये प्रयोग निम्नोक्त प्रकार से हैं—

१. इच्छा-सूचन—मैं चाहता हूँ वह भोजन करें—
'इच्छामि स भुञ्जउ'

'भू' धातु के रूप—

परस्मैपद

प्र० पु०	भवामि	भवाम
म० पु०	भव, भवाहि	भवथ
तृ० पु०	भवतु	भवंतु

'भू' धातु के रूप :—

आत्मनेपद

प्र० पु०	भवे	भवामसे
म० पु०	भवस्सु	भवह्वो
तृ० पु०	भवतं	भवंतं

'अस्' धातु के रूप :—

प्र० पु०	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह
म० पु०	आहि	
तृ० पु०	अत्थु	संतु

—देखिए पा० प्र० पृ० १६१, १६२।

शौरसेनी प्रत्यय की विशेषता :—

'तु' के स्थान में 'दु' का प्रयोग होता है। जैसे:—जीव + दु = जीवदु; मर + दु = मरदु। अन्य सब प्रत्यय प्राकृत के समान हैं। परन्तु प्राकृत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. विधि—किसी को प्रेरणा करना। जैसे—वह वस्त्र सीए 'सो वत्थं सिव्वउ''।

३. निमन्त्रण—प्रेरणा करने पर भी प्रवृत्ति न करने वाला—दोष का

प्रत्ययों में जहाँ 'ह' है वहाँ शौरसेनी में 'ध' कर देना चाहिए। जैसे—'हसहिं'—शौरसेनी हसधि; 'हसह'—शौरसेनी 'हसध' इत्यादि।

अपभ्रंश भाषा के सब प्रत्यय शौरसेनी के समान हैं परन्तु मध्यम पुरुष के एकवचन में जो प्रत्यय अधिक हैं वे इस प्रकार हैं :—

इ, उ, ए, सु।

अपभ्रंश के रूप :—

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	हरिसमु, हरिसामु, हरिसेमु	हरिसमो, हरिसामो, हरिसेमो
म०पु०	हरिससु, हरिसेसु	हरिसह, हरिसहे
	हरिसिज्जसु, हरिसेज्जसु	हरिसध, हरिसधे
	हरिसिज्जहि, हरिसेज्जेहि	
	हरिसाहि, हरिसहि	
	हरिसिज्जे, हरिसेज्जे	
	हरिस, हरिसि, हरिसु, हरिसे	
तृ०पु०	हरिसदु, हरिसदे, हरिसउ, हरिसेउ	हरिसंतु, हरिसेंतु, हरिसिंतु

प्राकृत के हरिसिज्जसु, हरिसिज्जहि, हरिसिज्जे प्रयोगों का मागधी रूप बनाने पर 'हरिस्' का 'हलिश्' हो जाएगा तथा इज्जसु, इज्जहि, इज्जे प्रत्यय का इय्यशु, इय्यधि, इय्ये—ऐसा परिवर्तन हो जाएगा (देखिए पृ० ३४ तथा पृ० ६६ नि० ५)। प्राकृत रूपों में मागधी भाषा के नियमानुसार परिवर्तन करके सब रूप बना लें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भागीदार हो ऐसी प्रेरणा—निमन्त्रण—होता है। जैसे—दो बार सन्ध्या करो "दुवेलं संझं कुणउ"।

४. आमन्त्रण—प्रेरणा करने पर भी प्रवृत्ति करना या न करना उसकी इच्छा पर निर्भर रहे ऐसी प्रेरणा। यहाँ बैठो "एत्थ उवविसउ"।

५. अधीष्ट—सादर प्रेरणा—व्रत का पालन करो "वयं पालउ"।

६. संप्रश्न—एक प्रकार की धारणा। जैसे—क्या मैं व्याकरण पढ़ूँ अथवा आगम "किं अहं वागरणं पढामु उअ आगमं पढामु"।

७. प्रार्थना—याचना, प्रार्थना—मेरी प्रार्थना हैं मैं आगम पढ़ूँ "पत्थणा मम आगमं पढामु"।

८. प्रैष—तिरस्कारपूर्वक प्रेरणा—घड़ा बनाओ "घडं कुणउ"।

९. अनुज्ञा—नियुक्त करना—तुम को नियुक्त किया है, घड़ा बनाओ "भवं हि अणुन्नाओ घडं कुणउ"।

१०. अवसर—समय—तुम्हारे काम का समय हो गया है इसलिए घड़ा बनाओ "भवओ अवसरो घडं कुणउ"।

११. अधीष्टि—सम्मानपूर्वक प्रेरणा—तुम पण्डित हो, व्रत की रक्षा करो "भवं पण्डिओ वयं रक्खउ"।

धातुएँ

वज्ज (वर्ज्) = वर्जना, त्याग देना, निरोध करना।

छिंद (छिन्द्) = छेदना, छिन्न करना, अलग करना।

लभ (लभ्) = पाना, प्राप्त करना।

गवेस् (गवेष्) = गवेषणा करना, शोधना, खोज करना।

वि + किर्, वि + इर् (वि + किर) = बिखेरना, फैलाना, छिटना।

वि + प्प + जह (वि + प्र + जहा) = त्याग करना, दूर करना।

कुव्व् (कुरु) = करना, बनाना।

पसस्, पास् (दृश्—पश्य) = देखना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं + जल् (सं + ज्वल) = जलना, क्रोध करना ।

उव + आस (उव + आस) = उपासना करना ।

भा (भी) = डरना, भयभीत होना ।

खल् + (स्खल्) = स्खलित होना, अपने स्थान से भ्रष्ट होना ।

नि + द्धुण् (निर् + धुना) = झाड़ना, झपटना ।

वस् (वस्) = रहना, बसना ।

प + माय (प्र + माद्य) = प्रमाद करना, आलस्य करना ।

वि + णस्स् (वि + नश्य) = नष्ट होना, नाश होना, बिगड़ना ।

आ + लोट्ट् (आ + लुटय) = आलोटना, लोटना ।

१. उपर्युक्त सभी प्रत्यय लगाने से पूर्व धातु के अकारान्त अंग के अन्त्य 'अ' को 'ए' विकल्प से होता है । जैसे—

हस् + उ—हस् + अ + उ = हसेउ, हसउ

हस् + मो—हस् + अ + मो = हसेमो, हसमो

('अ' विकरण के लिए देखिए पाठ १, नि० १) ।

२. प्रथम पुरुष के प्रत्यय लगाने से पूर्व धातु के अकारान्त अंग के अन्त्य 'अ' को 'आ' तथा 'इ' विकल्प से होती है । जैसे—

हस् + मु – हस् + अ + मु = हसामु, हसिमु, हसमु, ।

३. अकारान्त अंग में लगने वाले 'हि' प्रत्यय का प्रायः लोप[1] होता है और कहीं-कहीं इस अंग के अन्त्य 'अ' को 'आ' भी होता है । जैसे—

हस् + अ + हि = हस, गच्छ् + अ + हि = गच्छाहि ।

४. कहीं-कहीं तृतीय पुरुष के एकवचन 'उ' अथवा 'तु' प्रत्यय

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लगने से पूर्व धातु के अंग अन्त्य 'अ' को 'आ' भी उपलब्ध होता है। जैसे—

सुण् + अ + उ = सुणाउ, सुणउ, सुणेउ।

५. जिस धातु के अन्त में आ, इ वगैरह स्वर हों उसको इज्जसु, इज्जहि, और इज्जे प्रत्यय नहीं लगते। जैसे—

ठा, री वगैरह धातु में ये प्रत्यय नहीं लगाते परन्तु जब विकरण 'अ' लगने से ठाअ, रीअ होगा तब उनमें ये प्रत्यय लगते हैं।

'हस' धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसमु, हसामु हसिमु, हसेमु	हसमो, हसामो हसिमो, हसेमो
म०पु०	हससु, हसेसु, हसेज्जसु हसाहि, हसहि, हसेज्जहि हसेज्जे, हस	हसह, हसेह
तृ०पु०	हसउ, हसेउ हसतु, हसेतु	हसंतु, हसेंतु हसितु

सर्वपुरुष-सर्ववचन } हसेज्ज, हसेज्जा (ज्ज, ज्जा के लिए देखिए पाठ ३)

१४वें पाठ में बताये हुए नियम के अनुसार प्रत्येक स्वरान्त धातु के विकरण वाले तथा बिना विकरण के अंग बनाने के लिए और तैयार हुए अंगों द्वारा प्रस्तुत विध्यर्थ तथा आज्ञार्थ के रूप साध लेना चाहिए। जैसे—

हो (विकरणरहित रूप)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होमु	होमो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होअ (विकरणवाले रूप)

प्र०पु०	होअमु	होअमो
	होआमु	होआमो
	होइमु	होइमो
	होएमु	होएमो
म०पु०	होअसु	होअह
	होएसु	होएह
	होएज्जसु	
	होआहि	
	होअहि	
	होएज्जहि	
	होएज्जे	
	होअ	

इस प्रकार 'हो' इत्यादि सभी स्वरान्त धातुओं के अंग बनाकर 'विध्यर्थ' और 'आज्ञार्थ' सभी रूप साध लें।

सामान्य शब्द (पुंल्लिङ्ग)

आयरिय (आचार्य) = आचार्य, धर्मगुरु, विद्यागुरु।
पाण (प्राण) = प्राण।
पाणि (प्राणिन्) = प्राणी, जीवधारी।
असंजम (असंयम) = असंयम।
अप्प (आत्मन्) = आत्मा, स्वयं, आप।
चित्त (चित्र) = एक सारथि का नाम।
वोज्झ (वह्य) = भार, बोझा।
भारय (भारक) = भार उठाने वाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरिण (हरिण) = मृग, हिरण ।
दाडिम (दाडिम) = अनार ।
तिल (तिल) = तिल ।
छेअ (छेद) = छिद्र, (अन्त, सिरा) ।
बोक्कड (बर्कर) = बकरा ।
गब्भ (गर्भ) = गर्भ—मध्य भाग ।
पायय (पादक) = पाया—नींव ।
वंसअ (वंशक) = बाँस, वंश, बाँसुरी ।

नपुंसकलिङ्ग

सावज्ज (सावद्य) = पाप प्रवृत्ति ।
सासुरय (श्वाशुरक) = ससुराल ।
निवाण (निपान) = जलाशय ।
विहाण (विभान) = प्रातः काल, प्रभात ।
अंडय (अण्डक) = अण्डा ।
पल्लाण (पर्याण) = पलान ।
सल्ल (शल्य) = शल्य ।
चउक्वट्टय (चतुर्वर्त्मक) = चौक, चौरस्ता ।
चेण्ह (चिह्न) = चिह्न ।
छिद्दय (छिद्रक) छिद्र, विवर ।
मोत्तिय (मौक्तिक) = मुक्ता, मोती ।
अमिअ (अमृत) = अमृत ।
घय (घृत) = घी ।
लण्हं (श्लक्ष्ण) = छोटा, सूक्ष्म ।
पोअ (प्रोत) = पिरोया हुआ, प्रोत ।
पत्त (प्राप्त) = प्राप्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउरंस, चउरस्स (चतुरस्र) = चौरस, चतुष्कोण ।
नेहालु (स्नेहालु) = स्नेही, स्नेहवाला ।
छाहिल्ल, छायालु (छायालु) = छाया वाला ।
जडालु (जटाल) = जटा वाला, जटाधारी ।
रसाल, रसालु (रसालु) = रसाल, रस वाला ।
रत्त (रक्त) = रक्त, लाल, रंगा हुआ ।
ठड्ढ (स्तब्ध) = स्तब्ध, स्तम्भित, ठंढा ।
तिण्ह (तीक्ष्ण) = तीक्ष्ण, तेज ।
अहिनव (अभिनव) = अभिनव, नया ।
उच्चिट्ठ (उच्छिष्ट) = जूठा ।
तंस (त्र्यस्र) = त्रिकोण ।

अव्यय

णवर (केवल) = केवल ।
णाणा (नाना) = नाना प्रकार, विविध ।
बहिद्धा (बहिर्धा) = बाहर ।
तहिं (तत्र) = वहाँ ।
जहिं (यत्र) = जहाँ ।
कहिं (कुत्र) = कहाँ ।

वाक्य (हिन्दी)

अण्डे को मत खाओ ।
वह पाप प्रवृत्ति न करे ।
हे चित्र ! जाओ और मृग को खोजो ।
मुनि असंयम से विरत रहे ।
तू चौक में जा और अनार ला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वयं अपने को खोज, बाहर मत घूम ।
उसके सभी शल्य नाश हो जायँ ।
हे ब्राह्मण ! बकरे का होम न कर तिल का होम कर ।
सब जीवों के साथ प्रेम करो ।
प्राणी के प्राण मत हरो ।
घोड़े के ऊपर जीन रख ।

वाक्य (प्राकृत)

सावज्जं वज्जउ मुणी ।
ण कोवउ आयरियं ।
न हण पाणिणो पाणे ।
संनिहिं न कुणउ माहणो ।
संवुडो निद्धुणाउ पावस्स रजं ।
सव्वं गंथं कहलं च विप्पजहाहि भिक्खू !
किं नाम होज्ज तं कम्मयं जेणाहं णाणा दुक्खं न गच्छेज्जा ।
गच्छाहि णं तुमं चित्ता !
वित्तेण ताणं न लहे पमत्ते ।
उत्तमट्ठं गवेसउ ।
वसामु गुरुकुले निच्चं ।
असंजमं णवरं न सेवेज्जा ।
भिक्खू न कमवि छिंदेह ।
बालस्स बालत्तं पस्स ।
बालाणं मरणं असइं भवेज्ज ।
सुयं अहिट्ठिज्जा ।
गोयम ! समयं मा पमायउ ।
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं ।
न य, णं दाहामु तुमं नियंठा ।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्रहवाँ पाठ

निम्नलिखित प्रत्यय भी विशेषतः विध्यर्थ के हैं[1]।

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	ज्जामि	ज्जामो
म०पु०	ज्जासि, ज्जसि	ज्जाह

१. पालिभाषा में विध्यर्थ को सप्तमी कहते हैं और संस्कृत में भी आचार्य हेमचन्द्र ने 'सप्तमी' नाम को स्वीकार किया है। पाणिनीय व्याकरण में सप्तमी को विधिलिङ् कहते हैं।

पालि में सप्तमी—विध्यर्थ—के प्रत्यय :—

परस्मैपद

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	एय्यामि, ए	एय्याम
म०पु०	एय्यासि, ए	एय्याथ
तृ०पु०	एय्य, ए	एय्युं

आत्मनेपद

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	एय्यं, ए—	एय्याम्हे
म०पु०	एथो	एय्यव्हो
तृ०पु०	एथ	एरं

'अस्' धातु के विध्यर्थ रूप—

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	अस्सं	अस्साम
म०पु०	अस्स	अस्सथ
तृ०पु०	अस्स, सिया	अस्सु, सियुं

१६वें पाठ में अपभ्रंश के आज्ञार्थ प्रत्यय बताए हैं वही प्रत्यय विध्यर्थ में भी उपयोग में आते हैं और धातु के रूप भी वैसे ही होते हैं (दे० पृ० २८८।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ०पु०	ज्जए, ए, एय, ज्ज, ज्जा,	ज्ज, ज्जा
सर्वपुरुष सर्ववचन	ज्जइ	

'ज्ज' अथवा 'ज्जा' प्रत्ययों से पूर्व धातु के अन्त्य 'अ' को 'इ' और 'ए' होता है। जैसे—

'हस्' धातु का रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	हसिज्जामि, हसेज्जामि	हसिज्जामो, हसेज्जामो
म०पु०	हसिज्जासि, हसेज्जासि, हसिज्जसि, हसेज्जसि	हसिज्जाह, हसेज्जाह
तृ०पु०	हसिज्जए हसे, हसेय, हसिज्ज, हसेज्ज हसिज्जा, हसेज्जा	हसिज्ज, हसेज्ज हसिज्जा, हसेज्जा
सर्वपुरुष सर्ववचन	हसिज्जइ, हसेज्जइ	

'हो' धातु का विकरणवाला 'होअ' रूप (अंग) बनता है और उसके रूप 'हस्' धातु के समान ही होते हैं। इसी प्रकार विकरणवाले सभी स्वरान्त धातु के रूप समझ लेने चाहिए।

विकरण रहित 'हो' धातु के रूप—

प्र०पु०	होज्जामि	होज्जामो
म०पु०	होज्जासि, होज्जसि	होज्जाह
तृ०पु०	होज्जए, होए होएय, होज्ज, होज्जा	होज्ज, होज्जा
सर्वपुरुष सर्ववचन	होज्जइ,	होएज्जइ होइज्जइ (विकरणवाले)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आर्ष प्राकृत में प्रयुक्त कुछ अन्य अनियमित रूप—

(कुर्यात्, कुर्याः)—कुज्जा।
(निदध्यात्)—निहे।
(अभितापयेत्)—अभितावे।
(अभिभाषेत)—अभिभासे।
(लभेत)—लहे।
(स्यात्)—सिया, सिआ
(आच्छिन्द्यात्)—अच्छे
(आभिन्द्यात्)—अब्भे
(हन्यात्) —हणिया।

यदि क्रियापद के साथ निम्नलिखित शब्दों का सम्बन्ध हो तो इस पाठ में बताये विध्यर्थ प्रत्ययों का प्रयोग हो सकता है। जैसे—

उअ } (अव्यय)—उअ कुज्जा = चाहता हूँ वह करे।
अवि } अवि भुंजिज्ज = खाय भी।

श्रद्धा अथवा सम्भावना अर्थ वाले धातु का प्रयोग :—

सद्दह (धातु)–'सद्दहामि सो पाढं पढिज्ज'–श्रद्धा रखता हूँ वह पाठ पढ़े।
'सम्भावेमि तुमं न जुज्झिज्जसि'—सम्भावना करता हूँ तू नहीं लड़े।

'जं' के साथ कालवाचक कोई भी शब्द हो तो वहाँ विध्यर्थक प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जैसे—

'कालो जं भणिज्जामि'—समय है मैं पढ़ूँ।

'वेला जं गाएज्जसि'—समय है तू गा।

जहाँ एक क्रिया दूसरी क्रिया का कारण हो वहाँ भी इस पाठ में बताए विध्यर्थ प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जैसे—

'जई गुरुं उवासेय सत्थन्तं गच्छेय'—"यदि गुरु की उपासना करे तो शास्त्र का अन्त पावे"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातुएँ

उव + णी (उप + नी)—पास ले जाना ।

पच्च + प्पिण् (प्रति + अर्पण=प्रत्यर्पण)—वापिस देना, लौटाना, अर्पण करना ।

पडि + नी, पडि + णी (प्रति + नी)—वापस देना, बदले में देना ।

वर् (वृ)—स्वीकार करना, वरदान लेना ।

वाव् (वाप्)—बोना, वपन करवाना ।

तूर् (त्वर्)—जल्दी करना, त्वरा करना ।

सं + दिस् (सम् + दिश्)—संदेशा देना, सूचना करना ।

उव + दस् (उप + दर्श)—दिखाना, पास जाकर बताना ।

अणु + जाण्, अनु + जाणा (अनु + जाना)—अनुज्ञा देना, सम्मति देना ।

सं + वड्ढ् (सम् + वर्ध्)—संवर्धन करना, पोषण करना, सम्भालना ।

चिण (चिनु)—चुनना, इकट्ठा करना ।

क्रियातिपत्ति[1]

परस्पर सांकेतिक दो वाक्यों का जब एक संयुक्त वाक्य बना हो और दोनों क्रियाओं में कोई केवल सांकेतिक क्रिया जैसी अशक्य-सी प्रतीत होती

---

१. क्रियातिपत्ति को पालि में कालातिपत्ति कहते हैं । पालि में क्रियातिपत्ति के प्रत्यय इस प्रकार हैं—

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	स्सं	स्सम्हा	स्सं	स्साम्हसे
म०पु०	स्से	स्सथ	स्ससे	स्सव्हे
तृ०पु०	स्सा	स्संसु	स्सथ	िंस्सु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो तो वहाँ क्रियातिपत्ति का प्रयोग होता है। क्रियतिपत्ति याने क्रिया की अतिपत्ति—असंभवितता को ही सूचित करने के लिए क्रियातिपत्ति का उपयोग होता है।

प्रत्यय

सर्वपुरुष } न्तो, माणो, ज्ज, ज्जा।
सर्ववचन } (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।१७९ तथा १८०)।

पुंलिंग उदाहरण

एकवचन	बहुवचन
भण्—भणंतो, भणमाणो	भणंता, भणमाणा
हो—होअंतो, होअमाणो	होअंता, होअमाणा
होंतो, होमाणो	

पालिमें 'अंभवि' तथा 'भवि' धातु के रूप :—

प्र०पु०	अभविस्सं	अभविस्सम्हा, अभविस्सम्ह
म०पु०	अभविस्से, भविस्स	अभविस्स, अभविस्सथ
तृ०पु०	अभविस्सा, अभविस्स	अभविस्संसु, भविस्संसु

इसी प्रकार 'अभवि' अथवा 'भवि' धातु से आत्मनेपद के प्रत्ययों को लगाकर रूप बना लें।

शौरसेनी, मागधी तथा अपभ्रंश के रूप प्राकृत के समान होंगे। शौरसेनी में तथा मागधी वगैरह में :—

	पुं०	स्त्री०	नपुं०
	होन्दो	होन्दी	होन्दं इत्यादि रूप होंगे।
पैशाची में—	होन्तो	होन्ती	होन्तं

इत्यादि रूप बनेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग	नपुंसक
भणंती, भणंता	भणंतं, भणमाणं
भणमाणी, भमाणा	होअंतं, होंतं
होअंती, होअंता, होंती, होंता	होअमाणं, होमाणं
होअमाणी, होअमाणा, होमाणी, होमाणा	

भण्—भणेज्ज, भणेज्जा

हो—होएज्ज, होएज्जा, होज्ज, होज्जा

स्त्रीलिंग में 'न्ती', 'न्ता' तथा माणी' और 'माणा' प्रत्यय लगाये जाते हैं। इस प्रकार के क्रियातिपत्ति के बहुवचनीय प्रयाग बहुत कम उपलब्ध होते हैं तथा प्रथमा विभक्ति में ही इनका प्रयोग होता है, अन्य विभक्तियों में नहीं।

वाक्य (हिन्दी)

मुनि पाप को बरजे।
आचार्य को कुपित मत करो।
खेत में बीज बोओ।
धार्मिक काम के लिए जल्दी कर।
चाहता हूँ, वह धर्म के लिए धन का प्रयोग करे।
पुत्र पढ़े तो पण्डित बने (क्रियातिपत्ति)।
श्रद्धा रखता हूँ वह सत्य वचन बोले।
समय है मैं धन इकट्ठा करूँ।
चाहता हूँ तू अच्छे काम के लिए सम्मति दे।
गुरु के पास शिष्य को ले जा।
तुझ को व्रत के लिए सूचित करूँ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाक्य (प्राकृत)

वत्तेण ताणं न लभे पमत्ते ।

वसे गुरुकुले निच्चं ।

उत्तमट्ठं गवेसए ।

गोयमा ! समयं मा पमायए ।

न कोवए आयरियं ।

संनिहिं न कुव्विज्जा ।

संवुडो निद्धुणे पावस्स मलं ।

बालाणं मरणं असइं भवे ।

सावज्जं वज्जए मुणी ।

दीवो होंतो तथा अंधयारो नस्संतो ।

सव्वं गंथं कलहं च विप्पजहेय भिक्खू ।

रावणो सीलं रक्खंतो तया रामो तं रक्खंतो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अठारहवाँ पाठ

अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द
(स्त्रीलिङ्ग)

प्राकृत में आकारान्त शब्द (नाम) दो प्रकार के हैं। कुछ आकारान्त शब्दों का मूलरूप अकारान्त होता है, लेकिन स्त्रीलिंग के कारण आकारान्त हो जाता है। जबकि कुछ आकारान्त शब्दों का मूलरूप प्रकृति से आकारान्त नहीं होता, परन्तु व्याकरण के किसी विशेष नियम के कारण आकारान्त हो जाता है।

नीचे दोनों प्रकार के आकारान्त शब्दों के रूप दिए गए हैं। जो शब्द मूलतः अकारान्त नहीं हैं, उसका सम्बोधन का एकवचन प्रथमा विभक्ति जैसा ही होता है। लेकिन जो मूल से अकारान्त हैं उनके सम्बोधन के एकवचन में अन्त्य 'आ' को 'ए' हो जाता है (देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।४१)। इन दोनों प्रकार के शब्दों के रूपों में दूसरा कोई भेद नहीं है। जैसे—

	ननान्दृ	णणंदा	हे णणंदा !
	अप्सरस्	अच्छरसा	हे अच्छरसा !
	सरित्	सरिया	हे सरिया !
		सरिआ	हे सरिआ !
	वाच्	वाया	हे वाया !
मूल अकारान्त	माल	माला	हे माले ! हे माला !
	रम	रमा	हे रमे ! हे रमा !
	कान्त	कान्ता	हे कान्ते ! हे कान्ता !
	देवत	देवता	हे देवते ! हे देवता !
	मेघ	मेघा	हे मेहे ! हे मेघा !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*माला (मूल अकारान्त) शब्द के रूप—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	माला = माला (माला)	माला[१] + उ = मालाउ माला + ओ = मालाओ माला[१] = माला (मालाः)
द्वि०	माला + म् = मालं[२] (मालाम्)	माला + उ = मालाउ माला + ओ = मालाओ माला = माला (मालाः)
तृ०	माला[३] + अ = मालाअ माला + इ = मालाइ माला + ए = मालाए (मालया)	माला + हि=मालाहि(मालाभिः माला + हिं = मालाहिं माला + हिँ = मालाहिँ

*पालि में माला के रूप—

	एकव०	बहुव०
प्र०	माला	माला, मालायो
द्वि०	मालं	,, ,,
तृ०, च०, पं०, ष०, स०	मालाय	मालाहि, मालाभि (तृ०) मालानं (च० ष०) मालाहि, मालाभि (पं०)
स०	मालायं	मालासु
सं०	माले !	माला, मालायो !

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७ । २. हे० प्रा० व्या० ८।३।३६ तथा ८।३।५ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च०	माला + अ = मालाअ	माला + ण = मालाण (मालाभ्यः)
	माला + इ = मालाइ	माला + णं = मालाणं
	माला + ए = मालाए (मालायै)	
पं०	[1]माला + अ = मालाअ (मालायाः)	
	माला + इ = मालाइ	
	माला + ए = मालाए	
	माला + हिंतो = मालाहिंतो	माला + हिंतो = मालाहिंतो (मालाभ्यः)
		माला + सुंतो = मालासुंतो
ष०	माला + अ = मालाअ	माला + ण = मालाण (मालानाम्)
	माला + इ = मालाइ (मालायाः)	माला + णं = मालाणं
	माला + ए = मालाए	
स०	माला + अ = मालाअ (मालायाम्)	माला + सु = मालासु
	माला + इ = मालाइ	माला + सुं = मालासुं (मालासु)
	माला + ए = मालाए	
सं०	माला = माले ! (हे माले !)	माला + उ = मालाउ !
	माला = माला !	माला + ओ = मालाओ !
		माला = माला ! (मालाः)

---

१. पञ्चमी विभक्ति में अकारान्त शब्द में लगने वाले 'उ, ओ, तो और त्तो' प्रत्यय यहाँ पर बताये सभी नामों में भी लगते हैं। जैसे— मालाउ, मालाओ, मालातो, मालत्तो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'वाया' (वाक्) मूल अकारान्त नहीं है) शब्द के सभी रूप माला जैसे ही होते हैं। इसकी विशेषता केवल सम्बोधन में ही है। "हे वाया!" ऐसा एक ही रूप बनता है। 'वाये!' 'वाया!' ऐसे दो रूप नहीं।

*इकारान्त 'बुद्धि' शब्द के रूप

प्र०	बुद्धी (बुद्धिः)	बुद्धि + उ = बुद्धीउ[1] बुद्धि + ओ = बुद्धीओ (बुद्धयः) बुद्धि = बुद्धी
द्वि०	बुद्धिं[2] (बुद्धिम्)	बुद्धि + उ = बुद्धीउ बुद्धि + ओ = बुद्धीओ बुद्धि = बुद्धी (बुद्धीः)
तृ०	बुद्धीअ[4] बुद्धि + आ = बुद्धीआ (बुद्धया) बुद्धीइ, बुद्धीए	बुद्धीहि बुद्धीहिं, बुद्धीहिँ (बुद्धिभिः)

---

* पालि में ह्रस्व इकारान्त रत्ति (रात्रि) का रूप—

प्र०	रत्ति	रत्ती, रत्तियो
द्वि०	रत्तिं	,, ,,
तृ०, च०, पं०, ष०, स०	रत्तिया	रत्तीहि, रत्तीभि (तृ० पं०) रत्तीनं (च० ष०)
स०	रत्तियं	रत्तीसु
सं०	रत्ति !	रत्ती, रत्तियो !

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।५।
३. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।२६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च०	बुद्धीअ, बुद्धीआ बुद्धीइ (बुद्धयै) बुद्धीए (बुद्धये)	बुद्धीण, बुद्धीणं (बुद्धिभ्यः)
पं०	बुद्धीअ[1] बुद्धीआ (बुद्धयाः) बुद्धीइ बुद्धीए (बुद्धेः) बुद्धीहिंतो	बुद्धीहिंतो, बुद्धीसुंतो (बुद्धिभ्यः)
ष०	बुद्धीअ, बुद्धीआ (बुद्धयाः) बुद्धीइ, बुद्धीए (बुद्धेः)	बुद्धीण, बुद्धीणं (बुद्धीनाम्)
स०	बुद्धीअ, बुद्धीआ (बुद्धयाम्) बुद्धीइ, बुद्धीए (बुद्धौ)	बुद्धीसु, बुद्धीसुं (बुद्धिषु)
सं०	बुद्धी, बुद्धि ! (बुद्धेः !)	बुद्धीउ, बुद्धीओ, बुद्धी ! (बुद्धयः)

*ईकारान्त 'नदी' शब्द के रूप

प्र०	नदी (नदी)	नदी + आ = नदीआ[2] नदीउ[3], नदीओ नदी, (नद्यः)

---

१. देखिए पृ० ३०५; टिप्पणी १—बुद्धीउ, बुद्धीओ, बुद्धित्तो ।

* पालि में दीर्घ ईकारान्त 'नदी' शब्द के रूप—

	एकव०	बहुव०
प्र०	नदी	नदी, नदियो, नज्जो
द्वि०	नदिं, नदियं	,, ,, ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि०	नदि[४] (नदीम्)	नदीआ, नदीउ नदीओ, नदी (नदीः)
तृ०	नदीअ[५], नदीआ (नद्या) नदीइ, नदीए	नदीहि, नदीहिं, नदीहिँ (नदीभिः)
च०	नदीअ, नदीआ नदीइ, नदीए (नद्यै)	नदीण, नदीणं (नदीभ्यः)
पं०	नदीअ[६], नदीआ नदीइ, नदीए, नदीहिंतो (नद्याः)	नदीहिंतो, नदीसुंतो (नदीभ्यः)
ष०	नदीअ, नदीआ (नद्याः) नदीइ, नदीए	नदीण, नदीणं (नदीनाम्)

तृ०, च०, पं०, ष०, स०	नदिया, नज्जा	नदीहि, नदीभि (तृ० पं०) नदीनं (च० ष०)
स०	नज्जं	नदीसु
सं०	नदि !	नदी, नदियो, नज्जो !

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।२८ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७ ।

४. हे० प्रा० व्या० ८।३।३६ तथा ८।३।५ ।

५. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९ ।

६. देखिए पृ० ३०५ टिप्पण—१ नदीउ, नदीओ, नदित्तो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	नदीअ, नदीआ नदीइ, नदीए (नद्याम्)	नदीसु, नदीसुं (नदीषु)
सं०	नदि[1] ! (नदि !)	नदीआ, नदीउ नदीओ, नदी ! (नद्यः)

उकारान्त 'घेणु' (धेनु) शब्द के रूप*

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	घेणू (धेनुः)	घेणूउ[2], घेणूओ घेणू (धेनवः)
द्वि०	घेणुं[3] (धेनुम्)	घेणूउ[3], घेणूओ घेणू (धेनूः)
तृ०	घेणूअ[4], घेणूआ घेणूइ, घेणूए (धेन्वा)	घेणूहि, घेणूहिं घेणूहिँ (धेनुभिः)

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।४२ ।

*पालि में ह्रस्व उकारान्त 'धेनु' शब्द के रूप—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	धेनु	धेनू, धेनुयो
द्वि०	धेनुं	,, ,,
तृ०, च०, पं०, ष०, स०	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि (तृ०पं०) धेनूनं (च०ष०) धेनूसु (स०)
सं०	धेनु !	धेनू, धेनुयो !

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।५ ।

४. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च०	धेणूअ, धेणूआ धेणूइ, धेणूए (धेनवे, धेन्वै)	धेणूण, धेणूणं (धेनुभ्यः)
पं०	धेणूअ, धेणूआ (धेन्वाः, धेनोः) धेणूइ, धेणूए धेणूउ[1], धेणूओ धेणुत्तो, धेणूहितो	धेणूहितो, धेणुसुंतो (धेनुभ्यः)
ष०	धेणूअ, धेणूआ धेणूइ, (धेन्वाः, धेनोः) धेणूए	धेणूण, धेणूणं (धेनूनाम्)
स०	धेणूअ, धेणूआ धेणूइ, धेणूए (धेन्वाम्, धेनौ)	धेणूसु, धेणूसुं (धेनुषु)
सं०	धेणू[2], धेणु (धेनो !)	धेणूउ, धेणूओ, धेणू (धेनवः)

ऊकारान्त 'वहू' (वधू) शब्द के रूप*

प्र०	वहू[3] (वधूः)	वहूउ, वहूओ[4] वहू (वध्वः)

---

१. देखिए पृ० ३०५ टि० १ । २. हे० प्रा० व्या० ८।३।३८ ।

*पालि में दीर्घ ऊकारान्त 'वधू' के रूप—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	वधू	वधू, वधुयो
द्वि०	वधुं	,, ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि०	वहुं[५] (वधूम्)	वहूउ, वहूओ[६], वहू (वधूः)
तृ०	वहूअ[७], वहूआ	वहूहि, वहूहि
	वहूइ, वहूए	वहूहिँ, (वधूभिः)
च०	वहूअ, वहूआ	वहूण, वहूणं (वधूभ्यः)
	वहूइ, वहूए (वध्वै)	
पं०	वहूअ, वहूआ	
	वहूइ, वहूए	
	वहूउ[८], वहूओ	
	वहुत्तो, वहूहितो	वहूहितो, वहूसुंतो (वधूभ्यः)

तृ०, च०, पं०, ष०, स०	वधुया	वधूहि, वधूभि (तृ०) वधूनं (च०ष०) वधूसु (स०)
सं०	वधु !	वधू, वधुयो !

पालि भाषा में इत्थी (स्त्री), मातु (मातृ), धीतु (दुहितृ), गावी (गो) वगैरह स्त्रीलिंगी शब्दों के विशेष रूप होते हैं (देखिए पा० प्र० पृ० १०५, १०८, ११०) ।

'गो' शब्द को प्राकृत भाषा में 'गउ' तथा 'गाअ' जैसे दो रूप होते हैं (हे०प्रा० व्या० ८।१।१५८) । उसमें 'गउ' का पुंलिग में 'भाणु' जैसे रूप होते हैं, स्त्रीलिंग में 'धेणु' जैसे रूप होंगे । 'गाअ' का पुंलिग में 'वीर' जैसे रूप बनेंगे तथा स्त्रीलिंग में 'गाअ' का 'गाई' अथवा 'गाआ' परिवर्तन होगा, 'गाई' का नदी जैसे रूप समझें तथा 'गाआ' का 'माला' जैसे रूप बना लें ।

३. हे० प्रा० व्या० ८।१।११ ।

४. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७ । ५. हे० प्रा० व्या० ८।३।३६ तथा ५ ।

६. हे० प्रा० व्या० ८।३।५ । ७. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९ ।

८. देखिए पृ० ३०५ टि० १ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ष०	वहूअ, वहूआ वहूइ, वहूए (वध्वाः)	वहूण, वहूणं (वधूनान्)
स०	वहूअ, वहूआ वहूइ, वहूए (वध्वाम्)	वहूसु, वहूसुं (वधूषु)
सं०	[1]वहु ! (वधु !)	वहूओ, वहूउ, वहू ! (वध्वः)

शब्द का अंग और प्रत्यय का अंश दोनों पृथक्-पृथक् करके बता दिये हैं तथा उससे साधित प्रत्येक रूप भी अलग-अलग बताये गये हैं।

आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त तथा ऊकारान्त स्त्रीलिंग-वाचक शब्दों के सभी रूप एक जैसे हैं। उनमें भेद नहींवत् है। अतः मूल अंग और प्रत्ययों के विभाग की पद्धति एक ही स्थान पर समझा दी है।

दीर्घ ईकारान्त शब्दों की प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में केवल एक "आ" प्रत्यय ही विशेष—नया प्रयुक्त होता है। आकारान्त को छोड़ उक्त सभी शब्दों को तृतीया से सप्तमी पर्यन्त एकवचन में 'आ' प्रत्यय अधिक लगता है। उक्त रूप ही इस परिवर्तन का साक्षी है।

यद्यपि इन चारों प्रकार के शब्दों के सभी रूप एक समान हैं तथापि संस्कृत रूपों के साथ तुलना करने के लिए तथा विशेष स्पष्ट करने के लिए उनके सभी रूप (कोष्ठक चिह्न में) बता दिये हैं। इन रूपों से प्रचलित भाषा के रूपों की भी समानता का भान हो जाता है।

१. 'त्तो' और 'म्' प्रत्ययों के सिवाय अन्य सभी प्रत्ययों के परे रहते शब्द के अंग का स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे—'बुद्धिओ', 'धेणूओ'।

२. 'म्' प्रत्यय परे रहते अंग का पूर्व स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—'नदिं', 'वहुं'।

३. जहाँ केवल मूल अंग का ही प्रयोग करना हो वहाँ उसे दीर्घ करके प्रयुक्त करना चाहिए। जैसे—'बुद्धी', 'धेणू'।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।४२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. इकारान्त तथा उकारान्त के सम्बोधन के एकवचन में विकल्प से दीर्घ होता है। जैसे—'बुद्धि !' 'बुद्धी !' 'धेणु !' 'धेणू'!

५. ईकारान्त तथा ऊकारान्त के सम्बोधन के एकवचन में ह्रस्व होता है। जैसे—'नदि !' 'वहु !'

आकारान्त शब्द

सद्धा (श्रद्धा) = श्रद्धा, विश्वास ।
मेहा (मेधा) = मेधा–धारणा शक्तिवाली बुद्धि ।
पण्णा (प्रज्ञा) = प्रज्ञा–बुद्धि ।
सण्णा (संज्ञा) = संज्ञा, नाम ।
संझा (सन्ध्या) = सन्ध्या, सायंकाल ।
वंझा (वन्ध्या) = वन्ध्या, अपत्यहीन ।
भुक्खा (बुभुक्षा) = भूख ।
तिसा (तृषा) = प्यास, लालच ।
तण्हा (तृष्णा) = तृष्णा ।
सुण्हा, ण्हुसा (स्नुषा) = स्नुषा–पुत्रवधू ।
पुच्छा (पृच्छा) = प्रश्न ।
चिन्ता (चिन्ता) = चिन्ता ।
आणा (आज्ञा) = आज्ञा ।
छुहा[1] (क्षुधा) = भूख ।
कउहा[2] (ककुभा) = दिशा ।
निसा (निशा) = निशा, रात्रि ।
दिसा[3] (दिशा) = दिशा ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१७ । २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१ ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नावा (नौका) = नौका, नाव ।
गउआ (गोका) = गाय ।
सलाया (शलाका) = सलाई, शलाका ।
मट्टिया (मृत्तिका) = मिट्टी ।
मच्छिआ, मक्खिआ (मक्षिका) = मक्षिका, मक्खो, मछलो ।
कलिआ (कलिका) = कली ।
विज्जुला (विद्युत्) = बिजली ।
जिब्भा, जीहा (जिह्वा) = जिह्वा, जीभ ।
अच्छरसा[१] (अप्सरस्) = अप्सरा ।
आसिसा[२] (आशिष्) = आशीर्वाद ।
धूआ[३] (दुहिता) = दुहिता, पुत्री, लड़की ।
नणंदा[४] (ननान्दृ) = ननन्द, पति की बहिन, ननद
पिउच्छा[५], पिउसिआ (पितृष्वसा) = फूआ, पिता की बहिन ।
माउच्छा[५], माउसिआ (मातृष्वसा) = मासी, मौसी, माता की बहन ।
बाहा[६] (बाहु) = बाहु, हाथ ।
माआ[७] (मातृ) = माता, जननी ।
माअरा[७], मायरा (मातृ) = देवी, माता ।
ससा (स्वसृ) = बहिन ।
वाया[८] (वाच्) = वाचा, वाणी ।
सरिआ[८], सरिया (सरित्) = सरिता, नदी ।
पाडिवआ[८], पाडिवया (प्रतिपदा) = प्रतिपदा, एकम ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२० । २. हे० प्रा० व्या० ८।३।३५ ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१२६ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।३५ ।
५. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४२ । ६. हे० प्रा० व्या० ८।१।३६ ।
७. हे० प्रा० व्या० ८।३।४६ । ८. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिरा[1] (गिर्) = गिरा, वाणी ।

पुरा[1] (पुर्) = पुरी—नगर, नगरी ।

संपया, संपआ (संपदा) = सम्पत्ति ।

चंदिआ, चंद्रिका (चंद्रिका) = चाँदनी, चन्द्रमा की ज्योति, चाँदो ।

चन्दिमा (चन्द्रिका) = चन्द्र की चाँदनी ।

रच्छा (रथ्या) = रथ चलने योग्य मार्ग, गली, बाजार ।

[निर्देश—'अच्छरसा' से लेकर 'संपआ' पर्यन्त शब्दों का मूल आकारान्त नहीं है । इसका ध्यान विशेष रखें ।]

जुत्ति (युक्ति) = युक्ति—योजना ।

रत्ति (रात्रि) = रात्रि, रात ।

माइ (मातृ) = माता ।

भूमि (भूमि) = भूमि, पृथ्वी ।

जुवइ (युवति) = युवति, जवान स्त्री ।

धूलि (धूलि) = धूल ।

रइ (रति) = रति, प्रेम, राग ।

मइ (मति) = मति, बुद्धि ।

दिहि, धिइ (धृति) = धृति, धैर्य ।

सिप्पि (शुक्ति) = सीप ।

सत्ति (शक्ति) = शक्ति, बल ।

सति (स्मृति) = स्मृति. याद ।

दित्ति (दीप्ति) = दीप्ति—तेज ।

पंति (पङ्क्ति) = पंक्ति, कतार, लाइन ।

थुइ (स्तुति) = स्तुति ।

कयली (कदली) = केला ।

---

1. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नारी (नारी) = नारी, स्त्री ।

रयणी (रजनी) = रात्रि ।

राई (रात्री) = रात्रि ।

धाई (धात्री) = धात्री, धाया, दाई ।

कुमारी (कुमारी) = कुमारी, कुंवारी ।

तरुणी (तरुणी) = तरुण स्त्री ।

समणी (श्रमणी) = साध्वी ।

साहुवी, साहुणी = (साध्वी) साध्वी ।

तणुवी (तन्वी) = पतली स्त्री ।

इत्थी, थी (स्त्री) = स्त्री ।

कित्ति (कीर्ति) = कीर्ति, यश ।

सिद्धि (सिद्धि) = सिद्धि ।

रिद्धि (ऋद्धि) = ऋद्धि, संपत्ति ।

संति (शान्ति) = शान्ति ।

कंति (कान्ति) = कान्ति, तेज ।

खंति (क्षान्ति) = क्षमा ।

कति (कान्ति) = इच्छा, अभिलाषा ।

गउ (गो) = गाय ।

कच्छु (कच्छू) = खुजली, खाज, रोग विशेष ।

विज्जु (विद्युत्) = बिजली ।

उज्जु (ऋजु) = ऋजु, सरल ।

माउ (मातृ) = माता ।

दद्दु (दद्रु) = दाद, क्षुद्र कुष्ठरोग ।

चंचु (चञ्चु) = चोंच ।

गाई (गो) = गाय ।

वावी (वापी) = बावली ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहिणी (भगिनी) = भगिनी, बहिन ।
वाराणसी, वाणारसी (वाराणसी) = वाराणसी, बनारस नगर ।
पिच्छी (पृथ्वी) = पृथ्वी ।
पुहवी (पृथ्वी) = पृथ्वी ।
साडी (शाटी) = साड़ी ।
मित्ती (मैत्री) = मित्रता ।
अज्जू (आर्या) = सास ।
कणेरु (करेणु) = हस्तिनी, हथिनी, मादा हाथी ।
कक्कंधू (कर्कन्धू) = बेर ।
अलाऊ, लाऊ (अलाबू) = तुम्बड़ी, लौकी, लउकी ।
वहू (वधू) = वधू, वहू ।

वाक्य (हिन्दी)

उसकी जीह्वा पर अमृत है और तेरी जीह्वा पर गरल ।
उसकी सास मुझे आशीर्वाद देगी कि तुम्हारा कल्याण हो ।
गाय और हथिनी फूलों की माला से शोभेगी ।
कीर्ति और कार्य की सिद्धि के लिए प्रयत्न करो ।
जो विवेक नहीं जानता वह पशु है ।
हे भगिनि! तू इस ढंग से बैठ कि सलाई तेरी ननद की आँख को न लगे ।
आज प्रतिपदा है अतः ब्राह्मण नहीं पढ़ेंगे ।
पुत्र पढ़े तो पण्डित बने (क्रियातिपत्ति) ।
ज्योतिषी ने कहा "अभी आकाश में बिजली चमकेगी ।

वाक्य (प्राकृत)

अच्चेइ कालो तूरंति राईओ वरेहि वरं ।
हे धूआ ! जहेव देवस्स वट्टिज्जासि तहेव पइणो वट्टिज्जासि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खमह जं मए अवरद्धं ।

दीवो होंतो तया अंधयारो नस्संतो ।

वच्च, देहि से संदेसं, मा रुयह ।

गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ।

आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं ।

समणो गिहाइं न कुव्विज्जा ।

खंति सेवेज्ज पंडिए ।

मिअं कालेण भक्खए ।

तुम्हे गच्छंतो तया अम्हे गच्छमाणा ।

तओ तस्स मा माहि ।

उट्ठेह, वच्चामो ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह ।

पवहणं जुत्तमेव उवणेहि ।

संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हाणं कज्जं ।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उन्नीसवाँ पाठ

प्रेरक प्रत्यय के भेद*

प्रत्यय

[1]अ, ए (अय) आव, आवे (आपय) ।

मूल धातु में 'अ', 'ए', 'आव' और 'आवे' प्रत्यय लगाने से प्रेरक अंग बनता है । जैसे——

* पालिभाषा में प्राकृत के समान प्रेरक प्रत्यय लगाते हैं, विशेषता यह है कि 'आव' के स्थान में 'आप' तथा 'आवे' के स्थान में 'आपे' प्रयय लगते हैं ।

पालि रूप——

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	कारेमि	कारेम
म०पु०	कारेसि	कारेथ
तृ०पु०	कारेति	कारेंति

अथवा

प्र०पु०	कारयामि	कारयाम
म०पु०	कारयसि	कारयथ
तृ०पु०	कारयति	कारयन्ति

अथवा

प्र०पु०	कारापेमि	कारापेम
म०पु०	कारापेसि	कारापेथ
तृ०पु०	कारापेति	कारापेंति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर् + अ = कार　　　　कर् + आव = कराव
कर् + ए = कारे　　　　कर् + आवे = करावे

१. मूल धातु की उपधा के—उपान्त्य के—इकार को प्रायः 'ए' और उकार को 'ओ' हो जाता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।४।२३७)। जैसे—

विस् + वेस् = वेसइ, वेसेइ, वेसावइ, वेसावेइ।
दुह् + दोह् = दोहइ, दोहेइ, दोहावहि, दोहावेइ।

२. उपधा में गुरु या दीर्घ स्वर वाले धातु हों तो उसमें उपर्युक्त प्रत्ययों के अतिरिक्त 'अवि' प्रत्यय भी लगता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।१५०)। जैसे—

चूष् + अ = चूसइ, चूसेइ, चूसावइ, चूसावेइ, चूसविइ।
तूस्—तूसविअं, तोसिअं (तोषितम्)।

३. 'अ' जौर 'ए' प्रत्यय परे रहते धातु के उपान्त्य 'अ' को 'आ' होता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।१५३।)। जैसे—

खम्　　खाम　　खामइ
खम्　　खामे　　खामेइ

अथवा

प्र०पु०	कारापयामि	कारापयाम
म०पु०	कारापयसि	कारापयथ
तृ०पु०	कारापयति	कारापयंति

गुह का गूहयति इत्यादि
दुस का दूसयति　　,,
हन का घातयति, प्रा० घातेति

—देखिए पा० प्र० पृ० २२६–२२६

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४६।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

४. केवल 'भम' धातु का प्रेरक अंग 'भमाड' (भम् + आड) बनता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।१५१)। जैसे—

भम् + अ = भामइ,	भम् + ए = भामेइ
भम् + आव = भमावइ	भम् + आवे = भमावेइ
भम् + अड = भमाडइ, भमाडेइ	

५. आर्ष प्राकृत में कहीं-कहीं प्रेरणासूचक 'अवे' प्रत्यय का प्रयोग भी उपलब्ध होता है। 'अवे' प्रत्यय परे रहते धातु के उपान्त्य 'अ' को 'आ' होता है। जैसे—

कर् + अवे = कारवे (कारापय)—कारवेइ (कारापयति)

इस प्रकार धातु मात्र में प्रेरक अंग लगाकर उसके साथ अमुक काल और अमुक पुरुष-बोधक प्रत्यय लगाने से उनके हर प्रकार के रूप तैयार होते हैं। इन रूपों को सिद्ध करने की प्रक्रिया पिछले पाठों में बताई गयी है तथापि यहाँ उदाहरण रूप से एक-एक रूप बता दिया गया है।

प्रेरक अंग के वर्तमानकालिक रूप—

	एकवचन	बहुवचन
खाम—	खाममि	खाममो, खामामो
	खामामि	खामिमो
	खामेमि	खामेमो
खामे—	खामेमि	खामेमो
खमाव—	खमावमि, खमावामि	खमावमो, खमावामो
	खमावेमि	खमाविमो, खमावेमो
		इत्यादि।

सर्वपुरुष } खामेज्ज, खामेज्जा
सर्ववचन } खमावेज्ज, खमावेज्जा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूतकालिक रूप—

खामसी, खामही, खामहीअ खामंसु, खामिसु, खामित्थ
खामेसी, खामेही, खामेहीअ
खमावसी, खमावही, खमावहीअ खमावंसु, खमाविसु, खमावित्थ
खमावेसी, खमावेही, खमावेहीअ

(ये सभी रूप सर्वपुरुष-सर्ववचन में प्रयुक्त होते हैं ।)

भविष्यत्काल में केवल एकवचन के रूप—

खाम—खामिस्सं खामेस्सं
खामिस्सामि, खामेस्सामि
खामिहामि, खामेहामि
खामे—खामेस्सं, खामेस्सामि, खामेहामि, खामेहिमि
खमाव—खमाविस्सं, खमावेस्सं
खमाविस्सामि, खमावेस्सामि,
खमाविहामि, खमावेहामि
खमाविहिमि, खमावेहिमि
खमावे—खमावेस्सं, खमावेस्सामि
खमावेहामि, खमावेहिमि

सर्वपुरुष } खाम—खामेज्ज, खामेज्जा
सर्ववचन } खमाव—खमावेज्ज, खमावेज्जा ।

आज्ञार्थ

खाम—खमम‍ु, खामामु, खामिमु, खामेमु
खामे—खामेसु, खामेहि, खामे
खमाव—खमावउ, खमावतु
खमावे—खमावेउ, खमावेतु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विध्यर्थ

खाम—खामिज्जामि, खामेज्जामि

खामे—खामेज्जसि, खामिज्जसि

खमाव—खमाविज्जइ, खमावेज्जइ

खमावे—खमावेज्जइ, खमाविज्जइ

खाम—खामिज्जइ, खामेज्जइ (सर्वपुरुष-सर्ववचन) ।

क्रियातिपत्ति

खाम—खामंतो, खामेंतो, खामितो[1]

खाममाणो, खामेमाणो

खामे—खामेंतो, खामितो, खामेमाणो

खमाव—खमावंतो, खमावेंतो, खमावितो, खमावमाणो, खमावेमाणो

खमावे—खमावेंतो, खमावितो, खमावेमाणो

इस प्रकार प्रत्येक प्रेरक अंग में सब प्रकार के पुरुषबोधक प्रत्यय लगाकर उनके विविध रूप सिद्ध कर लेना चाहिए ।

प्रेरक सह्यभेद तथा सब प्रकार के प्रेरक कृदन्त बनाने हों तब भी प्रेरक अंग में हो तत्तत् सह्यभेदी और कृदन्त के प्रत्यय जोड़कर रूप सिद्ध करें । सह्यभेद आदि के प्रत्ययों की प्रक्रिया अगले पाठों में आनेवाली है ।

धातुएँ

उव + दंस् (उप + दर्शय) = दिखाना, पास जाकर बताना ।

आ + सार् (आ + सृ, सार) = इधर-उधर फैलाना, ले जाना ।

अ + क्खोड् (आ + क्षोद्) = खोदना, काटना ।

अ + ल्लव् (उद् + लप्) = बोलना ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।३२ के अनुसार स्त्रीलिंग में 'खामंती', खाममाणी रूप होते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कील् (क्रीड्) = क्रीडा करना, खेलना ।

छोल्ल् (तक्ष्) = छीलना, छोलना, लकड़ी आदि के ऊपरी अंश (खुरदुरा अंश) छीलना, चिकना करना ।

ताव् (तापय्) = तपाना ।

झाम् (दह्) जलाना, दाह देना, दग्ध करना ।

किण् (क्री) खरीदना ।

आ + ढा (आ + दृ) आदर करना, मानना ।

प + न्नव् (प्र + ज्ञापय्) प्रज्ञापित करना, बताना ।

सं + घ् (कथ्) कहना ।

पज्जर् (प्र + उत् + चर् = प्रोच्चर, कथय्) = कहना ।

वज्जर् (वि + उत् + चर् = व्युच्चर्, कथय्) = कहना ।

चव् (वच्) = कहना ।

जंप् (जल्प्) = जल्पना, बकवास करना, बोलना, कहना ।

पिसुण् (पिसुनय) = चुगली करना, निन्दा करना ।

मुण् (ज्ञा, मुण्) = जानना ।

पिज्ज् (पा) = पीना ।

उंघ् (उद् + घ्रा, नि + द्रा) = निद्रा लेना, ऊँघना, झपकी लेना, नींद में इस तरह साँस लेना कि नाक से घर-घर की ध्वनि हो ।

अब्भुत्त् (अवभृथ) = स्नान करना ।

उ + ट्ठ (उत् + स्था) उठना ।

छाय, छाअ (छाद्) = ढाँपना, ढकना, छिपाना ।

मेलव् (मेलय्) = मिलाना, एक में करना ।

जाव् (याप्) = व्यतीत करना, यापन करना ।

आ + भोय (आ + भोगय्) = ध्यानपूर्वक देखना, जानना ।

परि + णि + व्वा (परि + निर् + वा) = शान्त होना ।

अग्घ (अर्घ) = मूल्य करवाना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दक्खव् (दृश्) = दिखाना, कहकर बताना ।

प + णाम् (प्र + णाम्) = देना, सेवा में अर्ज करना ।

ओ + ग्गाल् (उद् + गार) = उगलना, लोहा तथा सोना चाँदी को प्रवाही करना—ओगालना ।

आ + रोव् (आ + रोप) = आरोपित करना ।

भर, मल् (स्मर्) = स्मरण करना ।

चय् (शक्) = शकना, खाना ।

जीह् (जिह्री) = लज्जित करना ।

अण्ह (अश्ना) = अशन करना, भोजन करना, खाना ।

आ + ढव् (आ + रभ्) = आरम्भ करना ।

चुक्क् (च्युतक) = चूकना, भ्रष्ट होना ।

पुलोअ, पुलअ (प्र + लोक्) प्रलोकना, देखना ।

पुलआअ (पुलकाय) = पुलकित होना ।

वलग्ग (विलग्न) = चिपक जाना, लिपट जाना ।

प + क्खाल् (प + क्षाल्) = प्रक्षालन करना, धोना ।

सिह् (स्पृह) = चाहना, स्पृहा करना ।

प + ट्ठव् (प्र + स्थाप्) = प्रस्थान करवाना, भेजना ।

वि + ण्णव् (वि + ज्ञप्) = विज्ञापन करना, आज्ञा देना ।

अल्लिव् (अर्पय्) = अर्पण करना ।

ओम्वाल् (उत् + प्लाव) = प्लावित करना ।

वग्गोल (रोमन्थय्, वि + उद् + गार) = व्युद्गार, जुगाली करना ।

परि + आल् (परि + वार्) = परिवृत्त करना, लपेटना ।

पयल्ल (प्र + सर) = फैलना ।

नी + हर् (निर् + सर्) = निकलना ।

समार् (सम् + आ + रच्) = सँवारना, शुद्ध करना ।

सूड्, सूर् (षूद्) = सूदना, नाश करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गढ (घट) = गढ़ना ।

जम्भा (जृम्भ) = जँभाई या उबासी लेना ।

तुवर् (त्वर्) = त्वरा करना, जल्दी करना ।

पेच्छ् (प्र + ईक्ष) = देखना ।

चोप्पड् (म्रक्ष्) = चोपड़ना, घी, तेल वगैरह लगाना ।

अहि + लंख् } अहि + लंघ } (अभि + लष) = अभिलाषा करना, इच्छा करना ।

चड् (चट्) = चढ़ना, वृक्ष पर चढ़ना, ऊपर चढ़ना ।

नि + क्खाल् } नि + क्खार् } (नि + क्षाल्)=निखारना, साफ करना, कपड़े आदि धोना ।

वि + च्छल् (वि + क्षल) = धोना ।

सामान्य शब्द (पुंल्लिङ्ग)

खग्ग (खड्ग) = खड्ग, तलवार ।

उप्पाअ (उत्पाद) = उत्पादन, उत्पत्ति ।

रस्सि (रश्मि) = घोड़े की लगाम ।

मुइंग, मिइंग (मृदङ्ग) = मृदंग ।

विंचुअ (वृश्चिक) = बिच्छू ।

भिंग (भृङ्ग) = भृंग, भ्रमर ।

सिंगार (शृङ्गार) = शृंगार ।

निव (नृप) = नृप, राजा ।

छप्पअ, छप्पय (षट्पद) = भ्रमर, भँवरा ।

जामाउअ (जामातृक) = जामाता, लड़की का पति ।

मग्गु (मद्गु) = एक प्रकार की मछली ।

सज्ज (षड्ज) = षड्ज—स्वर विशेष, संगीत के सात स्वरों में एक स्वर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसि (ऋषि) = ऋषि ।
तव (स्तव) = स्तुति, स्तवन ।
नेह (स्नेह) = स्नेह, प्रीति ।
सर (स्मर) = स्मर, कामदेव ।
पाउस (प्रावृष)=वर्षा ऋतु, बरसात ।
वुत्तंत (वृत्तान्त) = वृत्तान्त, समाचार ।
नत्तुअ, नत्तिअ (नप्तृक) = नप्तृक, नाती, लड़की का लड़का ।
वुड्ढ (वृद्ध) = वृद्ध, बूढ़ा व्यक्ति ।
कंद (स्कन्द) = स्कन्द, कार्तिकेय ।
हरिअंद (हरिश्चन्द) = हरिश्चन्द्र राजा ।

नपुंसकलिङ्ग

दुद्ध (दुग्ध) = दूध ।
सित्थ (सिक्थ) = एक कण मात्र ।
आमलय (आमलक) = आँवला ।
बिंबय (बिम्बक) = प्रतिबिंब ।
कुंडलय (कुण्डलक) = कुण्डल ।
उप्पल (उत्पल) = उत्पल, कमल ।
मसाण (श्मशान) = श्मशान, मसान ।
अहिन्नाण (अभिज्ञान) = अभिज्ञान, निशानी, वह चिन्ह जिसे देखकर पूर्व की घटना का स्मरण होना, स्मृति-चिन्ह ।
चम्म (चर्मन्) = चमड़ा, चाम ।
पुट्ठय (पृष्ठक) = पीठ अथवा पूठा ।

स्त्रीलिंग

गोट्ठी (गोष्ठी) = गोष्ठी ।
विट्ठि, वेट्ठि (विष्टि) = बेगार उतारना, अभिरुचि से काम न करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ती (धात्री) = धात्री, धाय।
किवा (कृपा) = कृपा।
घिणा (घृणा) = घृणा।
सामा (श्यामा) = श्यामा नायिका, युवती स्त्री।
गोरी (गौरी) = गौरी, पार्वती, गोरी स्त्री।
रेखा, रेहा, लेहा (रेखा) = रेखा—लकीर।
किया (क्रिया) = क्रिया—विधि-विधान।
किसरा (कृसरा) = खिचड़ी।
समिद्धि (समृद्धि) = समृद्धि।

विशेषण

मुत्त (मुक्त) = मुक्त, स्वतन्त्र, बंधनहीन।
सत्त (शक्त) = शक्त, समर्थ, शक्तिमान्।
भुत्त (भुक्त) = भुक्त—उपभुक्त।
नग्ग (नग्न) = नग्न, नंगा।
निठुर (निष्ठुर) = निष्ठुर, कठोर, निर्दयी।
छट्ठ (षष्ठ) = छठा।
सत्त (सक्त) = सक्त, आसक्त।
किलिन्न (क्लृन्न) = भीगा हुआ, आर्द्र।
निच्चल (निश्चल) = निश्चल।
गुत्त (गुप्त) = गुप्त, सुरक्षित।
सुत्त (सुप्त) = सोया हुआ।
मुद्ध (मुग्ध) = मुग्ध।

वाक्य (हिन्दी)

दुर्जन पुरुष स्त्री को भ्रष्ट करवाता है।
माता ने बालक को स्नान करवाया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नौकर बच्चों को खेलायेंगे ।

बढ़ई लकड़ी को छीलते तो चिकनी होती ।

राजा ने घी खरीदवाया ।

गोपाल पशु को पानी पिलाए ।

भाई बहिन को ससुराल भेजता है ।

माता पुत्री के लिए आभूषण गढ़वायेगी ।

वह अच्छे-अच्छे कार्यों से कीर्ति फैलाता है ।

सेठ चौमासा (चतुर्मास) के पहले घर को साफ करवायेंगे ।

वाक्य (प्राकृत)

सेट्ठी सरीरम्मि तेल्लं चोप्पडावइ ।

निवो कुमारं हत्थिम्मि चडाविहिइ ।

भिच्चो भिक्खूणं दाणं अल्लिवावसी ।

इत्थीओ वेज्जस्स सरीरं देक्खावंति ।

माया पुत्तं मिठ्ठं किसरं अण्हावेहिइ ।

नणंदा पुत्ति उंघावंती[1] तया पुत्ती न रुवंती ।

विज्जत्थी अन्नं विज्जत्थि विहाणम्मि उट्ठावेइ ।

गुरू सीसं पणामावइ ।

महावीरो गोयमं सरावइ ।

गोयमो लोगे धम्मं सुणावइ ।

●

---

१. क्रियातिपत्ति का स्त्रीलिङ्गी रूप है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीसहाँ पाठ

भावे तथा कर्मणि-प्रयोग के प्रत्यय*—

ईअ, ईय, इज्ज (य)—(देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।१६०)।

---

* पालिभाषा में भावे तथा कर्मणि प्रयोग के प्रत्यय इस प्रकार हैं—

य, इय, ईय।

इन प्रत्ययों के लगने के बाद 'ति' 'ते' आदि पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने से निम्नोक्त रूप बनते हैं। 'य' लगाने के बाद अक्षरपरिवर्तन के नियमानुसार 'य' का लोप होता है और शेष व्यंजन का द्विर्भाव होता है।

तुस्—तुस्यते—तुस्सते, तुसियति

पुच्छ्—पुच्छ्यते—पुच्छते, पुच्छियति

मह्—महीयति

मथ्—मथीयति—देखिए पा० प्र० पृ० २३४।

पैशाची भाषा में कर्म में तथा भाव में 'इय्य' प्रत्यय लगता है।

—देखिए हे० प्रा० व्या० ८।४।३१५।

गा + इय्य + ते = गिय्यते (गीयते)।

दा + इय्य + ते = दिय्यते (दीयते)।

रम् + इय्य + ते = रमिय्यते (रम्यते)।

पठ् + इय्य + ते = पठिय्यते (पठ्यते)।

मात्र 'कृ' धातु को 'ईर' प्रत्यय लगता है—

कृ + ईर + ते = कीरते।

कृ + ईर + माणो = कीरमाणो।

—देखिए हे० प्रा० व्या० ८।४।३१६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किसी भी धातु का भावप्रधान अथवा कर्म-प्रधान अंग बनाना हो तो उसके साथ 'ईअ', 'ईय' और 'इज्ज' इन तीन प्रत्ययों में से कोई एक प्रत्यय लगाना चाहिए।

ये तीनों प्रत्यय केवल वर्तमानकाल, विध्यर्थ, आज्ञार्थ और ह्यस्तन-भूतकाल में ही प्रयुक्त हो सकते हैं। अतः भविष्यत्काल तथा क्रियातिपत्ति आदि अर्थ में भावे और कर्मणि प्रयोग, कर्तरि-प्रयोग की भाँति ही समझने चाहिए।

भाव—याने क्रिया, जो प्रयोग मुख्यतः क्रिया को ही बताता है वह भावेप्रयोग होता है।

भावेप्रयोग अकर्मक धातुओं से बनता है। हिन्दी व्याकरण में 'रोना, पैदा होना, सोना, ऊंघना, लज्जित होना' आदि धातुएँ ही अकर्मक रूप से प्रसिद्ध हैं। जबकि यहाँ जिस धातु के प्रयोग में कर्म न हो अथवा अध्याहार में कर्म हो, वह सकर्मक धातु भी अकर्मक माना जाता है। इसीलिए खाना, पीना देखना, गढ़ना, करना आदि सकर्मक धातुएँ भी कर्म की अविवक्षा की अपेक्षा से अकर्मक रूप से प्रयुक्त होते हैं। इन दोनों प्रकार के अकर्मक धातुओं का भावेप्रयोग होता है।

जिसे कर्ता क्रिया द्वारा विशेष रूप से चाहता है वह कर्म—छोटी-बड़ी सभी क्रियाओं का फल। जो प्रयोग कर्म को ही सूचित करता है वह कर्मणि-प्रयोग कहलाता है।

भावे और कर्मणि प्रयोग के अंग—

भावसूचक अंग

बीह—बीहीअ, बीहिज्ज	खा—खाईअ, खाइज्ज
उंघ्—उंघीअ, उंघिज्ज	लज्ज—लज्जीअ, लजिज्ज
कह—कहीअ, कहिज्ज	बुड्ड—बुड्डीअ, बुड्डिज्ज
बोल्ल—बोल्लीअ, बोल्लिज्ज	हो—होईअ, होइज्ज।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मसूचक अंग

पा—पाईअ, पाइज्ज । कड्ढ—कड्ढीअ, कड्ढिज्ज ।
दा—दाईअ, दाइज्ज । घड्—घडीय, घडिज्ज ।
झा—झाईअ, झाइज्ज । खा—खाइय, खाइज्ज ।
ला—लाईय, लाइज्ज । कह्—कहीय, कहिज्ज ।
पढ्—पढीय, पढिज्ज । बोल्ल्—बोलीय, बोल्लिज्ज ।

इस प्रकार धातुमात्र के भाववाची और कर्मवाची अंग बना लेने चाहिए और तैयार हुए इस अंग में वर्तमान आदि कालवाचक तथा पुरुष-बोधक प्रत्यय लगाकर उसके रूप सिद्ध कर लें।

वर्तमानकालिक

भावप्रधान (उदाहरण)

बीहीअइ, बीहिज्जइ (भीयते)।
बीह् + ईअ + इ = बीही-अइ, एइ, अए, एए ।
बीह् + इज्ज + इ = बीही,-ज्जइ, ज्जेइ, ज्जए, ज्जेए ।
बीहीएज्ज, बीहीएज्जा } सर्वपुरुष-सर्ववचन में।
बीहिज्जेज्ज, बीहिज्जेज्जा }

भावप्रधान प्रयोगों में भाव—क्रिया ही मुख्य होती है। प्रथम अथवा द्वितीय पुरुष का प्रयोग इसमें सम्भव नहीं है। इसी प्रकार दो-तीन अथवा इससे अधिक संख्या का प्रयोग भी इसमें नहीं होता। अतः साधारणतः भावेप्रयोग तीसरे पुरुष के एकवचन द्वारा व्यवहार में आता है।

कर्मप्रधान

भणीयइ, भणिज्जइ गंथो (भण्यते ग्रन्थः)।
भण् + ईअ + इ = भणी-अइ, एइ, अए, एए ।
भण् + इज्ज + इ = भणि-ज्जइ, ज्जए, ज्जेए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणीयंति गंथा (भण्यन्ते ग्रन्थाः)
भणिज्जंति ।
भण् + ईय + न्ति = भणी-यंति, येंति, यंते, येंते, यइरे, येइरे
भण् + इज्ज + न्ति=भणि-ज्जंति, ज्जेंति,-ज्जंते, ज्जेंते, ज्जइरे, ज्जेइरे ।

सर्वपुरुष } भणीएज्ज, भणिज्जेज्ज।
सर्ववचन }

पुच्छीयसि तुमं (पृच्छ्यसे त्वम्) ।
पुच्छिज्जसि
पुच्छ् + ईय + सि = पुच्छी-यसि, येसि, यसे, येसे ।
पुच्छ् + इज्ज + सि = पुच्छि-ज्जसि, ज्जेसि, ज्जेसे ।
पुच्छीयामि । पुच्छिज्जामि अहं (पृच्छ्ये अहम्) ।
पुच्छ् + ईय + मि = पुच्छी-यमि, यामि, येमि ।
पुच्छ + इज्ज + मि = पुच्छि-ज्जमि, ज्जामि, ज्जेमि ।

सर्वपुरुष } पुच्छीयेज्ज, पुच्छीयेज्जा
सर्ववचन } पुच्छिज्जेज्ज, पुच्छिज्जेज्जा ।

आज्ञार्थ

पुच्छी-यउ, येउ, पुच्छि-ज्जउ, ज्जेउ ।
पुच्छी-यंतु, येंतु, पुच्छि-ज्जंतु, ज्जेंतु ।

विध्यर्थ

पुच्छ् + ईय = पुच्छीयिज्जामि, पुच्छीयेज्जामि (अहं पृच्छ्येय) ।
पुच्छीयिज्जामो, पुच्छीयेज्जामो (वयं पृच्छ्येमहि) ।

ह्यस्तनभूतकाल

भण्—भणीअसी, भणीअही, भणीअहीअ, भणीयइत्था, भणीयइत्थ, भणीइंसु, भणीअंसु, भणिज्जसी, भणिज्जही, भणिज्जहीअ, भणिज्जइत्था, भणिज्जइत्थ, भणिज्जिसु, भणिज्जंसु ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्यतनभूतकाल

भणीअ, भणित्था, भणित्थ, भणिसु, भणंसु ।

भविष्यत्काल

भणिस्सं, भणेस्सं, भणिस्सामि, भणेस्सामि, भणिहामि, भणेहामि, भणिहिमि, भणेहिमि आदि सभी रूप कर्तरिवाच्य के समान समझें (देखो पाठ १३) ।

क्रियातिपत्ति

भणंतो, भणमाणो, भणेज्ज, भणेज्जा (पुंलिंग) ।
भणंती, भणमाणी (स्त्रीलिंग) ।
भणंता, भणमाणा (,,) ।

प्रेरक भावेप्रयोग और कर्मणिप्रयोग—

१. धातु का प्रेरक भावे अथवा कर्मणिप्रयोगी रूप बनाना हो तो मूलधातु के प्रेरणासूचक एकमात्र 'आवि' प्रत्यय लगाकर उस अंग में भावे और कर्मणि प्रयोग के सूचक उक्त ईअ, ईय, अथवा इज्ज प्रत्यय पूर्वोक्त प्रक्रिया के अनुसार लगा लेने चाहिए ।

अथवा

२. प्रेरणासूचक कोई भी प्रत्यय न लगाकर केवल मूलधातु के उपान्त्य 'अ' को 'आ' करके उसके पीछे उक्त ईअ, ईय अथवा इज्ज प्रत्यय पूर्व की भाँति लगा लें । इस प्रकार भी प्रेरक भावे और प्रेरक कर्मणि-प्रयोग के रूप बन सकते हैं । इसके सिवाय अन्य किसी भी रीति से प्रेरकभावे अथवा प्रेरककर्मणि प्रयोग के अंग नहीं बन सकते ।

'कर्' अंग के रूप

करावीअइ (काराप्यते) ।

कर् + आवि = करावि + ईअ = करावीअ, करावी-अइ, अए, असि, असे इत्यादि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्—कार + ईअ = कारीअ–कारी-अइ, अए (कार्यते)।

कारी-असि, कारी-असे (कार्यसे)।

कर् + आवि = करावि + इज्ज = कराविज्ज–ज्जइ, ज्जए (काराप्यते)।

कर् + कार—इज्ज = कारिज्ज–कारि–ज्जइ, ज्जए (कार्यते)।

कारि–ज्जसि, ज्जसे (कार्यसे)।

इस प्रकार धातुमात्र से प्रेरकभावे और प्रेरककर्मणि के अंग बनाकर सर्वकाल के रूप उक्त प्रक्रिया से तैयार कर लेने चाहिए।

भविष्यत्काल

कराविहिइ, कराविहिए, करविस्सते (कारापयिष्यते)

(देखिए पाठ तेरहवाँ)

कराविहिसि, कराविहिसे (कारापयिष्यसे)

कराविस्सामि, कराविहामि, कराविस्सं (कारापयिष्ये)

कारिस्सते, कारिहिए (कारयिष्यते) इत्यादि।

कुछ अनियमित अंग तथा उसके रूप (उदाहरण)

मूलधातु—भा० क० का अंग।

दरिस्—दीस्[1]—दीसइ (दृश्यते), दीसउ, दीससी, दीसिज्जइ, दीसिज्जउ।

वच्—वुच्च–वुच्चइ (उच्यते), वुच्चउ, वुच्चसी, वुच्चिज्जइ, वुच्चिज्जउ।

चिण्— { चिव्व[2]–चिव्वइ (चीयते), प्रे० चिव्वाविइ, चिव्वाविहिइ,
चिम्म–चिम्मइ, प्रे० चिम्माविइ, चिम्माविहिइ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६१। दीप और वुच्च ये दोनों अंग केवल वर्तमान, विध्यर्थ, आज्ञार्थ और ह्यस्तनभूत में ही प्रयुक्त होते हैं।

२. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४२–२४३। चिव्व से लेकर पूव्व पर्यन्त के अंग सह्यभेद के सिवाय कहीं भी प्रयुक्त नहीं होते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हण्[१]—हम्म–हम्मइ (हन्यते), हम्माविइ, हम्माविहिइ ।
खण्—खम्म–खम्मए (खन्यते), खम्माविइ, खम्माविहिइ ।
दुह्[२]—दुब्भ–दुब्भते (दुह्यते), दुब्भाविइ, दुब्भाविहिइ ।
लिह्[२]—लिब्भ–लिब्भए (लिह्यते), लिब्भाविइ, लिब्भाविहिइ ।
वह्[२]—वुब्भ–वुब्भए (उह्यते), वुब्भाविइ, वुब्भाविहिइ ।
रुंभ्[२]—रुब्भ–रुब्भए (रुध्यते), रुब्भाविइ, रुब्भाविहिइ ।
डह्[३]—डज्झ–डज्झए (दह्यते), डज्झाविइ, डज्झाविहिइ ।
बंध्[४]—बज्झ–बज्झए (बध्यते), बज्झाविइ, बज्झाविहिइ ।
सं[५] + रुध्—संरुज्झ–संरुज्झए (संरुध्यते), संरुज्झाविइ, संरुज्झाविहिइ ।
अणु + रुध्—अणुरुज्झ–अणुरुज्झए (अनुरुध्यते), अणुरुज्झाविइ, अणुरुज्झाविहिइ ।
उव + रुध्—उवरुज्झ–उवरुज्झए (उपरुध्यते), उवरुज्झाविइ, उवरुज्झाविहिइ ।
गम्[६]—गम्म–गम्मए (गम्यते), गम्माविइ, गम्माविहिइ ।
हस्—हस्स–हस्सते (हस्यते), हस्साविइ, हस्साविहिइ ।
भण्—भण्ण–भण्णते (भण्यते), भण्णाविइ, भण्णाविहिइ ।
छुप्, छुव्—छुप्प–छुप्पते (छुप्यते=स्पृश्यते), छुप्पाविइ, छुप्पाविहिइ ।
रूव्—रूव्व–रूव्वए (रुद्यते), रूव्वाविइ, रूव्वाविहिइ ।
लभ्—लब्भ–लब्भए (लभ्यते), लब्भाविइ, लब्भाविहिइ ।
कथ्—कत्थ–कत्थते (कथ्यते), कत्थाविइ, कत्थाविहिइ ।
भुंज्—भुज्ज–भुज्जते (भुज्यते), भुज्जाविइ, भुज्जाविहिइ ।
हर्[७]—हीर–हीरते (ह्रियते), हीराविइ, हीराविहिइ ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४४ । २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४५ ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४६ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४७ ।
५. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४८ । ६. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४९ ।
७. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तर्—तीर्–तीरते (तीर्यते) तीराविइ, तीराविहिइ ।

कर्—कीर्–कीरते (क्रियते) कीराविइ, कीराविहिइ ।

जर्—जीर्–जीरते (जीर्यते) जीराविइ, जीराविहिइ ।

अज्ज्[1]—विढप्प–विढप्पते (अर्ज्यते) विढप्पाविइ, विढप्पाविहिइ ।

जाण्[2]—णज्ज—णज्जते (ज्ञायते) णज्जाविइ, णज्जाविहिइ ।
णव्व —(णव्वते) णव्वाविइ, णव्वाविहिइ ।

[3]वि + आ + हर्—वाहर्—वाहिप्पते (व्याह्रियते) वाहिप्पाविइ, वाहिप्पाविहिइ ।

गह्[4]—घेप्प–घेप्पते (गृह्यते) घेप्पाविइ, घेप्पाविहिइ ।

छिव्[5]—छिप्प–छिप्पते (स्पृश्यते) छिप्पाविइ, छिप्पाविहिइ ।

सिच्[6]—सिप्प–सिप्पते (सिच्यते) सिप्पाविइ, सिप्पाविहिइ ।

निह्[7]— ,, ,, (स्निह्यते)

जिण्[8]—जिव्व–जिव्वते (जीयते) जिव्वाविइ, जिव्वाविहिइ ।

सुण्—सुव्व–सुव्वते (श्रूयते) सुव्वाविइ, सुव्वाविहिइ ।

हुण्—हुव्व–हुव्वते (हूयते) हुव्वाविइ, हुव्वाविहिइ ।

थुण्—थुव्व–थुव्वते (स्तूयते) थुव्वाविइ, थुव्वाविहिइ ।

लुण्—लुव्व–लुव्वते (लूयते) लुव्वाविइ, लुव्वाविहिइ ।

धुण्—धुव्व–धुव्वते (धूयते) धुव्वाविइ, धुव्वाविहिइ ।

पुण्—पुव्व–पुव्वते (पूयते) पुव्वाविइ, पुव्वाविहिइ ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५१ । 'विढप्प' यह अंग 'अर्ज' धातु के अर्थ में प्रयुक्त होता है लेकिन उसका मूलस्वरूप 'अर्ज' में नहीं, 'अर्ज'— 'अज्ज' और विढप्प में परस्पर कोई समानता नहीं उपलब्ध होती । २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५२ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५३ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५६ । ५. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५७। ६. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५५ । ७. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५४ । ८. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*स्त्रीलिङ्ग सर्वादि शब्द

'सव्वी' 'सव्वा' 'ती' 'ता' 'जी' 'जा' 'की' 'का' 'इमी' 'इमा' 'एई' 'एआ' और 'अमु' इत्यादि स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दों के रूप 'माला', 'नदी' (? धेणु) की भाँति होते हैं।

विशेषता यह है।

ती, ता / णी, णा } (तत् का स्त्री० ता) शब्द के रूप

प्र०	सा (सा)	तीआ, तीउ, तीओ, ती।
		ताउ, ताओ, ता (ताः)
द्वि०	तं (ताम्)	तीआ, तीउ, तीओ, ती
	णं	ताउ, ताओ, ता (ताः)
तृ०	तीअ, तीआ[1] तीई, तीए,	तीहि, तीहिं, तीहिँ।
	ताअ, ताई, ताए, (तया)	ताहि, ताहिं, ताहिँ।
च० } ष०	से[2]	सिं[3]
	तास, तिस्सा, तीसे (तस्यै, तस्याः)	
	तीअ, तीआ, तीइ, तीए	तेसिं (तासाम्)
	ताअ, ताइ, ताए	ताण, ताणं (तानाम् ?)
स०	ताहिं[4] (तस्याम्)	तासु, तासुं (तासु)
	तीअ, तीआ, तीइ, तीए।	
	ताअ, ताइ, ताए।	

'णी' और 'णा' के रूप भी 'ती' और 'ता' के समान ही होते हैं।

---

* स्त्रीलिंगी 'सर्व' आदि शब्दों के पालिरूप के लिए देखिए पा० प्र० पृ० १४०, १४३, १४५, १४७, १५० वगैरह।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।६२।६४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।८१। ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।६०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो, जा (यत् का स्त्री० या) शब्द के रूप

प्र०	जा (या)	जीआ, जीउ, जीओ, जी । जाउ, जाओ, जा (याः)
द्वि०	जं (याम्)	,, ,, ,, (,,)
च० ष०	जास, जिस्सा, जीसे (यस्यै, यस्याः) जीअ, जीआ, जीइ, जीए । जाअ, जाइ, जाए ।	जाण, जाणं (यासाम्) (यानाम् ?)
स०	जाहिं (यस्याम्) जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जासुं जाअ, जाइ, जाए ।	जासु (यासु)

की, का (किम् का स्त्री० का) शब्द के रूप

प्र०	का (का)	कीआ, कीउ, कीओ, की । काउ, काओ, का (काः)
द्वि०	कं (काम्)	,, ,, ,, (,,)
च० ष०	किस्सा, कीसे, कास (कस्यै, कस्याः) कीअ, कीआ, कीइ, कीए । काअ, काइ, काए ।	काण, काणं (काभ्यः, कासाम्)
स०	काहिं कीअ, कीआ, कीइ, कीए काअ, काइ, काए (कस्याम्)	कीसु, कीसुं कासु, कासुं (कासु)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमा, इमी (इदम् का स्त्री० इमा) शब्द का रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०	इमिआ, इमा, इमी (इयम्)	इमीका, इमीउ, इमीओ इमाउ, इमाओ, इमा (इमाः)
तृ०	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ, इमाए (अनया)	इमीहि, इमीहिं, इमीहिँ इमाहि, इमाहिं, इमाहिँ आहि, आहिं, आहिँ (आभिः)
च० ष०	से[1] इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ, इमाए (अस्यै)	सिं[2] इमीण, इमीणं इमाण, इमाणं (आभ्यः, आसाम्)

एआ, एई (एतत् का स्त्री० एता) का रूप

प्र०	एसा, एस, इणं, इणमो (एषा)	एईआ, एईउ, एईओ, एई एआउ, एआओ, एआ (एताः)
च० ष०	से[3] एइअ, एईआ, एईइ, एईए एआअ, एआइ, एआए (एतस्मै, एतस्याः)	सिं[3] (एतासाम्) एईण, एईणं एआण, एआणं (एतानाम् ?)

(उक्त रूपों में ईकारान्त और आकारान्त अंग के सभी रूप नहीं दिए गए हैं लेकिन वे सभी इसी पद्धति से समझ लें ।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।६२।६४। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।८१।
३. हे० प्रा० व्या० ८।३।८१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमु (अदस्) शब्द के रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०	अह[1], अमू	अमूउ, अमूओ, अमू (अमूः)

शेष रूप 'धेणु' की भाँति होंगे।

सामान्य शब्द

केवट्ट (कैवर्त) = केवट, खेवट, नौका चलानेवाला।
जट्ट (जर्त)) = एक जाति, जाट, कृषक, किसान जाति के लोग।
धुत्त (धूर्त) = धूर्त, शठ, वंचक।
मुहुत्त (मुहूर्त) = मुहूर्त।
सय्ह (सह्य) = सह्याद्रि, एक पर्वत विशेष।
गुय्ह (गुह्य) = गुह्यक—यक्ष, गुह्य—गुप्त, गूढ़।
सव्वज्ज (सर्वज्ञ) = सर्वज्ञ, सब को जाननेवाला।
देवज्ज (दैवज्ञ) = दैव—भाग्य को जाननेवाला।
किलेस (क्लेश) = क्लेश, कलह।
पिलोस (प्लोष) = प्लोष—दाह, दहन।
कलाव (कलाप) = कलाप—समूह।
साव (शाप) = श्राप, शाप।
सवह (शपथ) = शपथ, सौगन्ध।
पल्हाअ (प्रह्लाद) = 'प्रह्लाद' नामक एक राजकुमार।
आल्हाअ, आल्हाद (आह्लाद) = आह्लाद, आनन्द।
पज्ज (प्राज्ञ) = प्राज्ञ, बुद्धिमान्।
सिलोग, सिलोअ (श्लोक) = श्लोक, कीर्ति।
सिलिम्ह (श्लेष्मन्) = श्लेष्म, कफ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।८७।८८।८९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कासव (काश्यप) = कश्यप गोत्र का ऋषि—ऋषभदेव अथवा महावीर स्वामी ।

कविल (कपिल) = कपिल ऋषि ।

वाक्य (हिन्दी)

केवट से सरोवर तिरा जाता है।

पिता द्वारा प्रह्लाद बांधा जाता है।

कश्यप द्वारा चण्डाल स्पर्श किया जाता है।

राजा द्वारा कीर्ति इकट्ठी की जाती है।

कपिल द्वारा तत्त्व कहा जाता है।

ऋषभदेव द्वारा धर्म कहा जाता है।

सर्वज्ञ द्वारा क्लेश जीते जाते हैं।

उसके द्वारा शास्त्र सुनाया जाता है।

जिसके द्वारा बकरा होमा जाता है उसके द्वारा धर्म नही जाना जाता।

वाक्य (प्राकृत)

निवेण सत्तुणो जिव्वंति ।

गोवालेण गउओ दुब्भते ।

भारवहेहिं भारो वुब्भए ।

दायारेण दाणेण गुणाइ लब्भंते।

मुणिणा संजमो घप्पते ।

मालाआरेण जलेण उज्जाणाणि सिप्पंते ।

कसिबलेण तणाइं लूव्वंति ।

सोयारेहिं मत्थयाइं धुव्वंते ।

वद्धमाणेण मम घरं पुव्वते ।

बालेण गामो गम्मइ ।

बालेहिं हस्सइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इक्कीसवाँ पाठ

व्यञ्जनान्त शब्द

प्राकृत में रूपाख्यान के समय कोई भी शब्द व्यञ्जनान्त नहीं रहता। अतः सभी के रूप स्वरान्त की भाँति समझने चाहिए। 'अत्' और 'अन्' अन्त वाले नामों (शब्दों) के रूप में जो विशेषता है वह इस प्रकार है :—

नाम के अन्त में वर्तमान कृदन्त-सूचक 'अत्'[1] प्रत्यय के स्थान में 'अंत' तथा मत्वर्थीय 'मत्' प्रत्यय के स्थान में 'मंत'[2] अथवा 'वंत'[2] का व्यवहार होता है।

अत्—भवत्—भवंत।
गच्छत्—गच्छंत।
नयत्—नयंत, नेंत।
गमिष्यत्—गमिस्संत।
भविष्यत्—भविस्संत।

मत्—भगवत्—भगवंत।
गुणवत्—गुणवंत।
धनवत्—धणवंत।
ज्ञानवत्—णाणवंत, नाणवंत।
नीतिमत्—नीइवंत, णीइवंत।
ऋद्धिमत्—रिद्धिवंत।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१८१। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अन्त' प्रत्ययान्त नामों के सभी रूप अकारान्त नाम (शब्द) की भाँति होते हैं :—

भगवंतो, भगवंतं, भगवंतेण इत्यादि रूप 'वीर' की भाँति समझने चाहिए।

'अत्' प्रत्ययान्त नामों के कुछ अनियमित रूप

भगवत्

प्र० ए० भगवं[1] (भगवान्)

प्र० ब० भगवंतो (भगवन्तः)

तृ० ए० भगवता, भगवया (भगवता)

ष० ए० भगवतो, भगवओ (भगवतः)

सं० ए० भगवं[2] !, भयवं !, भयव ! (हे भगवन् !)

भवत्

प्र० ए० भवं[3] (भवान्)

प्र० ब० भवंतो (भवन्तः)

द्वि० ए० भवंतं (भवन्तम्)

द्वि० ब० } भवतो (भवतः) / भवओ

तृ० ए० } भवता (भवता) / भवया

ष० ब० } भवतो (भवतः) / भवओ (,,)

ष० ब० भवयाण (भवताम्)

'अन्' प्रत्ययान्त नामों के 'अन्' को विकल्प से 'आण' होता है (हे० प्रा० व्या० ८।३।५६।) । जैसे—

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६५। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६४।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्वन्—[अध्व् + अन् = अद्ध + आण = अद्धाण] अद्धाण, अद्ध ।

आत्मन्—अप्पाण, अप्प, अत्ताण, अत्त ।

उक्षन्—उच्छाण, उच्छ, उक्खाण, उक्ख ।

ग्रावन्—गावाण, गाव ।

युवन्—जुवाण, जुव ।

तक्षन्—तच्छाण, तच्छ, तक्खाण, तक्ख ।

पूषन्—पूसाण, पूस ।

ब्रह्मन्—बम्हाण, बम्ह ।

मघवन्—मघवाण, मघव ।

मूर्धन्—मुद्धाण, मुद्ध ।

राजन्—रायाण, राय ।

श्वन्—साण, स ।

सुकर्मन्—सुकम्माण, सुकम्म ।

इन सब नामों के रूप अकारान्त नाम की भाँति बना लेना चाहिए :—

अद्धाणो, अद्धाणं, अद्धाणेण ।

अद्धो, अद्धं, अद्धेण ।

साणो, साणं, साणेण ।

सो, सं, सेण ।

रायाणो, रायाणं, रायाणेण ।

रायो, रायं, रायेण इत्यादि ।

जब नाम (शब्द) के अन्तिम 'अन्' को 'आण' नहीं होता तब उनके कुछ अन्य रूप भी बनते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*'राय' (राजन्) शब्द के रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०	÷राया[1] (राजा)	राइणो[2], रायाणो[3] (राजानः)
द्वि०	राइणं[4] (राजानं)	,, ,, रण्णो[5] (राज्ञः)

★ पालि भाषा में राजन् वगैरह शब्दों के रूप थोड़े भिन्न होते हैं। जैसे—प्राकृत में 'राय' शब्द है वैसे पालि में 'राज' शब्द है। पालि में 'राज' शब्द के रूप अकारान्त के समान होते हैं।

राजा	राजानो
राजानं, राजं	राजानो
राजेन	राजेभि, राजेहि इत्यादि।

प्राकृत में जहाँ 'रण्णा' जैसे दो णकारवाले रूप होते हैं वहाँ पालि में रञ्ञा, रञ्ञो ऐसे दो 'ञ्ञ' कार वाले रूप होंगे और प्राकृत में जहाँ राइणा, राइणो इत्यादिक 'इ' कार वाले रूप होते हैं वहाँ पालि में राजिना, राजिनो इत्यादि रूप बनेंगे और तृ० बहु० राजूभि तथा च०-ष० बहुवचन में राजूनं, रञ्ञं सप्तमी के एकवचन में राजिनि, बहुव० में राजुसु इत्यादिक रूप होते हैं (देखिए पा० प्र० पृ० १२३)।

पालि में अत्त, अत्तन, अत्तान (आत्मन्) के रूप अकारान्त 'बुद्ध' के समान होते हैं। विशेषता यह है कि द्वि० ब० अत्तानो, तृ० ए० अत्तना, च०-ष० ए० अत्तनो, च०-ष० ब० अत्तानं, स० ए० अत्तनि ऐसे रूप भी होते हैं।

ब्रह्म, ब्रह्मु (ब्रह्मन्) के रूप :—

प्र० ब्रह्मा, ब्रह्मानो

द्वि० ब्रह्मानं ,,

तृ० ब्रह्मुना इत्यादि होते हैं।

पालि में 'ब्रह्मु' के रूप उकारान्त की तरह होंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ०	राइणा[६], रण्णा (राज्ञा)	[७]राईहि, राईहिं, राईहिँ (राजभिः)
च०	राइणो[८], रण्णो + (राज्ञः)	राईणं[९], राईण, राइणं[९] (राज्ञाम्)
पं०	राइणो[८], रण्णो (राज्ञः)	राइत्तो[१०], राईतो, राईओ राईउ (राजतः) राईहि, राईहिंतो (राजभ्यः)
ष०	राइणो, रण्णो (राज्ञः)	राईण[९], राईणं, (राज्ञाम्) राइणं[९]

अद्ध, अद्धु (अध्वन्) के रूप पालि में ब्रह्म, ब्रह्मु की तरह समझें।

इसी प्रकार युवान, युव (युवन्); स, सान (श्वन्) के रूपों के लिए पा० प्र० पृ० १२५ से १२७ तक देख लें और पुम, पुमु (पुमन्) के रूप के लिए भी देखिए पा० प्र० पृ० १३०–१३१।

÷ मागधी में 'लाया', 'लाइणो', 'लायाणो' इत्यादि रूप होंगे।

+ पैशाची में 'रण्णा' के स्थान में 'राचिञा', 'रण्णो' के स्थान में राचिञो' रूप भी होता है (हे० प्रा० व्या० ८।४।३०४) और प्राकृत में जहाँ 'ण्ण'—दो ण कारयुक्त रूप है वहाँ पैशाची में 'ञ्ञ'—दो ञकार युक्त रूप होता है (हे० प्रा० व्या० ८।४।३०३)।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।४९। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।५०।५२। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।५०। ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।५३। ५. हे० प्रा० व्या० ८।२।४२। तथा ८।१।३७। यह 'रण्णो' रूप 'राज्ञः' शब्द से सिद्ध करना। ६. हे० प्रा० व्या० ८।३।५१।५२ तथा ५५। ७. हे० प्रा० व्या० ८।३।५४। ८. हे० प्रा० व्या० ८।३।५०।५२ तथा ५५। ९. हे० प्रा० व्या० ८।३।५४। तथा ५३। १०. हे० प्रा० व्या० ८।३।५४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	राइंसि[११], राइम्मि (राज्ञि)	राइसु[१२], राईसुं (राजसु)
सं०	हे राया ! (हे राजन् !)	राइणो, रायाणो (राजानः)

अत्त अथवा अप्प (आत्मन्=आत्मा) शब्द के रूप

प्र०	अप्पा[१३], अत्ता (आत्मा)	अप्पाणो (आत्मानः)
द्वि०	अप्पिणं[१४], अत्ताणं (आत्मानम्)	,, (,,)
तृ०	अप्पणिआ[१५], अप्पणइआ अप्पणा, (आत्मना) अत्तणा	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ (आत्मभिः)
च० } ष० }	अप्पाणो (आत्मनः) अत्तणो	अप्पिणं (आत्मनाम्)
पं०	अप्पाणो (आत्मनः)	अप्पत्तो, अप्पतो (आत्मतः)

इत्यादि ।

'पूस' (पूषन्=इन्द्र, सूर्य) शब्द के रूप

प्र०	पूसा (पूषा)	पूसाणो (पूषणः)
द्वि०	पूसिणं (पूषणं)	,, (पूष्णः)
तृ०	पूषणा (पूष्णा)	पूसहि, पूसहिं, पूसहिँ (पूषभिः)
च० } ष० }	पूसाणो (पूष्णः)	पूसिणं (पूष्णाम्)
पं०	,, ,,	पूसत्तो, पूसतो (पूषतः)

इत्यादि ।

---

११. हे० प्रा० व्या० ८।३।५२ । १२. हे० प्रा० व्या० ८।३।५४ ।
१३. हे० प्रा० व्या० ८।३।४९ । १४. हे० प्रा० व्या० ८।३।५३ ।
१५. हे० प्रा० व्या० ८।३।५७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मघव, महव (मघवन्) शब्द के रूप

प्र० मघवं[1], मघवा (मघवा) मघवाणो (मघवन्तः)

इत्यादि 'पूसा' की भाँति ।

रूप की प्रक्रिया

प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	+	णो
द्वि०	इणं	
तृ०	णा	
च० } ष० }	णो	इणं
पं०	णो	
स०	+	णो

+ इस चिह्न वाले अर्थात् प्रथमा और सम्बोधन के एकवचन में राय, पूस, मघव, आदि नामों के अन्त्य स्वर को दीर्घ होता है :—

राय = राया, मघव = मघवा, पूस = पूसा ।

'णा' प्रत्यय को छोड़ 'ण'कारादि प्रत्यय परे रहने पर पूस आदि शब्दों के अन्त्य स्वर को दीर्घ होता है :—

पूस + णो = पूसाणो, राय + णो = रायाणो ।

अपवाद

प्रथमा और सम्बोधन के सिवाय णकारादि प्रत्यय परे रहने पर 'राय' के स्थान में 'राइ' और 'रण्' का उपयोग होता है । जैसे—

राय + णा = राइणा, रण्णा ।

राय + णो = राइणो, रण्णो ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथमा और सम्बोधन के बहुचन में 'णो' प्रत्यय लगने पर 'राय' के स्थान में केवल 'राइ' का ही उपयोग होता है ।

'इणं' प्रत्यय परे रहने पर 'राय' के 'य' कार का लोप हो जाता है। जैसे—

राय + इणं = राइणं (राजानम्)

राय + इणं = राइणं (राज्ञाम्)

संकेत :—राइ + ण = राईण, राईणं इन रूपों में 'इणं' प्रत्यय नहीं है बल्कि षष्ठी बहुवचन का 'ण' प्रत्यय है ।

'अन्' प्रत्ययान्त किसी-किसी शब्द को तृतीया के एकवचन में 'उणा' और पञ्चमी तथा षष्ठी के एकवचन में 'उणो' प्रत्यय लगता है । जैसे :—

कम्म (कर्मन्)

कम्म + उणा = कम्मुणा (कर्मणः) ।

कम्म + उणो = कम्मुणो (कर्मणः)।

कुछ अनियमित रूप

मणसा (मनसा)

मणसो (मनसः)

मणसि (मनसि)

मणसि (मनसि)

वयसा (वचसा)

सिरसा (शिरसा)

कायसा (कायेन)

कालधम्मुणा (कालधर्मेण)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*'तद्धित' प्रत्ययों का उदाहरण

१. 'उसका यह'—इस अर्थ में 'केर' प्रत्यय लगता है। जैसे—

अम्ह + केरं = अम्हकेरं[1] (अस्माकं इदम्—अस्मदीयम्)=हमारा।

तुम्ह + केरं = तुम्हकेरं (युष्माकम्–इदम्=युष्मदीयम्) = तुम्हारा।

पर + केरं=परकेरं (परस्य इदम् = परकीयम्) = पराया।

राय + केरं = रायकेरं (राज्ञः इदम् = राजकीयम्) = राजा का।

२. 'तत्र भवं'—'उसमें होने वाला' अर्थ में 'इल्ल' और 'उल्ल' प्रत्ययों का उपयोग होता है। जैसे—

गाम + इल्ल = गामिल्लं[2] (ग्रामे भवं) = ग्राम में होनेवाला।

घर + इल्ल = घरिल्लं (गृहे भवं) = घरेलू, घर में होने वाला।

अप्प + उल्ल = अप्पुल्लं (आत्मनि भवं) = आत्मा में होनेवाला।

नयरं + उल्ल = नयरुल्लं (नगरे भवं) = नगर में होनेवाला।

३. 'इव'—'उसके जैसा' अर्थ में 'व्व'[3] प्रत्यय का उपयोग होता है। यथा :—

महुर व्व पाडलिपुत्ते पासाया (मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः)।

४. 'इमा'[4], 'त्त', 'त्तण' प्रत्यय 'भाव'* अर्थ का सूचक है। जैसे—

पीणा + इमा = पीणिमा (पीनिमा–पीनत्वम्)=पीनत्व, पीनता, मोटापा, मोटापन।

---

* पालि भाषा में तद्धित प्रत्ययों की समझ के लिए संकीर्णकल्प में आया हुआ 'तद्धित' का प्रकरण देखना चाहिए (देखिए पा० प्र० पृ० २५६-२६१)।

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४७। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६३।

३. ८।२।१५०। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५४।

* 'भाव' अर्थ में पालि में भी 'त्तन' प्रत्यय होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देव + त्त = देवत्तं (देवत्वम्) = देवपना, देवत्व ।

बाल + त्तण = बालत्तणं (बालत्वं) = बचपन, शिशुत्व, बालत्व ।

५. 'बार' *अर्थ को बताने के लिए 'हुत्तं'[1] और 'खुत्तो' प्रत्यय का उपयोग होता है। जैसे :—

एग + हुत्तं = एगहुत्तं (एककृत्वः–एकवारम्) = एक बार ।

ति + हुत्तं = तिहुत्तं (त्रिकृत्वः–त्रिवारम्) = तीन बार ।

ति + खुत्तो = तिखुत्तो / तिक्खुत्तो } (त्रिकृत्वः ,,) ,,

६. आल[2], आलु, इत्त, इर, इल्ल, उल्ल', मण, मंत और वंत आदि प्रत्यय 'वाले' अर्थ को प्रकट करते हैं। जैसे :—

आल—रस + आल = रसाल (रसवान्) = रसवाला ।

जटा + आल = जटाल (जटावान्) = जटाओं वाला ।

आलु—दया + आलु = दयालु (दयालुः) = दयालु, दयावाला ।

लज्जा + आलु = लज्जालु (लज्जालुः) = लज्जावाला ।

इत्त — मान + इत्त = माणइत्तो (मानवान्) = मानवान, मानवाला।

इर — रेहा + इर = रेहिरो (रेखावान्) = रेखावान, रेखावाला ।

गव्व + इर = गव्विरो (गर्ववान्) = गर्ववान, गर्ववाला ।

इल्ल—सोभा + इल्ल = सोभिल्लो (शोभावान्) = शोभावान् ।

---

*'बार' अर्थ में 'क्खत्तु' प्रत्यय होता है जैसे—द्विक्खत्तु—दो बार । आर्ष प्राकृत में 'हुत्तं' का प्रयोग कम दीखता है परन्तु 'क्खुत्तो' का प्रयोग अधिक होता है। जैसे—दुक्खुत्तो (दो बार), तिक्खुत्तो (तीन बार) ऐसे रूप होते हैं ।

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५८ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्ल—सद्द + उल्ल = सद्दल्लो (शब्दवान्) = शब्दवान्, शब्दवाला ।

मण—धण + मण = धणमणो (धनवान्) = धनवान ।

सोहा + मण = सोहामणो (शोभावान्) = सुहावना, शोभावान् ।

बीहा + मण = बीहामणो (भयवान्) = भयावना, भय वाला ।

मंत—धी + मंत = धीमंतो (धीमान्) = धीमंत, बुद्धिमान् ।

वंत—भत्ति + वंत = भत्तिवंतो (भक्तिमान्) = भक्तिवंत ।

७. 'त्तो'[१] प्रत्यय पञ्चमी विभक्ति को सूचित करता है ।

सव्व + त्तो = सव्वत्तो (सर्वतः) = सब प्रकार से, सब ओर से ।

क + त्तो = कत्तो (कुतः) = कहाँ से, किससे ।

ज + त्तो = जत्तो (यतः) = जहाँ से, जिससे ।

त + त्तो = तत्तो (ततः) = वहाँ से, उससे ।

इ + त्तो = इत्तो (इतः) = यहाँ से, इससे ।

८. 'हि'[२], 'ह' और 'त्थ' प्रत्यय सप्तमी के अर्थ सूचित करते हैं । जैसे :—

ज + हि = जहि (यत्र) = यहाँ ।

ज + ह = जह ,, ,,

ज + त्थ = जत्थ (यत्र) ,,

त + हि = तहि (तत्र) = वहाँ ।

त + ह = तह ,, ,,

त + त्थ = तत्थ ,, ,,

क + हि = कहि (कुत्र) = कहाँ ।

क + ह = कह ,, ,,

क + त्थ = कत्थ (कुत्र) ,,

---

१. हे० प्रा० व्या ८।२।१६० । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. 'उसका तेल'[1]—इस अर्थ में 'एल्ल' (तैल[2]) प्रत्यय का प्रयोग होता है। जैसे :—

कडुअ + एल्ल = कडुएल्लं (कटुकस्य तैलम्—कटुकतैलं) = कडुवा तेल, सरसों का तेल।

दीव + एल्ल = दीवेल्लं (दीपस्य तैलम्—दीपतैलम्) = दीपक का तेल।

एरंड + एल्ल = एरंडेल्लं (एरण्डस्य तैलम्—एरण्ड तैलम्) = एरण्डी—का तेल।

धूप + एल्ल = धूपेल्लं (धूपस्य तैलम्—धूपतैलम्) =धूपयुक्त तेल।

१०. 'स्वार्थ'[3] अर्थ को सूचित करने के लिए 'अ', 'इल्ल' और 'उल्ल' प्रत्यय का व्यवहार विकल्प से होता है। जैसे :—

चन्द्र + अ = चन्द्रओ, चन्द्रो (चन्द्रकः) = चाँद, चन्द्रमा।

पल्लव + इल्ल = पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लवकः) = पल्ला, किनारा।

हत्थ + उल्ल = हत्थुल्लो, हत्थो (हस्तकः) = हाथ।

११. कुछ अनियमित तद्धित :—

एक्क[4] + सि = एक्कसि
एक्क + सिअं = एक्कसिअं } (एकदा) = एक समय।
एक्क + इआ = एक्कइआ

भ्रू[5] + मया = भुमया } (भ्रूः) = भौंह।
भ्रू + मया = भमया

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५५। २. दीपस्य तैलं—'दीपतैलं' शब्द में 'तैल' शब्द ही किसी समय अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व खोकर प्रत्यय बना होगा। इसीलिए भाषा में (गुजराती भाषा में) 'धूपेल' में तैल शब्द समा गया है तो भी 'धूपेल तेल' शब्द का व्यवहार होता है।

३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६४। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६२।
५. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सण[1] + इअ = सणिअं (शनैः) = धीरे-धीरे ।
उवरि[2] + ल्ल = अवरिल्लो (उपरितनः) = ऊपर का ।

ज[3] + एत्तिअ = जेत्तिअं
ज + एत्तिल = जेत्तिलं } (यावत्) = जितना ।
ज + एद्दह = जेद्दहं

त + एत्तिअ = तेत्तिअं
त + एत्तिल = तेत्तिलं } (तावत्) = उतना ।
त + एद्दह = तेद्दहं

क + एत्तिअ = केत्तिअं
क + एत्तिल = केत्तिलं } (कियत्) = कितना ।
क + एद्दह = केद्दहं

एत + एत्तिअ = एत्तिअं } (एतावत्) = इतना ।
एत + एत्तिल = एत्तिल्लं
एत + एद्दह = एद्दहं } (इयत्) ,,

पर[4] + क्क = परक्कं, पारक्क (परकीयम्) = पराया ।
राय + क्क = रायक्क (राजकीयम्) = राजा का, राज का ।
अम्ह[5] + एच्चय = अम्हेच्चयं (अस्मदीयम्) = हमारा ।
तुम्ह + एच्चय = तुम्हेच्चयं (युष्मदीयम्) = तुम्हारा ।
सव्वंग[6] + इअ = सव्वंगिअं (सर्वाङ्गीणम्) = सर्वाङ्गीण, सब अंगों में व्याप्त ।

पह[7] + इअ = पहिओ (पथिकः) = पथिक ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६८ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६६ ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५७ ।
४. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४८ । ५. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४९ ।
६. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५१ । ७. हे० प्रा० ८।२।१५२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्प[1] + णय = अप्पणयं (आत्मीयम्) = अपना ।

कुछ वैकल्पिक रूप

नव[2] + ल्ल = नवल्लो, नवो (नवकः) = नया, नवीन ।

एक + ल्ल + एकल्लो, एक्को (एककः) = एक, अकेला ।

मनाक्[3] + अयं = मणयं }
,, + इयं = मणियं } (मनाक्) = थोडा, इषत् ।

मिस्स[4] + आलिअ = मीसालिअं, मोसं (मिश्रम्) = मिश्र—मिला हुआ, मसाले वाला आदि ।

दीघ[5] + र = दीघरं, दीघं, दिग्घं, (दीर्घं) = दीर्घ, लम्बा ।

विज्जु[6] + ल = विज्जुला (विद्युत्) = बिजली ।

पत्त + ल = पत्तलं, पत्त (पत्रम्) = पत्तल, पत्ता ।

पीत + ल = पीअलं, पीतलं, पीवलं, पीअं (पीतम्) = पीला ।

अन्ध + ल = अंधलो (अन्धः) = अन्धा ।

तद्धितान्त शब्द

धणि (धनिन्) = धनी, धनाढ्य, साहुकार, श्रीमंत ।

अत्थिअ (आर्थिक) = आर्थिक, अर्थ सम्बन्धी ।

आरिस (आर्ष) = ऋषिओं द्वारा भाषित, कहा हुआ ।

मईय (मदीय) = मेरा ।

कोसेय (कौशेय) = कौशेय, रेशमी वस्त्र ।

हेट्ठिल (अधस्तनः) = नीचे का ।

जया (यदा) = जब ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५३ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६५ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६९ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७० । ५. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७१ । ६. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्णया (अन्यदा) = अन्य समय में ।
तवस्सि (तपस्विन्) = तपस्वी ।
मणंसि (मनस्विन्) = मनस्वी, बुद्धिमान् ।
काणीण (कानीन) = कन्या का पुत्र—व्यास ऋषि ।
वम्मय (वाङ्मय) = वाङ्मय, शास्त्र ।
पिआमह (पितामह) = दादा, पिता का पिता ।
उवरिल्ल (उपरितन) = ऊपर का ।
कया (कदा) = कब ।
सव्वया (सर्वदा) = हमेशा, सर्वदा, सदैव ।
रायण्ण (राजन्य) = राजपुत्र, राजकुमार ।
अत्थिअ (आस्तिक) = आस्तिक, ईश्वर को माननेवाला ।
भिक्ख (भैक्ष) = भिक्षा ।
नाहिअ, नत्थिअ (नाहिक—नास्तिक) = नास्तिक, पाप-पुण्य को नहीं माननेवाला ।
पीणया (पीनता) = पुष्टता, मोटापा ।
मायामह (मातामह) = नाना, माता का पिता ।
सव्वहा (सर्वथा) = सब प्रकार से ।
तया (तदा) = तब ।

वाक्य (हिन्दी)

प्रजा के दुःख से दुःखी राजा द्वारा एकबार भोजन किया जाता है ।
वहाँ पराये बालकों द्वारा रोया जाता है ।
घरेलू वस्तु आँखों द्वारा देखी जाती है ।
मुनि द्वारा मधु खाया नहीं जाता ।
वह मन, वचन और काया से किसी को नहीं मारता ।
जीव कर्म द्वारा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेरे द्वारा रोया जाता है और तेरे द्वारा हँसा जाता है।
गुरु द्वारा शिष्य को ग्रन्थ पढ़ाया जाता है।
भील द्वारा पर्वत जलाया जाता है।
महावीर द्वारा समभाव के साथ धर्म कहा जाता है।

वाक्य (प्राकृत)

अप्पणा अप्पा लब्भई।
रण्णा रज्जं भुज्जइ।
राईहि पयाण दुहाणि लुव्वंति।
तीए पइणा सह सिप्पते।
मघवाणो बंभणेहि थुव्वंति।
अत्थिएण अत्थो चिम्मई।
आरिसाणि वयणाणि कविलेण वुच्चंति।
राइणा सहाए कोसेयं परिहिज्जइ।
इत्थीए मत्थयम्मि धूपेल्ल दीसइ।
सक्खं खु दीसइ तवविसेसो।
न दीसइ जाइविसेसो को वि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाइसवाँ पाठ

कुछ नाम धातुएँ

संस्कृत में प्रेरक प्रक्रिया के अतिरिक्त और भी अनेक प्रक्रियाएँ हैं। जैसे सन्नन्त[1], यङन्त, यङ्लुबन्त और नामधातु प्रक्रिया। परन्तु प्राकृत में इनके लिए कोई विशेष विधान नहीं है। आर्ष प्राकृत में इन प्रक्रियाओं के कुछेक रूप अवश्य उपलब्ध होते हैं। अतः वर्ण-विकार अथवा उच्चारण-भेद के नियमों द्वारा उन्हें सिद्ध कर लेना चाहिए।

सन्नन्त—सुस्सूसइ (शुश्रूषति)=सुनने की इच्छा करता है, शुश्रूषा—सेवा करता है।

वीमंसा (मीमांसा) =विचार करना।

यङन्त—लालप्पइ (लालप्यते) = लप-लप करता है, बकवास करता है।

यङ्लुगन्त—चंकमइ (चंक्रमीति) = चंक्रमण करता है, घूमता रहता है।

चंकमणं (चङ्क्रमणम्) = चंक्रमण—घूमा-घूमा करता है।

नाम धातु—गरुआइ (गुरुकायते) = गुरु की भाँति रहता है।

गरुआअइ (,,) = गुरु के जैसा दिखावा करता है।

अमराइ, अमराअइ } (अमरायते) = अमर-देववत् आचरण करता है, अपने आपको देव समझता है।

तमाइ, तमाअइ } (तमायते) = तम—अँधेरा जैसा है, अँधेरा करता है।

---

१. पालि में भी सन्नंत, यङंत, यङ्लुबंत तथा नामधातु के रूपों के लिए देखिए पा० प्र० पृ० २२९—२३२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धूमाइ } (धूमायते) = धूआँ निकालता है, धुएँ
धूमाअइ } का उद्गमन करता है।

सुहाइ } (सुखायते) = सुख का अनुभव होता है,
सुहाअइ } अच्छा लगता है।

सद्दाइ } (शब्दायते) = शब्द करता है।
सद्दाअइ }

नामधातु के उक्त संस्कृत रूपों में जो 'य' दिखाई देता है प्राकृत में उसका विकल्प से लोप हो जाता है। यह नियम केवल नामधातु में ही लगता है।

कृदन्त

हेत्वर्थ[1] कृदन्त*

मूल धातु में 'तुं' और 'त्तए'[2] प्रत्यय लगाने पर हेत्वर्थ कृदन्त§ रूप बनते हैं।

---

१. हे० प्रा० व्या ८।३।१२८।

* पालि में धातु को 'तुं' तथा 'तवे' प्रत्यय लगाने से हेत्वर्थ कृदन्त बनते हैं (देखिए पा० प्र० पृ० २५७)। जैसे—

पा० कत्तुं प्रा० कातुं

पा० कत्तवे प्रा० करित्तए इत्यादि।

हेत्वर्थ कृदन्त के 'तुं' प्रत्यय के स्थान में शौरसेनी सौर मागधी में 'दुं' प्रत्यय होता है तथा पैशाची में तो 'तुं' प्रत्यय हो लगता है। जैसे :—

शौरसेनी—हस् = + दुं = हसिदुं

मागधी—हश् + दुं = हशिदुं

पैशाची—हस् + तुं = हसितुं।

२. हेत्वर्थ कृदन्त बनाने के लिए वैदिक संस्कृत में 'तवे' प्रत्यय का उपयोग होता है। प्राकृत का 'त्तए' और वैदिक 'तवे' प्रत्यय बिल्कुल समान है। 'त्तए' प्रत्यय वाले रूप आर्ष प्राकृत में विशेषतः उपलब्ध होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'तुं' और 'त्तए' प्रत्यय परे रहने पर पूर्व के 'अ' को 'इ' अथवा 'ए' होता है।

तुं—

भण् + तुं— { भणितुं,[2] भणेतुं / भणिउं, भणेउं, } (भणितुं) = पढ़ने के लिए।

हो + तुं— { होतुं, होइउं / होउं, होएउं } (भवितुं) = होने के लिए।

§. अपभ्रंश भाषा में धातु को एवं, अण, अणहं, अणहिं, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु इसमें से कोई प्रत्यय लगाने से हेत्वर्थ कृदन्त बनते हैं। जैसे—

चय् + एवं = चयेवं (त्यक्तुम्)
दा + एवं = देवं (दातुम्)
भुंज् + अण = भुंजण (भोक्तुमु)
कर् + अण = करण (कर्तुम्)
सेव् + अणहं = सेवणहं (सेवितुम्)
भुंज् + अणहं = भुंजणहं (भोक्तुम्)
मुंच् + अणहिं = मुंचणहिं (मोक्तुम्)
सुव् + अणहिं = सुवणहिं (स्वप्तुम्)
कर् + एप्पि = करेप्पि (कर्तुम्)
जि + एप्पि = जेप्पि (जेतुम्)
कर् + एप्पिणु = करेप्पिणु (कर्तुम्)
बोल्ल + एप्पिणु = बोल्लेप्पिणु (वक्तुम्)
चर् + एवि = चरेवि (चरितुम्)
पाल् + एवि = पालेवि (पालयितुम्)

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५७। २. व्यंजनान्त धातु के अन्त में 'अ' हमेशा होता है और स्वरान्त धातु के अन्त में 'अ' विकल्प से होता है। यह एक साधारण नियम है। जैसे—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रेरक हेत्वर्थ कृदन्त

(मूलधातु के प्रेरक अंग बनाने के लिए देखिए पाठ १९वाँ)

भण्—भणावि + तुं = भणावितुं
भणाविउ } (भणापयितुम्) = पढ़ाने के लिए।

त्तए—

कर् + त्तए = करित्तए, करेत्तए (कर्तवे–कर्तुम्) = करने के लिए।

गम् + त्तए = गमित्तए, गमेत्तए (गन्तवे, गन्तुम्) = जाने के लिए।

आहर् + त्तए = आहरित्तए, आहरेत्तए (आहर्तवे, आहर्तुम्) = आहार करने के लिए।

दल् + त्तए = दलइत्तए, दलएत्तए (दातवे–दातुम्) = देने के लिए।

(आहरित्तए के बदले 'आहारित्तए' रूप भी उपलब्ध होता है और 'दल + त्तए' में 'अइ' का आगम होता है।)

हो + त्तए = होइत्तए, होएत्तए (भवितवे–भवितुं) = होने के लिए।

हो + त्तए = होत्तए (भवितवे–भवितुं) = होने के लिए।

सुस्सूस + त्तए = सुस्सूसित्तए, सुस्सूसेत्तए (शुश्रूषितवे–शुश्रूषितुम्) = शुश्रूषा करने के लिए।

चंकम + त्तए = चंकमित्तए
चंकमेत्तए } (चंक्रमितवे–चङ्क्रमितुम्) = चंक्रमण करने के लिए।

भण्—भणावि + त्तए = भणावित्तए } (भणापयितवे–भणापयितुम्) = पढ़ाने के लिए।

अनियमित हेत्वर्थ कृदन्त

कर् + तुं = कातुं, काउं, कट्टुं, कट्टु (कर्तुम्) = करने के लिए।

भण् + तुं – भण + तुं = भणितुं, भणेतुं

हो + तुं—होअ + तुं = होइतुं, होएतुं

हो + तुं— होतुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गेण्ह + तुं = घेत्तुं (ग्रहीतुं) = ग्रहण करने लिए।

दरिस् + तुं = ददठुं (द्रष्टुम्) = देखने के लिए।

भुज् + तुं = भोत्तुं (भोक्तुम्) = भोगने के लिए, खाने के लिए।

मुञ्च् + तुं = मोत्तुं (मोक्तुम्) = मुक्त होने के लिए, छूटने के लिए।

रुद् + तुं = रोत्तुं (रोदितुम्) = रोने के लिए।

वच् + तुं = वोत्तुं (वक्तुम्) = बोलने के लिए।

लह् + तुं = लद्धुं (लब्धुम्) = लेने के लिए, प्राप्त करने के लिए।

रुध् + तुं = रोद्धुं (रोद्धुम्) = रोकने के लिए, निरोध करने के लिए।

युध् + तुं = योधुं, जोद्धुं } (योद्धुम्) = युद्ध करने के लिए।

सम्बन्धक भूतकृदन्त*

मूल धातु में तुं[1], तूण, तुआण, अ, इत्ता, इत्ताण, आय और आए (इन आठ प्रत्ययों में से कोई एक) प्रत्यय लगाने पर सम्बन्धक भूतकृदन्त

---

* पालि में धातु को 'त्वा', त्वान' तथा 'तून' प्रत्यय तथा 'य' प्रत्यय लगाने से सम्बन्धक भूतकृदन्त के रूप बनते हैं। जैसे—

पालि—करित्वा प्रा० करित्ता।

पालि—हसित्वान प्रा० हसित्ताण।

,, कत्तून प्रा० कातून।

,, आदाय प्रा० आदाय (देखिए पा० प्र० पृ० २५५ से २५६)।

शौरसेनी तथा मागधी भाषा में सम्बन्धक भूतकृदन्त के सूचक 'इय,' और 'दूण' प्रत्यय हैं। जैसे—

हो + इय = हविय प्रा० होत्ता सं० भूत्वा

हो + दूण = होदूण ,, ,,

पढ + इय – पढिय पढित्ता सं० पठित्वा

पढ + दूण = पढिदूण ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बनता है। 'तुं' इत्यादि पहले चार प्रत्यय परे रहने पर पूर्व के 'अ' को 'इ' और 'ए' विकल्प से होते हैं।

'तूण', 'तुआण' और 'इत्ताण' प्रत्यय के 'ण' के ऊपर अनुस्वार विकल्प[2] से होता है। जैसे—तूण, तूणं, तुआण, तुआणं, इत्ताण, इत्ताणं।

तुं—

हस् + तुं— { हसितुं, हसेतुं / हसिउं, हसेउं } (हसित्वा) = हंसकर।

हो + अ + तुं – { होइतुं, होएतुं / होइउं, होएउं } (भूत्वा) = होकर।

हो + तुं – होतुं, होउं (भूत्वा) = होकर।

तूण—

हस् + तूण – { हसितूण, हसेतूण / हसिऊण, हसेऊण } (हसित्वा) = हँसकर।

---

* पालि में सम्बन्ध भूतकृदन्त के उदाहरण—

रम् + इय = रमिय प्रा० रंता सं० रन्त्वा

रम् + दूण = रंदूण ,, ,,

पैशाची भाषा में 'दूण' के स्थान पर 'तून' प्रत्यय होता है। जैसे—

गम् + तून = गंतून (गत्वा)

हस् + तून = हसितून (हसित्वा)

पढ् + तून = पढितून (पठित्वा)

अपभ्रंश भाषा में इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु इनमें से कोई भी प्रत्यय लगाने से सम्बन्धक भूतकृदन्त बनता है। जैसे—

लह् + इ = लहि (लब्ध्वा)

कर् + इउ = करिउ (कृत्वा)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो + अ + तूण = होइतूण, होएतूण
होइऊण, होएऊण } (भूत्वा) = होकर

हो + तूण = होतूण, होतूणं
होऊण, होऊणं } (भूत्वा) = होकर

तुआण—

हस् + तुआण = हसितुआण, हसेतुआण
हसिउआण, हसेउआण } (हसित्वा) = हँसकर

कर् + इवि = करिवि (,,)
कर् + अवि = करवि (,,)
कर + एप्पि = करेप्पि (,,)
कर् + एप्पिणु = करेप्पिणु (,,)
कर् + एवि = करेवि (,,)
कर् + एविणु = करेविणु (,,)

अपवाद—

शौरसेनी में सिर्फ 'कृ' धातु का तथा 'गम्' धातु का सम्बन्धक भूतकृदन्त 'कडुअ' तथा 'गडुअ' होता है।

संस्कृत में जहाँ 'ष्ट्वा' होता है तो वहाँ पैशाची में द्धून तथा त्थून प्रत्यय होता है। जैसे—

नष्ट्वा पैशाची—नद्धून, नत्थून
तष्ट्वा ,, —तद्धून, तत्थून।

अपभ्रंश में केवल 'गम्' धातु का सम्बन्धक भूतकृदन्त का रूप 'गम्प्पि' और 'गप्पिणु' भी होते हैं।

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४६। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो + अ + तुआण = होइतुआण, होएतुआण } (भूत्वा) = होकर
होइउआण, होएउआण }

हो + तुआण = होतुआण, होउआण (भूत्वा) = होकर

अ—

हस् + अ = हसिअ, हसेअ (हसित्वा) = हँसकर

हो + अ + अ = होइअ, होएअ (भूत्वा) = होकर

हो + अ = होअ ,, ,,

इत्ता—

हस् + इत्ता = हसित्ता, हसेत्ता (हसित्वा) = हँसकर

इत्ताण—

हस् + इत्ताण = हसित्ताण, हसेत्ताण (हसित्वा) = हँसकर

आय—

गह् + आय = गहाय (गृहीत्वा) = ग्रहण करके

आए—

आय + आए = आयाए (आदाय) = ग्रहण करके

संपेह + आए = संपेहाए (संप्रेक्ष्य) = खूब विचार करके

('आय' और 'आए' प्रत्यय का उपयोग जैन आगमों की भाषा में प्रायः उपलब्ध होता है ।)

इसी प्रकार सुस्सूसितुं, सुस्सूसितूण, सुस्सूसितुआण, सुस्सूसिअ, सुस्सूसित्ता, सुस्सूसित्ताण (शुश्रूषित्वा = शुश्रूषा करके); चंकमि + तुं—मितूण–मितुआण, मिअ, मित्ता, मित्ताण (चंक्रमित्वा = चंक्रमण करके) इत्यादि रूप भी समझ लें ।

प्रेरक सम्बन्धक भूतकृदन्त

भणावि + तुं—वितूण–वितुआण, विअ, वित्ता–वित्ताण (भणापयित्वा)
= पढ़वा कर

हासि + तुं = सितूण, सितुआण, सिअ, सित्ता, सित्ताण (हासयित्वा)
= हँसा कर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनियमित सम्बन्धक भूतकृदन्त

कर् + तुं = कातुं[1], काउं, कट्टु कर् + तूण = कातूण, काऊण कर् + तुआण = काउआण, कातुआण	(कृत्वा) = करके
गह् + तुं = घेत्तु[2] ,, + तूण = घेत्तूण, घेत्तूणं ,, + तुआण = घेत्तुआण, घेत्तुआणं	(गृहीत्वा) = ग्रहण करके
दरिस् + तुं = दट्ठु[3], दट्ठुं ,, तूण = दट्ठूण, दट्ठूणं ,, तुआण = दट्ठुआण, दट्ठुआणं	(दृष्ट्वा) = देखकर
भुञ्ज् + तुं = भोत्तु[4] ,, तूण = भोत्तूण, भोत्तूणं ,, तुआण = भोत्तुआण, भोत्तुआणं	(भुक्त्वा) = भोजन करके, खा कर, भोग कर ।
मुञ्च् + तुं = मोत्तुं ,, तूण = मोत्तूण, मोत्तूणं ,, तुआण = मोत्तुआण, मोत्तुआणं	(मुक्त्वा) = छोड़ कर, त्याग कर ।

इसी प्रकार—

'रुद्' ऊपर से रोत्-रोत्तुं, रोत्तूण, रोत्तुआण, (रुदित्वा) = रोकर; 'वच्' धातु से वोत्—वोत्तुं, वोत्तूण, वोत्तुआण, (उक्त्वा) = बोल कर; 'वंद्' धातु से वंदितुं, वंदित्तु[5] (वन्दित्वा) = वन्दना करके; 'कर्' से कट्टुं, कट्टु (कृत्वा) = करके ।

(निर्देश :—'वंदित्तु' और 'कट्टुं' में 'त्तु के ऊपर का अनुस्वार लोप भी हो जाता है ।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२१४ । २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२१० । ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२१३ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२१२ । ५. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयाय (आदाय) = ग्रहण करके
गच्चा, गत्ता (गत्वा) = जाकर
किच्चा, किच्चाण (कृत्वा) = करके
नच्चा, नच्चाण (ज्ञात्वा) = जान कर
नत्ता (नत्वा)= नम कर, झुककर
बुज्झा (बुद्ध्वा) = जान कर
भोच्चा (भुक्त्वा) = खा कर, भोग कर
मत्ता, मच्चा (मत्वा) = मान कर
वंदित्ता (वन्दित्वा) = वन्दना करके
विप्पजहाय (विप्रजहाय, विप्रहाय) = त्याग कर, छोड़कर
सोच्चा (श्रुत्वा) = सुनकर
सुत्ता (सुप्त्वा) = सोकर
आहच्च (आहत्य) = आघात करके, पछाड़कर
साहट्टु (संहृत्य) = संहार करके, बलात्कार करके
हंता (हत्वा) = मार कर
आहट्टु (आहृत्य) = आहार करके
परिन्नाय (परिज्ञाय) = जानकर
चिच्चा, चेच्चा, चइत्ता (त्यक्त्वा) = छोड़कर
निहाय (निधाय) = स्थापित कर
पिहाय (पिधाय) = ढाँक कर
परिच्चज्ज (परित्यज्य) = परित्याग करके, छोड़कर
अभिभूय (अभिभूय) = अभिभव करके, तिरस्कार करके
पडिबुज्झ (प्रतिबुध्य) = प्रतिबोध पाकर।

उच्चारणभेद से उत्पन्न इन सभी अनियमित रूपों की साधनिका संस्कृत रूपों द्वारा ही समझी जा सकती है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक अनियमित रूप भी संस्कृत की तरह समझ लें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेइसवाँ पाठ

विध्यर्थ कृदन्त* के उदाहरण

मूलधातु में †तव्व, अणीअ, अथवा अणिज्ज प्रत्यय लगाने से विध्यर्थ कृदन्त बनते हैं। तव्व प्रत्यय के पूर्व 'अ' को 'इ' और 'ए'[1] होता है।

तव्व—

हस् + तव्व—हसितव्वं, हसेतव्वं, हसिअव्वं, हसेअव्वं } (हसितव्यम्) = हंसना चाहिए, हंसने योग्य।

हो + तव्व—होइतव्वं, होएतव्वं, होइअव्वं, होएअव्वं, होतव्वं, होयव्वं, होअव्वं } (भवितव्यम्) = होने योग्य, होना चाहिए।

ना + तव्व— नातव्वं, नायव्वं (ज्ञातव्यम्) = जानने योग्य, जानना चाहिए।

---

*पालि भाषा में तव्व, अनीय और 'य' प्रत्यय लग कर धातु का कृत्य प्रत्ययांत रूप बनता है। जैसे, भवितव्वं। सयनीयं। कारियं। तथा देय्यं, मेय्यं, मेतव्वं, मातव्वं, कच्चं (कृत्यम्), भच्चो (भृत्यः वगैरह रूप होते हैं (दे० पा० प्र० पृ० २५४)। †अपभ्रंश भाषा में 'तव्व' के स्थान में 'इएव्वउं', 'एव्वउं' तथा 'एवा' प्रत्यय का उपयोग होता है। जैसे—

कर + इएव्वउं—करिएव्वउं (कर्तव्यम्); सह + एव्वउं—सहेव्वउं (सोढव्यम्); जग्ग + एवा—जग्गेवा (जागरितव्यम्)।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिव्व + तव्व—चिव्वितव्वं, चिव्वेतव्वं } (चेतव्यम्) = इकट्ठा करने
चिव्विअव्वं, चिव्वेअव्वं } योग्य, इकट्ठा करना चाहिए।

अणीअ, अणिअ—

हस् + अणीअ—हसणीअं, हसणीयं } (हसनीयम्) = हँसने योग्य,
हस् + अणिअ—हसणिज्जं } हँसना चाहिये।

प्रेरक विध्यर्थ कृदन्त

हसावि + तव्व—हसावितव्वं } (हसावयितव्यम्) = हँसाने योग्य, हँसाना
हसाविअव्वं } चाहिए।
हसावियव्वं }

हसावि + अणीअ } हसावणीअं, हसावणीयं } (हसापनीयम्)
हसावि + अणिज्ज } हसावणिज्जं }

इसी प्रकार वयणीयं, वयणिज्जं, करणीयं, करणिज्जं, सुस्सूसितव्वं, चंकमितव्वं, सुस्सूसणिज्जं, सुस्सूसणीयं इत्यादि रूप समझ लेना चाहिये।

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

कज्जं (कार्यम्) = करने योग्य।

किच्चं (कृत्यम्) = कृत्य।

गेज्झं (ग्राह्यम्) = ग्रहण करने योग्य।

गुज्झं (गुह्यम्) = छुपाने योग्य, गुप्त रखने योग्य।

वज्जं (वर्ज्यम्) = वर्जने योग्य, निरोध करने योग्य।

अवज्जं (अवद्यम्) = नहीं बोलने योग्य, पाप।

वच्चं (वाच्यम्) = बोलने योग्य।

वक्क (वाक्यम्) = कहने योग्य, वाक्य।

कातव्वं }
कावंव्य } (कर्तव्यम्) = कर्तव्य, करने योग्य।
काअव्वं }

जन्न (जन्यम्) = जन्य, पैदाहोने योग्य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिच्चो (भृत्य:) = भृत्य, नौकर ।

भज्जा (भार्या) = भार्या, भरण-पोषण करने योग्य स्त्री ।

अज्जो (अर्य:) = अर्य—वैश्य—स्वामी ।

अज्जो (आर्य:) = आर्य ।

पच्चं (पाच्यम्) = पचने योग्य ।

भव्वं (भव्यम् = होने योग्य ।

घेतव्वं (ग्रहीतव्यम्) = ग्रहण करने योग्य ।

वोत्तव्वं (वक्तव्यम्) = कहने योग्य ।

रोत्तव्वं (रुदितव्यम्) = रुदन करने योग्य, रोने योग्य ।

भोत्तव्वं (भोक्तव्यम्) = भोजन करने योग्य; भोगने योग्य ।

मोत्तव्वं (मोक्तव्यम्) = छोड़ने योग्य ।

दट्ठव्वं (द्रष्टव्यम्) = देखने योग्य ।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौबीसवाँ पाठ

वर्तमान कृदन्त

मूल धातु में 'न्त'[1], 'माण' और 'ई' प्रत्यय लगाने से उसके वर्तमान कृदन्त रूप बनते हैं। परन्तु 'ई' प्रत्यय केवल स्त्रीलिङ्ग में ही प्रयुक्त होता है। 'न्त', 'माण' और 'ई' प्रत्यय परे रहते पूर्व के 'अ' को विकल्प से 'ए' होता है।

न्त—

भण् + न्त—भणंतो, भणेंतो, भणितो, (भणन्) = पढ़ता हुआ।
भणंत, भणेंतं, भणितं (भणन्) = पढ़ता हुआ।
भणंती[1], भणेंती, भणिती, (भणन्ती) = पढ़ती हुई।
भणंता, भणेंता, भणिता[1] (भणन्ती) = ,, ,,

हो + अ + न्त—होअंतो, होएंतो, होइंतो (भवन्) = होता हुआ।
होंतो, हुंतो
होअंतं, होअेंतं, होइंतं (भवत्) = होता हुआ।
होंतं, हुंतं
होअंती, होएंती, होइंती (भवन्ती) = होती हुई।
होअंता, होएंता, होइता (,,) = ,,
होंती, होंता
हुती, हुता

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१८१। तथा १८२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माण—

भण् = माण—भणमाणो, भणेमाणो (भणमानः) = पढ़ता हुआ।

भणमाणं, भणेमाणं (भणमानम्) = पढ़ता हुआ।

भणमाणी, भणेमाणी (भणमाना) = पढ़ती हुई।

भणमाणा, भणेमाणा

हो + अ + माण—होअमाणो, होएमाणो, (भवमानः) = होता हुआ।

होमाणो

होअमाणं, होएमाणं, (भवमानम्) = होता हुआ।

होमाणं

होअमाणी, होएमाणी
होअमाणा, होएमाणा
होमाणी, होमाणा } (भवमाना) = होती हुई।

ई—

भण् + ई—भणई, भणेई (भणन्ती) = पढ़ती हुई।

हो + अ—ई—होअई, होएई, होई (भवन्ती) = होती हुई।

इसी प्रकार कर्तरि प्रेरक अंग, सामान्य भावे अंग, सामान्य कर्मणि अंग तथा प्रेरक भावे और कर्मणि अंग को उक्त तीनों प्रत्ययों में से एक लगाने से उसके वर्तमान कृदन्त बनते हैं।

कर्तरि प्रेरक वर्तमान कृदन्त—

करावि + अ + न्त—करावंतो, करावेंतो (कारापयन्) = करवाता हुआ।

कार + न्त—कारंतो, कारेंतो (कारयन्) = ,,

करावि + क + माण—करावमाणो, करावेमाणो (कारापयमाणः) ,,

कार + माण—कारमाणो, कारेमाणो (कार्यमाणः) ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामान्य भावे वर्तमान कृदन्त—

भण् + इज्ज + न्त—भणिज्जंतं भण् + इज्ज + माण—भणिज्जमाणं भण् + ईअ + न्त—भणीअंतं भण् + ईअ + माणं—भणीअमाणं	(भण्यमानम्)=पढ़ा जाता हुआ, पढ़ने में आने वाला।

सामान्य कर्मणि वर्तमान कृदन्त—

भणीअंतो, भणिज्जंतो गंथो (भण्यमानः ग्रन्थः) = पढ़ा जाता हुआ ग्रंथ।

भणीअमाणो, भणिज्जमाणो सिलोगो (भण्यमानः श्लोकः) = पढ़ा जाता हुआ श्लोक।

भणिज्जंती, भणीअंती गाहा (भण्यमाना गाथा) = पढ़ी जाती हुई गाथा।

भणिज्जमाणी, भणीअमाणी पंती (भण्यमाना पङ्क्ति) ,, पंक्ति

भणिज्जई, भणीअई

प्रेरक भावे—

भणाविज्जंतं (भणाप्यमानम्) = पढ़ाया जाता हुआ, पढ़ाने में आने वाला।

भणाविअंतं, इत्यादि।

प्रेरक कर्मणि—

भणाविज्जंतो मुणी (भणाप्यमानः मुनिः) = पढ़ाया जाता हुआ मुनि।

भणाविज्जमाणो

भणाविअंतो

भणावीअमाणो

भणाविज्जती साहुणी (भणाप्यमाना साध्वी) = पढ़ाई जाती हुई साध्वी।

भणाविज्जमाणा

भणावीअंती

भणावीअमाणा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणाविज्जई

भणावीअई, इत्यादि।

इसी प्रकार :—

सुस्सूसंतो (शुश्रूषन्), चंकमतो (चङ्क्रमन्),

सुस्सूसमाणो (शुश्रूषमाणः), चंकममाणो (चङ्क्रममाणः),

सुस्सूसिज्जन्तो सुस्सूसिज्जमाणो सुस्सूसीअतो सुस्सूसीअमाणो	(शुश्रूष्यमाणः)	चंकमिज्जंतो चंकमिज्जमाणो चंकमीअतो चंकमीअमाणो	(चङ्क्रम्यमाणः)

इत्यादि रूप समझ लेना चाहिये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चीसवाँ पाठ

संख्यावाचक शब्द

जिन शब्दों द्वारा संख्या का बोध होता है वे संख्यावाचक शब्द कहे जाते हैं। ऐसे शब्द अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त और उकारान्त भी होते हैं। विशेषण रूप होने से इन शब्दों का लिङ्ग निश्चित नहीं होता। इसलिए इन शब्दों के लिङ्ग, वचन और विभक्ति विशेष्य के अनुसार होते हैं। संख्यावाचक अकारान्त, इकारान्त, और उकारान्त नामों के रूप आगे बतायी गयी रीति के अनुसार समझ लें। तथा यह भी ध्यान रहे कि 'दु' शब्द से लेकर 'अट्ठारस' शब्द तक के सब शब्द के रूप बहुवचन में होते हैं। खास विशेषता इस प्रकार है:—

'एक' से लेकर 'अट्ठारस' (अष्टादश) पर्यन्त संख्यावाचक शब्दों के षष्ठी के बहुवचन में 'ण्ह'[1] और 'ण्हं' प्रत्यय क्रमशः लगते हैं :—

एग + ण्ह = एगण्ह,	एग + ण्हं = एगण्हं ।
उभय + ण्ह = उभयण्ह,	उभय + ण्हं = उभयण्हं ।
ति + ण्ह = तिण्ह,	ति + ण्हं = तिण्हं ।
दु + ण्ह = दुण्ह,	दु + ण्हं = दुण्हं ।
कति + ण्ह—कतिण्ह,	कति + ण्हं = कतिण्हं ।

इक्क, एक्क, एग, एअ (एक) शब्दों के पुंल्लिग रूप 'सव्व' की भाँति होते हैं। स्त्रीलिंग के रूप 'सव्वा' की भाँति और नपुंसकलिंग रूप नपुंसकलिङ्गी 'सव्व' की भाँति होते हैं।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१२३। पालि में 'न्नं' प्रत्यय लगता है देखिए— पा० प्र० पृ० १५५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'सव्व' के षष्ठी के बहुवचन की भाँति इसमें (एग शब्द में) भी 'एसिं' प्रत्यय लगता है।

एग + एसिं = एगेसिं इत्यादि।

उभ, उह (उभ) शब्द के रूप बहुवचन में ही होते हैं और वे सभी रूप 'सव्व' की भाँति होंगे।

'उभ' शब्द के रूप

प्र० उभे[1]।

द्वि० उभे, उभा।

तृ० उभेहि, उभेहिं, उभेहिँ।

च०-ष० उभण्ह, उभण्हं।

पं० उभत्तो, उभाओ, उभाउ
उभाहि, उभेहि
उभाहिंतो, उभेहिंतो
उभासुंतो, उभेसुंतो

स० उभेसुं, उभेसु

दु[2] (द्वि) के तीनों लिङ्गों में रूप

प्र०-द्वि० दुवे, दोण्णि, दुण्णि।

---

१. पालि में 'उभ' शब्द के रूप :—

प्र०-द्वि० उभो, उभे।

तृ०-पं० उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि।

च०-ष० उभिन्नं।

स० उभोसु, उभेसु।

—दे० पा० प्र० पृ० १५५ संख्या शब्द।

२. पालि भाषा में 'द्वि' वगैरह संख्यावाचक शब्दों के रूप थोड़े जुदे-जुदे होते हैं। जैसे—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेरिण, विरिण ।

दो, वे अथवा बे ।

तृ० दोहि, दोहिं, दोहिँ

वेहि, वेहिं, वेहिँ अथवा

बेहि, बेहिं, बेहिँ ।

च०—ष० दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं

[1]वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं

द्वि—बहुवचन

प्र०—द्वि०	दुवे, द्वे
तृ०—पं०	द्वीहि, द्वीभि
च०—ष०	दुविन्नं, द्विन्नं
स०	द्वीसु

ति (त्रि)

	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसक लिंग
प्र०—द्वि०	तयो	तिस्सो	तीणि
तृ०—पं०	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि
च०—ष०	तिण्णं, तिण्णन्नं	तिस्सन्नं	तिण्णं, तिण्णन्नं
स०	तीसु	तीसु	तीसु

चतु (चतुर्)

प्र०—द्वि०	चत्तारो, चतुरो	चतस्सो	चत्तारि
तृ०—पं०	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि
च०—ष०	चतुन्नं	चतस्सन्नं	चतून्नं
स०	चतूसु	चतूसु	चतूसु

१. इन रूपो में 'व' के स्थान में 'ब' भी बोला जाता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं०   दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिंतो, दोसुंतो
        बित्तो, वेओ, वेउ, वेहिंतो, वेसुंतो

स०   दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं ।

'ति' (त्रि) तीनों लिङ्गों के रूप

प्र०–द्वि०   तिण्णि

च० तथा ष० तिण्ह, तिण्हं

शेष रूप 'रिसि' शब्द के बहुवचन के रूपों की भाँति समझ लें।

'चउ' (चतुर्) तीनों लिङ्गों में रूप

प्र०–द्वि चत्तारो (चत्वारः), चउरो (चतुरः), चत्तारि (चत्वारि)

तृ०— चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ
        चउहि, चउहिं, चउहिँ

च०—ष० चउण्ह, चउण्हं

शेष सभी रूप 'भाणु' शब्द की भाँति होंगे ।

'पंच' (पञ्चन्) तीनों लिङ्गों में रूप

प्र०–द्वि० पंच

तृ०— पंचेहि, पंचेहिं, पंचेहिँ
        पंचहि, पंचहिं, पचहिँ

च० तथा ष०–पंचण्ह, पंचण्हं (पालि–पंचन्नं)

शेष सभी रूप 'वीर' शब्द के बहुवचन के रूपों जैसे हैं ।

इसी प्रकार निम्नलिखित सभी शब्दों के रूप 'पञ्च' शब्द की भाँति होंगे--

छ (षट्) = छः

सत्त (सप्तन्) = सात–सप्त

अट्ठ (अष्टन्) = आठ–अष्ट

नव (नवन्) = नव

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

दह, दस (दशन्) = दस

एआरह, एगारह, एआरस (एकादश) = एकादश, ग्यारह

दुवांसल, बारस, बारह (द्वादश) = बारह, द्वादश

तेरस, तेरह (त्रयोदश) = तेरह, त्रयोदश

चोद्दस, चोद्दह, चउद्दस, चउद्दह (चतुर्दश) = चौदह, चतुर्दश

पण्णरस, पण्णरह (पञ्चदश) = पन्द्रह, पञ्चदश

सोलस, सोलह (षोडश) = षोडश, सोलह

सत्तरस, सत्तरह (सप्तदश) = सत्रह, सप्तदश

अट्ठारस, अट्ठारह (अष्टादश) = अठारह, अष्टादश।

'कइ' (कति = कितना) शब्द के रूप

प्र०—द्वि—कई, कइणो इत्यादि

च० तथा ष०—कइण्ह, कइण्हं

शेष रूप 'रिसि' के बहुवचन की भाँति होते हैं। नीचे बताये गये शब्दों में आकारान्त शब्द के रूप 'माला' की भाँति और इकारान्त शब्द के रूप 'बुद्धि' की भाँति होते हैं।

एगूणवीसा (एकोनविंशति) = उन्नीस।

वीसा (विंशति) = बीस।

एगवीसा, इक्क वीसा, एक्कवीसा } (एकविंशति) = इक्कीस (एक-बीस)।

बावीसा (द्वाविंशति) = बाईस (बावीस)।

तेवीसा (त्रयोविंशति) = तेइस (त्रेवीस)।

चउवीसा, चोवीसा } (चतुर्विंशति) = चौबीस।

पणवीसा (पञ्चविंशति) = पच्चीस।

छव्वीसा (षड्विंशति) = छब्बीस।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तावीसा (सप्तविंशति) = सत्ताईस
अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अडवीसा (अष्टविंशति)=अट्ठाइस
एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्) = उन्तीस
तीसा (त्रिंशत्) = तीस
एगतीसा, एक्कतीसा, इक्कतीसा (एकत्रिंशत्) = एकतीस
बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) = बत्तीस
तेत्तीसा, तित्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्) = तैंत्तीस
चउत्तीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्) = चउत्तीस, चौंतीस
पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) = पैंतीस
छत्तीसा षट्त्रिंशत्) = छत्तीस
सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्) = सैंत्तीस
अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टत्रिंशत्) = अड़तीस
एगूणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्) = उन्तालिस (ऊनचालीस)
चत्तालिसा, चत्ताला (चत्वारिंशत्) = चालीस
एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एक्कचत्तालिसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्) = इकतालीस (एकतालीस)
बेआलिसा, बेआला, दुचत्तालिसा (द्विचत्वारिंशत्) = बेयालीस
तिचत्तालिसा, तेआलिसा, लेआला (त्रिचत्वारिंशत्) = तैंतालीस
चउचत्तालिसा, चोआलिसा, चोआला, चउआला (चतुश्चत्वारिंशत्) = चौवालीस
पणचत्तालिसा, पणयाला (पञ्चचत्वारिंशत्) = पैंतालिस
छचत्तालिसा, छायाला (षट्चत्वारिंशत्) = छियालीस
सत्तचत्तालिसा, सगयाला (सप्तचत्वारिंशत्) = सैंतालीस
अट्ठचत्तालिसा, अडयाला (अष्टचत्वारिंशत्) = अड़तालीस
एगूणपण्णासा (एकोनचत्वारिंशत्) = उनचास
पण्णासा (पञ्चाशत्) = पचास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगपरणासा, इक्कपरणासा, एक्कपरणासा (एकपञ्चाशत्)

एगावरणा (एकपञ्चाशत्)=एक्यावन

बावरणा
दुपंरणासा } (द्विपञ्चाशत्)=बावन

तेवरणा, तिपरणासा (त्रिपञ्चाशत्)=त्रिपन

चोवरणा, चउपरणासा (चतुष्पञ्चाशत्)=चौवन

परणपरणा, परणपरणासा, पञ्चावरणा (पञ्चपञ्चाशत्)=पचपन

छप्परणा, छप्परणासा (षट्पञ्चाशत्)=छप्पन

सत्तावन्ना, सत्तपरणासा (सप्तपञ्चाशत्)=सत्तावन

अट्ठावन्ना, अडवन्ना, अट्ठपरणासा (अष्टपञ्चाशत्)=अट्ठावन

एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि)=उनसठ

सट्ठि (षष्टि)=साठ

एगसट्ठि, इगसट्ठि (एकषष्टि)=इकसठ

बासट्ठि, बिसट्ठि (द्वि-षष्टि)=बासठ

तेसट्ठि (त्रिषष्टि)=त्रेसठ, त्रिसठ

चउसट्ठि, चोसट्ठि (चतुष्षष्टि)=चौसठ

पणसट्ठि (पञ्चषष्टि)=पैंसठ

छासट्ठि (षट्षष्टि)=छिआसठ

सत्तसट्ठि (सप्तसष्टि)=सड़सठ

अडसट्ठि, अट्ठसट्ठि (अष्टषष्टि)=अड़सठ

एगूणसत्तरि (एकोनसप्तति)=उनहत्तर

सत्तरि (सप्तति)=सत्तर

इक्कसत्तरि, इक्कहत्तरि (एकसप्तति)=इकहत्तर, एकहत्तर

बा (बि) स (ह) त्तरि
बावत्तरि } (द्विसप्तति)=बहत्तर

तिसत्तरि (त्रिसप्तति)=तिहत्तर, तेहत्तर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोसत्तरि, चउसत्तरि (चतुस्सप्तति) = चौहत्तर, चोहत्तर
पण्णसत्तरि, पणसत्तरि (पञ्चसप्तति) = पचहत्तर
छसत्तरि (षट्सप्तति) = छेहत्तर, छिहत्तर
सत्तसत्तरि (सप्तसप्तति) = सतहत्तर
अट्ठसत्तरि, अडहत्तरि (अष्टसप्तति) = अठहत्तर
एगूणासीइ (एकोनाशीति) = उन्नासी
असीइ (अशीति) = अस्सी
एगासीइ (एकाशीति) = इक्यासी
बासीइ (द्वयाशीति) = बयासी
तेसीइ, तेरासीइ (त्र्यशीति) = तिरासी
चउरासीइ, चोरासीइ (चतुरशीति) = चौरासी
पणसीइ, पञ्चासीइ (पञ्चाशीति) = पचासी
छासीइ (षडशीति) = छियासी
सत्तासीइ (सप्ताशीति) = सत्तासी
अट्ठासीइ (अष्टाशीति) = अट्ठासी
नवासीइ (नवाशीति) = नवासी
एगूणनवइ (एकोननवति) = नवासी
नवइ, णवइ (नवति) = नब्बे
एगणवइ, इगणवइ (एकनवति) = इक्यानबे
बाणवइ (द्विनवति) = बानवे
तेणवइ (त्रिनवति) = तिरानबे
चउणवइ, चोणवइ (चतुर्नवति) = चौरानबे
पंचणवइ, पण्णणवइ (पञ्चनवति) = पंचानबे
छण्णवइ (षण्णवति) = छियानबे
सत्त(त्ता)णवइ (सप्तनवति) = सत्तानबे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठणवइ, अडणवइ (अष्टनवति) = अट्ठानबे

ण न)वणवइ (नवनवति) = निन्यानबे

एगूणसय (एकोनशत) ,,

सय (शत) = एक सौ

दुसय (द्विशत) = दो सौ

तिसय (त्रिशत) तीन सौ

बे सयाइं (द्वे शते) = दो सौ

तिण्णि सयाइं (त्रीणि शतानि) = तीन सौ

चत्तारि सयाइं (चत्वारि शतानि) = चार सौ

सहस्स (सहस्र) = हजार

बे सहस्साइं (द्वे सहस्रे) = दो हजार

तिण्णि सहस्साइं (त्रीणि सहस्राणि) = तीन हजार

चत्तारि सहस्साइं (चत्वारिसहस्राणि) = चार हजार

दह सहस्स (दश सहस्र) = दस हजार

अयुअ, अयुत (अयुत) = अयुत, दस हजार

लक्ख (लक्ष) = लाख

दस लक्ख, दह लक्ख (दशलक्ष) = दस लाख

पउअ, पउत, पयुअ (प्रयुत) = प्रयुत, दस लाख

कोडि (कोटि) = कोटि, करोड़

कोडाकोडि (कोटाकोटि) = काटोकोटि, करोड़ को करोड़ से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह ।

उपर्युक्त सभी शब्द सामान्यतः एकवचन में प्रयुक्त होते हैं उनके उपयोग की दो रीतियाँ इस प्रकार हैं :—जब 'बीस मनुष्य ऐसा कहना होता है तब 'बीसं मणुस्सा' अथवा 'वीसा मणुस्साणं' अर्थात् 'बीस मनुष्य', 'मनुष्यों की बीस संख्या' इस प्रकार इसके दो प्रकार के प्रयोग होते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जब उपर्युक्त संख्यावाचक शब्द 'बीस', अथवा 'पचास' ऐसे अपनी-अपनी मात्र एकसंख्या सूचित करते हों तो वे एकवचन में प्रयुक्त होते हैं और जब 'बहुत बीस', 'बहुत पचास'; इस प्रकार अपनी अनेकता बताते हों तब बहुवचन में आते हैं।

वाक्य (हिन्दी)

उस आचार्य के छप्पन शिष्य हैं लेकिन उनमें एक अथवा दो ही अच्छे हैं।

चन्द्र सोलह कलाओं से शोभित होता है।

प्राचीन काल में पुरुष बहत्तर कलाएँ और स्त्री चौसठ कलाएँ सीखती थीं।

उसने गुरु से पन्द्रह प्रश्न पूछे।

तुमने अठत्तर ब्राह्मणों को धन दिया।

आजकल श्रावक और साधु बारह अङ्गों को पढ़ते हैं।

ब्राह्मणों से चौदह विद्याएँ सीखी जाती हैं।

महीने में तीस दिन होते हैं।

पाँच मनुष्यों में (पञ्चों में) परमेश्वर वास करता है।

मैंने निन्यानबे मुनियों को वन्दन किया।

वाक्य (प्राकृत)

पंचण्हं वयाणं पढमं वयं (व्रतम्) पसंसिज्जइ।

चत्तारो कसाया दुक्खाइं देंति।

दस बाला निसाए पढंति।

बारह इत्थीओ वत्थाइं निक्खारंति।

अट्ठारस जणा छत्तीसाहिंतो चोरेहिंतो न बीहेंति।

धणस्स कोडीए वि न सन्तोसो होइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स घरे पोत्थयाणं सत्तरी दीसइ ।
सयेण दुसयं विढविज्जइ ।
एगोऽहं नत्थि मे कोऽवि ।
सव्वे संतु निरामया ।
सव्वे सुहिणो होंतु ।
सव्वे भद्दाइं पासन्तु ।
न होत्था को वि दुहिग्रो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छब्बीसवाँ पाठ

भूत कृदन्त

मूल धातु में 'त' अथवा 'अ' और शौरसेनी तथा मागधी में 'द' प्रत्यय लगाने पर भूत कृदन्त रूप बनते हैं। इन दोनों प्रत्ययों के परे रहने पर पूर्व के 'अ' को 'इ' होता[1] है। जैसे—

गम् + अ + त = गमितो
गम् + अ + अ = गमिओ (शौ० मा० गमिदो) } (गतः)=गया हुआ।

भावे —

गमितं गमिअं, (गतम्) = गति, जाना।

कर्मणि—

गमितो गामो
गमिओ गामो } (गतः ग्रामः) = गया हुआ गाँव।

प्रेरक—

करावितो (शौ० मा० कराविदो) (कारापितः)
कारिओ (शौ० मा० कारिदो) (कारितः) } = करवाया हुआ

अनियमित भूत कृदन्त

गयं[1] (गतम्) = गया हुआ, जाना।

मयं (मतम्) = माना हुआ, मानना, मत, अभिप्राय।

कडं (कृतम्) = किया हुआ, करना।

हडं (हृतम्) = हरण किया हुआ, हरण करना।

मडं (मृतम्) = मरा हुआ, मरना।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिअँ (जितम्) = जीता हुआ, जीतना ।

तत्तं (तप्तम्) = तपा हुआ, तपना

कयं (कृतम्) = किया हुआ, करना ।

दट्ठं
दिट्ठं } (दृष्टम्) = देखा हुआ, देखना ।

मिलाणं, मिलानं (म्लानम्) = कुम्हलाया हुआ, म्लान हुआ, म्लान ।

अक्खायं (आख्यातम्) = कहा हुआ, कहना ।

निहियं (निहितम्) = स्थापित किया हुआ, स्थापित करना ।

आणत्तं (आज्ञप्तम्) = आज्ञा किया हुआ, आज्ञा ।

संखयं (संस्कृतम्) = संस्कार, संस्कृत किया हुआ ।

सक्कयं (संस्कृतम्) = संस्कृत ।

आकुट्ठं (आक्रुष्टम्) = आक्रोश किया हुआ, आक्रोश ।

विणट्ठं (विनष्टम्) = विनष्ट, विनाश ।

पणट्ठं (प्रणष्टम्) = प्रनष्ट, नाश ।

मट्ठं (मृष्टम्) = शुद्ध, शोधन

हयं (हतम्) = हत हुआ, मारना ।

जायं (जातम्) = पैदा हुआ, होना ।

गिलाणं, गिलानं (ग्लानम्) = ग्लान हुआ, ग्लान ।

परूविअं (प्ररूपितम्) = प्ररूपित किया हुआ, प्ररूपण करना ।

ठियं (स्थितम्) = स्थित, स्थान ।

पिहियं (पिहितम्) = ढका हुआ, ढंकना ।

पण्णत्तं, पन्नत्तं (प्रज्ञपितम्) प्रज्ञापित, प्रज्ञापन करना ।
पन्नवियं (प्रज्ञपितम्)

किलिट्ठं (क्लिष्टम्) = क्लेश युक्त, क्लिष्ट ।

सुयं (स्मृतम्) = स्मरण किया हुआ, स्मरण ।

सुयं (श्रुतम्) = सुना हुआ सुनना ।

संसट्ठं (संसृष्टम्) = संसर्ग युक्त, संसर्ग ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घट्टं (घृष्टम्)=घिसा हुआ, घिसना।

उच्चारण भेद से बने हुए इन अनेक रूपों की साधनिका वर्णविक नियम द्वारा समझ लें।

भविष्यत्कृदन्त

धातु में 'स्सन्त' अथवा 'स्संत' तथा 'इस्सन्त अथवा 'इस्संत' लगाने से भविष्यत्कृदंत रूप बनते हैं। इसी प्रकार 'स्समाण' और 'इस्समाण प्रत्यय लगाने से भविष्यत्कृदंत रूप बनते हैं—ऐसे अकारांत नामों के रूप पुंलिंग में 'वीर' के समान होते हैं तथा नपुंसकलिंग में 'फल' के समान रूप बनते हैं।

धातु में 'स्सई' तथा 'इस्सई' प्रत्यय लगाने से तथा 'स्सन्त' अथवा 'स्संत' प्रत्यय का 'स्सन्ता' तथा 'स्सन्ती' बनाने से अथवा 'स्संता' तथा 'स्संती' बनाने से स्त्रीलिंगी भविष्यत्कृदंत बनते हैं। इसी प्रकार 'इस्संती' तथा 'इस्संता' वगैरह प्रत्यय भी होते हैं तथा 'स्समाणा', 'स्समाणी', 'इस्समाणा', 'इस्समाणी' प्रत्यय भी बनते हैं।

उक्त प्रत्ययों में जो प्रत्यय आकारांत हैं उससे युक्त नामों के रूप 'माला' जैसे समझ लें तथा जो प्रत्यय ईकारांत है उससे युक्त नामों के रूप 'नदी' जैसे समझ लें।

उदाहरण—हो धातु—

पुंलिंग—होस्संतो
होस्समाणो } (भविष्यन्)=होता होगा

नपुंसकलिंग—होस्संतं
होस्समाणं } (भविष्यत्) ,,

स्त्रीलिंग—होस्सई
होईस्सई
होस्सन्ती
होस्सन्ता
होस्समाणी
होस्समाणा } (भविष्यन्ती)=होती होगी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर् धातु—

पुं० —करिस्संतो (करिष्यन्:) = करता होगा ।

करिस्समाणो (करिष्यमाणः) ,,

नपुं० —करिस्संतं (करिष्यत्) ,,

करिस्समाणं (करिष्यमाणम्) ,,

स्त्री० —करिस्सई, करिस्संती, करिस्संता } (करिष्यन्ती) = करती होगी ।

करिस्समाणी, करिस्समाणा } (करिष्यमाणा) ,,

इत्यादि सब रूप समझ लेवें ।

प्रेरक भविष्यत्कृदन्त

पुं०—कराविस्संतो (कारापयिष्यन्) = करवाता होगा ।

,, —कराविस्समाणो (कारापयिष्यमाणः) ,,

नपुं०—कराविस्संतं (कारापयिष्यत्) ,,

कराविस्समाणं (कारापयिष्यमाणम्) ,,

स्त्री०—कराविस्सई, कराविस्संतो } (कारापयिष्यन्तो) = करवाती होगी ।

कराविस्समाणा (कारापयिष्यमाणा)

इत्यादिक रूप भी समझ लेवें ।

कर्तृदर्शक कृदन्त

मूल धातु में 'इर'[1] प्रत्यय लगाने पर कर्तृदर्शक कृदन्त बनते हैं । जैसे—

हस् + इर—हसिरो (हसनशीलः) = हँसने वाला ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नव् + इर—नविरो (नम्रः—नमनशीलः) = झुकने वाला, नमन शील,
हसिरा, हसिरी (हसनशीला) = हँसनेवाली ।
नविरा, नविरी, इत्यादि (नम्रा—नमनशीला) = नमनशीला ।

इसी प्रकार नपुं० हसिरं, नविरं रूप भी समझ लेवें ।

अनियमित कर्तृदर्शक कृदन्त

पायगो, पायओ (पाचकः) = पकाने वाला, रसोइया ।

नायगो, नायओ (नायकः) = नायक, नेता, नेतृत्व करने वाला ।

नेआ, नेता (नेता) = ,, ,,

विज्जं (विद्वान्) = विद्वान् ।

कत्ता (कर्ता) = कर्ता ।

विकत्ता (विकर्ता) = विकार करने वाला ।

वत्ता (वक्ता) = वक्ता—बोलने वाला ।

हंता (हन्ता) = हन्ता, मारने वाला ।

छेत्ता (छेत्ता) = छेदन करने वाला ।

भेत्ता (भेत्ता) = भेदन करने वाला ।

कुम्भआरो (कुम्भकारः) = कुम्हार ।

कम्मगरो (कर्मकरः) = काम करने वाला, श्रमिक ।

भारहरो (भारहरः) = भार उठाने वाला, मजदूर ।

थणंधयो (स्तनंधयः) = बालक, मां के स्तन से दूध पीने वाला बच्चा, छोटा बच्चा ।

परंतवो (परंतपः) = शत्रु को तपाने वाला, प्रतापी ।

लेहओ (लेखकः) = लेखक, इत्यादि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अव्यय

अग्गे (अग्रे) = आगे, पूर्व ।
अकट्टु (अकृत्वा) = न करके ।
अईव, अतीव (अतीव) = अतीव–विशेष ।
अग्गओ (अग्रतः) = आगे से ।
अओ, अतो (अतः) = अतः, इस लिए
अण्णामण्णं (अन्योऽन्यम्) = परस्पर ।
अत्थं (अस्तम्) = अस्त होना ।
अत्थु (अस्तु) = हो ।
अद्धा (अद्धा) = समय ।
अण (नञ्–अन) = निषेध, विपरीत ।
अण्णहा (अन्यथा) = अन्यथा, नहीं तो ।
अणंतरं (अनन्तरम्) = इसके बाद, अन्तर रहित–तुरंत ।
अदुवा, अदुव (अथवा) = अथवा ।
अहुणा (अधुना) = अब, अभी ।
अप्पेव (अप्येव) = संशय ।
अभितो (अभितः) = चारों ओर ।
अम्मो (आश्चर्यम्) = आश्चर्य ।
अलं (अलम्) = अलं, बस, प्रर्याप्त, निषेध ।
अवस्सं (अवश्यम्) = अवश्य ।
असइं (असकृत्) = अनेक बार, बारम्बार ।
उप्पि, अवरिं, उवरि (उपरि) = ऊपर ।
अहत्ता (अधस्तात्) = नीचे ।
आहच्च (आहत्य) = बलात्कार ।
इओ, इतो (इतः) = इस तरफ, इधर से ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इहरा (इतरथा) = अन्यथा, नहीं तो।
ईसिं (ईषत्) = थोड़ा।
उत्तरसुवे (उत्तरश्वः) = भावि, परसों, आगामी दिन के बाद का दिन।
एगया (एकदा) = एक बार—एक समय।
एगंततो (एकान्ततः) = एकान्त रूप से अथवा एक पर्याय।
एत्थ (अत्र) = अत्र, यहाँ, इधर।
कल्लं (कल्यम्) = कल।
कह, कहं (कथम्) = किस प्रकार, क्यों ?
कालाओ (कालतः) = काल से, समय से।
केवच्चिरं (कियच्चिरम्) = कितने लंबे काल तक।
केवच्चिरेण (कियच्चिरेण) = कितने लम्बे समय से।

वाक्य (हिन्दी)

मूर्ख मनुष्य बड़बड़ (लबलब) करता है।
राजा ने हंस कर लोगों को नमन किया।
मैं पापों का निरोध करने लिए उतावला हुआ।
महावीर को देखने के लिए लोगों द्वारा दौड़ा जाता है।
भोगों को भोग-भोग कर उनके द्वारा खेद पाया जाता है।
तत्त्व को जानकर विद्वान् द्वारा मुक्त हुआ जाता है।
प्रह्लादकुमार प्रजा के दुःखों को समझ कर उनका सेवक हुआ।
जगत् में सभी (सब कुछ) हंसने जैसा है और रोने जैसा भी।
पुण्य इकट्ठा करने योग्य है और पाप जलाने योग्य हैं।
वह पढ़ता-पढ़ता सोता है।
पढ़ाया जाता हुआ पाठ उसके द्वारा सुना जाता है।

वाक्य (प्राकृत)

सज्जणो सत्थवयणं सोच्चा सद्दहइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणूसा पुरणं किच्चा देवा होंति ।
पावं परिच्चज्ज साहूहिं सव्वं कीरइ ।
इंदो महावीरं वंदित्ता थुणइ ।
अवस्सं वोत्तव्वं वयंति महाणुभावा ।
दट्ठव्वं पासंति देक्खिरा नरा ।
नविरो बालो पियरं पणमइ ।
पायमेणा ईसिं अन्नं पत्थिज्जइ ।
एगया एवं मए सुयं जं, महावीरेण एवं कहिग्रं ।
पयाणं पालणेण पावं पिणट्ठं पुरणं च जायं ।

॥ समत्तं इणं पोत्थयं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत शब्दों की सूची

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
अ		
अ	=और	५६, १८६
अइ		१६४
अइमुंतय अइमुतय	=माधवी लता अथवा तिनिश का वृक्ष	८७
अइवाअ (धा०)		२७०
अइस (अप०)	=ऐसा	८५
अइसेइ (क्रि०)		१६४
अईव		३६२
अएलय	=विना वस्त्र का—नग्न—ऐलक	२५८
अओ		३६२
अंक		२००
अंकोल्ल	=अंकोठ का वृक्ष	४६
अंगण	=आंगन	६८, २००
अंगार	=अंगार—जलता हुआ कोयला	१८
अंगुअ	=इंगुदी का वृक्ष	२२
अंजण	=अंजन—आँख में लगाने का काजल	६८
अंजलि	=अंजलि—हाथ जोड़ना	६६
अंजली		६१
अंडय		२६३
अंततो	=अंत—छेवट	६२
अंतर	अंतर—दुराव—दुरीपन	६८, १६६
अंतिअ		२५८
अंतो		२८३
अंध अंधल		२८०
अंब		२५५
अंबिल	=अम्ल—खट्टा	७३
अकट्टु		३६२
अक्क	=सूर्य अथवा आक का पेड़	५६, २८१
अक्खि अक्खी	=आँख	८६
अक्खोड		३२३
अङ्गण	=आंगन	६८
अङ्घ्रि (सं०)	=पैर	१३१
अगणि	=आग—अग्नि	८६
अग्गओ अग्गतो अग्गदो (शौ०)	=आगे से	६२, ३६२
अग्गि	=आग—अग्नि	८६, २५३, २८०
अग्गिनि (पालि)	,,	२५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
अग्गो		३९२
अग्ग्र		३२४
अचेलय		२५८
अच् (धा०)		१६६, २२९
अच्चि	=आँच	२८०
अच्चे (धा०)		२८३
अच्छ (वै०)	=आँख अथवा इंद्रिय	११९
अच्छअर	=आश्चर्य	८२
अच्छयिर (पालि)	,,	८२
अच्छरसा		३०३
अच्छरसा	=अप्सरा	३१४
अच्छरा	=अप्सरा	६५
अच्छरिअ	=आश्चर्य	८२
अच्छरिज्ज	,,	८२
अच्छरियं	,,	९३
अच्छरिय	,,	८२, ११७
अच्छरीअ	,,	८२
अच्छिं	=आंख	८९, ९१
अच्छि	,,	६४, ११९, २४१
अच्छी	,,	८९, ९१
अच्छे (क्रिया०)		२९८
अच्छेर	= आश्चर्य	६५, ८०, २२७
अजिण		१८२
अजीव	=अजीव—जीव नहीं	९४
अज्ज	=आज	६६, १७५
अज्जउत्त	=आर्यपुत्र	६६
अज्जतण		२२८
अज्जतो	=आज से—आज कल	६२
अज्जयण		२२८
अज्जा	=आज्ञा	६१
अज्जू	=आर्या—सास—श्वश्रू	२१, ३१७
अज्जो		३७१
अज्झत्थं		२१२
अज्झत्थ	=अध्यात्म	७९
अज्झप्पं		२१२
अज्झप्प	=अध्यात्म	७९
अञ्जण	=अंजन	९८
अञ्जलि	=अंजलि	६९
अट्ट(सं०)	=हट्ट—हाट—दुकान	१३५
अट्ठ	=प्रयोजन	७७
अट्ठ	=आठ	३७९
अट्ठचत्तालिसा		३८१
अट्ठणवइ		३८४
अट्ठतीसा		३८१
अट्ठपण्णासा		३८२
अट्ठम		२८२
अट्ठवीसा		३८१
अट्ठसत्तरि		३८३
अट्ठारस		३८०
अट्ठारह		३८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
अट्ठावन्ना		३८२
अट्ठावीसा		३८१
अट्ठासीइ		३८३
अट्ठि	=अस्थि–हड्डी	७७, २४१
अड	=कुंआ–कूप	५५
अडणवइ		३८४
अडतीसा		३८१
अडयाला		३८१
अडवन्ना		३८२
अडवीसा		३८१
अडसट्ठि		३८२
अडहत्तरि		३८३
अड्ढ	=अर्ध–आधा	७८, २८२
अड्ढाइअ		२८२
अड्ढाइज्ज		२८२
अड्ढीय		२८२
अण		३९२
अणंतरं		३९२
अणवज्ज		२१२
अणाइअ		२०२
अणागम		२९८
अणारिय		२१३
अणिउंतय	देखो 'अइमुत्तय'	४७
अणिउँतय	,,	५०
अणिट्ठ	=अनिष्ट–अप्रिय	६८
अणु		१६२
अणुकरइ	(क्रिया०)	१६२
अणुजाइ	,,	१६२
अणुजाण्	,,	२९९
अणुतप्प्	,,	२१४
अणुभव्	,,	२२९
अणुरूव	=रूपानुसार	१०१
अणुसास्	(धा०)	२५९
अणेगछंदा	=अनेक छंद युक्त	९९
अण्ण		१९८
अण्णमण्णं		३९२
अण्णयर		१९९
अण्णया		३५७
अण्णहा		३९२
अण्ह		३२५
अतसी	=अलसी–तीसी	४७
अति		१६४
अतिगच्छति	(क्रिया०)	१६४
अतीव		३९२
अतो		३९२
अत्तमाण	=आवर्तन करता हुआ	५५
अत्ता	=आत्मा	७९
अत्ताणो	=आत्माएँ	७९
अत्थं		२८३, ३९२
अत्थ	=अर्थ–धन	७७, २११
अत्थवई	=अर्थपति–धनपति	७१
अत्थि	=अस्ति–है	७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
अत्थिअ		३५६,३५७
अत्थु		३९२
अदुव		३९२
अदुवा		३९२
अद्द	=आर्द्र–गिला	५८
अद्ध	=आधा	७८,२८२
अद्धा		३९२
अद्धुट्ठ		२८२
अधि		१६४
अधिगच्छइ (क्रि०)		१६४
अधीर		२०१
अनवज्ज		२१२
अनागम		२६८
अनु		१६२
अनुजाणणा (धा०)		२९९
अन्तग्गय	=अन्तर्गत–अंदर आया हुआ	३२
अन्तिका	=अत्तिका–बड़ी बहिन (नाटक)	१३३
अन्तेउर	=अन्तःपुर–राजस्त्रियों—रानियों का निवास	६८
अन्तोवरि	=अंदर और ऊपर	३३
अन्देउर (शौ०)	=अन्तःपुर	६८
अन्न		१९८
अन्नन्न	=अन्योन्य–परस्पर	३०
अन्नमन्न	,,	९८

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
अन्नयर		१९९
अन्नाइस	=अन्य जैसा	८४
अन्नारिस	,,	८४
अन्नुन्न	=अन्योन्य	३०
अप		१६२
अपरोप्पर	=परस्पर	८८
अपसरइ (क्रि०)		१६२
अपि		१६५
अपिहेइ (क्रि०)		१६५
अप्प		२०२,२५९,२९२
अप्पज्ज	=आत्मज्ञ अथवा अल्पज्ञ	६१
अप्पणिय		२४३
अप्पण्णु	=आत्मज्ञ अथवा अल्पज्ञ	६१
अप्पा	=आत्मा–आपा–आप	७९
अप्पाण	=आत्मा–अपन लोग	१८७
अप्पाणो	=आत्माएँ–अपन लोग	७९
अप्पिअ	=अर्पित	१९
अप्पेइ (क्रि०)	=अर्पण करता है	१९
अप्पेव		३९२
अब्बा	=अंबा–माता	१३२
अब्भयते (क्रि०)	=आह्वान करता है	७२
अब्भाण	=आह्वान	७२
अब्भुत्त (धा०)		३२४
अब्भे (क्रि०)		२९८
अभयप्पयाण		२११
अभि		१६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
अभिक्खणं	२५८
अभिजाण (धा०)	२१४
अभितावे (क्रि०)	२९८
अभितो	३९२
अभिनिक्खम (धा०)	२१४
अभिपत्थ (धा०)	२१४
अभिभासइ (क्रि०)	१६३
अभिभासे (क्रि०)	२९८
अभिभूय (सं० कृ०)	३६८
अभिमञ्जु (मा० पै०)=अभिमन्यु	६९,७६
अभीशु (सं०)	१३१
अमरा (ना० धा०)	२७०
अमराय (ना० धा०)	१५०,२७०
अमिअ	२९३
अमु	१९९
अमुग=अमुक	४४
अम्ब=आम का पेड़ अथवा फल	८०
अम्मो	३९२
अम्ह	१९९
अम्हारिस=हमारी जैसा	७२,२५८
अम्हे=हम	९५
अय	२१०
अयड=अवट–कुँआ	५५
अयुअ	३८४
अयुत	३८४
अय्य (शौ०)=आर्य	६६

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
अय्यउत्त (शौ०)=आर्यपुत्र (नाटक)	६६
अरण्ण=अरण्य	१९
अरविंद	२११
अरहंत=वीतराग अथवा पूजनीय व्यक्ति	८६
अरिह=पूजनीय अथवा योग्य	७४
अरिहइ (क्रि०)	७४
अरिहंत=देखो 'अरहंत'	८६,११७
अरिह	१४०
अरुहंत=देखो 'अरहंत'	८७,११७
अलं	२१२, ३९२
अलचपुर=महाराष्ट्र के एक नगर का नाम	८८
अलसी=अलसी	४७
अलाऊ=लौकी–तुंबा	१९,३१७
अलापू (पालि) ,,	४१
अलाभ	२०९
अलावू देखो 'अलाऊ'	४१
अलाह	२०९
अल्ल आर्द्र–गिला	२१
अल्लव् (धा०)	३२३
अल्लिव् (धा०)	३२५
अव	१६२
अवक्खंद=छावनी अथवा सैन्य द्वारा घेरा	६३
अवक्खर=गुज० ओखर–विष्ठा	६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
अवज्ज	=अवद्य–पाप	६५,२१२,२७०
अवड	=कुँआ	५५
अवतरइ (क्रि०)		१६२
अवत्थयं		१६२
अवमन्न (धा०)		२४४
अवर		१९९
अवरण्ह	=अपराह्न–दिन का पिछला भाग	७०
अवराइस (अप०)	=दूसरे के जैसा	८४
अवरारिस=	,,	८४
अवरिं	=ऊपर	२४,८७,२१२,२७०,३९२
अवसरइ (क्रि०)		१६२
अवसीअ (धा०)		२७१
अवस्सं		२२८, २८२, ३९२
अवह	=उभय–दो	८३
अवहड	=अवहृत	४७
अवहय=	,,	४७
अवि		१६५, २९८, ३२०
अविहेइ (क्रि०)		१६५
अव्वईभाव		१०२
अश्र (सं०)	=अंश–कोना	१३१
असइं		३९२
असंजम		२९२
असमण		२०९
असहज्ज	=असहाय्य–सहाय रहित	२१
असहेज्ज=	,,	२१
असात		२११
असाय		२११
असीइ		३८३
असुक	=अमुक	४४
असुग=	,,	४४
अस्तवदी (मा०)	=अर्थपति–धनवान्	७१
अह		२५८
अहत्ता		३९२
अहम		२१३
अहर		१९९
अहव	=अथवा	२०, १२०, २८२
अहवा=	,,	२०, १२०, २८२
अहि		१६३, १६४
अहिगमो		१६४
अहिज्ज	=अभिज्ञ–कुशल	६१
अहिट्ठ (धा०)		२८३
अहिणउलं	=अहिनकुलम्–स्वाभाविक वैर का सूचक	१०१
अहिण्ण	=अभिज्ञ–कुशल	६१
अहिन्नव		२९४
अहिन्नाण		३२७
अहिमंजु	=अभिमन्यु	७६
अहिमञ्जु=	,,	७६
अहिमन्नु=	,,	५०, ६९, ७६
अहिमुहं		१६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
अहियाइ=शत्रु	१७
अहिलंख् (धा०)	३२६
अहिलंघ् (धा०)	३२६
अहिवन्नु=भिमन्यु	५०
अहुणा	२५८, ३९२
अहेळमानो (सं०)	११५
अहो=अहो–आश्चर्यसूचक	९३

आ

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
आ=मर्यादा अथवा अभिविधि	१६५
आअ=आगत–आया हुआ	५५, २०१
आइक्ख् (धा०)	२०२
आइच्च	१७५
आइरिअ=आचार्य	२०
आउंटण=आकुञ्चन–संकोच	४५
आउज्ज=आतोद्य–बाजा	३१, ४७
आउण्टण=आकुञ्चन–संकोच	४५
आउय	२०१
आउस=आयुष्–वय-मर्यादा–उमर	८३
आउह=आयुध–शस्त्र	३४
आगअ=आगत–आया हुआ	५५, २०१
आगत	२०१
आगम् (धा०)	२८३
आगरिस=खींचाव–आकर्षण	४४
आगार=आकार	४४
आडिअ (टि०)–आदृत–आदर पात्र	२९
आढत्त=आरब्ध–जिसका प्रारम्भ किया हो	८३
आढव् (धा०)	३२५
आढा	३२४
आढिअ=आदृत–आदरपात्र	२९
आणा=आज्ञा–आन	६१, ६८, ३१३
आणाल=हाथी को बांधने का रस्सा	८८, १२०
आणालक्खंभ=हाथी को बांधने का खंभा	८२
आणे (धा०)	२२६
आतुमा (पालि)=आत्मा	७६
आत्त (सं०)=आदत्त–गृहीत	१३३
आदितो=आदि से–प्रारंभ से	६२
आपिब् (धा०)	१८६
आपिय् (धा०)	१८६
आपीड=मस्तक का भूषण	५०
आभरण	२४२
आभोय	३२४
आम	२८३
आमलय	३२७
आमेल=मस्तक का भूषण	५०
आय=आया–आगत	११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
आयय् (धा०)	२८३
आयंस=आदर्श–दर्पण	७४
आयरिअ=आचार्य	२०, ७३
आयरिय	१७५, २९२
आयरिस=आदर्श	७४
आया=आत्मा	९३
आयाय	३६८
आरद्ध=आरब्ध	८३
आरिय	२२५
आरिस	३५६
आरोव् (धा०)	३२५
आलक्खिमो (क्रि०)=देखते हैं–जानते हैं	९३
आलिद्ध=आश्लिष्ट	७९
आलोट्ट् (धा०)	२९०
आवज्ज=आतोद्य–बाजा	३१, ४७
आवत्तअ=आवर्तक–आवर्तन करने वाला	६७
आवत्तमाण=आवर्तन करता हुआ	५५
आवसइ (क्रि०)	१६५
आविय् (धा०)	१८९
आवेड=मस्तक का आभूषण	५०
आस	२८०
आसत्त	२०१
आसार=वेग से जलवृष्टि	२१, ३२३
आसिसा	३१४
आहच्च	३६८, ३९२
आहट्टु	३६८
आहड=आहृत	४७
आहय= ,,	४७
आहार	२४२
आहियाइ=शत्रु	१७

इ

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
इ=अपि–भी	१६५
इअ=इति–इस प्रकार, समाप्ति सूचक	२१, २१२
इआणिं=अभी	८३, ९७
इआणि= ,,	९७
इइ	२१२
इओ	३९२
इंगार=अंगार	१८
इंगाल=अंगार	५२
इंगिअज्ज=इङ्गितज्ञ–संकेत को जानने वाला	६१
इंगिअण्णु=इङ्गितज्ञ	६१
इंद	१७५
इंध=चिन्ह–चिह्न	५६
इक्क=एक	८१, १९९, ३७६
इक्कचत्तालिसा	३८१
इक्कतीसा	३८१

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
इक्कपण्णासा	३८२
इक्कवीसा	३८०
इक्कसत्तरि	३८२
इक्कहत्तरि	३८२
इक्खु=इक्षु–ईख–सेलडी	२२, ६२
इंगुअ=इंगुदी का वृक्ष	२२
इगणवइ	३८३
इगयाला	३८१
इगसट्ठि	३८२
इच्छ् (धा०)	१८३
इच्छइ (क्रि०)	६५
इज्झाइ (,,)	७६
इट्टा=ईंट	६८
इट्ठ=इष्ट	६८
इड्ढि=ऋद्धि–संपत्ति	७८
इण्हिं=अभी	६३
इति=इति	२१, २१२
इतो=इधर से, इस तरफ से	६२, ३६२
इत्थं=इस प्रकार से	२७०
इत्थी=स्त्री	८४, ३१६
इदो इदो (शौ०)=इतः इतः–इस तरफ से इस तरफ से	६२
इद्धि=ऋद्धि	२७, ७८
इध (शौ०) इह–इधर	३७, ११४
इम	१९९, २०८
इयर	१९९

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
इसि=ऋषि	२७, ३२७, २४०
इस्सेरं (पालि)=ऐश्वर्य	८०
इहं=ऋधक्–सत्य	६७
इह=इह–इधर	३७
इहयं=ऋधकक्–सत्य	६७
इहरा	३९३
इहेव	२२८
ईळे=स्तुति करता हूँ	११५
ईळे (वै०, पै०, ईडे सं०)	११५
ईसिं=ईषत्–थोड़ा	८३, ३९३
ईसि ,,	८३

उ

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
उ=उत्–ऊपर	१६४, १६५
उअ	२९८
उउंबर=गूलर का पेड़	५५
उऊहल=ओखली-चावल आदि को कूटने का साधन	८२
उंघिज्जा (क्रि०)=सोया हुआ	३३१
उंघीअ (क्रि०)= ,,	३३१
उंघ् (धा०)	३२४, ३३१
उंबर=गूलरका पेड़	५५
उक्का=उल्का–लूका	५६
उक्किट्ठ=उत्कृष्ट	२७
उक्कुद्द् (धा०)	२७०
उग्गच्छते (क्रि०)	१६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
उच्चअ=ऊँचा	२६
उच्चिट्ट (धा०)	२६४
उच्छलइ (क्रि०)=उछलता है	६५
उच्छव=उत्सव	६५
उच्छा=उक्षन्-बैल	६४
उच्छाह=उत्साह	५४, ६५, २२६
उच्छु=ईख	२२, ६४, २५४
उच्छुअ=उत्सुक	६५
उज्जु=रिजु-सरल	८१, ३१६
उज्जोत=उद्योत	११४
उट्ट=ऊँट	६८, २१०, २८०
उट्ठ (धा०)	३२४
उड्डी (धा०)	२४४
उण=पुनः-फिर से	५६, १८६
उणो= ,,	५५
उण्हाल=उष्ण काल-गरमी का मौसम	२५६
उण्हीस=पगड़ी, मुकुट	६६
उत=देखो	८३
उतु=ऋतु	११८
उत्त=उक्त-कहा हुआ	८८
उत्तम	२०१
उत्तरसुवे	३६३
उत्तरिज्ज=उत्तरीय वस्त्र	५१
उत्तरीअ= ,,	५१
उत्तिम=उत्तम	१७, २०१

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
उत्थार=उत्साह	५४, ८०
उत्थाह= ,,	७८
उदग	२४२
उदय	२४२
उदहि	२४०
उदूखल=ओखली-खाँड़ने का साधन	८२
उद्दिग्ग=उद्विग्न	५६
उद्ध=ऊर्ध्व-ऊपर	७६
उप्पल=उत्पल-कमल	५७, ३२७
उप्पाअ=उत्पाद-उत्पत्ति	५७, ३२६
उप्पिं	३६२
उप्पि	२७०
उब्भ=ऊर्ध्व	७६
उभयो=उभय	८३
उम्बर=गूलर का पेड़	५५, १३२
उम्बुरक= ,,	५५, १३२
उम्हा=उष्मा-गरमी	६३, ७२
उरो=उर-छाती	८६
उलूहल=ओखली	८२
उल्ल=आर्द्र-गीला	२०
उव	१६५
उवइ (धा०)	२७१
उवचिट्ट (धा०)	२५६
उवक्खड=उपस्कृत-मसाला वगैरह डाल कर रसोई को संस्कारना	६३
उवक्खर=सामान	६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
उवज्झाय=उपाध्याय	६७, ८३, १७५
उवट्ठिअ=उपस्थित–हाजिर	७१
उवणिअ=उपनीत–समीप में लाया हुआ	२४
उवणी (धा०)	२९९
उवणीअ=समीप में लाया हुआ	२४
उवदंस् (धा०)	२९९; ३२३
उवदिस् (धा०)	३२६
उवमा=उपमा–तुलना	४०
उवरिं=ऊपर	२४, २१२, २७०
उवरि ,,	८७, २७०, ३९२
उवरिल्ल	३५७
उवलभामहं=उपलभे अहम्–मैं पाता हूँ	९५
उवसग्ग=उपसर्ग–क्रियापद के सहायक शब्द	४०, १९२
उवस्तिद (मा०)=उपस्थित–हाजिर	७१
उवह=उभय–दोनों	८३
उवास् (धा०)	२९०
उवासग=उपासक–श्रावक, उपासना करने वाला	४४, २४२
उवाहि	२४०, २६७
उव्विग्ग=उद्वेग युक्त	५९, ६०
उव्विण्ण=उद्वेग युक्त	६०
उव्वीढ=धारण किया हुआ–पहना हुआ	२६
उव्वूढ ,,	२६
उश्चलदि (मा० क्रि०)=उछलता है	६५
उसभ=बैल अथवा ऋषभदेव	११८
उसभमजिअं=ऋषभ और अजित नाम के तीर्थंकर	९७
उसह=ऋषभदेव अथवा बैल	२८
उस्मा (मा०)=उष्मा–गरमी	६३
उस्साह (पालि)=उत्साह	७९

ऊ

ऊज्झाय=उपाध्याय	८३
ऊज्झायो	१६५
ऊरु=जंघा–जांघ	२५४
ऊर्ध (सं०)	१३२
ऊसव	२२६
ऊसार=वेग से जलवृष्टि	११

ऋ

ऋफिल (सं०)=विशेष संज्ञा	१३०

ए

एअं	२७०
एअ=एक	८१, १९९, ३७६
एआरस=एकादश–ग्यारह	५४, ३८०
एआरह ,,	४८, ५४, ३८०
एक्क=एक	८१, १९९, ३७६
एक्कचत्तालिसा	३८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
एक्कतीसा	३८१
एक्कपण्णासा	३८२
एक्कवीसा	३८०
एक्कार=अयस्कार–लोहार	८२, ११९
एग=एक	४४, ८१, ३७६
एगचत्तालिसा	३८१
एगणवइ	३८३
एगंततो	३९२
एगतीसा	३८१
एगत्त=एकपना–एकत्व, एकता–प्रेम	४४
एगपण्णासा	३८२
एगया	२१२, २४३, २८३, ३९३
एगवीसा	३८०
एगसट्ठि	३८२
एगारह	३८०
एगावण्णा	३८२
एगासीइ	३८३
एगूणचत्तालिसा	३८१
एगूणतीसा	३८१
एगूणनवइ	३८३
एगूणपण्णासा	३८१
एगूणवीसा	३८०
एगूणसट्ठि	३८२
एगूणसत्तरि	३८२
एगूणसय	३८४
एगूणासीइ	३८३
एगे=एक	९३
एगोण=एक कम	९६
एगमेग=प्रत्येक	९८
एत्ताहे=अभी	८३
एत्थ=इधर	१८, २४४, ३९३
एण्हिं=अभी	८३
एमेव=एवमेव–ऐसा ही	५५
एय	१९९
एरावण	२१०
एरिस=ऐसा	८५
एवं=ऐसा	९७, २२८
एवं एअं=ऐसा यह	८७
एवं णेदं (शौ०)=ऐसा यह	८७
एव=ऐसा अथवा निश्चय	९७, १२०, २०२, २२८
एवा (वै०)= ,,	१२०
एस् (धा०)	२८३
एस्संति णंतसो=अनन्तवार आवेंगे–पावेंगे	९५
एह=(अप०) ऐसा	८५

ओ

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
ओ=देखो, निकट	८३, १६२, १६५
ओक्खल=ओखली–खांडने का साधन	८२
ओग्गाल् (धा०)	३२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
ओज्झर=निर्झर–पर्वत से पानी का झरण	२३, ३८
ओज्झाय=उपाध्याय–ओझा	८३
ओज्झायो= ,,	१६५
ओट्ठ=ओष्ठ–होठ	१८२
ओतरइ (क्रि०)	१६२
ओप्पिअ=ओप किया हुआ–चमकदार किया हुआ	१९
ओप्पेइ (क्रि०)	१९
ओप्प् (धा०)	२५९
ओमत्तं	१६२
ओम्वाल् (धा०)	३२५
ओल्ल=ओला–गिला	२१
ओसढ=ओसड–औषध	४९
ओसरइ (क्रि०)	१६२
ओसह=औषध	४९
ओहड=अपहृत	४७
ओहय= ,,	४७
ओहल=ओखली–गु० खाँडणी	८२
ओहसित=उपहास किया हुआ	११८
ओहि=अवधि–मर्यादा	८३

क

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
कइ (चू० पै०) गति	३६
कइ=कवि	९२
कइअव=कितना	५१
कइम=कितनावाँ	१७, १९९
कइलास=कैलास	३०
कइवाह=कितना	५१
कइस=(अप०) कैसा	८५
कउरव=कौरव	३१
कउह=बैल के कंधे का कुब्बड़	४९
कउहा=दिशा	८३, ३१३
कंकण=कंगन–हाथ का आभूषण	९२
कंकोड=कंकोडा (शाक)	८७
कंचुअ=कोट जैसा पहिरने का वस्त्र, कंचुक, अचकन अथवा चोली	९७, ९८
कंजिय	२८१
कंटअ=कंटक	९८
कंटग	२२६
कंटयरक्ख	२५७
कंठ=कंठ–गला	९२, ९८
कंड=काण्ड–वृक्ष की शाखा	९८
कंडुया=कंडु–खुजली	२६
कंतप्प (पै०, चू० पै०)=कंदर्प–कामदेव	३५
कंति	३१६
कंद=कंद–मूल	५७, ३२७
कंदप्प=कामदेव	३५
कंप=कंपन, कांपना	९८
कंबल=कम्बल	२५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
कंस	'कांसा' एक धातु विशेष	९८
कंसआर		२९८
कंसार		२९८
कक्कंधू		३१७
कण्ठ	कंठ–गला	९२, ९८
कच्छ	कांख	१३३
कच्छु		३१६
कज्ज	कार्य–काज	६६
कज्जं		३७०
कट्ठ	कष्ट, काष्ठ–लकड़ी	९३, ९८, २००
कड	कृत–किया हुआ	४७, २१३
कडण	व्याकुलता	४८
कडुअ	कडुआ	३९
कड्ढ (धा०)		३३२
कणय	कनक–सोना	४०
कणवीर	कनेर का पेड़	५२
कणियार	,,	८१, ८२
कणेरु	हथिनी	८८, ३१७
कण्टक		१३४
कण्डलिया	कंदरा–गुफा	७८
कण्डूया	खुजली	२६
कण्डुय् अथवा कंडूय् (धा०)	खुजलाना	२६
कण्ण		१७५, २९८
कणिआर	कनेर का वृक्ष	८१, ८२
कणेर	,,	८२
कण्ह	कृष्ण–विशेष नाम, काला वर्ण	६६, ८६, २२६
कतम		१९९
कतिपयाह (पालि)	कितना	५१
कतिपाह (पालि)		५१
कतिम	कितनावाँ अथवा बहुत में-से कौन	३६, ३१६
कतुअ (पै०)	कडुआ	३९
कत्तरी	कैंची	६७
कत्तिअ	कार्तिक मास	६७
कत्तो		२०२
कत्थ		२७०
कथं	कैसे, किस प्रकार, क्यों	९८
कधिद (शौ०)	कहा हुआ	३४
कन्नका	कन्या	६९
कपरिका (सं०)	पुस्तक रखने का एक उपकरण	५३
कपलिका (सं०)	,,	५३
कप्पर	खप्पर	२६
कप्प् (धा०)		२१३
कप्फल	कायफल-एक औषध	५७
कमंडलु		२५४
कमंध	रुंड–मस्तक रहित देह	५०
कमळ (पै०)	कमल	४२
कमर (सं०)	सुन्दर–कमनीय	१३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
कमल=कमल	४१, ४२, ८२
कम्भार=कश्मीर देश	८०
कम्भारी (सं०)=शीवण नाम का पेड़—मधुपर्णिका	१३४
कम्म	१८१, २६६
कम्मबीअ	२०१
कम्मस=कल्मष—पाप	६०
कम्हार=कश्मीर देश	२३, ७२, ८०
कयंध=रुंड—मस्तक रहित देह	५०
कयंब=कदंब का वृक्ष	४६
कय=किया हुआ	४७, २१३
कयग्गह=कचग्रह—बालों का पकड़ना	३७, ११६
कयण=व्याकुलता	४८
कयण्णु=कृतज्ञ—किये हुए उपकार को जानने वाला	१८, २५४
कयर	१६६
कयली=केला का गाछ	८२, ३१५
कयविक्कय	२८६
कया	३५७
कय्य (शौ०)=कार्य—काज	६६
करणिज्ज=करणीय—करने योग्य	५१
करणीअ=करणीय—करने योग्य	५१
करम्ब=दही और भात का बना हुआ खाने का पदार्थ	१२६
कररुह=नख	६०
करली=केला का गाछ	४८
करिस् (धा०)	१४०
करेज्जहि (क्रि०)=तू कर	६६
करेणु=हथिनी	८८, २५४
कर् (धा०)	१४०, १५८
कल (मा०)=कर—हाथ	४२
कलअ=काला—श्याम	२०
कलज्ञ (सं०)=कला का ज्ञाता	१२६
कलत्र (सं०)=स्त्री	१२८
कलंब=कदंब का वृक्ष	४६, ६८, २२६
कलह	१७५
कलिआ	३१४
कलुण=करुण	५२
कलेय्यहि (मा० क्रि०)=तू कर	६६
कलेवर=कलेवर—शरीर	१२८
कल्लं	३६३
कल्हार=सफेद कमल	७३
कवट्टिअ=कदर्थित—पीड़ित	४६
कवट्टिअ= ,,	७७
कवड्ड=बड़ी कौड़ी	७८, २८०
कवँल (अप०)=कमल	४१
कवाट (सं०)=कपाट	१२६
कवाल=कपाल—भाल प्रदेश	४०
कवि	२५४
कविल=कपिल—भूरा रंग	४०
कव्व=काव्य	६०
कस	२५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
कसट (पै०)=कष्ट		६८
कसण=काला रंग		८६
कसाय=क्रोध, लोभ, वगैरह कषाय		४३
कसिण=काला रंग		८६
कसिब्रल		२००
कस्ट (मा०)=कष्ट		६३
कहं=किस प्रकार, क्यों		६८, १६३
कह= ,,		६८, ३३१, ३६३
कहंपि=कथमपि—किसी भी प्रकार से		६६
कहमवि= ,,		६६
कहा=कथा-वार्ता		३७
कहि		२८३
कहिं		२८३, २६४
कहिअ=कथित—कहा हुआ		३४
कह् (धा०)		१५६, ३३२
काअ=काक—काग—कौआ		६२
काअव्वं		३७०
काउँअ=कामुक—लंपट		५०
कांचलिअ		२५५
काठ (चू० पै०)=गाढ—गाढ़ा		३८
काणीण		३५७
कातव्वं		३७०
काम		१८७
काय		१८६
कायव्वं		३७०
कारण		२११
काल		२१०
कालअ=काला		२०
कालाओ		३६३
कालायस=काला लोहा		५५
कालास= ,,		५५
कास=कांस्य—कांसा धातु विशेष		६८
कासा=कृशा—दुर्बल स्त्री		२७
कासी=काशी—बनारस		१३०
काहल=कायर		४७
काहापण=कर्षापण—सुवर्ण का सिक्का		८१
काहिइ(क्रि०)=करेगा		६३
काही= ,,		६३
किं=क्या, क्यों		६७, १८६
किं एअं=क्या यह		८७
किं णेदं (शौ०)= ,,		८७
किं पि=कुछ भी		६६
किंसुअ=पलाश का फूल अथवा वृक्ष		२२, ६८
कि=क्या, क्यों		६७
किच्चं		३७०
किच्चा=कृत्वा—करके		६४, ३६८
किच्चाण		३६८
किच्ची=चमड़ा		७६
किटि (सं०)=सूअर		५२
किडि=सूअर		५२
कित्ति=कीर्ति		६७, ३१६
किण् (धा०)		३२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
किमवि=कुछ भी	९६, १६५
किमिहं=क्या इधर	९९
किया=क्रिया	५९, ८६, ११४, ३२८
किरि (चू० पै०)=गिरि–पर्वत	३६
किरि=सूअर	५२
किरितट (चू० पै०)=गिरितट	३५
किरिया=क्रिया–प्रवृति	८६, ११७
किलमंत=क्लम–खेद पाता हुआ	७३
किलम्मइ=खेद पाता है	७३
किलालव	१९०
किलालवा	१९०
किलिट्ठ=क्लेश पाया हुआ	७३
किलिन्न=गिला	७३, ३२८
किलेस=क्लेश	७३
किवा	३२८
किसरा	३२८
किसल=किसलय–नूतन अंकुर	५५
किसलय= ,,	५५
किसा=कृशा–दुर्बल स्त्री	२७
किसाणु	२५३
कीड् (धा०)	२०२
कील	२०२, ३२४
कीलइ=खेल करता है–क्रीडा करता है	३९
कुऊहल=कुतूहल	२५

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
कुंडलय	३२७
कुंथु	२५४
कुंपल=कलिका	७१, ८७, १८७
कुंभगार=कुम्हार	१०४
कुक्कुर (सं०)=कुत्ता	१३२
कुक्खि	२८०
कुङ्कण (सं०)=कौंकण देश	१२७
कुच्छि=कोख–पेट	६४, २८०
कुच्छी= ,,	९९
कुच्छेअय=तलवार	३२
कुज्ज=‘कुब्ज’ नाम का फूल–शतपत्रिका का फूल	४४
कुज्झ् (धा०)	१५६
कुटुंब (पै०)=कुटुंब	३९
कुट्मल (पालि)=कलिका	७१
कुडी=कुटी–कोठरी	१२८
कुडुंब=कुटुंब–परिवार	३९
कुडुंबि=कुटुंब वाला	२५५
कुडुमल (पालि)=कलिका	७१
कुड्ड=भीत	५८
कुढार=कुठार	३९, १८६
कुळ (पै०)=कुल	४२
कुण् (धा०)	१५९
कुतुक (सं०)=कौतुक	१२७
कुतुंब (पै०)=कुटुंब–परिवार	३९
कुतो=कहाँ से	६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
कुत्तो	२०२
कुदाल (सं०)=कुदाल	१३१
कुदो (शौ०)=कहाँ से	६२
कुद्द् (धा०)	१६६
कुप्प् (धा०)	१४६
कुमर=कुमार, कुंवारा	२०, ४१, ११६
कुमारवर=उत्तम कुमार	२४२
कुमारी	३१६
कुम्पल	१८७
कुम्भार=कुम्हार	६३, १८२
कुल=कुल	४२, २४२
कुलवइ=कुलपति—गुरुकुल का आचार्य	२४०
कुवँर (अप०)=कुमार	४१
कुव्व् (धा०)	२८९
कुसग्गपुर=राजगृह का दूसरा नाम	२२७
कुसल	२१३
कुसुमपयर=फूलों का समूह	८२
कुसुमप्पयर= ,,	८१
कुह (वै०)=कहाँ	१२५
कुह् (धा०)	१५६
कूअ	२५९
कूज् (धा०)	२५९
कूर=ईषत्—थोड़ा	८३
केढव=कैटभ नाम का राक्षस	४५, ५०

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
केणवि=किसी भी प्रकार से	६६
केणावि= ,,	६६
केरिस=कैसा	८५, २२८
केल=केला का फल	८२, ११९
केलास=कैलास	३०
केली=केला का गाछ—पेड़	८२
केवच्चिरं	३९३
केवच्चिरेण	३९३
केवट्ट=मच्छीमार, मछलीमार	६७
केवलं	२८३
केसरि	२६७
केसाकेसी=एक दूसरे के बालों को खींच-खींच कर लड़ना	१०१
केसुअ=पलाश का—केसुड़ा का—फूल वा वृक्ष	२२, ९८
केह (अप०)=कैसा	८५
कोइ	१६५
कोउहल=कुतूहल	२५, २६, ८१
कोउहल्ल= ,,	८१
कोऊहल= ,,	२६
कोकिल=कोयल	२५५
कोच्छेअय=तलवार	३२
कोट्ठागार=कोठार	६८
कोडाकोडि	३८४
कोडि	३८४
कोडुंबिअ	२५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
कोप्पर=हाथ का मध्य भाग		२६
कोव		२८३
कोववर		२४२
कोवि		१६५
कोस		१८७
कोसिअ		२४१
कोसेय		३५६
कोस्टागाल (मा०)=कोठार		६८
कोह		१८३
कोहंड=कोहला–कोहँड़ा		८०
कोहंडी=कोहँड़े की लता		८०, ८१
कोहण्ड=कोहँड़ा		८१
कोहदंसि		२४०
कोहल=कोहँड़ा		८०, २८१
कोहली=कोहँड़े की लता		८०
क्षुधालु (सं०)=भूखा		१३०

ख

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
खअ=क्षय–विनाश		६२
खइअ=जड़ा हुआ		४५
खंति		३१६
खंद=महादेव का पुत्र		५७, ६३
खंध (पालि)		५७, ६३
खंध=भाग		१८७
खंधावार=छावनी, लश्कर का पड़ाव		६३
खंभ=खंभा		७५, ७७
खग्गं=तलवार		६०
खग्ग= ,,		५७, ३२६
खग्गो= ,,		६०
खट्टह=खट्टा+इह=खट्टेह–इधर खटिया		६६
खण=क्षण–समय		६२
खण् (धा०)		२१४, २५६
खण्णु=ठूंठा वृक्ष–पत्ता रहित वृक्ष		८२
खत्तिअ		२१०
खप्पर=खप्पर		४४
खमा=क्षमा–सहन करना		६२
खम्म=(चू० पै०)=गरमी		३८
खय		१८७
खल		२६०
खलु		२०२
खल्लीड=खल्वाट–वह जिसके माथे में केश न हो		२०
खसिअ=जड़ा हुआ		५४
खा (धा०)		१५०
खाद् (धा०)		१५६
खाय् (धा०)		१५६
खार		१८६
खाणु=ठूँठा वृक्ष		७५, ८२, २४१
खिज्ज् (धा०)		१५४
खित्त=फेंका हुआ		८३, २५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ		पृष्ठांक
खिप्पं		२२८
खिप्प् (धा०)		१४६
खिव् (धा०)		१४६
खीण=क्षीण		६२
खीर=क्षीर–दूध		६२, १८८
खील=खीला–खूंट		४४
खीलअ=,,		४४
खु		२१२
खुज्ज=कूबड़ा		४४
खुब्भ् (धा०)		१४६
खुर		१३३
खुल्लक (सं०)=छोटा		१३३
खेडअ=नाश करने वाला		७५
खेडअ=एक प्रकार का विष		५८, ६२
खेडिअ=नाशवंत		७५
खेत्त		१८८, २५७
खेम		२००
खो		२१२
खोड (सं०)=लंगड़ा		१३५
खोडअ=फोड़ा		५८, ६२, ७५
खोर (सं०)=लंगड़ा		१३५
ग		
गअ=गज–हाथी		३३, ९२
गइ=गति		३६
गउ=गाय–गौ		३१, ३१६
गउअ=गाय		३१
गउआ=गो–गाय		९२, ३१४
गउड=गौड देश		३१
गउरव=गौरव–उन्नति		३१
गंगा=गंगा नदी		९२
गंगाहिवइ=समुद्र		९४
गंगोवरि–गंगा+उवरि=गंगा के तीर पर		९६
गंठी=गांठ		९१
गंठ् (धा०)		१६६
गंध=गंध		१८७
गंधउडी='गंधपुटि' नाम की क्रीड़ा–खेल		९१
गंधिअ		२५६
गंभीरिअ=गांभीर्य		७३
गग्ग		२६८
गग्गर=गद्गद होना		४८
गचा		३६८
गच्छ (क्रि०)=(तूं)जा		९५
गच्छ् (धा०)		१४६, १५९
गज्जिअ=गर्जित–गर्जना		३४
गज्ज्		१६७
गड्डह=गधा		७८, २८०
गड्डा=खड्डा–गड्ढा		७७
गढ् (धा०)		३२६
गढिय		२१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
गणधर		२६८
गणवइ		२४०
गणहर		२६८
गणि		२५३
गत्ता		३६८
गद्दह	=गधा	७८, २८०
गन (पै०)	=गण–समूह	४०
गब्भ		२९३
गब्भदंसि		२४०
गब्भिमण	=गर्भित–अंतर्गत	४७
गभीर	=गंभीर	२३
गमण		२२७
गम्भारी	=मधुपर्णिका–शीवण नाम का पेड़	१२८
गय		१८२
गया		३७
गय्यिद (मा०)	=गर्जित–गर्जन	३४
गरभ (सं०)	=गर्भ	१३३
गरिमा	=गौरव	९०
गरिहा	=गर्हा–निन्दा	७४
गरिह् (धा०)		१४०
गरुअ	=गुरु	२४
गरुड	=गरुड	३९
गरुल	=गरुड	३९, १८६, २४२
गल		१८२
गलोई	=गिलोई	२४, २६
गवज (पालि)	=गवय–गो जैसा पशु	४२
गवेस् (धा०)		१८९, २८९
गश्च (क्रि०) (मा०)	='तूं' जा	६५
गह	=ग्रह–मंगल, शनि वगैरह	५९, २६४
गहण		१८७
गहवइ	=सूर्य	८३, २४०
गहिर	=गम्भीर	२३
गहीरिअ	=गांभीर्य	७३
गा		१५०
गाअ	=गो–गाय–गौ	३१
गाई	= ,,	३१, ३१६
गाढ	=गाढ–सघन	३८
गाम		२२७
गामणि		२५५
गारव	=गौरव	३१
गावी	=गो–गाय–गौ	३२
गिंठी	=एक बार बच्चा का प्रसव करने वाली गौ–गाय	८७
गिज्झ् (धा०)		१५६
गिट्ठि	=एक बार बच्चा का प्रसव करने वाली गौ–गाय	८७
गिनि (पालि)		२५३
गिन्दुक(सं. प्रा०)	=गेंद	१८, १२६, १२८
गिम्भ	=ग्रीष्म समय–गरमी का मौसम	७३, १३४
गिम्ह	= ,,	७२, ७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
गिरा		३१५
गिरिं	पर्वत को	९६
गिरितट	पर्वत के समीप का स्थान	३५
गिरितड	,,	३५
गिला (धा०)		१६७
गिलाइ (क्रि०)	ग्लान होता है	७३
गिलाण	ग्लान-चिंता से उदास	७३
गिहि		२५३
गीअ		१८७
गीत		१८७
गुंछ	गुच्छा-पुष्प का गुच्छा	८७
गुंफ	गूंथना	९८
गुज्झ	गुह्य-गुप्त	६७
गुज्झं		३७०
गुत्त	गुप्त-सुरक्षित	५७, १८७, ३२८
गुन (पै०)	गुण-संतोष वगैरह गुण	४०
गुरु		२५५
गुरुअ	गुरु	२४
गुरुकुल		२११
गुरुवी	भारी-वजनदार	७४
गेंदुअ	गेंद	१८
गेज्झ	ग्राह्य-ग्रहण करने योग्य	२१
गेज्झं	,,	३७०
गेण्ह (धा०)		१५९
गेन्दुअ	गेंद-दडा	४४
गेन्दुक (सं०)		१८, ४४, १२६
गोट्ठी		३२७
गोतम		२२६
गोयम		२२६
गोयमो		९३
गोरी		३२८
गोलोची	गिलोई	२६
गोव		१९०
गोवई	गोपति-साँढ	४०
गोवा	गोपा-गोपाल	१९०
घ		
घट्ठ		२५७
घड	घड़ा	३९, १८६
घडइ (क्रि०)	गढ़ता है	३९
घड् (धा०)		१८३
घम्म (पै० तथा प्रा०)	घाम-गरमी	३८
घय		२४३
घर	घर	८३, ८४, २०१, २४२
घरचोल	घरचोला नाम का वस्त्र जो सौराष्ट्र में प्रसिद्ध हैं	८४
घरणी	स्त्री	८४
घरवइ		२४०
घरसामी	घर का स्वामी	८३
घाण		१८८
घिणा		३२८
घेत्तव्व		३७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
घोडअ	२८०
घोस=घोष–आवाज	४३
च	
च=और	५६, १०६
चइत्त=चैत्र मास	३०
चइत्त=चैत्य–धर्मवीर और कर्मवीर की चिता पर बना स्मारक	५८
चइत्ता	३६८
चउ	३७६
चउआला	३८१
चउग्गुण=चौगुना	८२
चउचत्तालिसा	३८१
चउट्ठ=चौथा	७७
चउणवइ	३८३
चउत्तीसा	३८१
चउत्थ=चौथा	७७, ८१, २४३, २८२
चउत्थी	१०३
चउद्दस=चौदह	८२, ३८०
चउद्दह	३८०
चउपण्णासा	३८२
चउरंस	२६४
चउरासीइ	३८३
चउवीसा	३८०
चउव्वट्टय	२६३
चउव्वार=चार बार–चार दफे	८२
चउसट्ठि	३८२

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
चउसत्तरि	३८३
चंचु	३१६
चंड	२५७
चंडालिय	२२७
चंद, चंद्र =चंदा	६१, ६२, ६८, १७५
चंदण	१८१
चंदिआ	३१५
चंद्रिका	३१५
चक्क=चक्र–गाड़ी का पहिया	५६
चक्कवट्टि	२६७
चक्काअ=चक्रवाक पक्षी	६३
चक्खु	२४१
चच्चर (चू० पै०)=जर्जर–जीर्ण	३५
चच्चर=चौक	३५, ६४
चड् (धा०)	३२६
चतुरंत=चार अंत–चार छोर	१२०
चतुत्थ	२४३
चत्तारि सयाइं	३८४
चत्तारि सहस्साइं	३८४
चत्ताला	३८१
चत्तालिसा	३८१
चन्द (सं०)=चंद्र	६२, १३५
चन्दिमा=चंद्रिका	४४, ३१५
चन्दिर (सं०)	१३५
चमर=चामर	२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक	शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
चम्म		१८२, ३२७	चिण् (धा०)		१५८, २६६
चम्मार		१८३	चिण्ह=चिह्न		७६
चयइ (क्रि०)		६४	चिण्हिअ=चिह्नित–चिह्न युक्त		७६
चय् (धा०)		१५८, २१४, ३२५	चित्त=चित्र		२६२
चर् (धा०)		२१४	चित्तमाणंदिय=चित्त आनन्दित		६८
चलण=पैर–पाउ–पग		५२	चिन्ता=चिंता–चिंतन		३१३
चलन (सं०)= ,,		१३०	चिन्ध=चिह्न		७६
चल् (धा०)		१५८	चिन्धिअ=चिह्नित		७६
चविडा=चपेटा–थप्पड़–चप्पत		४५	चिरं		२४४
चविला= ,,		४५	चिलाअ=किरात–भील–आदिवासी		४४
चव् (धा०)		३२४	चिहुर=केश–बाल		४४
चाइ		२५४	चीमूत (चू० पै)=मेघ		३५, ३६
चाई=त्यागी		६४	चीवंदण=चैत्यवंदन		३०
चाउँडा=चामुंडा देवी		५१	चुअइ (क्रि०)=चूता है		५७
चाउरंत=चारअंत–चार छोर		१२०	चुक्क् (धा०)=चुकना–भूलना		३२५
चाय=त्याग		६४	चुच्छ=तुच्छ		४६
चारित्त		१८८	चेअ=निश्चय सूचक		८१
चारु		२५५	चेइअ=चैत्य		५८, ८६, २११
चास (सं०)		१३१	चेइयवंदण=चैत्यवंदन		३०
चिअ=निश्चय सूचक		८१	चेच्चा		३६८
चिइच्छ (धा०)		१५०	चेण्ह		२६३
चिइच्छइ (क्रि०)		६५	चेत=चित्त		११०
चित् (धा०)		२५६	चेत्त=चैत्र मास		३०
चिंध=चिह्न		७६	चेल		२५७
चिंधिअ=चिह्नित–चिह्न-युक्त		७६	चैत्र=चैत्य		११६, १३२, १३४
चिच्चा		३६८	चोआला		३८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
चोआलिसा		३८१
चोग्गुग		८२
चोणवइ		३८३
चोत्तीसा		३८१
चोत्थ=चौथा		८२
चोद्दस		८२, ९३, ३८०
चोप्पड् (धा०)		३२६
चोरासीइ		३८३
चोरिअ=चोरी करना		९१
चोरिआ=	,,	९१
चोवण्णा		३८२
चोवीसा		३८०
चोव्वार=चार बार		८२
चोसट्ठि		३८२
चोसत्तरि		३८३
च्चिअ=निश्चय सूचक		८१
च्चेअ=	,,	८१

छ

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
छ=संख्या विशेष		५४, ३७९
छइअ=छादित-स्थगित-ढंका हुआ		७६
छचत्तालिसा		३८१
छच्छर (चू० पै०)=जर्जर=जीर्ण		३८
छज्ज् (धा०)		१५८
छगल=बकरा		८५
छगलय= ,,		२२५
छट्ठ		५४, ५७, २८२, ३२८
छट्ठी=षष्ठी विभक्ति		१०३
छड्डइ (क्रि०)		७८
छड्डि=वमन		७८
छण=उत्सव		६४
छणपअ		२६६
छणपय		२६६
छण्णवइ		३८३
छण्मुह=षण्मुख-महादेव का पुत्र		६७
छत्त=छत्र-छत्री		२८६, २११
छत्तिवण्णो=सप्तपर्ण-छतिवनका वृक्ष		५४
छत्तीसा		३८°
छप्पअ=भ्रमर		५४, ५७, ३२६
छप्पय		३२६
छप्पण्णा		३८२
छप्पण्णासा		३८२
छमा=पृथ्वी		६४, ८६
छमी=शमी का पेड़		५३
छय=क्षत-घाव		६४
छव्वीसा		३८०
छसत्तरि		३८३
छाअ		३२४
छाय		३२४
छाया=छाया-वृक्ष की छाया		५२
छायाला		३८१
छार=क्षार		६४, १८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
छाल=बकरा	४५
छाली=बकरी	४५
छाव=बच्चा	५३
छासट्ठि	३८२
छासीइ	३८३
छाहिल्ल	२६४
छाही=वृक्ष की छाया	५२
छिद् (धा०)	१५८, १६६, २८६
छिक्क=छुआ हुआ	८३
छिद्दय=छिद्र—छींडी—छेद	८३
छिरा=नस	५४
छिहा=स्पृहा	७६
छिहावंत=स्पृहा वाला	७६
छीअ=छींक	२५, ६४, १८८
छीर=क्षीर	१८८
छुच्छ=तुच्छ	४६
छुत्त=छुआ हुआ	८३
छुरी=छुरी	१३३
छुहा=भूख	८३, ३१३
छुहा=सुधा—चूना	५४
छूढ=क्षिप्त—फेंका हुआ	८२, ८३
छेअ	२६३
छेत्त=क्षेत्र	१८८
छोल्ल् (धा०)	३२४

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
ज	
ज=जो	१६६
जइमा—जइ+इमा=जो यह	६५
जइस(अप०)=जैसा	८५
जइहं—जइ+अहं=जो मैं	६५
जउ	२४१
जउँणा=यमुना नदी	५१
जउणाणयण=यमुना का आनयन	६४
जं=जो, कारण यह है कि	६७, २५८
जंति=यत्+इति=जो इस प्रकार	६६
जंपि=यद्+अपि=जो भी	१६५
जंप् (धा०)	३२४
जंबु	२५४
जक्ख=यक्ष	६३
जग्ग् (धा०)	१६६
जज्ज=जय्य—जितने योग्य—जय पाने योग्य	६६
जज्जर=जर्जर—जीर्ण	३५
जडिल=जटा वाला	४५
जडालु= ,,	२६४
जढर=जठर	५२
जणवअ=जनपद—देश	३४
जण्हु=जह्नु नाम का क्षत्रिय	७०, २५३
जत्थ=यत्र—जहाँ—जिधर	६५, १६३
जदत्थि=यद्+अस्ति—यदस्ति=जो है	६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
जन्तु		२४०
जन्न=यज्ञ		४१, ३७०
जम=यम—नरक में दंड देने वाला—यम		४१
जमन (सं०)		१३०
जम्पति=दंपती		१२८
जम्भा (धा०)		३२६
जम्म=जन्म		७२, २०६
जम्म् (धा०)		१६७
जया		३५६
जय्		१८६
जर		२५५
जल=जड़		१२८, १८७
जवा=जपा का फूल—अड़हुल का फूल		१२६
जव् (धा०)		१४६
जह=यथा—जैसा		२०, ४१, १२०, २०२
जहा=जैसा		२०, ४१, ४२, ६६, १२०, १८३, २०२
जहिट्ठिल=युधिष्ठिर		२२
जहुट्ठिल= ,,		२२, २४, ५२
जहामिसि—यथा+ऋषि=ऋषियों की योग्यतानुसार		६८
जहासत्ति=यथाशक्ति—शक्ति के अनुसार		१०१
जहासुतं=जैसा सुना वैसा		१८६

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
जहिं=जहाँ—जिधर		१६३, २६४
जा=जब तक		५५, १५०, २४४
जाइ (क्रि०)=जाता है		४१, ४२
जाइअंध=जन्म से अंधा		६३
जागर् (धा०)		१८३, २४४
जाण् (धा०)		४२, ६०, २०२, २६६
जाणइ (क्रि०)=वह जानता है		३०
जाणय		२०६
जाणु		२४१
जात=जाना हुआ		६०
जातव्व=जानने योग्य		६०
जाति=ज्ञाति		६०
जातु=राक्षस		१३०
जातुधान=,,		१३०
जानि=यानि—जो जो वस्तु		१३०
जामाउअ		३२६
जाय		१८३
जायतेय		२१०
जायेस=जाया+ईस=जायेस—पति		६६
जाय् (धा०)		२४४
जारिस=जैसा		८५
जाव=जब तक		५५, ११३, २४४
जावणा=ज्ञापना—विदित करना		६१
जाव्		३२४
जिइंदिय		२१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
जिण		१७५
जिण् (धा०)		१५८
जिण्ण	जीर्ण—जीर्ण हुआ	२४
जिण्हु	जितने का स्वभाव वाला	६६
जिब्भा	जीभ	७२, ११५, ३१४
जिम (अप०)	जैसा	४१
जिवँ (अप)	,,	४१
जिवइ (क्रि०)	जीता है—जीवन धारण करता है	२४
जीअ	जीवित—जीवन	५५
जीआ	ज्या—धनुष की डोरी	८७
जीमूअ	मेघ	३५, ३६
जीव		२००
जीवइ (क्रि०)	जीता है—जीवन धारण करता है	२४
जीवण		२५७
जीवाजीव	जीव और अजीव	१०२
जीवाउ		२५४
जीविअ	जीवन	५५
जीह् (धा०)		३२५
जीहा	जीभ	२२, ७२, ३१४
जुइ	द्युति	६५
जुउच्छ (धा०)		१५०
जुग	जुआ—धुंसरी—धुरी	१८८
जुगुच्छ (धा०)		२२८
जुगुच्छइ (क्रि०)	जुगुप्सा करता है—घृणा करता है	६५
जुगुच्छा	जुगुप्सा—घृणा	६५
जुग्ग	जोड़ी	५८, ७२, १८७, २६६
जुंज् (धा०)		२५८
जुज्झ		२११
जुज्झ् (धा०)		१५६
जुण्ण	जीर्ण—जुना—पुराना	२४
जुति	द्युति—प्रकाश	११४
जुत्तं इणं	युक्त यह	८७
जुत्तति	जुत्तं+इति=युक्त इस प्रकार	६६
जुत्तं णिमं (शौ०)	युक्त यह	८७
जुत्ति		३१५
जुद्ध		२१०
जुन्न		२०१
जुम्म	जोड़ी	७२, १८७, २६६
जुर् (धा०)		२१३
जुवई		३१५
जुव्वण	यौवन—जवानी	८१
जुव्वणमप्फुण्ण	यौवनम्+आपूर्ण=भरा हुआ यौवन	६६
जेट्ठ		२८०
जेमे	जे+इमे=ये इमे=जो ये	६५
जेम् (धा०)		१४०
जेय	ज्ञेय—जानने योग्य	६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
जेह (अप०)=जैसा	८५
जोअ=द्योत-प्रकाश	६६
जोइअ	२:९
जोइसिअ	२५६
जोगि	२६७
जोण्हा=ज्योत्स्ना-चंद्र की चंद्रिका	६९
जोत् (धा०)=प्रकाश करना	१५४
जोव्वण=यौवन-जवानी	२८१

झ

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
झज्झर=झन्झर-घड़ा, झंझर	३८
झडिल=जटावाला	४५
झलरी (सं०)=झालर	१३२
झषोदर=मछली के समान चमकीले पेटवाला	१०१
झा (धा०)	१५०
झाण=ध्यान	६७
झाम् (धा०)	३२४
झायइ (क्रि०)=ध्यान करता है	६७
झिज्जइ (क्रि०)=क्षय पाता है	६७
झीण=क्षीण-क्षय पाया हुआ	६७
झुणि=ध्वनि-शब्द	१८, २८०

ट

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
टगर=तगर का सुगंधी काष्ठ	४६
टमरुक (चू० पै०)= डमरु	३८
टसर=एक प्रकार का सूत	४६
टूवर=दाढी-मूँछ न हो वैसा	४६

ठ

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
ठंभ=स्तंभ-थंभा	७७
ठंभइ (क्रि०)=वह स्तब्ध होता है-गति रहित है	७७
ठंभिज्जइ (क्रि०) = गति रहित होना	७७
ठंभ् (धा०)=गति न करना-खड़ा रहना	७७
ठक्का (चू० पै०)=ढक्का-डंका-नगाड़ा	७७, ७८
ठड्ढ=ठाढ़ा-खड़ा	२९४
ठड्ढ=ठाढा-खड़ा	५८, ७०
ठा (धा०)	१५०
ठीण=जमा हुआ घी	२०, ७७

ड

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
डंड=दंड-डंडा	४८, ११८
डंभ=दंभ-कपट	४८, ११८
डंस् (धा०)=डँसना	४८
डक्क=डँसा हुआ	७५
डज्झमाण	२६९
डट्ठ=डसा हुआ	४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
डड्ढ=जला हुआ	४८
डब्भ=डाभ–दर्भ	४८
डमरुअ=डमरू–शिवजी का डमरू	३८
डमरुक (पै०)= ,,	३८
डर=भय–डर	४८
डस् (धा०)	२४४, २७०
डह् (धा०)=जलना	४८, १५८, २०२

ढ

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
ढक्का (पै०)=डंका–नगाड़ा	३८
ढोल्ला (अप०)=धव–पति	१७

ण

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
णं=उपमासूचक अव्यय	१२५
णई=नदी	४०
णंगल=हल	५३
णंगूल=पुंछ	५३
ण=निषेध	१८६
ण=वह	१९६
णगर	१८१
णच्चा=जान करके	६४
णडाल=ललाट	१८, ८८, २८१
णम् (धा०)	२०२
णयर	१८१
णर=नर–पुरुष	४०
णलाड=ललाट	५३, ८८
णवइ	३८३
णवणवइ	३८४
णवर	२९४
णवीण	२२८
णाइ=ज्ञाति	६०
णाण=ज्ञान	६०, ६८
णाणा	२९४
णाणिज्ज=जानने योग्य	६१
णाणिअ= ,,	६०
णात=जाना हुआ	६०
णातपुत्त	२२५
णातव्व=जानने योग्य	६०
णाति=ज्ञाति	६०
णाय=जाना हुआ	६०
णायव्व=जानने योग्य	६०
णायसुय	२२५
णावणा=ज्ञापन करना	६१
णाहल=विशेष जाति का म्लेच्छ	५३
णि	१६४
णिच्चं	१८४
णिडाल=ललाट	१८
णिपडइ (क्रि०)	१६४
णिलाड=ललाट	५३
णी (धा०)	१५०
णु=नीचे	२२
णुमण्ण / णुमन्न }=निषण्ण–बैठा हुआ	८३
णे (धा०)	१५०, २२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
णेइ (क्रि०)=ले जाता है	४०
णेडु	२५७
णेय=जानने योग्य	६१
ण्हाअ=न्हाया हुआ	६६, ७०
ण्हारु=स्नायु–शरीर के स्नायु	५१
ण्हाविअ=नापित–स्नापित–स्नान कराने वाला–हजाम	४६, २४२
ण्हुसा=पुत्रवधू	७०, ८७, ३१३

त

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
तअ	२०६
तइअ=तीसरा	५१
तइज्ज=तीसरा	५१, २८२
तइय= ,,	२८२
तईया=तीसरी	१०३
तओ=ततः–बाद से–तब से	३४, ६२
तं=तत्–वह	६७
तंतु=तंतु–सूत	२६७
तंब=तांबा	७०, ११६, २८१
तंबोल=तांबूल–तंबोल–पान	२५६
तंबोलिअ=तंबोली–तमोली–तंबोल–पान बेचने वाला	२५६
तंस=त्रांसा–तिन कोण वाला	८१, ८७, २६४
त	१६६
तगर=तगर का सुगंधी काष्ठ	४६
तच्च=तथ्य–सच्चा	७६
तच्छु= ,,	७६
तच्छ (धा०)	२१४
तटाक (चू० पै०)=तलाव	३८
तड्ड (सं०)=त्रस्त–त्रास पाया हुआ	८३
तडाक (सं०)=तलाव	१२८
तडाग (पै०)= ,,	३८
तडाय= ,,	३८
तण=तृण–घास	२४३
तणुवी=पतली–कृश	७४, ११७, ३१६
तण्हा	३१३
ततो=ततः–तब से–बाद से	६२
तत्तो	१८६, २१२
तत्थ=तहां	८३, १६३
तदो (शौ०)=ततः–तब से	३४, ६२
तदो तदो (शौ०)=ततः ततः	६२
तप (सं०)=तप–तपश्चर्या	१२७
तप्पुरिस=तत्पुरुष–समास	१०२
तम=अंधेरा	३२, ११३, १२७
तम्ब=तांबा	८०
तम्बा (सं०)=गउ–गौ–गाय	१२६
तम्मंसहर–तम्मि+अंसहर=उसमें भाग लेने वाला	६५
तया	३५७
तरणि=सूरज	८६
तरणी= ,,	८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
तरु		२४१
तरुणी		३१६
तर् (धा०)		१५८
तलाय	तलाव	३६, १८३
तलुन (सं०)	तरुण–जवान	१३०
तव	तप–तपश्चर्या	२१०
तव	स्तवन–स्तुति	४, ७०, ३२७
तवइ (क्रि०)		४०
तवस्सि	तपस्वी	२६७, ३५
तविअ	तपा हुआ	८६
तविष (सं०)	स्वर्ग	१३५
तव् (धा०)		१४६
तस		२१०
तस्सि		१६३
तह	तथा–तीस प्रकार	२०, ४१, १२०
तहत्ति	,,	६६
तहा	,,	२०, ४१
तहि		२८३
तहिं		१६३, २८३, २६४
ता	तावत्–तब तक	५५, २४३
ताड् (धा०)		२४४
ताण		२०१
तामोतर (चू० पै०)		३५
तायध (शौ०)	रक्षा करो	११४
तारिस	तैसा	८५
तालक (सं०)	ताड़न करने वाला	१२८
तालवेण्ट	पंखा	७८
तालु		२८१
ताल् (धा०)		२४४
ताव	ताप	४०, २००
ताव	तब तक	५५, ११३, २४३
ताव् (धा०)		२५६, ३२४
ताविष (सं)	स्वर्ग	१३५
ताहि		१६७
ति		२१२, ३७८
तिक्ख	तीक्ष्ण	७०, ७५
तिक्खिण (पालि)		७०, ७१
तिग्ग	तेज–तीक्ष्ण	७२, २६६
तिच्चत्तालिसा		३८१
तिण्ण		२०३
तिण्णि सयाइं		३८४
तिण्णि सहस्साइं		३८४
तिण्ह	तीना–तीक्ष्ण	७०, ७५, २६४
तित्तिर	तित्तिर पक्षी	२१
तित्तिरि	,,	२१
तित्तीसा		३८१
तित्थ	तीर्थ–नदी का घाट	२४, ८१, ११६
तित्थकाग	तीर्थ में कौवा जैसा	१०१
तित्थगर	तीर्थंकर	४४
तित्थयर	,,	३७, ४४
तिदसीस	इन्द्र	६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
तिदसेस=इन्द्र	६५
तिपण्णासा	३८२
तिप्प् (धा०)	२१३
तिम (अप०) तैसा–तथा	४१
तिम्म=तीक्ष्ण	७२, २६६
तिरिच्छ=तिर्यक्–तीरछा	८३
तिरिंच्छ= ,,	६५
तिरिया (पालि०)=,,	८४
तिरिया= ,,	८३
तिरिश्चि (मा०)=,,	६५
तिल	२५५, २६३
तिवँ (अप०) तैसा	४१
तिसय	३८४
तिसत्तरि	३८२
तिसा	३१३
त्ति	२१२
तीसा	८३, ६७, ३८१
तु	२७०
तुच्छ	२६६
तुण्हिक=मौन रखने वाला	८१
तुण्हिक्क= ,,	८१
तुब्भित्थ=तुब्भ+इत्थ=तुम इधर	६५
तुम्ह=तुम	५१, १६६
तुम्हकेर=तुम्हारा	५१
तुम्हारिस=तुम्हारे जैसा	५१
तुरंगम=घोड़ा	२८१
तुरिय् (धा०)	१४०
तुवर् (धा०)	३२६
तूण=बाणों को रखने का थैला–भाथा, तरकश	२६
तूप (सं०)=स्तूप–थूभ–स्मारक–स्तंभ	१३२
तूवर=दाढी मूँछ न हो वैसा	४६
तूर (सं०)	१३२
तूर=तूर्य–बाजा	८०
तूर् (धा०)	२६६
तूह=तीर्थ–नदी का घाट	२४, ८१
तेआला	३८१
तेआलिसा	३८१
तेओ=तेज	८६
तेणवइ	३८३
तेत्तीसा	८२, ३८१
तेरस	३८०
तेरह	४८, ८२, ३८०
तेरासीइ	३८३
तेल	२५६
तेलिअ	२५६
तेल्ल	८१, २८१
तेवण्णा	३८२
तेवीसा	८३, ३८०
तेसट्ठि	३८२
तेसीइ	३८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
तोण=बाणों को रखने का थैला– भाथा, तरकश	२६
तोल् (धा०)	१६७

थ

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
थइअ=ढका हुआ	७६
थंभ=थंभा	७०, ७५,
थद्ध=स्तब्ध	५८, ७०
थव=स्तुति	७०
थाणु=महादेव	७५
थावर	२१०
थी=स्त्री	८४
थीण=कठिन–जमा हुआ	२०, ७०, ७७
थुई	२१५
थुई=स्तुति	७०
थुण् (धा०)	१६६
थुल्ल=स्थूल–मोटा	८२
थुवअ=स्तुति करने वाला	२०
थूण=चोर	२९
थूणा=खूँटी, खंभा	२६
थूल=स्थूल–मोटा	५२, ८१
थूलि (चू० पै०)=धूलि–धूल	३८
थेण=चोर	२९
थेर=वयोवृद्ध	८३, ९३, २९८
थेरिअ=स्थिरता	७४
थेव=थोड़ा	८४
थोअ=थोड़ा	७०, ८४
थोक= ,,	८४
थोक्क= ,,	८४
थोणा=खूँटी, खंभा	२६
थोत्त=स्तोत्र	७०
थोर=स्थूल–मोटा	५२, ५३
थो[illegible]=थोड़ा	८४

द

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
दइव=दैव–अदृष्ट–नसीब, भाग्य	८१
दइवज्ज=दैव को जानने वाला	९१
दइवण्णु= ,,	९१
दइव्व=दैव–अदृष्ट–नसीब	३०, ८१
दंड=डंडा	४८
दंडादंडी=परस्पर डंडा द्वारा किया हुआ युद्ध	१०१
दंत	२१३
दंद=द्वन्द्व–समास का एक भेद	१०२
दंभ=दंभ–कपट	४८
दंसण=दर्शन–देखना	४७, ८७
दक्खव् (धा०)	३२५
दक्खिण=दक्ष	१७, ८१, १९९
दग (सं०)=पानी	१२८
दच्चा=देकर	९४
दट्ठ=डंसा हुआ	४८, ६८, ७५
दट्ठव्वं	३७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक	शब्द अर्थ	पृष्ठांक
दड्ढ=जला हुआ	७८	दहीसर=मलाई	६४
दळह (पालि)=दृढ	११६	दह् (धा०)	४८, २०२
दणु=राक्षस–दानव	५५	दा	१५०
दणुअ=राक्षस–दावन	५५	दाडिम=अनार	२६३
दणुअवह=दानव का वध	५५	दाघ=दाह–जलना	११५
दणुवह= ,,	५५	दाढा=दाढ	८३
दण्ड	२५६	दाढिका=,,	१३२, १३४
दद्दु	३१६	दाण	२११
दन्त	१८२	दाणि=अभी–संप्रति	८३, ६७
दब्भ=दर्भ–डाभ	४८	दाणि= ,,	६७
दरिअ=दर्पयुक्त–छका हुआ	२६	दामोअर=दामोदर=कृष्ण	५
दरिसण=दर्शन–देखना	७४, ८७	दार=दार–द्वार–दरवाजा	२१, ६०,८७
दलिद्द=दरिद्र–आलसी	५२	दारु	२८१
दव=प्रवाही–रस वाला पदार्थ	६१	दाशी (सं०)=दासी	१३१
दस=दस–संख्या विशेष	५४, ३८०	दाह=दाह–जलना	११५
दसबल=बुद्ध भगवान्	४५	दाहिण=दक्षिण–दक्ष	१७, ८१
दसम	२८२	दाहिण=दाँया, दक्षिण तरफ	१६६
दस लक्ख	३८४	दिअ=हाथी	६०
दसार=वासुदेव	८०	दिअर=देवर=पतिका छोटा भाई	२६
दह=पानी का कुण्ड–झील	६१	दिअह=दिवस	५४
दह=दस संख्या	५४, ३८०	दिग्घ=दीर्घ–लंबा	५६–८१
दहण	२८१	दिग्घाउ=लंबी आयुवाला	२५५
दहर (सं०)=छोटा–दभ्र	१३३	दिट्ठंति=दिट्ठ+इति–देखा हुआ	६६
दह लक्ख	३८४	दिट्ठिआ=मंगल वा हर्ष का सूचक	८६, ११७
दह सहस्स	३८४		
दहि	२४१	दिट्ठि=दृष्टि–नजर	६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
दिण	२८१
दिणयर	२००
दिणेस=सूर्य	६६
दिण्ण=दिना–दिया हुआ	१८, ७८
दित्ति	३१५
दिप्प् (धा०)	१४६
दियड्ढ=डेढ़–१॥ संख्या	२८२
दिवड्ढ= ,,	२८२
दिवस=दिवस	५४
दिवह=दिह–दिवस	५४
दिविदिवि (अप०)=रोजरोज–नित्य	१२५
दिव्व् (धा०)	१५४
दिसट (पै०)=देखा हुआ	६८
दिसा=दिशा	८३, ३१३
दिहि=धैर्य–धृति	८४, ३१५
दीवतेल्ल	२८१
दीवेल्ल	२८१
दीव् (धा०)	१४६
दीह=दीर्घ–लंबा	८१
दीहा (अप०)=दीर्घ	१७
दु=दो–२ संख्या	२२, १६३, ३१७
दुअल्ल=दुकूल–कपडा	२५
दुआइ=द्विजाति–ब्राह्मण	६०
दुआर=दार–द्वार–दरवाजा	८७
दुइअ=दूसरा	२२
दुइज्ज=दूसरा	२८२
दुइय= ,,	२३, २८२
दुउण=द्विगुण–दुगुना	२२
दुऊल=कपडा	२५
दुक्कड=दुष्कृत–पाप	४७
दुक्कय= ,,	४७
दुक्काल	२२६
दुक्ख	८१, १८८
दुक्खदंसि	२४०
दुक्खिअ=दुःखी	५६, ८१
दुगुल्ल=कपड़ा	४४
दुग्गंधि	२५५
दुग्गच्छइ	१६३
दुग्गाएवी=दुर्गा देवी	५५
दुग्गादेवी= ,,	५५
दुग्गावी= ,,	५५, ११७
दुचत्तालिसा	३८१
दुट्ठ	२२८
दुण्णि	११४
दुद्ध=दूध	५७, २२७, ३२७
दुपण्णासा	३८२
दुप्पूरिय	२१३
दुम=वृक्ष	६१, २०६
दुरइक्कम=नहीं टाला जा सके ऐसा	६६
दुरणुचर	२१२
दुरतिक्कम	२१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
दुलि (सं०)=कछुआ	१२८
दुल्लह	२८८
दुवार=द्वार–दरवाजा	८७, २८१
दुवारिअ=द्वारपाल	३२
दुवालस	३८०
दुवे	१४४
दुसय	३८४
दुस्सह=असह्य–कष्ट से सह्य	५६
दुस्सिस्स	२६८
दुस्सीस	२६८
दुह=दुःख	८१
दुहअ=दुर्भग–अभागा	४५
दुहा=दो प्रकार	२३
दुहि	२५५
दुहिअ=दुःखी	८१
दुहिआ=लड़की	८३
दू	१६३
दूहव=असुन्दर–कमनसीब	४५
दूहवो= ,,	१६३
देउल=देवालय	५५
देक्ख् (धा०)	१४०
देर=द्वार–दरवाजा	२१, ८७
देवउल=देवालय	५५
देवज्ञ=दैवज्ञ–भाग्य ज्ञाता	६१
देवण्णु= ,,	६१
देवत	३८३

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
देवत्थुइ=देव की स्तुति	८२
देवथुइ= ,,	८२
देवदाणवगंधव्वा=देव, दानव और गंधर्व	१०२
देवर=देवर–पति का छोटा भाई	१८०
देविंद	२२६
देव्व=दैव–भाग्य	३०
देस	२२५
दो	१४४
दोगच्चं	१६३
दोण्णि	१४४
दोवयण=द्विवचन	२३
दोस (पालि)=द्वेष	२६, १८३
दोसिअ=दोशी–कपड़ा बेचनेवाला–बजाज	२५६
दोहल=दोहद–गर्भिणी स्त्री की अभिलाषा	४६
दोहा=द्विधा–दो प्रकार	२३
द्रगड (सं०)=नौबत–शहनाई के साथ नगाड़ा बजाना	१२८
द्रमिड (सं०)=द्रविड़ देश	१३०
द्रह=झील–पानी का कुंड	८८

ध

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
धअ=ध्वज–झंडा	५८
धंक (पालि)=कौआ–ढंक	६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
धट्ठज्जुण=राजा द्रुपद के पुत्र का नाम	५८
धण	२०१
धणंजय=अर्जुन	६६
धणि	२८०, ३५३
धणु=धनुष	८४, २०१
धणुक्खंड=धनुष का भाग	६३
धणुह=धनुष	८४
धत्ती=धात्री-धाई माता	३२८
धत्थ=ध्वस्त-ध्वंस पाया हुआ	५८
धनञ्जय (मा० तथा प्रा०) अर्जुन	६६
धनुस्खंड (मा०)=धनुष का भाग	६३
धन्न	१८२
धम्मजाण	२६६
धय	२३६
धरिस् (धा०)	१३८, १४०
धा (धा०)	१५०, १५७
धाई=धाई माता-बच्चोंको दूध पिलाने वाली माता	५६, ३१६
धाती= ,,	५६, ८०
धाम (सं०)=घर	१२७
धामो= ,,	८६
धाय् (धा०)	१५७
धारी=धाई माता	५७, ८०
धाव् (धा०)	१५७
धिइ	३१५
धिज्ज=धैर्य	८०
धिट्ठ=धृष्ट-बेशरम	२७
धीप् (धा०)=दीपना-प्रकाशना	४८
धीर=धैर्य	३०, ८०
धीरत्त	२११
धुत्त=धूर्त	६७
धुत्तिमा=धूर्तता	६०
धुवं	२१२
धूआ=लड़की	८३, ३१४
धूलि (पै० तथा प्रा०)	३८, ३१५

न

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
न	१८४
नइगाम=नदी और गाँव अथवा नदी के पास का गाँव	८२
नइग्गाम	८२
नई=नदी	४०, ६२
नउण=न पुनः-फिर नहीं	१६
नउणा=न पुनः ,,	१६
न उणाइ=न पुनः ,,	१६
नकर (चू० पै०)=नगर	३५
नक्ख=नख	८१
नगर=नगर-शहर	३५, १८१
नग्ग=नंगा	५८, २८१, ३२८
नच्चा	३६८
नच्चाण	३६८
नच्च् (धा०)	१५६, २२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
नज्झति (क्रि०)	=बाँधता है	६७
नज्झ् (धा०)		१५६
नट्टई	=नर्तकी–नाचनेवाली	६७
नड	=नट	३९, १८६
नणंदा	=ननद–पति की बहन	३०३, ३१४
नत्ता		३६८
नत्तिअ		३२७
नत्तुअ		३२७
नत्थिअ		३५७
नमि		२५४
नमिराय		२१०
नमोक्कार	=नमस्कार	१९
नम् (धा०)		१५८, २०२
नयण	=नयन–आंख	३७, १७५, १८०
नयर	=नगर	३३, ३५, ३७, १८१
नरवइ		२४०
नरीसर	=नरेश्वर–राजा	६५
नरेसर	= ,,	६५
नल (मा०)	=पुरुष	४२
नलाट		५३
नव		३७९
नवइ		३८३
नवफलिका	=एक लता	८३
नवम		२८२
नवासीइ		३८३
नवीण		२२८
नव् (धा०)		१५८
नस्स् (धा०)		१५९
नह	=नख–नाखून	८१
नह	=नभ–आकाश	२१०
नांगल (पालि०)	=हल	५३
नाग (पै० तथा प्रा०)	=नाग लोक	३५
नाण		१८१, २२७
नातपुत्त		२२५
नाध (शौ०)	=नाथ–स्वामी	३७, ११४
नाय	=नाक–नाग लोक	३५
नाय		२५८
नायपुत्त		२२५
नारी		३१६
नाली		१२८
नावा	=नौका	३२, ३१४
नाविअ	=नाविक–नाव चलाने वाला	४९
नाविअ	=नापित–हजाम	२४२
नास		२१०
नास् (धा०)		१५९
नाह	=नाथ–स्वामी	३७
नाहिअ		३१७
नि	=निरन्तर अथवा रहित	२२, १६३, १६४
निंद् (धा०)		१५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
निंब=नीम का वृक्ष	४६
निकस=कसौटी का पत्थर	४३
निक्ख=निष्क–सुवर्ण मुद्रा	६३
निक्खार् (धा०)	३२६
निक्खाल् (धा०)	३२६
निच्चं	१८४
निचल=निश्चल	५७, ३२८
निच्चिन्त=निश्चित	६५
निच्छर (चू० पै०)=निर्झर–पानी की झरना	३८
निच्छिहह=निस्पृह–स्पृहा रहित–अनासक्त	७६
निज्झर=झरन–पानी का झरना	२३, ३८
निज्झरइ	१६३
निट्ठुर=निष्ठुर–क्रूर	५३, ५७
निट्ठुल= ,,	५३
निण्ण=छोटा अथवा नीचा स्थान	६६
निद्ध=स्नेह युक्त	८२
निद्धणो	१६३
निद्धुण (धा०)	२६०
निधातवे=स्थापित करने के लिए	१२१
निन्द् (धा०)	१५८
निपडइ (क्रि०)	१६४
निप्पज्ज् (धा०)	१५४
निप्पह=निस्पृह	५७, ११३
निप्पह=प्रभा रहित–निस्तेज	७१
निप्पाव=वल्ल–वाल नाम का अनाज	७१
निप्पिह=निस्पृह	७१, ७६
निप्पुसण=पोंछना–मार्जन करना	७१
निप्फल=निष्फल–व्यर्थ	६३
निप्फाव=वल्ल-वाल नाम का अनाज	७१
निप्फेस=पीसना	७१
निमंत् (धा०)	२४४
नियोचित (चू० पै०)=नियोजित	३६
नियोजिअ= ,,	३६
निरट्ठय	२१२
निरंतरं	१६२
निरन्तर=सतत	६६
निरिक्खइ (क्रि०)	१६३
निर्	१६३
निल्लज्जिमा=निर्लज्जता–बेशरमाई	६०
निव	१७५, ३२६
निवाण	२६२
निश्चिन्द (शौ०)=निश्चित	६८
निसढ=इस नाम का पर्वत	४६
निसरइ (क्रि०)	५६
निसा	३१३
निसाअर=चंद्र	२०
निसाअर=राक्षस	६४
निसिअर=चंद्र	२०

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
निसिअर=राक्षस	६४
निसीढ=मध्य रात्री	४८
निसीह= ,,	४८
निस्फल (मा०)=निष्फल—व्यर्थ	६३
निस्सरइ (क्रि०)	२२, ५६
निस्सह=मन्द	५६
निहस=कसौटी का पत्थर	४४
निहाय	३६८
निहिअ=निहित—स्थापित	८१
निहित्त= ,,	८१
निही=निधि—भंडार	६१
निहे (क्रि०)	२६८
नी	१६३
नीचअ=नीचा	२६
नीड=पक्षी का घोंसला	२४
नीप=कदंब का पेड़	५०
नीम= ,,	५०
नीमी=घाघरे की नाड़ी, नीबी	५३
नीव=कदंब का पेड़	५०
नीवी=घाघरे की नाड़ी	५३
नीसरइ	२२, १६३
नीसासूसास = निश्वास और उच्छ्वास	६५
नीसेस=बाकी नहीं—सब	४३
नीहर् (धा०)	३२५
नूउर=पायल—स्त्री के पाँव का एक आभरण—गहना	२६
नूणं=निश्चित	६७
नूण= ,,	६७
ने (धा०)	२२६, २६२
नेअ	२६२
नेइ (क्रि०)	४०
नेउर=पायल—स्त्री के पाँव का आभूषण	२६
नेच्छुति—न+इच्छुति=वह नहीं चाहता है	६६
नेड=पक्षी का घोंसला	२४
नेड्ड= ,,	८१, २५७
नेति (क्रि०)=वह ले जाता है	११६
नेह=स्नेह	५७, ८६, ३१७
नेहालु	२६४
नो	१८६
नोणीअ=मक्खन	८३
नोमालिआ=वसंती-नेवारी-लता	८३
नोहलिआ=विशेष लता	८२

प

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
प	१६२
पइ=पति	६२, २४०
पइण्णा=प्रतिज्ञा	३४
पईव=प्रदीप—दिया	४०
पउअ	३८४
पउग	११६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
पउट्ठ=हाथ का पहुँचा–कलाई और केहुनी के बीच का भाग		४४
पउत		३८४
पउम=पद्म–कमल		८७
पउर=प्रचुर–अधिक		३१
पंक=पंक–कादव, कादो		६८
पंगुरण=प्रावरण–वस्त्र		८२
पंच		३७६
पंचणवइ		३८३
पंचम		२८२
पंचमी=पांचवीं		१०३
पंचावण्णा		३८२
पंचासीइ		३८३
पंजर		२४२
पंजल=सरल		६६
पंडिअ		१८८
पंत		२६६
पंति		३१५
पंथ=पंथ–रास्ता		६८, १२६
पंथव (चू० पै०)=बांधव–भाई		३५, ३८
पंसु=परशु–फरसा–फरसी		८७
पंसु=धूल		६८
पक्क=पका हुआ		१८, ५८
पक्ख		२४२
पक्खंदे=गिरे–प्रवेश करे		६३
पक्खलइ (क्रि०)=वह स्खलित होता है		६४
पक्खाल् (धा०)		२८३, ३२५
पक्खि		२४१
पङ्क=पंक–कादव		६८
पगरक्ख		२५६
पच्चं=पकाने योग्य		३७१
पच्चप्पिण् (धा०)		२६६
पच्चय-विश्वास		६४
पच्चूस=प्रातःकाल		५४
पच्चूह= ,,		५४, ६४
पच्छ=पथ्य		६५, २२८
पच्छा=पीछे		६५, २२८
पच्छिम=पश्चिम–अंतिम		६५
पजान (पालि)=विशेष ज्ञान		६१
पज्जंत=पर्यंत		८०
पज्जत्त=पूरा		६६
पज्जर् (धा०)		३२४
पज्जा=प्रज्ञा–बुद्धि		६१
पज्जुण्ण=प्रद्युम्न–कृष्ण का पुत्र		६६, २२६
पज्झीण=प्रक्षीण–विशेष क्षीण		६७
पञ्जर		१८७
पञ्जल (मा०)=सरल–निष्कपट		६६
पञ्जा (मा० तथा पै०)=प्रज्ञा–बुद्धि		६६

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
पटि (पालि)=प्रति–प्रति	४७
पटिमा (चू० पै०)=प्रतिमा–सादृश्य	६८
पट्ट=पट्टा	६८
पट्टण=शहर–पाटण	७७, १३४
पट्टोल=दोनों तरफ समान छाप वाला वस्त्र	२५७
पट्ठव् (धा)	३२५
पट्ठि=पीठ	२७
डंसुआ=प्रतिध्वनि–पडछुँदा	८७
पडह	१८६
पडाया=पताका–छोटी धजा	४७
पडायाण=घोड़े का साज	५२
पडि=प्रति	४७, १६४
पडिकूलं=प्रतिकूल	१६४
पडिकूल	२७०
पडिणी (धा०)	२९६
पडिप्फद्धए क्रि०)=स्पर्धा करता है	७२
पडिप्फद्धा=प्रतिस्पर्धा	७१
पडिप्फद्धी= ,,	७१
पडिबुज्झ् (धा०)	३६८
पडिभासए (क्रि०)	१६४
पडिमा=प्रतिमा	३८, ४७, १६४
पपडिवज्ज् (धा०)	२८३
पडिवत्ति=प्रतिपत्ति–सेवा	४७
पडिवया=प्रतिपदा–पडवा तिथि–प्रथम तिथि–परिवा	४७
पडिहार=प्रतिहार–द्वारपाल	४७
पडु=पटु–चतुर	३९
पडुप्पन्न	२०१
पड् (धा०)	१४०
पढइ (क्रि०)=पठता है	३९
पढम=पहिला	४८, २८२
पढ् (धा०)	१८९, २२९
पणचत्तालिसा	३८१
पणतीसा	३८१
पणपण्णा	३८२
पणपण्णासा	३८२
पणयाला	३८१
पणवीसा	३८०
पणस=फणस–कटहल	४९
पणसट्ठि	३८२
पणसत्तरि	३८३
पणसीइ	३८३
पणाम् (धा०)	३२५
पण्डित=पंडित	१८८
पण्णवइ	३८३
पण्णरस	३८०
पण्णरह	७८, ३८०
पण्णसत्तरि	३८३
पण्णा=प्रज्ञा–बुद्धि	६१, ६८, ६९, ३१३
पण्णासा	७८, ३८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
पण्ह	प्रश्न	६६, २२६
पण्हा	प्रश्न	६६
पण्हुअ	स्त्री के स्तन से झरा हुआ दूध	६६, २२६
पण्हो	प्रश्न	६१
पति		१६४
पतिठाइ (क्रि०)		१६४
पतिमा (पै०)	प्रतिमा	३८
पतिमुक्क (पालि)	प्रतिमुक्त–मुक्त	७१
पतु (पै०)	पटु–चतुर	३६
पत् (धा०)		१४०
पत्त	पाया हुआ	२६३
पत्थर	पत्थर	७०
पद्		१८८
पदिण्णा (शौ०)	प्रतिज्ञा	३४
पन्नत्त		२६६
पन्नव् (धा०)		३२४
पप्पर (चू० पै०)	बर्बर–जंगली	३५
पमत्त		२०१
पमत्थ् (धा०)		२०२
पमय		२१३
पमाद		२०६
पमाय		२६०
पमुच्च् (धा०)		२७१
पम्भ	पक्ष्म पांपण–आँख के बाल	७३
पम्भल	सुन्दर पक्ष्म वाला	७३
पम्ह	पक्ष्म, आँख की बरौनी	७२, ७३
पम्ह	,,	२५७
पम्हपड	महीन वस्त्र	२५७
पम्हल	सुन्दर पक्ष्म वाला	७२, ७३
पय		८८, २११
पयय	प्राकृत	२०
पयय् (धा०)		२१४
पयल्ल् (धा०)		२१५
पया	प्रजा	३७
पयाइ	पदाति–पैदल सेना	८४
पयुअ		३८४
परा		१६२
परि		१६४, १६५
परिअट्ट् (धा०)		२०२
परिआल् (धा०)		३२५
परिक्कम् (धा०)		१८३
परिखा	खाई	४६
परिघ	एक आयुध	५२, ५३
परिच्चज्ज		३६८
परिच्चय् (धा०)		२१४
परिट्ठा (धा०)		१६४
परिणिव्वा (धा०)		३२४
परितप्प् (धा०)		२१३
परिदान (सं०)		१२६
परिदेव् (धा०)		२८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
परिन्नाय	३६८
परिवड्ढव्व (पालि)	७७
परिवुडो	१६५
परिव्वय् (धा०)	२८३
परिषत् (सं०)	१३३
परिसु=कुल्हाड़–कुठार	८७
परिसोसिअ	२४३
परिसोसिय	२४३
परिहर् (धा०)	२१४
परुस=कठोर	४६
परोप्पर=परस्पर	१६, ७१, ८८
परोह=अंकुर	१७
पलक्ख=पिप्पल वृक्ष	८६
पलि	१६५
पलिअ=श्वेत केश	४७
पलिघ=परिघ	५३
पलिघो= ,,	१६५
पलिल=श्वेत केश	४७
पलीव=प्रदीप	४६
पल्लट्ट=उलटा पलटा	७०, ७७, ८०
पल्लत्थ= ,,	७०, ८०
पल्लत्थिका=पलथी	८०
पल्लाण=घोड़े का साज	५२, ८०, २६३
पल्हाअ=प्रह्लाद	७३, २२६
पल्हाद= ,,	२२६
पवट्ठ=प्रकोष्ठ–हाथ का पहुँचा	४४
पवयण=प्रवचन	१७
पवय् (धा०)	२४४
पवस् (धा०)	२५६
पवहण	२२७
पवासि	२६७
पव्वय	२१०
पसत्थ=प्रशस्त	७०
पस्स् (धा०)	२८६
पसु	२६८
पस्खलदि (मा० क्रि०)=स्खलित होता है	६४
पस्ट (मा०)=पट्ट–पट्टा	६८
पह=पंथ–मार्ग	२१
पहार्	२२६
पहु	२६७
पहुडि=प्रभृति–वगैरह	४७
पा (धा०)	१५०, २६२
पाअ	२६२
पाइक्क=पदाति–पैदल सेना	८१
पाउरण=प्रावरण–कपड़ा	८३
पाउस=पावस–वर्षा ऋतु	८४, ३२७
पाउसो= ,,	८६
पाऊण	२८२
पाओण=पौना–०।।।, $\frac{3}{4}$	६६
पाट् (धा०)	४५
पाडलिपुत्त	२२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
पाड्डिवआ		३१४
पाडिवया		३१४
पाढ		१८६
पाण		१८७, २६२
पाणि		२५४, २६२
पाणिअ	=पानी	२३
पाणीअ	= ,,	२३, २२७
पाणीय	= ,,	२२७
पाति (सं०)	=पति–स्वामी	१२६
पाय		१७५, २१०, २८२
पायत्ताण		२५७
पायय	=प्राकृत	२०, २६३
पायवडण	=पाय लागन	५५
पायवीढ	=पादपीठ–पावीठा	५५
पआर	=प्रचार अथवा प्रकार	५४
पायाल	=पाताल	३७
पार	=प्राकार–किला	५४, ११७
पारअ	=ओढ़ने का कपड़ा	५५
पारक्क	=दूसरे का	१२०
पारद्धि	=पारधी–शिकारी	५०
पारावअ	=परेवा पक्षी, कबूतर	२१
पारावत	= ,,	१२६
पारेवअ	= ,,	२१
पारोह	=अंकुर	१७
पालक (चू० पै०)	=बालक	३५, ३६
पाव	=पाप	३४, ४०, २१०
पावग		२१०
पावडण	=पाय लागन	५५
पावयण	=प्रवचन	१७
पावरण	=कपड़ा, वस्त्र	८३
पावारअ	=ओढ़ने का कपड़ा	५१
पावासु	=प्रवासी	२५४
पावीढ	=पावीठा–पैर रखने का	५५
पाव् (धा०)		२५६
पास		१८२, २००, २०२
पासग		२४३
पासाण		५४
पासाय		२००
पासु	=धूल	६८
पाहाण	=पाषाण	५४
पाहुड	=भेंट–उपहार, पाहुर	४७
पि		१६५
पिआउय		२०१
पिआमह		३५७
पिउ	=पिता	२८
पिउ (अप०)	=प्रिय	६१
पिउच्छा	=फूआ–पिता की बहिन	८४, ३१४
पिउसिआ	=पिता की बहिन, फूआ	८४
पिओत्ति	=पिओ+इति	६१
पिक्क	=पका हुआ	१८, ५८
पिच्छ	=पक्ष अथवा पींछी	१३३, १३४, १८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
पिच्छिल	चिकना	६५
पिच्छी	पृथ्वी	५५, ३१७
पिज्ज् (धा०)		१३४
पिट्ट् (धा०)		२१३
पिट्ठं	पीठ	६१
पिट्ठओ	पीछे से	६१
पिट्ठि	पीठ	२७
पिट्ठी	पीठ	६१
पिठर	थाली	४६
पिढर	,,	४६, ५२
पितुच्छा	पिता की बहिन—बूआ	८४
पित्त		१८१
पिधं	जुदा—अलग	४८
पिब् (धा०)		१८२
पिय	प्रिय	६१,२०१, २१३
पियाल	रायण का वृक्ष	१३२
पिलुट्ठ	जला हुआ	७३
पिलोस	जलना	७३
पिश्चिल (मा०)	चिकना	६५
पिसाअ	पिशाच	४५
पिसाई	पिशाची	४५
पिसाजी	,,	४५
पिसल्ल	पिशाच	४५
पिसुण् (धा०)		३२४
पिहं	जुदा जुदा—अलग	४८, ६७
हड	थाली	४६, ५२
पिहा	स्पृहा	११३
पिहाय		३६८
पिहेइ (क्रि०)		१६५
पीअल	पीला	४७
पीड् (धा०)		२५९
पीणया		३५७
पीथी (सं०)	घोड़ा	१२९
पीलु		२५४
पील् (धा०)		२५९
पीवल	पीला	४७
पुंछ	पूंछ, दुम	८७
पुंनाम	नागकेसर का वृक्ष	४५
पुक्कस	मनुष्य की एक पिछड़ी हुई जाति	१३५
पुङ्ख	बाण का पुंख	१३३
पुच्छ (सं० तथा प्रा०)	पूंछ	८७, १३४, १८२, २६९
पुच्छइ (क्रि०)		६५
पुच्छा		३१३
पुच्छ् (धा०)		१४०, २२९
पुज्ज् (धा०)		१५६
पुञ्ञ (मा० पै०)	पुण्य	६९
पुञ्ञकम्म (मा० पै०)	पुण्य कर्म	६९
पुञ्ञाह (मा० पै०)	पुण्य दिवस	६९
पुट्ठ	पुष्ट	६८
पुट्ठ	पुछा हुआ	१८८
पुट्ठय	पूठा अथवा पीठ	३२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
पुढवी=पृथ्वी	४८
पुढवीआउ=पृथ्वी और पानी	६३
पुण=फिर–पुनः	१७, १९
पुणरवि= ,,	१९
पुणा= ,,	१७, १९
पुणाइ= ,,	३९
पुणो= ,,	१८९
पुण्ण् (धा०)	१६६
पुण्ण=पुण्य	६९, २६९
पुण्णकम्म=पुण्य कर्म	६९
पुण्णपावाइं=पुण्य और पाप	१०२
पुण्णाह=पुण्य दिवस	६९
पुत्कस (सं०)=मनुष्य की पिछड़ी हुई जाति	१३५
पुथुवी=पृथ्वी	७४
पुप्फ=पुष्प–फूल	७१, २११
पुरतो=आगे	६२
पुरदो (शौ०)	६२
पुरव=पूर्व दिशा	८४
पुरा	३१५
पुराअण	२२८
पुराण	२२८
पुराकम्म=पहिले होनेवाला कार्य	२१
पुरिम=पूर्व में हुआ–पूर्व का	८४
पुरिम= ,,	१९९
पुरिय् (धा०)	१४०
पुरिशय (सं०)=पुरुष	२५
पुरिस= ,,	२५, ४३, १७५
पुरिसो	९६
पुरिसो त्ति=पुरुष इति	९६
पुरेकम्म=पहिले होने वाला कार्य	२१
पुलअ (धा०)	३२५
पुलआअ (धा०)	३२५
पुलिश (मा०)=पुरुष	४३
पुलिष (सं०)= ,,	१३०
पुलोअ (धा०)	३२५
पुव्व=पूर्व	८४, १९९
पुव्वण्ह=दिवस का पूर्व भाग	७०, २२६
पुश्चदि (क्रि० मा०)=वह पूछता है	६५
पुहई=पृथ्वी	२८
पुहवी= ,,	४८, ३१७
पुहवीस=पृथ्वी का स्वामी	९४
पुहवीसि=पृथ्वी का ऋषि	९४
पुहुवी=पृथ्वी अथवा विस्तार युक्त	७४
पूअ (धा०)	२४४
पूगफल=सुपारी	८३
पूज् (धा०)	२४४
पूतर=पानी में रहनेवाला 'पूरा' नाम का सूक्ष्म जंतु	८३
पूर् (धा०)	१४०
पेआ=पीने योग्य	५१
पेऊस=पीयूष–ताजा दूध	२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
पगब्भ् (धा०)	२७०
पेच्छ् (धा०)	३२६
पेज्जा=पीने योग्य	५१
पेटक (सं०)=समूह	१२६
पेडा=पेटी–संदूक	१२८
पेम्म=प्रेम–स्नेह	८१
पेया=पीने योग्य	५१
पेयूष=ताजा दूध	२४, १२७
पेरन्त=पर्यंत–वहाँ तक	८०
पोअ	२९३
पोक्खर=कमल अथवा पानी	६३, १८७
पोक्खरिणी=बनाया हुआ छोटा तालाब	६३
पोट्टिय	२८०
पोप्फल=पूंगीफल–सुपारी	८३
पोम्म=पद्म–कमल	१९, ८७
पोर=पानी में रहनेवाला 'पूरा' नामक छोटा जन्तु	८३
पोस=पूस का महीना	४३
प्रत्त (सं०)=दिया हुआ	५५, १३३
प्रवङ्ग, प्लवङ्ग (सं०)=बंदर	१३४
प्रामर (सं०)=संस्कारहीन–बर्बर	१३४
प्रिउ (अप०)=प्रिय	६१

फ

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
फंद् (धा०)=स्पंदन करना–हिलना	७१
फंदए (क्रि०)=वह हिलता है	७१
फंदण=स्पंदन–हिलना	७१, २७०
फक्कवती (चू० पै०)=भगवती	३८
फणस=पनस–कटहल या कटहल का पेड़	४९
फद्धए (क्रि०)=वह स्पर्धा करता है	७१
फद्धा=स्पर्धा	७१
फनस=पनस–कटहल	४९
फरुस=कठोर	४९
फलं	९६
फल	१२६, १८१
फलिह=स्फटिक रत्न	४४, ४५
फलिह=लोहे की कील लगी हुई लाठी	५२
फलिहा=खुदी हुई खाई	४९
फल् (धा०)	२५९
फाडेइ (क्रि०)=पाटता है–फाड़ता है	४५, ४९
फाडेऊण=पाट करके–फाड़ करके	४९
फाड् (धा०)=पाटना–फाड़ना	४९
फालेइ (धा०)=पाटता है–फाड़ता है	४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
फास=स्पर्श		८२, १८६
फासे हियासए–फासे+अहियासए=	अच्छे-बुरे स्पर्शों को सहन करता है	६५
फुट्ट (धा०)		२७०
ब		
बंधव=भाई–स्वजन		३५, ३८, २००
बंधु=	,,	६८, २१४
बभचेर=ब्रह्मचर्य–सदाचार		७२, ८०, २१०
बंभण=ब्राह्मण		७३, २००
बंभयारि=ब्रह्मचारी		२५४
बज्झ=बाह्य–बाहर का		१८३
बज्झइ(क्रि०)=बांधा जाता है		६७
बज्झओ		१८६
बट्टर=मूर्ख विद्यार्थी		५२
बदर=बेर का फल वा वृक्ष		८३
बत्तीसा		३८१
बद्ध		२०१
बप्फ=बाफ–गरमी अथवा भाफ		८१
बब्बर=बर्बर–संस्कारहीन		२५
बम्भण=ब्राह्मण		८०
बम्ह=ब्रह्म–परमात्मा		७२
बम्हचरिअ=ब्रह्मचर्य		७३
बम्हचेर=	,,	७२, ८०, २११
बम्हण=ब्राह्मण		७२, ७३, ८०, २०७
बरिह=मोर के पीछ–पंख–पाँख		७४
बलिश=मछली को फंसाने का	काँटा	१२८
बली=बलि–नैवेद्य		६१
बहप्फइ=बृहस्पति–बीफे		२७, २८, ८०
बहस्सइ=	,, ,,	८०, ८४
बहिआ		१८६
बहिणी=बहिन		८४, ३१७
बहिणीवइ		२८०
बहिद्धा		२६४
बहिया		१८६
बहु		२५५
बहुअट्ठिय=अधिक हड्डी युक्त		६३
बहुत्त=बहुत		५०, ८१
बहुवी=बहुत–(नारी जाति में	प्रयुक्त)	७४
बहुव्वीहि=बहुव्रीहि नाम का समास		१०२
बहूअवगूड=बहू से आलिंगित		६३
बहूदग=बहुत पानी वाला		६४
बहूपमा=बहू की उपमा		६४
बहूसास=बहू का उच्छ्वास		६५
बहेडअ=बहेड़ा		२४, ४७
बाणवइ		३८३
बाताम (सं०)		१२६
बार=द्वार		६०, १३०, २८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
बारस	३८०
बारह=गणनात्मक–संख्या विशेष	४८, ३८०
बालअ=बालक	३५
बालिश (सं०)=मूर्ख	१२८
बालो वरज्झइ=बालक अपराध करता है	९५
बावण्णा	३८२
बावत्तरि	३८२
बावीसा	३८०
बासट्ठि	३८२
बासत्तरि	३८२
बासीइ	३८३
बाह=आंसू	८१
बाहा	३१४
बाहिं=बाहर	८४
बाहिरं= ,,	८४
बाहु	२४१
बाह् (धा०)	१५६
बिइअ=दूसरा	२२, ६२
बिइज्ज=बीजा–दूसरा	५१, २८२
बिइय= ,,	२८२
बिईय= ,,	५९
बिईया=दूसरी	१०३
बिउण=द्विगुण–दुगुना	२२, ५६
बिंदु=बिंदु–बिंदी	२४०
बिन्दु=बिंदी	९०
बिब्भल=विह्वल–व्याकुल	७२, ११५
बिभीतक (सं०)=बहेड़ा का फल या वृक्ष	४७
बिलाल (सं०)=बिलाव–बिल्ली	१२८
बिसट्ठि	३८२
बिसिनी=कमल की लता	५०
बिहत्तरि	३८२
बिहप्फइ=बृहस्पति–बीफे	२७, ७२
बीअ=बीज	२४७
बीअ=दूसरा	९३
बीलिअ	२२८
बीह् (धा०)	१५८
बुंध=वृक्ष के नीचे का भाग–थड	८७
बुज्झा	३६८
बुद्ध	१७५, २०१, २४३
बुह	१७५
बुहप्पइ=बृहस्पति	७१, ७२
बुहप्फइ= ,,	२८, ६४, ७२
बुहस्पदि (मा०)= ,,	६४
बू	१५०
बेआला	३८१
बेआलिसा	३८१
बेइल्ल=बेल की लता–मोगरे की लता	८१, ८३
बेलगाँव=वेणुग्राम–जहाँ बाँस अधिक होते हैं वह गाँव	४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
बेसायाइं	३८४
बेसहस्साइं	३८४
बोक्कड	२९३
बोधि (वै०)=तू जान	१२२
बोर=बेर का फल वा वृक्ष	८३
बोल्ल्	१४६
बोहि=तू जान	१२२
बोह् (धा०)	१५६

भ

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
भइणी=बहिन—भगिनी	८४
भुंज् (धा०)	२७०
भक्ल् (धा०)	१८३
भगवई=भगवती	३५, ३८
भगवती= ,,	३५, ३८
भग्नी (सं० =बहिन	१३२
भज्जा=भार्या—स्त्री	६६, ७४, ३७१
भज्ज् (धा०)	२७०
भट्टारिया=भट्टारिका	६८
भट्टिणी= ,,	६८
भड=सुभट—योद्धा	३९, १८६
भणिअ=कहा हुआ—पढ़ा हुआ	१७
भणिता= ,,	१७
भण् (धा०)	१८९, २२९
भद्द=भद्र—अच्छा	६१
भन्द्र (सं०)= ,,	१३३
भप्प=भस्म	७९
भम् (धा०)	१६६
भमर=भौंरा	४१, ५०, ५२, २०९
भम्म् (धा०)	१६६
भय	१८२
भएय (क्रि०)=वह आह्वान करता है	७२
भयस्सई=बृहस्पति	८४
भरय=भरत राजा	४७
भरह= ,,	४७
भवँर (अप०)=भौंरा	४१
भविअ=भव्य	८६
भव्व=भव्य	८६
भव्वं	३७१
भसल (प्रा० तथा सं०)=भौंरा	५०, ५२
भस्टिणी (मा०)=भट्टिनी	६८
भस्स=भस्म	७९
भा (धा०)	२९०
भाउ=भाई=भैया	२८
भागिनी=स्त्री	४५
भाण=भाजन—भाँड़ा	५५, १८२
भाण=आह्वान	७२
भाणु	२४०
भामिणी=स्त्री	४५
भायण=भाजन, बरतन	५५, १८२
भार	१७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
भारय		२९२
भारवह		१७५
भारहर		२०९
भारहवास		२२७
भारिआ=भार्या–स्त्री		७४
भारिया= ,,		७४
भाल		२८१
भास् (धा०)		२१३
भिउडि=भृकुटि–आँख के ऊपर का भाग		२५
भिंग		३२६
भिद्		१६६
भिक्ख		३५७
भिक्खु		२४१, २५३
भिच्चो		३७१
भिण्डिवाल=एक प्रकार का शस्त्र		७८
भिप्फ=भीष्म		७९
भिब्भल=विह्वल–व्याकुल		५३, ७२
भिसअ=वैद्य		३६
भिसक्क(पालि)		३६
भिसिणी=कमल की बेल–नाल		५०
भीरु=डरपोक		५२
भु=भ्रू–आँख के ऊपर के कपाल का भाग, भौंह		२६
भुक्खा=खाया हुआ		३१३
भुत्त=भुक्त–भोगा हुआ		५६, ३२८
भूअ		२००
भूमि		३१५
भूमिवइ		२४०
भूवइ		२४०
भेड=भेड		५२
भेर= ,,		५२
भोइ		२४०
भोगि		२४०
भोच्चा=भोग करके अथवा भोजन करके		६४, ३६८
भोत्तव्वं		३७१
भोयण		२०१

म

मअ		२२६, २४२
मइ		३१५
मइल=मलिन–मैला		८४
मईय		३५६
मउड=मुकुट		२४
मउण=मौन–चुप रहना		३१
मउत्तण=मार्दव=कोमलता		२७
मंगल		१८२
मंजार=बिलाव=बिल्ली		८७, २२६
मंटल(चू० पै०)=मंडल–समूह		३८
मंडल= ,,		३८
मंडुक्क=मेंढक		८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
मंति		२६७
मंतिअ	=मंत्रणा किया हुआ	३४
मंतिद (शौ०)	= ,,	३४
मंतु	=अपराध	७६, २५४
मंस	=मांस	६७, ११६, १८२
मंसल	=पुष्ट	६७
मंसु	=दाढ़ी-मूँछ	८७
मकुल	=कलिका	२४
मक्खरी	=दंडी—एक प्रकार का संन्यासी	६४
मक्खिआ	=माखी—मक्खी	६२, ३१४
मच्चा		३६८
मच्चु		२४०
मच्चुमुह		२६६
मच्छ (सं०)	= मच्छी	१३४
मच्छर	=मत्सर=मात्सर्य	६५
मच्छिआ	=माखी—माँछी—मक्खी	३१४
मच्छेर	=मात्सर्य	८०
मग्ग		१७५, २६८
मग्गतो	=पीछे	६२
मग्गु		३२६
मज्ज	=मद्य	६६
मज्जाया	=मर्यादा	६६
मज्जार	=बिलाव=बिल्ली	८४, ८७
मज्ज्-(धा०)		१५४
मज्झण्ण	=मध्याह्न—दुपहर	७८
मज्झण्ह	= ,,	७८
मज्झिम	=मध्यम—बीच का	१८
मज्झे		२५८
मञ्जर	=बिलाव—बिल्ली	८४
मट्टिआ	=मिट्टी	७७
मट्टिया	= ,,	३१४
मट्ठ		२५७
मड	=मरा हुआ	४७, २१२
मडअ	= ,,	४७
मड्डिअ	=मर्दन किया हुआ	७८
मढ	=मठ—संन्यासी का निवास	३६, १८२
मणंसिणी	=बुद्धिमती	८७
मणंसिला	=एक प्रकार का धातु	८७
मणंसि		३५७
मणंसि	=बुद्धिमान्	८७
मणयं		२१८
मणसिला	=एक प्रकार का धातु—मनसिल	८७
मणहर	=मनोहर	३१
मणा		२५८
मणासिला	=एक प्रकार का धातु—मनसिल	८७
मणिआर		२५६
मणूस	=मनुष्य	१२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
मणोज्ज=सुन्दर	६१
मणोण्ण= ,,	६१
मणोसिला=एक प्रकार का धातु	८७
मणोहर=मनोहर—सुन्दर	३१
मतन (चू० तथा चू० पै०)=मदन—कामदेव	३५
मत्ता	३६८
मत्थय=मस्तक—माथा—सिर	१८०
मत्स (सं०)=मछली—मच्छी	१३२
मथुर (चू० पै०)=मधुर	३८
मथ् (धा०)	३३०
मधुर—मधुर	३८
मधुरा (सं०)	१२६
मनोरथ (सं०)=मन का अर्थ—मन का विचार	१३३
मन्तु=अपराध	७६
मन्नु= ,,	७६
मन्न् (धा०)	२५८
मम्मण=ममणना—गुनगुनाना	७२
मयंक=चन्द्र	२७, २२६
मयगल=मदभर हाथी	४४
मय=मरा हुआ	४७, २१३
मयण=मदन—कामदेव	३३, ३५
मयरकेउ= ,,	३३
मयूर=मोर	२७७
मय्य (मा०)=मद्य	६६
मर् (धा०)	३२५
मरगय=मरकत नामक रत्न	४४
मरण	२६६
मरहट्ठ=महाराष्ट्र देश	१६, ८८, १२१, २८०
मरहट्ठीय	२८०
मरिस् (धा०)	१४०
मल् (धा०)	३२५
मलिण=मलिन—मैला	८०
मलीर	२५६
मसाण	५७, ८४, ३२७
मसान (पाली)	८४
मसी (सं०)	१३१
मस्कली=दंड रखने वाला	६४
मस्सु = दाढी-मूँछ	८७
मस्सु (पाली)= ,,	५७
मह (सं०)=तेज	१२७
महग्घ	२२७
महग्घिय	२२७
महन्त = मोटा—बड़ा	६८
महन्द (शौ०)= ,,	६८
महप्पसाय	२४२
महब्भय	२००, २११, २६९
महातवस्सि	२६७
महादोस	२१०
महाभय	२११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
महाविज्जालय		२२७
महावीर		१७५
महासड्ढि		२६७
महासव		२४२
महिड्ढिय		२२७
महिमा	महिमा–गौरव	६०
महिवाल	राजा	४०
महु		२४१
महुअ	महुआ का पेड़ अथवा महुआ	२६
महुर	मधुर	३८
महूअ	महुअ का पेड़ अथवा महुआ	२६
महेसि		२५४
मा		२२६
माअरा		३१४
माआ		३१४
माइ		३१५
माइसिआ	मौसी–माता की बहिन	२७
माउ		३१६
माउक्क	मृदुत्व–मार्दव	२७, ७५
माउच्छा	मौसी	८४, ३१४
माउत्तण	मृदुत्व–मार्दव	७५
माउलिंग	बीजौरा का फल वा गाछ	४७
माउसिआ	मौसी	२७, ८४, ३१४
मांस	मांस	६७, ११६
मायरा		३१४
मायामह		३५७
मार		२४२, २६८
माराभिसंकि		२६७
मालिअ		२५६
मास		२४२
मासल	पुष्ट–मोटा	६७
माहण		२००
माहुलिंग	बीजौरा का फल वा गाछ	४७
मिइंग		३२६
मिउ		२५५
मिउवी	कोमल–मृदु–मृद्वी	७४
मिच्चु	मृत्यु–मीच	२४०
मिच्छा	असत्य–मिथ्या	६५
मित्त		१८८
मित्तत्तण		२४३
मित्ती		३१७
मिदुवी	कोमल–मृद्वी	७४
मियंक	चन्द्रमा	२७
मिरा	मर्यादा	२२
मिरिअ	मिर्चा	१८
मिला (धा०)		१६७
मिलाइ (क्रि०)	मुरझाता है–कुम्हलाता है	७३

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
मिलाण=कुम्हलाया हुआ–मुरझाया हुआ		७३
मिलिच्छ		२२५
मिहिलानयर		२५७
मुइंग		३२६
मुंच्		१६६
मुंढ=मूर्धा–मस्तक–सिर		८७
मुंढा=	"	७८
मुकुतिक (सं०)=मौक्तिक–मोती		१३५
मुक्क=मुक्त–मुका हुआ–छुटा हुआ		७५
मुक्क=मूक–मूंगा–गूंगा		८१
मुक्ख=मूर्ख		८७
मुग्गर=मोगरे का फूल		५७
मुग्ग=मूंग नाम का धान्य		५७
मुट्ठि=मूठी		६८
मुणि		२६६
मुणियर (मुणि+इयर)=मुनि से जुदा मनुष्य		६४
मुण् (धा०)=जानना–मानना		३२४
मुत्त=मुक्त–छुटा हुआ		५६, ७५, ३२८
मुत्ताहल=मोती		४१
मुत्ति=मूर्ति–प्रतिबिंब		६७
मुद्धा=माथा		७८, ८७
मुध्ध=मुग्ध–मोह युक्त		५७, ३२८
मुरुक्ख=मूर्ख		८७
मुषल (सं०)=मुसल		१३५
मुसं		२१२
मुसल=मूसल		२५
मुसा=असत्य		२८, २१२
मुसान (पालि)–श्मशान		८४
मुह=मुख–वदन		३७, १८१
मुहल=वाचाल–बकनेवाला		५२
मुहल=मुसल		५२
मुहुत्त		६७, २१०
मुहेर (सं०)=मूर्ख		१२६
मूअ=गूंगा		८१, २८०
मूढ		१८८
मूसअ		२२६
मूसय		२२६
मूसा=असत्य–मृषा		२८, २१२
मेख (चू० पै०)=मेघ		३८
मेघ (पै०)=मेघ		३८, ३०२
मेघ=मेघ		३७
मेढि=आधाररूप		४८
मेत्त=मात्र–केवल		२१
मेथि आधाररूप		४८
मेरा=मर्यादा		२२
मेलव् (धा०)		३२४
मेह=मेघ		३७, ३८, १७५
मेहा		३१२
मेहावि		२५६
मोक्ख		१८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
मोचिअ		२५५
मोत्तव्वं		३७१
मोत्तिय		२६३
मोर	(सं०)=मोर-मयूर	१३४
मोर		२२७
मोसा	=असत्य	२८, २१२
मोह	=किरण	८३
मोह	=मोह- मूढता	१८६
मोहणदास		२२६

य

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
य≍क	(मा०)=यक्ष	६३
यणवद	(मा०)=देश	३४
यधा	(मा०)	४२, ६६
यमनी	(सं०)=यवनी स्त्री	१३०
याण	(मा०)=यान-वाहन	४२
याणदि	(शौ० क्रि०)=वह जानता है	३४
यादि	(मा०)=वह जाता है	४२
योत्र	(सं०)=बैल को गाड़ी या हल में जोड़ाने के लिए जुए में पड़ी रस्सी आदि का बंधन-जोता-(गु०) जोतर	१३१

र

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
रइ	=प्रेम	६२, ३१५
रंभा	=रंभा-एक अप्सरा का नाम	३८
रक्ख्	(धा०)	१८३, २४४
रक्खस	=राक्षस	८३
रग्ग	=रंगा हुआ	७५
रच्छा		३१५
रज्ज		२११
रट्ठधम्म		२२६
रण्ण	=अरण्य	१६
रण्णवास		२४२
रतन	=रत्न	८६
रत्त	=रंगा हुआ	७५, २८४
रत्ति	=रात्रि	५६, ३१५
रफस	(चू० पै०)=वेग	३८
रभस	= ,,	३८
रम्	(धा०)	२०२
रम्फा	(चू० पै०)=रंभा-अप्सरा	३८
रम्भा	= ,,	३८
रय		२११
रयण	=रत्न	८६
रयणी		३१६
रयणीअर		६४
रयय		१८७, २५७
रस		२०६
रसायल		३३, १८७
रसाल		२६४
रसालु		२६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
रस्ना (सं०)=रसना–जीभ	१३२
रस्सि	५८, २८०, ३२६
रस्सी=रश्मि–किरण	६१
रहस=वेग	३८
राई	३१६
राउल=राजकुल	५५, ११७
राग	१८३
राचा (चू० पै)=राजा	३५
राजपथ (शौ०)=राजमार्ग	३७
राजपह= ,,	३७
राजातन (सं०)=राजादन, खिन्नी या खिरनी का पेड़ अथवा फल	१२६
रायउल=राजकुल	५५
रायगिह	२२७
रायघर=राजगृह नगर	८३
रायण्ण	३५७
रायरिसि	२०४
राया=राजा	३५
रिउ=शत्रु	३३
रिक्ख=नक्षत्र	६२
रिच्छ= ,,	६४, २२६
रिज (सं०)	१२७
रिद्धि	११८, ३१६
रिसि	२४०
रीय्	६२

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
रुइ=रुचि	६२
रुकुम (पालि)=चाँदी	७१
रुकम (पालि)= ,,	६१
रुक्ख	८४, २८०
रुक्मी=विशेष नाम	७१
रुण्ण=रुदन	४८, ८३
रुद्द=रौद्र-रुद्र–भयानक	६१
रुव्=(धा०)	१६७
रुप्प=चाँदी	७१, १८७, २५७
रूप्पिणी=रुक्मिणी	७१
रुप्पी=विशेष नाम	७१
रूव	२४२, २६६
रूस्(धा०)	१५६
रूस्स्(धा)	१५६
रेखा	३१८
रेभ=(प्रा०, अप०)=रेफ	४१
रेह=रेफ	१७, ४१
रेहा	३२८
रोचि(सं०)=किरण	१२७
रोत्तव्वं	३७१

ल

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
लंगूल=पूँछ	५३
लघण=लंघन	६८
लंछण=लांछन–निशान, कलंक	६८
लंब=लम्बा	१८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
ल×कशा=(मा०)=राक्षस		६३
लक्ख		२६६, ३८४
लक्खण=लक्षण		६२, १८८
लग्ग=लगा हुआ		५८
लघुक		८८
लघुवी		७४, ११७
लङ्गल		५३
लच्छुण=लक्षण		१८८
लट्ठि=लाठी		५१, ६८
लण्ह=लघु—बहुत छोटा		१३८
लभ् = (धा०)		२८६
लवण=नमक—नोन—नून		८३
लविअ=बोला हुआ		३३
लव्=(धा०)		१४६
लहु		२५५
लहुअ=छोटा		८८, २५८
लहुवी=छोटी		७४
लहे (क्रि०)=पाया जाय		२६८
लह् (धा०)		१५६
लाऊ=लौकी		१६, ३१७
लाक्षा (सं०)		१३०
लाखा (पालि०)=लाख		६४
लाञ्छन=लांछन—चिह्न, कलंक		११३
लाभ		२०६
लायण्ण=लावण्य		३७, ११६, १८७
लावण्ण= ,,		१८७
लाबू=लौकी		१२६
लाह		२०६
लाहल=विशेष प्रकार का म्लेच्छ		५३
लाहालाहा=लाभ और अलाभ		१०२
लिंब=नीम का पेड़		४६
लिच्छइ=(क्रि०)=लाभ पाना चाहता है		६५
लिच्छा=लाभ पाने की इच्छा		६५
लिप्प् (धा०)		२७१
लिवि=लिपि—अक्षर		१२६
लिह्=(धा०)		१५६
लुक्क=बीमार		५२, ७५
लुग्ग=बीमार		७५
लुण् (धा०)		१६६
लुद्धअ=लालची—लंपट		५८
लुट्ट् (धा०)		१४६
लूह		२६६
लूफिड (सं०)=विशेष नाम		१२७
लेहसालिअ		२६८
लेहा		३२८
लोअ		३३, ६२, ११६, २१०
लोग		४४, २१०
लोद्धअ=लालची—लंपट		५८
लोण=नमक—नून—नोन		८३
लोणीअ=मक्खन		८३
लोम (सं०)=रोम		१३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
लोमपड	२५७
लोह	१८३, २५६
लोहार	२५६
लोहिअ	२८१
व	
व	२०, १८४
वइर=वैर–शत्रुता	३०
वइर=वज्र	८६
वइसंपायण=विशेष नाम	३०
वंक=वक्र–वांका–टेढा	३०
वंझा	३१३
वंदित्ता	३६८
वंद् (धा०)	१४०
वंसअ	२६३
वक्क=टेढा–वांका	८७
वक्क=वाक्य	३७०
वक्कल=पेड़ की छाल से बना वस्त्र	५६
वक्ख (चू०पै०)=व्याघ्र	३८
वक्खाण(धा०)	२५६
वग्ग=वर्ग	५६
वग्गोल्=(धा०)	३२५
वग्घ=व्याघ्र	३८, १८२
वच्च	३७०
वच्च् (धा०)	१६६
वच्छ=वृक्ष	८४
वच्छ=वत्स	२२६, २८०
वच्छयर	२८०
वच्छल=वत्सल	६५
वज्जं	३७०
वज्ज=वज्र	८६
वज्ज्(धा०)	२१३, २८६
वज्जर् (धा०)	३२४
वञ्जर=बिलाव–मार्जार	८४
वट्ट=मार्ग	८५
वट्ट=वृत्त–गोलाकार	६६
वट्टा=वात	६७
वट्टि (पालि)=बत्ती–वाट–बाती	६६
वट्टी=वाट–दीप की वाट–बत्ती	६७
वट्टुल=गोलकार	६७
वड्ढ् (धा०)	१६६
वड्ढमान (पालि) =बढ़ता हुआ	७८
वढल=जड	५२
वण	१८२
वणप्फइ	७२, ८०, २५४
वणम्मि=वन में	६७
वणस्सइ	२५४
वणिआ=स्त्री	८४
वण् (धा०)	२५६
वण्हि=वह्नि–आग	७०
वत्ता=वार्ता–बात–कहानी	५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
वत्थ		२००, २५७
वत्थु		२४१
वदण		१८२
वद्धमाण		२०६, २१२
वनवक (सं०)	याचक	१३५
वनीयक (सं०)	,,	१३५
वन्द् (धा०)		१४०
वप्प् (सं०)	बाप–पिता	१३२
वम्मय		३५७
वम्मह		५०, ७२, २२६
वयंस	मित्र	८७
वयट्ठ (पालि)	वृद्ध	७७
वयण		४०, १८२
वयण	वचन	४०
वयस्स	मित्र	८७
वय् (धा०)		१८६
वरदंसि		२६७
वरिअ	उत्तम	७४
वरिष (सं०)	वर्ष	१३३
वरिषा (सं०)	बरसात की मौसम	१३३
वरिस	वर्ष	७३
वरिससय	सौ वर्ष	७४
वरिसा	बरसात की मौसम	७४
वरिस् (धा०)		१४०, १८१
वर् (धा०)		२६६
वलग्ग् (धा०)		३२५
वलयाणल	वडवानल–समुद्र में रहने वाला अग्नि	३२
वलुण	वरुण	५२
वल्ली	वेल	१८
वव् (धा०)		१८३
ववहार		२६८
ववहारिअ		२६८
वश्चल (मा०)	वत्सल–प्रेमी	६५
वस् (धा०)		२६०
वसइ	रहने का मकान	४७
वसह		२८, १८२, २४१
वसहि	रहने का मकान	४७
वसु		२६८
वस् (धा०)		१८६
वहू		३१७
वह् (धा०)		१५६
वा		२०, १५०
वाउ		२४०
वाघायकर		२२७, ३०३
वाणारसी		८८, १२१, १३५, ३१७
वाणिअ		२८०
वाणिज्ज		२५६
वाणिज्जार		२१५
वायरण	व्याकरण	५४
वाया		३१४
वायु		२४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
वार=दरवाजा		६०, ८७
वारण=व्याकरण		५४
वाराणसी		८८, ३१७
वारि		२४१
वाव्रग=क्रियायुक्त		४७
वावी		३१६
वाव्		२९९
वास=वर्ष		७४
वास=व्यास मुनि		८८
वाससय=सौ बरस		७४
वासा=बरसात की मौसम		७४
वासेसि=व्यास ऋषि		९६
वास्र (सं०)=दिन		१३२
वाह=शिकारी		५८, ११४
वाहि		२६७
वि		१६३, १६५
विअड्ढ=पंडित		७८
विअड्डि=हवन की वेदिका		७८
विअणा=वेदना		२९
विआर=विचार		४२
विआल(मा०)= ,,		४२
विइज्ज		२४३
विउह=पंडित		३३
विओग=वियोग		३३
विंचुअ		७७, ८७, ३२६
विंछिअ		६५, ७७, ८७, २२७

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
विंझ=विंध्य पर्वत		६७
विंट=पत्र और पुष्प का बंधन		२८
विंध् (धा०)		२७०
विकट (वै० सं०)=विकार पाया हुआ		१२९
विकस्र (सं)=विकसित		१३५
विकिर् (धा०)		२८९
विकुव्वइ (क्रि०)		१६३
विक्कव=बेचैन		५९
विक्के (धा०)		२५९
विक्रस्र (सं०)=विकसित		१३५
विघड् (धा०)		२८३
विचकिल=बेला का फूल		८१, ८३
विचर् (धा०)		२४४
विचिन्त् (धा०)		२४४
विच्च (अप०)=बीच में		८५
विच्छुल् (धा०)		३२६
विच्छिक (पालि)		७७
विच्छोहगर (अप०)=विक्षोभ करने वाला		३६
विच्छोहयर= ,,		३६
विजण=पंखा		३३
विजयसेण=विशेष नाम		३३
विजाणइ (क्रि०)		१६३
विजुंजइ (क्रि०)		१६३
विज्जाहर=विद्याधर नाम की जाति		६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
विज्जु		३२, ३१६
विज्जुए	=बिजली से	६०
विज्जुणा	= ,,	६०
विज्जुला		३१४
विज्ज् (धा०)		१५४, २७१
विज्झाइ (क्रि०)	=विशेष दाप्ति करता है	७६
विज्झ् (धा०)		१५६
विट्ठि		३२७
विडवि		२५४
विड्डा	=शरम–लज्जा	८१
विणस्स् (धा०)		२६०
विणा		१८४
विण्णव्=(धा०)		३२५
विण्णाण		६८, २२७
विण्णि	=दो संख्या	१४४
विण्हु		६३, २४०
वित्त		२५७
विदत्थि (पालि)	=बीता–बारह अंगुल का परिमाण	४७
विद्दाअ	=विनष्ट	८४
विद्ध	=वृद्ध–बूढा	७८
विना		१८४
विप्पजह्=(धा०)		२८६
विप्पजहाय		३६८

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
विप्परियास		२६८
विब्भल		५३, २६६
विम्हय	=विस्मय	६४, १२
विय्याहल (मा०)	=विद्याधर नाम की जाति	६६
विराअ (धा०)		२४४
विराग		२६८
विराज् (धा०)		२४४
विलया	=स्त्री	८४
विलिअ	=असत्य	२३
विलिअ	=लज्जित	२२८
विविह		२१३
विसइ (क्रि०)	=प्रवेश करता है	४३
विसंठुल	=अव्यवस्थित	७७
विसढ	=सम नहीं–विषम	५०
विसण्ण	=खेद पाया हुआ	८५
विसम	=विषम	५०
विसमइअ	=विषमय–जहरिला	१६
विसमायव	=विषम आतप	६४
विसीअ(धा०)		२७०
विसेस	=विशेष	४३
विस् (धा०)		३२०
विस्नु (मा०)	=विष्णु	६३
विस्मय (मा०)	=विस्मय	६४
विहड् (धा०)		२८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
विहत्थि=वीता–बारह अंगुल का परिमाण	४७
विहप्पइ=बृहस्पति	७२
विहर(धा०)	२२६, २७०
विहल=विफल	२२८
विहल=विह्वल	५३, ७२, ३६६
विहाण	२६३
विही–विधि	६१
विहीण=विशेष हीन	२४
विहु	२६८
विहूण=विशेष हीन	२४
वीअ=दूसरा	५१
वीयराग	२०१
वीयराय	२०१
वीरिअ=शक्ति	७४
वीरिय= ,,	१८८
वीस=विश्व–समग्र	१६६
वीसर	१६७, २५६
वीसा=बीस–२० संख्या	८३, ६७, ३८०
वीसास=विश्वास	२०
वीसुं=विष्वक्–सब ओर से	६७
वीसोण=बीस कम	६६
वुड्ढ	२८, ७८, ११८, ३२७
वुड्ढि=वृद्धि–बढ़ना	२८, ७८,
वुत्त=कहा हुआ	८८
वुत्तंत	३२७
वुन्द (सं०)=समूह	११८
वुन्न (अप०)=विषाद पाया हुआ	८५
वृसी (सं०) = ऋषि को बैठने का आसन	१३१
वेअस=वेतस–बेंत का वृक्ष	४७
वेंट, वेण्ट =पत्र और फूल का बंधन	२८, ७८
वेज्ज=वैद्य	६६
वेट्टि	३०७
वेडिस=बेंत का वृक्ष	४७
वेडुज्ज=वैडुर्य रत्न	८४
वेढ (धा०)	१५८
वेणी (सं०)=प्रवाह	१३३
वेण्णि=दो–२ संख्या	१४४
वेणुग्गाम=वेलगाँव–बाँसों का गाँव	४६
वेतस=बेंत का वृक्ष	४७
वेत्त=बेंत	२५७
वेय	१८६
वेर=वैर	३०, १८२
वेरुलिय=वैडुर्य रत्न	८४
वेलु=बाँस	४६
वेलुग्गाम=बाँसों का गाँव	४६
वेल्लि=लता	१८
वेल्ली= ,,	१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
वेत्राहिअ=समधी—वर-कन्या के माता-पिता	२६८
वेव् (धा०)	१४६
वेश्या (सं०)	१३१
वेसंपायण=नाम विशेष	३०
वेसाह=वैशाख मास	२४२
वोंट=पत्र और फूल का बंधन	२८
वोज्झ	२९२
वोत्तव्वं	३७१
व्रास (अप०)=व्यास मुनि	८८, ११६

श

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
शाव (सं०)	१२७
शव्वञ्ञ (मा०)=सर्वज्ञ	६९
शश्प (मा०)=कुमुद	६३
शालश (मा०)=सारस पक्षी	४३
शाली (सं०)=पत्नी की बहन	१३१
शीतालु (सं०)=शीतता युक्त	१३०
शुद (मा०)=सुना हुआ	४३
शुस्क (मा०) = शुष्क	६३
शुस्टु (मा०) = अच्छा	६८
शूरि (सं०)=पंडित	१३१
शोचि (सं०)=प्रकाश	१२७
शोभण (मा०)=शोभन	४३
श्याल (सं०)=साला=पत्नी का भाई	१३१
श्रवण (सं०)=श्रमण	१२९
श्लेष्मल (सं०)=श्लेष्म युक्त	१२९

स

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
स	१९९
सइ	१८४, २५८
सई=इंद्राणी	३३, ११६
सउणि	२४०
सं	१६२
संकल=सिकड़ी नाम का आभूषण	४५
संकला=सांकल	४५
संकु	२६८
संख	९२, ९७, ९८, २२६
संग	२०९
संगच्छति (क्रि०)	१६२
संघार=संहार=विनाश	४३
संघ् (धा०)	३२४
संचिणइ (क्रि०)	१६२
संजम् (धा०)	२७०
संजय	१८८
संजल् (धा०)	२९०, २१४
संजा=संज्ञा—समझना	६१
संझा=संध्या	८२
संझा	८२, ९७, ९८, ३१३
संठ (चू० पै०)=सांढ	३८
संड= ,,	४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
सढ=साँढ़	३८, ६८
संणा=सान–समझना	६१, ६२
संति	३१६
संदट्ठ=दंश लगा हुआ–डसा हुआ–काटा हुआ	६८
संदिस्	२६६
संपआ	३१५
संपज्ञ=संप्रज्ञ–विशेष ज्ञानी	६१
संपज्ज् (धा०)	१५४
संपण्ण=संप्रज्ञ–विशेष ज्ञानी	६१
संपया	३१५
संपाउण् (धा०)	२८३
संबुज्झ् (धा०)	२५६
संभु	२६८
संभूअ	२४३
संमुह=सामने	९८
संवच्छर=वर्ष	६६
संवड्ढ (धा०)	२६६
संसार	२००
संसारहेउ	२४१
संहर् (धा०)	२५६
संहार=संहार–विनाश	४३
सक्क=सक्त	७५
सक्कार=संस्कार	९७
सक्खं	९७, २५८
सङ्ख=शंख	९७
सगयाला	३८१
सगरपुत्तवचन=सगर के पुत्र का वचन	३३
सग्घ	२२८
सची (सं०)	१३१
सचेलय	२५१
सच्च	६४, २११
सज्ज	५७, ३२६
सज्झ=साधने योग्य	६७
सज्झाय=स्वाध्याय	६७
सट्ठि	३८२
सड्ढा=श्रद्धा–विश्वास	७८
सढ	१८६, २६८
सटा=जटा अथवा केसर–सिंह आदि के गर्दन की बाल	४५
सढिल=शिथिल–ढीला	२२
सणिच्छर=शनैश्चर	३०
सणिद्ध=स्नेह युक्त	८६
सणेह=स्नेह	८६
सण्णा	६१, ३१३
सण्ह	५६, ७०, ८७, २२८
सततं	२१२
सति	३१५
सत्त=शक्ति वाला	५६, ३२८
सत्त=सात–७ संख्या	३७६
सत्तचत्तालिसा	३८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
सत्तणवइ		३८३
सत्ततीसा		३८१
सत्तपण्णासा		३८२
सत्तम		२८२
सत्तमी		१०३
सत्तर	सत्तर–७० संख्या	४७
सत्तरस		३८०
सत्तरह		३८०
सत्तारि		३८२
सत्तसट्ठि		३८२
सत्तसत्तरि		३८३
सत्ताणवइ		३८३
सत्तावन्ना		३८२
सत्तावीसा		३८१
सत्तासीइ		३८१
सत्ति		३१५
सत्थ		२११
सत्थवाह	संघ का नायक	७१
सत्थि	स्वस्ति–शुभ आशीर्वाद	७०
सत्थि		२८१
सत्थिल्ल		२८१
सद्द		४३, ५८, १८६
सद्दह (धा०)		२६८
सद्धा		७८, ३१३
सद्धि		१८४
सप्प		२२६
सप्फ	कुमुद	६३, ७१
सबध (अप०)	शपथ	४१
सभरी	मछली	४१
सभल	सफल	४१
सभलअ (अप०)	सफल	४१
सम		१६६, २०१
समण		१८६
समणी		३१६
समत्त	समस्त–समग्र	७०
समत्तदंसि	शबर–किरात–भील–अनार्य जति का मनुष्य	५३
समवाय	समूह	३३
समायर् (धा०)		२१३
समार् (धा०)		३२५
समारंभ		२८३
समिज्झाइ (क्रि०)	अच्छी तरह से दीप्तिमान है	७६
समिद्धि		१७, ३२८
समुद्द	समुद्र–दरिया	६१, १७५
समुद्र	,,	१७५
समुह	सामने	६८
सय		३८४
सयढ		४५, १८८
सयंभु		२४१
सययं		२१२, २५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
सयरपुत्तवयण	सगर-पुत्र का वचन	३३
सयल		२१३
सया		२४३
सय्ह	सहन करने योग्य	६७
सर		५८, ३२७
सरअ	शरद् ऋतु	३६
सरओ	,,	८६
सरण		२११
सरस		२२८
सरहि		२६७
सरिआ		३१४
सरिया		३१४
सरिसं इणं	यह सरिखा है	८७
सर् (धा०)		२७०
सर्करा (सं०)		१३०
सर्वरी (सं०)		१३१
सलाया		३१४
सलाहा	श्लाघा=प्रसंशा	८६
सल्ल		२६३
सवध (अप०)	शपथ-सौगंध	४१
सवल	चित्रविचित्र	४१
सवह	शपथ-सौगंध	४१
सवाय		२८२
सव् (धा०)		१४६
सव्व		६०, १९९
सव्वओ		६२
सव्वज्ञ	सर्वज्ञ	६१
सव्वञ्ञ (पै०)	सर्वज्ञ	६९
सव्वण्णु		६१, ६९, २५३
सव्वतो	सब तरफ से अथवा सब रीति से	६२
सव्वदो (शौ०)	,,	६२
सव्वत्थ		२५८
सव्वया		३५७
सव्वसंग		२४२
सव्वहा		३५७
ससा		३१४
सह		१८४
सहरी	मछली	४१
सहल		४१, २२८
सहस्स		३८४
सहा	सभा	३७
सहिअ	सहृदय-पंडित	५५
सहिअय	,,	५५
सह् (धा०)		२०२
साउ		२५५
साक		१३०
साड		२५५
साडवि		२५६
साडी		३१७
साणु		२५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
सात	२११
सादूदग=मधुर जल	६५
साम	११४
सामअ=साँवा नाम का धान्य	१६
सामच्छ=सामर्थ्य-शक्ति	६५
सामत्थ= ,,	५६
सामला=श्यामा-षोडशी युवति	१७
सामा= ,,	५८, ३२८
सामिद्धि=समृद्धि-सपत्ति	१७
साय	२११
सारंग=धनुष	८६
सारस=सारस पक्षी	४३
सारासार=सार और असार	१०२
सालवाहन=शालिवाहन नाम का राजा	४७
सालवि	२५६
सालाहण=शालिवाहन नाम का राजा	४७, ६३
सालाहणी=शालिवाहन की रचित कविता	४७
साव=शाप-आक्रोश	४०, २०६
सावग=श्रावक-सरावगी	४४
सावज्ज	२६३
सासुरय	२६३
साहट्टु (सं० भू० कृ०)	३६८
साहु	३७, २४०
साहुणी	३१६
साहुवी	३१६
सिआ (क्रि०)=हो-होवे	२६८
सिआ=किसी रीति से-किसी अपेक्षा से	८६
सिआल	२७, १८२
सिआवाअ=स्याद्वाद=सापेक्षवाद	८६
सिंग	१८१
सिंगार	३२६
सिंघ	४३, ६८, १८२
सिंच् (धा०)	१६६
सिंधव=सैंधव नमक अथवा सिंध देश का घोड़ा	३०
सिगाल	१८२
सिज्ज् (धा०)	१५४
सिज्झ् (धा०)	१५६
सिट्ठि=सेठ	६८
सिढिल=ढीला	२२, ४८
सिणिग्ध=स्नेह युक्त	८६
सिण्ह=छोटा अथवा कोमल	६६
सित्थ=धान्य का कण	५६, ३२७
सिद्ध	१७५
सिद्धि	३१६
सिनात (पैं०)=शरीर से वा मन से स्नान किया हुआ	७०
सिनान (पालि)=स्नान	७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
सिनुसा (पै०)=पुत्रवधू	७०
सिनेरु (पालि)=स्नायु	५१
सिन्न=लश्कर	३०
सिप्पि	८४, २१५
सिभा=वृक्ष का जटामय मूल	४१
सिम	२००
सिमिण	५३, ८६, २६८
सिम्भ=श्लेष्म	७३
सिया (क्रि०)	२६८
सिरा=नस	५४
सिरी=श्री—लक्ष्मी	८६
सिलाह् (धा०)	१५६
सिलिट्ठ=श्लिष्ट—चिपका हुआ	७३
सिलिम्ह=श्लेष्म	७६
सिलिम्हा= ,,	७३
सिलेस=श्लेष—चिपकना	७३
सिलेसुमा (पालि)	७६
सिलोग=श्लोक	७३
सिविण	५३, २६८
सिव्व् (धा०)	१४६, २५८
सिसु	२४०
सिस्स	२००
सिह	३२५
सिहरोवरि=शिखर के ऊपर	६६
सिहा=वृक्ष का जटामय मूल	४१
सीअ	२००, २०१

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
सीअर=जल के कण	४४
सीआण=श्मशान	८४
सीआल	१८२, १५६
सीभर=जल के कण	४४
सीळ (पै०)=सदाचार	४२
सील	१८७
सीलभूअ	२६६
सीस	१८७, २००
सीह	२२, ४३, ६८, १८२
सीहर=जल के कण	४४
सु	१६४
सुअ=शास्त्र अथवा सुना हुआ	४३
सुअगड=श्रुतकृत—सुनकर किया हुआ	४७
सुइ	२५५
सुइल=सफेद	७३
सुंक=चुंगी—राज-कर	७६
सुंग= ,,	७६
सुंदरिअ=सुन्दरता	७४
सुंदर= ,,	८०
सुकड=अच्छा कार्य	४७
सुकय= ,,	४७
सुकिल=सफेद	७३
सुकुमार=कोमल	८३
सुक्क	५७, ६३
सुक्ख=सूखा हुआ	५७, ६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
सुक्ख=सुख	१८८
सुखुम	२२८
सुगत=बुद्ध भगवान्	३३
सुगन्धि	२५५
सुङ्ग=चुंगी–राजा का कर	७६
सुजह	२०१
सुज्ज=सूरज	६६
सुज्झ् (धा०)	१५७
सुट्ठिअ=सुस्थित	७१
सुट्ठु	६८, २२८
सुणिसा (पालि) = पुत्रवधू	७०
सुण् (धा०)	१५९
सुण्ह=बहुत छोटा	८७
सुण्हा	५४, ७०, ८७, ३१३
सुण्हा=गाय का गलकंबल	२०
सुतगड=सूत्रकृतांग नाम का जैन अंग आगम	४७
सुतार=सुगम रीति से उतरने योग्य–घाट	३३
सुत्त=सूत्र–छोटा सा वचन	२११
सुत्त (सं०)=अच्छी रीति से दिया हुआ	५५, १३३, २१२
सुत्त	५७, २१२, २४३, ३२८
सुत्तहार	२५६
सुत्ता (सं० भू० कृ०)	३६८

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
सुत्ति=सीप	८४
सुदंसण=सुदर्शन	७४
सुद रसण= ,,	७४
सुद्धोअणि=बुद्ध भगवान्	३२
सुनुषा (पै०)=पुत्रवधू	७०
सुनुसा= ,,	८७
सुन्देर=सुन्दरता	३२
सुभ (सं०)=शुभ	१३१
सुभासए	१६४
सुमरि (क्रि०)=याद कर	१२२
सुमर् (धा०)	१५९
सुमिण	५३, ८६, २६८
सुम्ह=एक देश का नाम	७२
सुय्य (शौ०)=सूरज	६६
सुरट्ठ	६८, २८१
सुरट्ठीअ	२८१
सुरुग्घ=एक गाँव का नाम अथवा देश का नाम	८७
सुव=अपना अथवा अपन	८७, १६९
सुवइ (क्रि०)=सोता है	१९
सुवण्ण	२५७
सुवण्णिअ=सोनी–सुनार–सोना गढ़ने वाला	३२
सुविण	२६८
सुवे=आने वाला कल–आने वाला दिन	८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
सुव्व=रस्सी	६०
सुसा=पुत्रवधू	५४, ८७
सुसाण=श्मशान	८४
सुस्तिद (मा०)=सुस्थित	७१
सुस्स् (धा०)	१५६
सुहअ=सुन्दर	२५, ४५
सुहुम=बहुत छोटा	८६, ८७
सुहमइअ=सुखी	१६
सुहुम=बहुत छोटा	८७, २२८
सु ह	२५५
सू	१६३, १६४
सूअर	२१०
सूड् (धा०)	३२५
सूरिअ=सूरज	७४
सूर् (धा०)	३२५
सूर्प (सं०)	१३०
सूस् (धा०)	१५६
सूसासे=उच्छ्वास सहित	३१
सूहव=सुंदर	२५, ४५
सुहवो= ,,	१६४
सेज्जा=बिछौना	१८ ६६
सेढ	२१३, २४३
सेढि	२४०
सेन्न=सेना	३०
सेफ=श्लेष्म	७६
सेम्ह (पालि)=श्लेष्म	७६
सेय्या (पालि)=बिछौना	१६
सेर=विकसित	५८
सेव् (धा०)	२२६, २७१
सेव्वा=सेवा	८१
सेस=बाकी	४३
सोंडीर=बल	८०
सोअ=कान	१८८
सोअ (धा०)	१८६
सोअमल्ल=सुकुमारता	८०
सोगमल्ल= ,,	८०
सोच् (धा०)	१८६
सोच्चा (सं० भू० कृ०)	६४, ३६८
सोळ्हा (वै०)=सहन करने वाला	११६
सोत्त=कान	१८८
सोम (सं०)	१२७
सोमव=सोमरस को पीने वाला	१६०
सोमवा= ,,	१६०
सोमाल=सुकुमार	८३
सोमित्ति=लक्ष्मण–राम का भाई	२४१
सोरट्ठीअ	२८१
सोरहिअ	२५६
सोरिअ=शूरता–वीरता	७४
सोलस	३८०
सोलह	३८०
सोवइ (क्रि०)=सोता है	१६
सोवण्णिय	२५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
सोवाग	२४२
सोहण=शोभा देनेवाला	४३
सोहा=शोभा	४३
सोह् (धा०)	१५६, २५८
स्थूर (सं०)=स्थूल–मोटा	५३
ह	
हअ	२०१
हतव्व	२०१
हंता (सं० भू० कृ०)	३६८
हश (मा०)=हंस	४३
हस= ,,	४२
हञ्जे	१३५
हट्ठतुट्ठमलंकिय=हर्षित, तुष्ट और अलंकृत	९८
हड=हरण किया हुआ–उठा लिया हुआ	४७
हणिया (क्रि०)	२६८
हणुमन्त=विशेष नाम–हनुमान	२६
हण् (धा०)	१५९, २५८
हत्थ	७०, १७५
हत्थपाया	१०२
हत्थि	२४०
हत्थी=हाथी	६४
हय=हरण किया हुआ–उठा लिया हुआ	४७

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
हर	४२, १७५
हर=जलाशय	८८
हरक्खद=महादेव और कार्तिकेय	८२
हरखंद= ,,	८२
हरडई=हरड, हर्रे	२३, ४७
हरिअंद	३२७
हरिआल=हरताल	८८
हरिएसबल	२२७
हरिण	२६३
हरिष (सं०)	१३३
हरिस	१८६
हरिस् (धा०)	१३८, २८८
हरीटकी (पालि)=हरड, हर्रे	२३
हल (मा०)=महादेव	४२
हलद्दा=हल्दी, हरदी, हर्दी	५२
हलिअ=हल चलाने वाला	२०
हलिआर=हरताल	८८
हलिद्दा=हल्दी, हर्दी	५२
हलिश् (मा० धा०)	२८८
हलुअ	८८, २५८
हव् (धा०)	१८९
हव्ववाह	१८३
हस् (धा०)	२२९, २९७
हस्ती (मा०)=हाथी	६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
हस्व (सं०)		१२८
हा (धा०)		१५०
हालिअ	हल चलाने वाला	२०
हिअ	हृदय	५५
हिअअ	,,	५५
हिअय	,,	२७
हिओ	बीता हुआ कल का दिन	८६
हिंस् (धा०)		२७१
हितप (पै०)	हृदय	२७
हितपक (पै०)	,,	२७
हित्थ	त्रास पाया हुआ	८३
हियय		१८२
हिरी	लज्जा	८६
हिलाद	आनन्द	७३
हीण	हीन	२४
हीर	महादेव	१८
हु		२१२
हुअ		२४२
हुत		२४३
हुत्त	आहूत—आकारित—बुलाया गया	८२
हुसा (पालि)	पुत्रवधू	७०
हूअ	आहूत—आकारित—बुलाया गया	८२
हूण	हीन	२४
हेट्ठ	नीचे	८३
हेट्ठिल्ल		३५६
हेमन्त		२२६
हो (धा०)		१५०
होइइह	इधर होता है	६३
होम	होम	१२७
ह्लीका (सं०)	लज्जा	१३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष शब्दों की सूची

शब्द	पृष्ठाङ्क
अ	
अंक	१०
अंग	२३८, २६२
अंग्रेजी	१०
अंतःस्थ	२
अकारान्त	१७८
अक्षर	३, ६२, ६३
अजमेर	१३६
अज्जतनी	२१६
अद्यतनी	२१६
अधीष्ट	२८७
अधीष्टि	२८७
अनार्य	८
अनिवार्य	१०
अनुज्ञा	२८७
अनुशासन	१३७
अनुस्वार	४३, ६७
अपभ्रंश	१, २, ३, १६, १७, ३३, ३४, ३६, ४०, ४१, ४३, ४४, ६१, ७२, १३६, २५१, ३६१.
अपवाद	३३, ३७, ६८, ८६
अभिधान-संग्रह	१३७
अमरकोश	१३७
अरबी	१०
अर्धमागधी	६२
अर्धस्वर	२
अवसर	२८७
अव्यय	२, ६६, २०२, २२८
अव्ययीभाव	१०२
असंयुक्त	६२
आ	
आगम	७३, ७४, ८६
आचार्य	२६६
आज्ञा	२८६
आज्ञार्थ	३२२
आत्मनेपद	२११, १३६, २४६
आपवादिक	१७
आमंत्रण	२८७
आर्ष	१३६, २२३
इ	
इच्छा	२८७
उ	
उड़िया	१३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	पृष्ठाङ्क
उपधा	३२०
उपपदसमास	१०४
उपसर्ग	१६२
उपान्त्य	३२०
ऋ	
ऋग्वेद	४३
ओ	
ओष्ठ	१, २
क	
कंठ	१, २
कच्चायण	११२
कर्म	३३०
कर्मधारय	१०५
कात्यायन	१३६
कृदंत	३४३, ३६०, ३६९
कोष	८
क्रमदीश्वर	१३६
क्रियातिपत्ति	२९९, ३२३
क्रियापद	८, ९, १८२
ग	
गला	१
गुजराती	९, १३६
गुरु	३२०

शब्द	पृष्ठाङ्क
च	
चूलिका-पैचाशी	१, ३३, ३४, ३५, ३८, ४२, ४३, ४४
छ	
छंद	४३
ज	
जिह्वामूलीय	६३
त	
तत्पुरुष	१०२
तद्धित	३५६
तामिल	१०
तालु	१
तुलसी	१४६
तेलगु	१०
द	
दंत	२
दाँत	२
दिल्ली	१३६
दीर्घ	१, ११, १२, ३२०
देशी-शब्द-संग्रह	८
देश्य	७, ८, ९, १०
देसी-सद्द-संगह	८
द्राविड़	८
द्वंद्व	१०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	पृष्ठाङ्क
द्वित्व	५६, ५७, ५८
द्विर्भाव	८१, ८२
ध	
धनंजयकोश	१३७
धातु	४५, २०२, २२९
न	
नञ् तत्पुरुष	१०५
नपुंसकलिंग	९०, १७८, २२७
नरजाति	१३
नागरी	१०
नाम	८, ६२, ३०३
नामधातु	३५९
नासिका	२
निमंत्रण	२८७
प	
पतंजलि	१३७
परस्मैपद	१३९, २४८
परोक्ष	२१९
पाणिनि	१३७
पालि	१३७, २६०
पुरोहित	१३६
पुलिङ्ग	९०, १६८, २२५
पैशाची	१३९, ३५०, ३६०
प्रत्यय	२१९
प्रवरसेन	१३६
प्रश्न	१५९
प्राकृत	१११, १२७, २४९
प्राचीन गुजराती	२५२
प्रार्थना	२८७
प्रेरक	३१९
प्रैष	२८७
ब	
बहुव्रीहि	१०२
भ	
भविष्यत्	२४८
भामह	१३६
भाव	३३०
भूतकाल	२१९
म	
मखकोश	१३७
महर्षि	१३७
मागधी	१३९, २४९, ३६०
मार्कण्डेय	१३६
मेवाड़	१३६
र	
राजशेखर	१३६
रामायण	१४६
रूपाख्यान	१४१
ल	
लक्ष्मीधर	१३६
लिंग	८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	पृष्ठाङ्क
लिंगविचार	८९
लोकभाषा	१००
लोप	९९
लौकिक	१११, १३७
व	
वररुचि	१३६
वर्तमानकाल	१३८
वाक्पतिराज	१३६
वाक्य	२२९
वाक्यरचना	१३८
वाल्मीकि	१३६
विधि	२८७
विध्यर्थ	२९६, ३२३, ३६९
विशेषण	१८३, ३०१, २२७
वैजयंतीकोश	१३७
वैदिक	१११, ३६०
व्यंजन	७५
व्यत्यय	१२०
व्याकरण	२९६, ३०३
श	
शब्द	३१३
शालिवाहन	१३६
शौरसेनी	८७, १३९, २४९, ३६०
स	
संख्यावाचक	३७६
संधि	९२
संप्रश्न	२८७
संस्कृत	१२७, १३७, १३९
समास	१००, १०२
सर्वनाम	१९३, १९८
सार	१५९
सिंहराज	१३६
स्त्रीलिङ्ग	९१
स्वर	२३०
ह	
हियतनी	२१९
हेत्वर्थ	३६०
हेमचन्द्र	२९६
हेमचन्द्राचार्य	२८६
ह्यस्तनी	२१९

(१) शुद्धि-पत्रक

१. कुछ स्थान पर धातु व्यञ्जनान्त नहीं छपे हैं; वहाँ धातु को व्यञ्जनान्त समझ लेना चाहिए।

२. पुंलिङ्ग को सब जगह पुंलिङ्ग समझना चाहिए।

३. पुस्तक में अनेक स्थान पर अनुस्वार स्पष्ट रूप से नहीं छपे हैं।

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
२ दूसरा टिप्पण	याने 'ए'	यह 'ऐ'
३ नंबर (८)	ल	ळ
५ नंबर (१२)	बुड्ढ	वुड्ढ
७ नंबर (२३)	तथ	तथा
७ शब्दविभाग	हैं।	हैं
९	गड्ढा	गड्ढा
१०	एली, बरसाती कीडा	एली—निरन्तर बरसात
१०		जिन नियमों के साथ इत्यादि से लेकर समझना चाहिए। यहाँ तक का भाग निकाल दें।
११	ह्रस्व से दीर्घ[1]	(१) ह्रस्व से दीर्घ[1]
१७ १.	पुना	पुणा
२५	यास्फ	यास्क
२६	'ऊ' को 'ए'	'ऊ' को 'ए' तथा 'इ'
२८	नूउर	नूउर, निउर
३३	विजण,	व्यजन,
३६	पृ० ५५, ५७	पृ० ५६, ५७
३९	में भी	में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
४३	'ल'	'ळ'
४४	खुज्ज	खुज्ज* *जब 'कुब्ज' शब्द 'पुष्प' वाचक हो तब उसका 'कुज्ज' रूप बनाना। ऐसा टिप्पण बढ़ाना।
४४	चिलाअ याने	चिलाअ=
४८ नियम ११	दह्	÷दह्
" "	दब्भ । दष्ट —	दब्भ । 8 दर–डर । दष्ट– 8 भय अर्थ में ही 'डर' रूप बनता है। ऐसा टिप्पण बढ़ाना।
४८ टिप्पण में	समझना	समझने
५८	(नि० २६)	(नि० २५)
५९	धात्री-धाती	धात्री–धती–धत्ती
६१	प्राकृत भाषा में पिया अः को ओ[२]	प्राकृत भाषा में पिय। पालि भाषा में ऐसे होने वाले रूपांतरों के लिए देखिए—पालिप्रकाश पृ० ३०, ३१ (नि० ३६, ३७); पृ० ३२, ३३ (नि० ३८, ३९); पृ० ३५ (नि० ४२); पृ० १० (नि० १२); पृ० १२, १३ (नि० १५, १६)। अः को ओ[२]
६६	करेज्ञहि	करेज्जहि
७७	वट्टि।)	वट्टि।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
७७	ठड्ड। (याने	ठड्ड=निस्पंद
७७	हिन्दी में खड़ा)	व्यापक हिन्दी में ठाढ़ा-खड़ा)
८२	में द्विर्भाव	में वैकल्पिक द्विर्भाव
८२	कुसुप्पयंर,	कुसुमप्पयर,
८२	कमल-केल, कमल।	कदल-केल, कयल।
८३ नि० २८	विविध	सर्वथा
८३	तिरिया	तिरिय
८३	तिरिच्छ	तिरिच्छि
८४	मसाण[1]।	मसाण[1]। (देखिए-पा०
	[2]अपभ्रंश भाषा में	प्र० से मुसान) तक का सारा उल्लेख। इसके बाद अलग पैरेग्राफ में होना चाहिए — [2]अपभ्रंश भाषा में
८६	स्वप्न—	स्वप्न—
८७	अइमुत्तय,	अइमुतय,
८७	मणसि।	मणंसि।
९१	पिट्टी	पिट्ठी
९४	मुणियर।	मुणीयर।
९६ नि० १२	केहं +	कहं +
९६ नि० १७	'अ' का	'म्' का
९७	वणमि,	वणंमि,
९८ नि० २३	एग्गमेग।	एगमेग।
९८	आलं	अलं
९८ ,,	तुट्ठमाल	तुट्ठमलं
१०७	नट्ठोमोहो	नट्ठमोहो
११०	पाणिमिकाल से	पाणिनि के काल से
१११	इच्छाति	इच्छति
१२०	चतुरत	चतुरंत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१२२ नि० ३२	संज्ञा	कितनेक
१३६	वैदिक पांडतोने	वैदिक पंडितों ने
१३७	महर्षि पणिनि	महर्षि पाणिनि
१४०	उतावला करना	उतावला होना
	जलदी करना	जल्दी करना
१४०	पूजना, अर्चना	पूजना–अर्चना–अर्चन करना
१४०	काढना	निकालना–काढना,
	खींचना	खींचना, खेडना
१४२	तू उतावला करता	तू उतावला होता
१४४	दूसरी भाषा में	भाषा में
१४६	तपना, संतान	तपना, संताप
१४६	खिव् (त्वप्)	खिव् (त्विप्)
१४६	दीव	दीव्
१४६	लुह (लुप्य)	लुट्ट् (लुट्य्)
१४६	बदुवचनीय	बहुवचनीय
१४७	हम लोटते	हम आलोटते
१४७	जाप कहते	जाप करते
१४७	तू लोटता	तू आलोटता
१४८	जीवमो	जविमो
१५२	बेजामो	बे जामो
१५४	नि + प्पज्ज	नि + प्पज्ज्
१५४	घोतित होना	द्योतित होना
१५६	पाचवा	पाँचवाँ
१५६	सिलाह	सिलाह्
१५६	सूस	सूस्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१५६	सुस्स	सुस्स्
१५६	नस्स	नस्स्
१५६	रूस	रूस्
१५६	रूस्स	रूस्स्
१६३	सामने जाता है।	सामने बोलता है।
१६६	(वीरं)	(वीरम्)
१७२	वीर+ओ=वीरो	वीर+ओ=वीरो, वीर+ए=वीरे
१७२	वीर+म्=वीरं (वीरं)	वीर+म्=वीरं (वीरं)
१७३	'हि' प्रत्यय परे रहने पर	'हि' प्रत्यय को
१७४	छांदस नियम की तरह चतुर्थी	छांदस भाषा की तरह प्राकृत भाषा में भी चतुर्थी
१७४	उपभोग	उपयोग
१७८	(कसल !)	(कमल !)
१७८	१०, 'णि' 'ङ'	१०, 'णि', 'ईं'
१७६	महु+इ=महूइ	महु+ईं=महूईं
१८२	अजिन	अजिण
१८३	वह्	वव्
१८५	मायणम्मि	भायणम्मि
१८५	कुम्मारो	कुम्हारो
१८५	मत्थयेण	मत्थएण
१८५	कुप्पई।	कुप्पइ।
१८५	त्तुत्	त्तुत
१८८	पतित, तोता, शुक पक्षी।	तोता पण्डित।
१८६	सोअ्	सोय्
१६१	......पंडिता।	......पंडिता ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१६४	प्र० सव्वे	प्र० सव्वो, सव्वे
१६५	च० सव्वाअ	च० सव्वाण
१६७	ते)	तेषाम्)
१६६	एण, इक्क	एग, इक्क
२००	प्रसाद, महळ	प्रासाद, महल
२००	ब्राह्मण ।	ब्राह्मण ।
२०४	शव्वेसिं पाणाणं	सव्वेसिं पाणाणं
२०४	भाणवाणं	माणवाणं
२०५	(त्वाम्), वो (वः)	(त्वाम्)
२०५	तुम्हे, तुब्भे, (युष्मान्)	तुम्हे, तुब्भे (युष्मान्), वो (वः)
२०६	प्र० अहं	प्र० हं, अहं
२१७	वीराणं भग्गो	वीराणं मग्गो
२१७	न हणेज्जा पुरसा ।	न हणेज्जा ।
२१७	तुममेव तुमं	पुरिसा ! तुममेव तुमं
२१७	कडेहिन्तो कम्मेहिंतों	कडेहिंतो कम्मेहिंतो
२१७	'मोयणं मे'	'भोयणं मे'
२१८	···भाणवाणं···खलु आउ	···माणवाणं···खलु आउयं ।
२१८	पवड्ढ	पवड्ढइ ।
२१६	हियत्तनी	हीयत्तनी
२३१	वयणे वयासी ।	वयणं वयासी ।
२४२	मार (मार) = मार ।	भार (भार) = भार ।
२४४	अपमान कर	अपमान करना ।
२४६	मुनियों का पति महावीर	मुनियों के पति महावीर ने
२४६	···बुद्धं दिज्ज ।	···दुद्धं दिज्ज ।
२४७	गणवइ	गणवई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ		अशुद्ध	शुद्ध
२५५		दुहि (दुःखिन्) = दु	दुहि (दुःखिन्)=दुःखी।
२५५		कु डुंबि	कुडुंबि
२५५		कोडुंबिअ (कौटुम्बिक) कुटुम्बी	कोडुंबिअ (कौटुम्बिक)= कुटुम्बी
२५६		सुत्तहार (सूत्रहार)	सुत्तहार (सूत्रधार)
२५७		पट्टोल (पट्टकूल)=पटोल	पट्टोल (पट्टकूल) पटोला नाम का कपड़ा
२५७		महिलानयर	मिहिला नयर
२५७		रूप्प	रुप्प
२५७		रूप्प	रुप्प
२५८		अचेलय, अएलय (अचे-लक)=बिना वस्त्र का	अचेलय, अएलय (अचे-लक)=ऐलक, बिना वस्त्र का
२५८		थोड़ा, इषत्	थोड़ा, ईषत्
२६०		मुद्ग (मूँगी)	मुद्ग (मूँग)
२६०		तमौली पान···	तम्बोली पान···
२६१		गुरुणमंतिए···	गुरूणमंतिए···
२६१		मक्चू···	मच्चू···
२६१		गुरुणो अनुसासणं···	गुरुणो अणुसासणं···
२६१		तुमे नचिस्सह···	तुमे नच्चिस्सह···
२६३		'काहें' इत्यादि	'काहं' इत्यादि
२६३	टिप्पण, ३	दिस (दश)	दिस (दृश)
,,	,,	जा (इया)	जा (या)
,,	,,	जानिस्सति	जाइस्सति
२६७		द्वि० अह, अमु	द्वि० अह, अमुं
२६७		माराभिशंकि	माराभिसंकि
२६९		रूप	रूव
२६९		डज्झमाण (दह्यमान)= जला हुआ।	डज्झमाण (दह्यमान)= जलता हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
२६९	लक्ख, लूह (रुक्ष)	लुक्ख, लूह (रूक्ष)
२७०	प्र + गब्भ	प + गब्भ
२७०	विंध् (विंध्य)	विंध् (विध्य)
२७०	उप्पि	उप्पिं
२७१	पुर्ण	पूर्ण
२७२	सुवं भोच्छं ।	सुहं भोच्छं ।
२७२	गुरुणो सच्चमाहसु ।	गुरुणो सच्चमाहंसु ।
२७२	तवेण पावाइं भंच्छं ।	तवेण पावाइं भेच्छं ।
२७२	महासीडढ्··· ।	महासड्ढी··· ।
२७८	दायरा	दायारा
२८०	पुलिङ्ग	पुंलिङ्ग
२८१	(सुराष्ट्रीय)	(सौराष्ट्रीय)
२८१	कोहल (कूष्माण्ड)= पेठा	कोहल (कूष्माण्ड)= कोहँड़ा
२८३	यहाँ से वाक्य, का आरंभ	यहाँ से, वाक्य का आरंभ
२८३	(परि + व्यय्)	(परि + व्रज्)
२८४	१८४	२८४
२८५	मम बहीणीवई···	मम बहिणीवई···
२८६	आज्ञार्थक प्रत्यय	विध्यर्थ और आज्ञार्थक प्रत्यय
२८६	पुरन्त	परन्तु
२८९	···छिदना ।	···छिदना ।
२८९	पसस्	परस्
९३	छेअ (छेद)=छिद्र (अन्त, सिरा)	छेअ (छेद)=अन्त
२९४	अहिनब	आहिणव
२९८	सद्दह	सद्दह्
२९९	उव + दस्	उव + दंस्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
३०१	वरजे।	वर्जे।
३०१	तुझ को···	तुझे···
३०२	वत्तेण	वित्तेण
३०२	तथा	तया
३०३	अकारान्त	आकारान्त
३०३	हे मेघा !	हे मेहा !
३०६	(वाक्) मूल अकारान्त नहीं है)	(वाक्–मूल आकारान्त नहीं है)
३१२	बुद्धिओ	बुद्धीओ
३१४	फूआ	फूफी
३१६	कति	कंति
३१६	कच्छु (कच्छू)	कच्छु (कच्छु)
३१६	वावली	वावडी
३१८	खंति	खंतिं
३१९	मूल धातु में	मूल धातु को
३२०, ३.	'अ' जौर	'अ' और
३२१	'भम' धातु का	'भम्' धातु का
३२३	आ+सार् (आ+स्–सार)	आ+सार् (आ+सार)
३२३	अ+ल्लव्	उ+ल्लव्
३२४	झाम् (दह्)	झाम् (ध्मा ?, दह्)
३२४	सं+घ् (कथ्)	सं+घ् (कथ्)
३२५	लज्जित करना	लज्जित होना
३२५	वलग्ग (विलग्न)	वलग्ग् (वि+लग्न)
३२५	(प्र+सर)	(प्र+सर्)
३२७	(हरिश्चन्द)	(हरिश्चन्द्र)
३३०	बीसहाँ	बीसवाँ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
३३१	व्याकरण में 'रीना'	व्याकरण में 'रोना'
३३१	लज्जि	लज्जिज्ज
३३२	पाइज्व ।	पाइज्ज ।
३३७	णव्व–(णव्वते)	णव्व–णव्वते
३३८	सिच्	सिंच्
३४२	लूव्वंति ।	लुव्वंति ।
३४२	घुव्वंते	धुव्वंते
३४३	नयत	नयंत
३४८	राइसु	राईसु
३५३	सद्दल्लो	सद्दुल्लो
३५५	सण[१] + इअ=सणिअं	सण[१] + इअं=सणिअं
३५६	हेट्ठिल	हेट्ठिल्ल
३५९	घूमा-घूमा करता है ।	घूम-घूम करता है ।
३५९	अपने आपकी···	अपने आपको···
३६३	गेण्ह + तुं=घेतुं	गेण्ह + तुं=घेत्तुं
३६३	मुञ्च् + तुं=मात्तुं	मुञ्च् + तुं=मोत्तुं
३६८	वंदिता	वंदित्ता
,,	पृष्ठ ३५३ से ३६८ दूसरी दफे छपा है ।	यहाँ ३६९ से ३८४ समझना ।
३७०	हसणोयं	हसणीयं
३७०	कावंव्य	कायव्वं
३७१	घेतव्वं	घेत्तव्वं
३७२	मूल धातु में	मूल धातु को
३७२	होइता	होइंता
३७२	हुती, हुता	हुंती, हुंता
३७३	कराविं + क + माण	करावि + अ + माण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
३७४	भणज्जणमाण	भणिज्जमाण
३७५	भ णीअमंण	भणीअमाणं
३७४	पढा जाता ह्रुआ,	पढा जाता हुआ,
३८०	दुवांसल	दुवालस
३८०	इक्क वीसा	इक्कवीसा
३८२	दुपंण्णासा	दुपण्णासा
३८२	त्रिपन	त्रेपन
३८४	सहस्स सहस्त्र)	सहस्स (सहस्र)
३८४	प्रयुक्त' होते हैं	प्रयुक्त होते हैं ।
३९४	पायमेणा इसिं अन्नं परिथज्जइ ।	पायगेण इसिं अन्नं पयिज्जइ ।
३९४	···पिणट्ठं···	···विणट्ठं

(२) शब्दकोश का शुद्धि-पत्रक

१	अइमुतय	अइमुत्तय
१	अंतर अंतर	अंतर=अंतर
१	अंजलो	अंजली
३	अणुजाण्ण्	अणुजाण्
३	अण्इ	अण्ह्(धा०)
४	अनुजाण्णा (धा०)	अणुजाण् (धा०)
४	अन्तिका=अत्तिका	अन्तिका, अत्तिका (सं०)–
४	अथवा अ ल्पज्ञ	अथवा अल्पज्ञ
४	अब्बा=अंबा	अब्बा, अम्बा (सं०)–
६	अहिनव	अहिणव
१०	उप्पि	उप्पि
१०	उब्भ=ऊर्व	उब्भ=ऊर्ध्व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१०	उम्बुरक=	उम्बुरक (सं)=
१३	कइ	कति
१३	कैंसा	कैसा
१४	बहुत में—से	बहुत में से
१५	कररूह	कररुह
१६	कर्षापण	कार्षापण
१७	किल्मत	किलमंत
१७	कूअ	कूअ (धा०)
	५४	४५
२२	गोलोची=गिलोई	गोलोची (पालि)=गिलोई
२७	जुगुच= (धा०)	जुगुच्छ (धा०)
२७	जुंज	जुंज्
२७	जुत्तति	जुत्तंति
२६	टमरुक (चू० पै०)=ड	टमरुक (चू० पै०)=डमरू
३१	तओं	तओ
३३	तिरिया (पालि)	तिरिय (पालि)
३५	दाढिका	दाढिका (सं०)=
३५	दिट्ठ+इति	दिट्ठं+इति
३७	देवत	देवता
३६	नवफलिका	नवफलिका (सं०)=
३६	नाली	नाली (सं०)=
४०	निप्पुसण=पोछना	निप्पुंसण=पोंछना
४१	नोहलिया······८२	नोहलिया······८३
४२	पक्खाल (धा०)	पक्खाल् (धा०)
४३	पट्टोल=वस्त्र	पट्टोल=एक प्रकार का वस्त्र, पटोला
४३	डंसुआ	पडंसुआ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
४३	पपडिवज्ज् (धा०)	पडिवज्ज् (धा०)
४७	हड	पिहड
४८	पुलिष (सं०)	पुलुष (सं०)
५०	बभचेर	बभचेर
५१	बु	बू (धा०)
५२	बेसायाइं	बे सयाइं
५२	बेसहस्साइं	बे सहस्साइ
५२	बोल्ल्	बोल्ल् (धा०)
५२	भग्नी (सं०	भग्नी (सं०)
५२	भणिता	भणिता (सं०)
५२	भएय	भयए
५२	भागिनी=स्त्री	भागिनी (सं०)=स्त्री
५४	पीछ	पीछे
५६	मिइग	मिइंग
५७	मुइग	मुइंग
५८	रभस	रभस (पै०)
५८	रम्भा	रम्भा (स०)
५९	लघण	लंघण
५९	रीय् ६२	रीय्=२२६
६१	गोलकार	गोलाकार
६३	वावण	वावड
६४	विशेष दासि	विशेष दीप्ति
६५	वीसर	वीसर् (धा०)
६७	सढ	संढ
६७	सट्टि	सट्ठि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
६७	सढा=जटा अथवा केसर–सिंह आदि के गर्दन की बाल	सढा=जटा अथवा सिंह आदि की केसरा–गर्दन के बाल
६८	समत्तदंसि=शबर–किरात–भील–अनार्य जाति का मनुष्य	समत्तदंसि २६७ समर=शबर–किरात–भील–अनार्य जाति का मनुष्य ५३
७१	राज-कर	राजकर
७२	सुदारसण	सुदरिसण
७२	सुभासद	सुभासए (क्रि०)
७३	सुह	सुंह
७३	सूसामे	सूसाम
७३	सोरद्वीअ	सोरट्ठीअ
७४	साहण	सोहण
७४	हतव्व	हंतव्व
७४	हश	हंश
७४	हस	हंस
७४	हरक्खद	हरक्खद
७४	हरिअद	हरिअंद

(३) विशेष शब्दों की सूची का शुद्धि-पत्रक

७८	कठ	कंठ
७८	क्रुदत	क्रुदंत
८०	हियतनी	हीयत्तनी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org